ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये नमः।

कविवर सन्तलालजीकृत-

श्री सिद्धचक्रविधान।

[भाषा]



संग्रहकर्ता व प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,

मालिक, दिगम्बरजैनपुस्तकालय,

कापड़ियाभवन, गांधीचौक—सूरत।

द्वितीयावृत्ति] वीर सम्वत २४६९ [प्रति ५००

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस—सूरतमे मूलचन्द किसनदास कापडियाने मुद्रित किया।

मूल्य—तीन रुपया।

प्रस्तावना।

'श्री सिद्धचक्रविधान' का माहात्म्य अपूर्व है। सिद्धचक्रव्रत व उसका विधान करनेसे श्री श्रीपाल महाराज आदि अनेक महानुभाव रोग व दु:खसे छुटकारा पाकर उत्तम सुख–सम्पत्तिको प्राप्त हुए थे यह सर्वत्र प्रसिद्ध है। अतः यह विधान हिन्दुस्तानमें अनेक स्थानों पर श्री अष्टाह्निका पर्वमें होता है जो संस्कृत व हिन्दी दोनों भाषामें हैं, परन्तु आजतक यह विधान छपा न होनेसे अनेक स्थानोंसे हमारे पास सूचनायें आती रहती थी कि 'सिद्धचक्रविधान' अवश्य छपाना चाहिये जिससे इस विधानके करनेमें सुभीता हो।

इस कारणसे हमने इस विषयमें पूछताछ प्रारम्भ की तो अन्तमें यह निश्चय हुआ कि यह सिद्धचक्रविधान जो कविवर सन्तलालजी कृत हिंदी भाषामें छन्दबद्ध है उसको प्रकट किया जावे तो ठीक होगा। जिससे हिन्दी पढ़नेमें सुभीता हो व संस्कृत न पढ़े हुए भाई बहिन भी इस विधानको पढ सकें। यह हिन्दी भाषाका विधान सहारनपुर निवासी श्रीमान् लाला नारायणदास रूडामलजी शामियानावालोंके पास था उन्होंने हमसे यह विधान छपवानेके लिये कईवार प्रेरणा की थी। अतः आपसे ही इस विधानकी कापी हमने मांगी तो आपने सहर्ष अपने खर्चेसे इसकी कापी करवाके उसको दूसरी दो तीन प्रतियोंसे मिलान करके हमको भेज दी जिसपरसे यह "सिद्धचक्रविधान" भाषा पाठ प्रकट किया जाता है।

कविवर संतलालजीका परिचय।

इस सिद्धचक्रविधान भाषाके रचयिता कविवर संतलालजीका परिचय इस स्थानपर जानना उपयोगी होगा। यह परिचय भी पत्रव्यवहार करने पर हमें श्रीमान् लाला नारायणदास रूडामलजीसे ही प्राप्त हुआ है जो इस प्रकार है:—

कविवर संतलालजी कसबा नकुड जिला सहारनपुरके सुप्रतिष्ठित खानदानके लाला शीलचन्दजीके सुपुत्र थे। आपका जन्म ई० सन् १८३४ में हुआ था। आपके सब कुटुम्बी, पिता और बाबा आदि धर्मात्मा थे। आपने बडे उत्साह, धर्मप्रेम व परिश्रमसे इस सिद्धचक्र-विधान भाषा छन्दबद्धकी उत्तम रचना की थी तथा आपने और भी बहुतसी पूजन छन्द पद वगैरह रची थीं जो मौजूद है। आपको शास्त्रोंका बहुत अच्छा ज्ञान था इस कारण शास्त्रार्थका भी आपको बहुत शौक था। आपने रुडकी कालेजसे परीक्षा पास की थी तौभी धर्ममें रुचि होनेके कारण नौकरी नहीं की थी। आर्यसमाजी और अन्यमती, शास्त्रार्थमें कभी भी आपका मुकाबला नहीं कर सके थे और आपकी सदा विजय होती थी। जातिसुधार और कुरीति निवारणमें भी आप और आपके कुटुम्बी अग्रसर रहे हैं। आपने शुभ कार्यों पर होता हुआ मिथ्यात्व त्याग करानेमें बड़ा उद्योग किया था जिसमें सफलता भी प्राप्त की थी। तथा आप व आपके कुटुंबियोंने 'जैन विवाहविधि' के अनुसार विवाह करनेकी परिपाटी प्रचलित की थी।

इस विधानकी रचना करनेके बाद आपने अपनी आयु धर्म-ध्यानमें ही व्यतीत की थी और आपका स्वर्गवास ई० सन् १८८६ के जून मासमें ५२ सालकी आयुमें हुआ था।

सिद्धचक्रविधान करनेकी विधि।

यह विधान अष्टाह्निका (नंदीश्वर व्रत) के दिनोंमें अर्थात् कार्तिक, फाल्गुन या आषाढ़ सुदी ८ से १५ तक जिन मंदिरमे पंचमेरु स्थापन करके उसपर सिंहासन रखकर उसमें नंदीश्वरकी प्रतिमा स्थापन करके उसके आगे किया जाता है। तथा प्रतिमाजीके अग्र भागमें बृहत् सिद्धचक्र यंत्र जिसका चित्र इस विधानमें दिया हुआ है उसको चादीपर या तांबेपर खुदवाकर बिराजमान करना चाहिये। फिर उसके आगे एक बडी चौकीपर शुद्ध खद्दरका सफेद कपडा बिछाकर उसे कसकर बांध देवे, फिर उसपर रंगबिरंगे चावलों आदिसे सिद्धचक्र-का मांडना तैयार करना चाहिये। यह माडना ला० ब्रजकिशोर किसनलाल फीरोजाबादसे या दिगम्बर जैन पुस्तकालय–सूरतसे ७) में मिल सकेगा जो १॥ गज लंबा-चौडा व रंगबिरंगा बहुत ही सुंदर बना हुआ होता है। उसीकी नकल करके उसका चित्र भी हमने इस विधानमें दिया है। अत· इस नमूनेके माफिक मांडना तैयार करें।

यदि किसी कारणसे चावलोंका माडना तैयार न कर सकें तो उपरोक्त तैयार मांडना मंगाकर उसे ही बिछा देना चाहिये। इस मांडनेमें चारों ओर चार कलश स्थापन करने चाहिये व उसमें अष्टद्रव्य या पुष्प डाले जावें व ऊपर एक श्रीफल रखकर उसको लाल या केशरिया रंगके शुद्ध खद्दरके कपडेसे ढक कर शुद्ध लाल सूतसे कस देना चाहिये। बीचमें एक ठौना रखना चाहिये, उसमें सांथिया किया जावे व उस ठौनेमें स्थापना की जावे। यह स्थापना आठ दिन तक कायम रक्खी जावे व नित्य पूजनके प्रारम्भमे इसीमें स्थापना की जावे। यह मांडना

आठ दिन तक कायम रखना चाहिये। यदि कोई नित्य परिश्रम करके आठों दिन तक नित्य नया नया मांडना बना सके तो और भी अच्छा है।

पूजनकी द्रव्य मांडनेपर नहीं चढ़ानी चाहिये, परन्तु मांडनेके आगे बडा थाल रखकर उसमें ही द्रव्य चढ़ाया जावे। इस विधानमें प्रथम दिन प्रथम पूजामें आठ, दूसरे दिन दूसरी पूजामें १६, तीसरे दिन तीसरी पूजामें ३२, चौथे दिन चौथी पूजामें ६४, पांचवें दिन पांचवीं पूजामें १२८, छठे दिन छठी पूजामें २५६, सातवें दिन सातवीं पूजामें ५१२ व आठवें दिन आठवीं पूजामें १०२४ अर्घ जयमाल सहित देने होते है तथा नवमें दिन जाप्य, शांति, विसर्जन आदि होता है।

पूजन विधानमें पूजन करनेवाला व पूजन पढ़नेवाला एक एक खास आदमी ही ८ दिन तक कायम रहना चाहिये व उसे मन, वचन, कायकी शुद्धता पूर्वक शुद्ध वस्त्र–धोती, दुपट्टा पहनना चाहिये। वह सातो व्यसनोंका त्यागी हो तथा ८ दिन पूर्ण ब्रह्मचर्यसे रहे व एकाशन करे। पूजन करनेवाले, पढ़नेवाले १०–२० जितने भी आदमी पूजन करना या पढ़ना चाहें साथ२ या वारी२ से पढ सकते है। तथा जहांतक हो पूजन बाजेके साथ करना चाहिये ताकि देखनेवालोंको भी आनन्द आवे, व सबका ध्यान पूजनमे एकाग्रतासे तल्लीन रहे।

यह विधान प्रारम्भ करनेके पहिले १००००० एक लक्ष जाप्य 'अ सि आ उ सा नमः' इस मंत्र पूर्वक लवंगको अग्निमें क्षेपण करते हुए करना चाहिये। एक लाख जाप्य, एक नहीं तो अनेक आदमी आसनपर बैठकर शुद्ध वस्त्र पहनकर पूरे कर सकते हैं। पूजनके प्रारम्भमें नित्य नंदीश्वरकी प्रतिमा व सिद्धक्षेत्रकी प्रक्षाल, व अभिषेक

करना चाहिये। तथा विधानके प्रारम्भमें आठों दिन नित्य पूजा, सिद्ध पूजा, पंचमेरु पूजा, अष्टाह्निका पूजा करनी चाहिये। उसके बाद सिद्धचक्र विधानकी पूजा प्रारम्भ करें। सुदी ८ से १४ तक ८ पूजा पूर्ण करें, फिर नवमें दिन पूर्णाहुति करें, उस दिन होम-कुण्ड बनाकर उसमे "अ सि आ उ सा नमः" इस मंत्रकी १०००० आहुति अग्निमें देनी चाहिये। आहुतिका द्रव्य जैन विवाह विधिमें लिखे अनुसार तैयार करें। यह १०००० आहुति १० या अधिक आदमी बैठकर पूर्ण कर सकते हैं।

आहुति देनेके बाद समुच्चय चौबीसी जिनपूजा, गुरुपूजा, व सरस्वती पूजा करके मांडनेकी तीन प्रदक्षिणा सब नरनारी करें, उसके बाद शांति व विसर्जन करें, फिर प्रभावना करें, व होसके तो प्रीतिभोज भी करें। इस विधानकी समाप्तिके पहिले सरस्वती पूजनके समय मंदिरमे भण्डारके शास्त्र बाहर निकालकर वेदीके आगे चौकीपर विराजमान करने चाहिये तथा पूजन करनेवालोंको शास्त्रोंको एक २ वेष्टन शुद्ध खद्दरका चढाना चाहिये। आठों दिन प्रत्येक जयमालके समय सब नरनारियोंको एक २ श्रीफल चढाना चाहिये।

इस विधानकी समाप्तिके समय विधान करनेवालेको यथाशक्ति शास्त्रदान व विद्यादान भी अवश्य करना चाहिये तथा सिद्धचक्रका रंगीन मांडना व पूजनका ग्रन्थ मंदिरमें देना चाहिये।

आभार।

अन्तमें इस विधानको लिखवा देनेवाले, इस विषयक सूचनायें आवश्यक परिश्रमसे देनेवाले तथा कविवर संतलालजीका परिचय

प्राप्त करके भेजनेवाले सहारनपुर निवासी श्रीमान् लाला नारायणदास रूडामलजी सामियानावालोंके हम अत्यन्त आभारी हैं। तथा इस विधानकी विधि ठीक २ बतानेवाले श्रीमान् ब्र० सीतलप्रसाद जीका भी हम आभार मानना नहीं भूल सकते। अन्य दो चार पण्डितोंको इस विधानकी विधि लिख भेजनेको लिखा था, परन्तु किसीका उत्तर प्राप्त नहीं हुआ था, किन्तु श्रीमान् ब्रह्मचारीजीने खुद आकर सब विधि बतला दी थी जो ऊपर प्रगट की गई है।

इस विधिमे तथा विधानमें कहीं भूल चूक हो तो विद्वद्गण हमें अल्पज्ञ समझकर ठीक कर लें और उसकी सूचना हमे लिखें ताकि वे दूसरी आवृत्तिमें ठीक की जासकें।

इस पापप्रणाशक, पुण्यप्रकाशक सिद्धचक्रविधानका स्थान २ पर प्रचार हो यही हमारी हार्दिक भावना है। निवेदक—

वीर सं० २४६०
भादो वदी ४ मंगलवार
ता० २८-८-३४

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
—प्रकाशक।

× × ×

दूसरी आवृत्तिकी प्रस्तावना।

यह सिद्धचक्र विधान पाठ (भाषा) हमने ९ वर्ष हुए प्रथमवार प्रकट किया था जो बिक जानेपर इसकी यह दूसरी आवृत्ति प्रकट होनेकी आवश्यक्ता थी। प्रथम आवृत्तिमें दो तीन प्रतियोंसे मिलान करनेपर भी कई अशुद्धियां रह गई थीं जो हमको श्री० ब्र० सुन्दरलालजी आदि द्वारा पीछेसे मालूम हुई थीं अतः सूचना करनेपर ब्र० सुन्दरलालजीने हमें एक प्रति सुधारकर भेजी थी फिर उसमें और

श्री संशोधनकी आवश्यक्ता जानकर हमने इन्दौरके सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री० पं० मुन्नालालजी काव्यतीर्थ, जो इस विधानसे विशेष परिचित हैं और कईवार इस विधानको संस्कृत व भाषामें स्थान २ पर करा चुके हैं उनसे इसका संशोधन कराया और उसके बाद ही यह दूसरी आवृत्ति विशेष संशोधनपूर्वक प्रकट की जाती है।

यह विधान यथाविधि हो इसलिये श्री० पं० मुन्नालालजी काव्यतीर्थने इस विषयक एक निवेदन भी हमें लिख भेजा था जो आगे प्रकट किया जाता है। आशा है इस विधानको करनेवाले प्रत्येक महाशय आपकी सूचनाओंपर अवश्य ध्यान देवेंगे।

इस दूसरी आवृत्तिका संशोधन कर देनेवाले उपरोक्त पण्डितजीका तथा संशोधन होनेकी सूचना करनेवाले ब्र० सुन्दरलालजीका हम हार्दिक आभार मानते है।

जब प्रथम आवृत्ति शास्त्राकार प्रकट की गई थी तब यह दूसरी आवृत्ति पुस्तकाकार इसलिये प्रकट की जाती है कि इसके कोई भी पन्ने गुम होनेका भय न हो।

महायुद्धके कारण कागजकी आठ दश गुनी मंहगी और अकाल होनेपर इसवार ५०० प्रतियां ही निकाली गई है तथा मूल्य अधिक न बढाकर दो के स्थानपर नाईलाज ३) करने पडे है। आशा है इस दूसरी आवृत्तिका भी शीघ्र ही प्रचार हो जायगा।

सूरत वीर सं० २४६९
वैशाख सुदी ३
ता० ७-५-४३

निवेदक—
मूलचन्द किसनदास कापडिया,
—प्रकाशक।

श्री सिद्धचक्रविधान यथाविधि करें।

गृहस्थ जीव अपने अशुभ कर्मोंके रसको नष्ट करने और शुभ कर्मोंके रसमें वृद्धि करनेके लिये जिनपूजनादि विधानोंका विधान करता है। यदि सभी विधान यथाविधि किये जांय तो उनका सुफल जरूर होता है। देखा जाता है कि बहुतसे भाई विधिके अन्दर तो शिथिलता बतलाते है, अपनी शक्तिको छिपाकर नियमानुसार अपनी वृत्ति बनाते नहीं और विधान करते हुए भावना ऐसी रखते हैं कि हमारी अमुक तरहकी आपत्ति दूर हो जाय। जब उनकी कामनाकी पूर्ति नहीं होती तो ऐसा कहने लगते हैं कि अमुक विधानमें कोई दम नहीं, हमने तो इतने दिन किया पर हमें कोई सफलता मिली नहीं। ऐसा कहनेवाले भाइयोंसे मेरा एक प्रश्न है कि जिस हारकी कीमत १ लाख रुपया हो, यदि हमारे पास इतना रुपया न हो तो हमारी रुचिके अनुसार वह हार हमें मिल सकता है या नहीं? यदि नहीं तो उसका क्या हेतु है? ठीक, इसी प्रकार यहां भी समझना चाहिये।

सिद्धचक्र मंडल, ऋषिमण्डल, सहस्रनाम मंडलादि विधान महान हैं। इनमें मुक्ति तक दिलानेकी शक्ति है तो सांसारिक विभूतिकी तो बात ही क्या है? इसके लिये मनुष्यमें इन्द्रिय दमन, कषाय शमन और उत्साह रखते हुए लोभका त्याग होना चाहिये। ब्रह्मचर्यका पालन नवधा होना चाहिये। खान पान यथाशास्त्र होना चाहिये। जितने दिन इन विधानोंको करे, एकांत स्थानमें रहे, धर्म-

ध्यान स्वाध्यायादि शुभ उपयोगमें वर्तें। मंत्रोंके उच्चारणमें पूर्ण सावधानी रक्खे। आसन–दिशा–पल्लव–काल आदिका यथोचित उपयोग करे तो बराबर सिद्धि प्राप्त कर सकता है।

इन बातोंको ध्यानमें रखकर ही अष्टाह्निका पर्वमें इस विधानका प्रारम्भ करनेवाला भाई अपने मनोभिलषित कामनाकी पूर्ति जरूर कर सकता है इसमें सन्देहको जरा भी स्थान नहीं है।

जपन करनेका विधान।

विधान करनेके साथ साथ जहांतक संभव हो स्वयं जपन जरूर करे या किसी सुयोग्य वृत्ति रखनेवाले साधर्मी भाईसे करावे। जपनकी संख्या कमसे कम ८ हजार और ज्यादासे ज्यादा सवा लाख हो। जपन शुभ मुहूर्तमें प्रारम्भ करे। पूर्ण होनेपर जपनकी संख्याके दशमांससे शांतिविधान करे या करावे।

जपन करनेके पहिले प्रतिष्ठा शास्त्रोंमें लिखित मंत्रों द्वारा जहां जपन करे उस जगहकी शुद्धि व उस क्षेत्रके रक्षक देवकी आज्ञा प्राप्त करनेकी विधि जरूर करे, बादमे सामने पाटा या चौकी रखकर धूपाडेमें अग्नि व एक शुद्ध घीका जलता हुआ दीपक–धूप–कपूर रखकर पहिले **सकलीकरण** विधान करके अंग व वस्त्रशुद्धि करे। बादमें यज्ञोपवीत धारण कर **मंगलाष्टकसे** मंगल कामना करें।

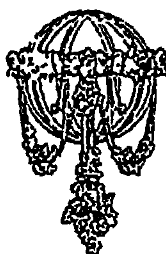
फिर एक सफेद शुद्ध कलशमें हल्दी सुपारी धनिया–आदि मंगलीक द्रव्य रखकर ऊपरसे नरियल और चोल या पीला वस्त्र पञ्चवर्ण

सूत्रसे बांधकर जपन करनेकी संख्याका उच्चारण कर प्रथक् चौकीपर जिसपर कि पहिलेसे ही सफेद चावलोंके ऊपर कंकुसे स्वस्तिक बना रक्खा हो उस कलशको रख देवे और फिर सफेद सूतकी माला या मूंगाकी माला अथवा स्फटिक मणिकी माला लेकर पद्मासन या खर्गासन (अर्द्ध पद्मासन) से बैठकर जपन शुरू करे। हरएक स्वाहाके साथ धूप खेता जाय। जपन सुबह शाम दोनों संध्याओंमें करना चाहिये।

यदि मण्डल पूजन करनेवाला ही जपन करे तो बहुत ही अच्छा है। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है कि जितने दिन पूजन हो, पूजकको उतने दिनों तक तमाम आरम्भादिक पापकार्योंसे दूर रहना चाहिये तो जपनपूर्वक पूजन करनेमें कोई बाधा उपस्थित नहीं हो सकती।

निवेदकः—

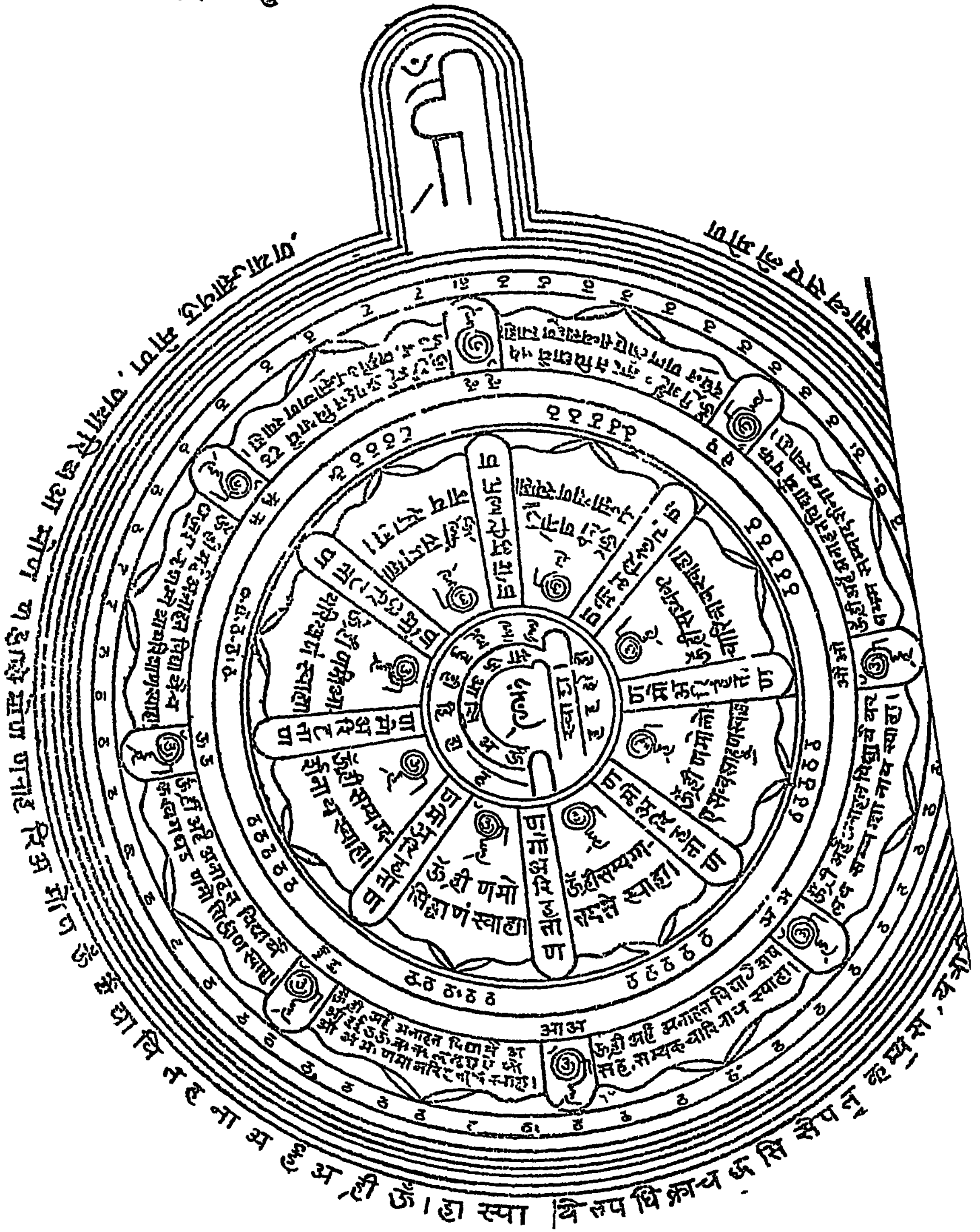
(पं०) मुन्नालाल जैन काव्यतीर्थ, इन्दौर।



विषय-सूची ।



श्री बृहत् सिद्धचक्र यंत्र।



॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

कविवर पं० सन्तलालजी कृत—

श्री सिद्धचक्रविधान।

मङ्गलाचरण।

दोहा।

जिनाधीश शिवईश नमि, सहस गुणित विस्तार।
सिद्धचक्र पूजा रचों, शुद्ध त्रियोग समार ॥ १ ॥
नीत्याश्रित धनपति सुधी, शीलादिक गुन खान।
जिनपद अम्बुज भ्रमर मन, सो प्रशस्त यजमान ॥ २ ॥
देश काल विधि निपुणमति, निर्मल भाव उदार।
मधुर बैन नयना सुघर, सो याजक निरधार ॥ ३ ॥
रत्नत्रय मंडित महा, विषय कषाय न लेश।
संशय हरण सुहित करन, करत सुगुरु उपदेश ॥ ४ ॥

छप्पय छन्द।

निर्मल मंडप भूमि दरब, मंगल करि सोहत।
सुरभ सरस शुभ पुष्प जाल, मंडित मन मोहत ॥
यथा योग्य सुन्दर मनोग्य, चित्राम अनूपं।
दीरघ मोल सुडोल, बसन झखझोल सरूपं ॥
हो वित्तसार प्रासुक दरब, सर्व अंग मनको हरै।
सो महाभाग आनंद सहित, जो जिनेन्द्र अर्चा करे ॥५॥

स्थापना ।

दोहा ।

सुर मुनि मन आनन्द करि, ज्ञान सुधारस धार ।
सिद्धचक्र सो थापहूं, विधि दव जल उनहार ॥ ६ ॥

अडिल्ल ।

अर्हं शब्द प्रसिद्ध अर्द्ध मात्रिक कहा,
अकारादि स्वर मंडित अति शोभा लहा ।
अति पवित्र अष्टांग अर्घ करि लायके,
पूर्व दिशी पूजो अष्टांग नमायके ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः पूर्वदिशि अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये नमः पूर्वदिशि अर्घं निर्वपामि स्वाहा ।

सोरठा ।

वर्ण कवर्ग महान, अष्ट पूर्व विधि अर्घ ले ।
भक्ति भाव उर ठान, पूजों हो आग्नेय दिश ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं क ख ग घ ङ अनाहतपराक्रमाये अग्निदिशायै अर्घ नि० स्वाहा ।

वर्ण चवर्ग प्रसिद्ध, वसुविधि अर्घ उतारिके ।
मिलि है वसुविधि रिद्ध, दक्षिण दिश पूजा करों ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं च छ ज झ ञ अनाहतपराक्रमाये दक्षिणदिशायै अर्घं नि० स्वाहा ।

वर्ण टवर्ग प्रशस्त, जलफलादि शुभ अर्घ ले ।
पाऊँ सबविधि स्वस्ति, नैऋत्य दिशि अर्चा करों ॥१०॥

ॐ ह्रीं अर्हं ट ठ ड ढ ण अनाहतपराक्रमायै नैऋत्यदिशायै अर्घं नि० स्वाहा

वर्ण तवर्ग मनोग, यथायोग्य कर अर्घ धरि ।
मिलि है सब शुभ योग, पूजन करि पश्चिम दिशा ॥११॥

ॐ ह्रीं अर्हं त थ द ध न अनाहतपराक्रमायै पश्चिमदिशायै अर्घं नि० स्वाहा ।

वर्ण पवर्ग सुभाग, करूँ आरती अर्घ ले ।
सबविधि आरति त्याग, वायव दिशि पूजा करों ॥१२॥

ॐ ह्रीं अर्हं प फ ब भ म अनाहतपराक्रमायै वायव्यदिशायै अर्घं नि० स्वाहा ।

वर्ण यवर्गी सार, दर्वे अर्घ वसु द्रव्य करि ।
भाव अर्घ उर धार, उत्तर दिशि पूजा करों ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं य र ल व अनाहतपराक्रमायै उत्तरदिशायै अर्घं नि० स्वाहा ।

शेष वर्ण चउ अन्त, उत्तम अर्घ बनाइके ।
नशे कर्म वसु मंत, पूजों हो ईशान दिशि ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श ष स ह अनाहतविद्यायै नमः ईशानदिशायै अर्घं नि० स्वाहा ।

छप्पय छन्द ।

ऊरध अधो सुरेफ सु बिंदु हंकार विराजे,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे ।
वर्गन पूरित वसुदल अम्बुज तत्व संधि धर,
अग्रभागसे मंत्र अनाहत सोहत अतिवर ॥

फुनि अति ह्रीं वेढ्यो परम, स्वर ध्यावत अरि नागको।
है केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो ॥१५॥

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा ।

सूक्ष्मादिक गुण सहित हैं, कर्म रहित निःरोग।
सकल सिद्धि पूजों सदा, मिटै उपद्रव योग ॥

इति यंत्र स्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथाष्टकं ।

चाल नन्दीश्वर द्वीपकी ।

शीतल शुभ सुरभि सु नीर, कंचन कुम्भ भरो।
पाऊं भवसागर तीर, आनन्द भेंट धरो ॥
अन्तरगति अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसमत्त-णाणं दंसण वीर्यं सुहमंतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वाहं अष्ट-गुणसंयुक्ताय जलं ॥ १ ॥

चन्दन तुम वंदन हेत, उत्तम मान्य गिना।
नातर सब काष्ट समेत, ईंधन ही थपना ॥
अन्तरगति अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसमत्त-णाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अव्वाबाहं अष्टगुणसंयु-क्ताय चन्दनं ॥ २ ॥

दीरघ शशि किरण समान, अक्षत ल्यावत हूं ।
शशिमंडल सब बहुमान, पूज रचावत हूं ॥
अन्तरिगति अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत हैं ।
नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल बिराजत हैं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसमत्तणाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं अष्टगुण-संयुक्ताय अक्षत ॥ ३ ॥

तुम चरणचंद्रके पास पुष्प धरें सोहैं ।
मानूं नक्षत्रनकी रास, सोहत मन मोहैं ॥
अन्तरिगति अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत हैं ।
नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल बिराजत हैं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं नमोसिद्धाणं०, पुष्पं ॥ ४ ॥

उत्तम नेवज बहु भाय, सरस सुधा साने ।
अहिमिन्द्रन मन ललचाय, नक्षण उमगाने ॥
अन्तरिगति अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत हैं ।
नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल बिराजत हैं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं० नैवेद्यं ॥ ५ ॥

फैली दीपनकी जोति, अति परकाश करै ।
जिम स्यादवाद उद्योत, संशय तिमिर हरै ॥

अंतरिगति अष्ट सरूप गुणमई राजत हैं ।
नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्री सम्मत्त-णाणदंसणवीर्यसुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं अष्टगुण-संयुक्ताय दीपं ॥ ६ ॥

धरि अग्नि धूपके ढेर, गंध उड़ावत हूं ।
कर्मोका धूप बखेर, ठोक जरावत हूं ॥
अन्तरिगति अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत हैं ।
नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत है ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं० धूपं ॥ ७ ॥

जिन धर्म वृक्षकी डाल, शिवफल सोहत हैं ।
इम शुभ फल कञ्चन थाल, भविजन मोहत हैं ॥
अन्तरिगति अष्ट स्वरूप. गुणमई राजत हैं ।
नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत है ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं० फलं ॥ ८ ॥

करि दर्व अर्घ वसु जात, याते ध्यावत हूं ।
अष्टांग सुगुण विख्यात, तुम ढिग पावत हूं ॥
अंतरिगति अष्ट सरूप, गुणमई राजत हैं ।
नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत है ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्री समत्त-णाणदंसणवीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं अष्ट-गुणसंयुक्ताय अर्घ ।

गीताछन्द ।

निर्मल सलिल शुभवास चन्दन, धवल अक्षतयुत अनी ।
शुभ पुष्प मधुकर नितरमें, चरु प्रचुर स्वाद सुविधि घनी ॥
करि दीपमाल उजाल धूपायन, रसायन फल भलै ।
करि अर्घ सिद्ध समूह पूजन, कर्म दल सब दलमलै ॥१॥
ते कर्मवर्त नशाय युगपति, ज्ञान निर्मलरूप है ।
दुख जन्म टाल अपार गुण, सूक्षम सरूप अनूप है ॥
कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अछेद शिव कमलापती ।
मुनि ध्येय सेय अभेय चहुंगुण, ज्ञेय द्यो हम शुभमती ॥२॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये नमः सम्मत्तणाणादि अट्ठगुणाणं अनर्घपदप्राप्ताय महार्घम् ।

अथ अष्टगुण अर्घ ।

चौपाई ।

मिथ्या त्रिय चउ आदि कषाया, मोहनाश छायक गुण पाया ।
निज अनुभव प्रत्यक्ष सरूपा, नमूं सिद्ध समकित गुणभूपा ॥१॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वाय नमः अर्घ ॥ १ ॥

सकलत्रिधा षट्द्रव्य अनन्ता, युगपत जानत हैं भगवंता ।
निर आवरण विशद स्वाधीना, ज्ञानानन्द परम रस लीना ॥२॥

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानाय नमः अर्घ ॥ २ ॥

चक्षु अचक्षु अवधि विधि नाशी, केवल दर्श जोति परकाशी ।
सकल ज्ञेय युगपत अवलोका, उत्तम दर्श नमूं सिद्धोंका ॥३॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाय नमः अर्घं ॥ ३ ॥

अन्तराय विधि प्रकृति अपारा, जीवशक्ति घाते निरधारा ।
ते सब घात अतुल बल स्वामी, रमत अखेद सिद्ध प्रणमामी ॥४॥

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्याय नमः अर्घं ॥ ४ ॥

रूपातीत मन इन्द्रिय नाहीं, मनपर्यय हू जानत नाहीं ।
अलख अनूप अमित अधिकारी, नमूं सिद्ध सूक्षम गुणधारी ॥५॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः अर्घं ॥ ५ ॥

एक छेत्र अवगाह स्वरूपा, भिन्न भिन्न राजै चिद्रूपा ।
निज परघात विभाव विडारा, नमूं सुहित अवगाह अपारा ॥६॥

ॐ ह्रीं अवगाहनाय नमः अर्घं ॥ ६ ॥

परकृत ऊंच नीच पद नाहीं, रमत निरंतर निजपदमांहीं ।
उत्तम अगुरुलघू गुण भोगी, सिद्धचक्र ध्यावै नित योगी ॥७॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वात्मकजिनाय नमः अर्घं ॥ ७ ॥

नित्य निरामय भवभय भंजन, अचल निरंतर शुद्ध निरंजन ।
अव्याबाध सोई गुण जानो, सिद्धचक्र पूजन मन मानो ॥८॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधाय नमः अर्घं ॥ ८ ॥

यहां १०८ वार ॐ ह्री अर्हं असिआउसा नमः मंत्रका जाप करे ।

अथ जयमाला ।

दोहा ।

जग आरत भारत महा, गारत करि जय पाय ।
विजय आरती तिन कहूं, पुरुषारथ गुण गाय ॥ १ ॥

पद्धरी छन्द।

जयकरण कृपाण सुप्रथमवार, मिथ्यात सुभट कीनो प्रहार।
दृढ़ कोट विपर्यय मति उलंघि, पायो समकित थल थिर अभङ्ग ॥१॥
रवै पर विवेक अंतर पुनीत, स्वै रुचि वरतायो राजनीत।
जग विभव विभाव असार एह, स्वातम सुखरस विपरीत देह ॥२॥
तिन नाशन लीनो दृढ संभार, शुद्धोपयोग चित चरण सार।
निर्गंथ कठिन मारग अनूप, हिंसादिक टारण सुलभ रूप ॥३॥
द्वयवीस परीसह सहन वीर, वहिरंतर संयम धरण धीर।
द्वादश भावन दश भेद धर्म, विधि नाशन बारह तपसु पर्म ॥४॥
शुभदयाहेत धरि समिति सार, मन शुद्धकरण त्रिय गुप्ति धार।
एकाकी निर्भय निर सहाय, विचरो प्रमत्त नाशन उपाय ॥५॥
लखि मोहशत्रु परचंड जोर, तिम हनन शुकल दल ध्यान जोर।
आनन्द वीररस हिये छाय, क्षायक श्रेणी आरम्भ थाय ॥६॥
बारम गुण थानक ताहि नाश तेरम पायो निजपद प्रकाश।
नव केवललब्धि विराजमान, दैदीप्यमान सोहे सुभान। ७॥
तिस मोह दुष्ट आज्ञा एकांत, थी कुमति स्वरूप अनेक भांति।
जिनवाणी करि ताको विहंड, करि स्याद्वाद आज्ञा प्रचंड। ८॥
वरतायो जगमें सुपलि रूप, भविजन पायो आनन्द अनूप।
थे मोह नृपति दुखकरण शेष, चारों अघातिया विधि विशेष ॥९॥
है नृपति सनातन रीति एह, अरि विमुख न राखे नाम तेह।
यों तिन नाशन उद्यम सु ठानि, आरंभ्यो परम शुकल सु ध्यान ॥१०

तिस बलकरि तिनकी थिति विनाश, पायो निर्भय सुखनिधि निवास।
यह अक्षय जीति लई अबाधि, पुनि अंश न व्यापो शत्रु बाध॥११॥
शास्वत स्वाश्रित सुखश्रेय स्वामि, है शांति मंत तुमकर प्रणाम।
अंतिम पुरुषार्थ फल विशाल, तुम विलसो सुखसौं अमित काल।१२

ॐ ह्रीं सम्मत्तणाणादिअट्ठगुणसंजुत्तसिद्धेभ्यो महार्घ निर्वपामीति स्वाहा॥ १२ ॥

घत्ता।

परमभय विदूरित पूरित सर्वसुख समय सार चेतनरूपा।
नानाप्रकार विकार हते सब टार लसै सब गुण भूपा॥
ते निरावर्ण निर्देह निरूपम सिद्धचक्र परसिद्ध जजूं।
सुर मुनि नित ध्यावे आनन्द पावे मै पूजत भवभार भजूं॥

इत्याद्याशीर्वाद।

॥ इति प्रथम पूजा सम्पूर्णम॥

अथ द्वितीय पूजा।

छप्पै छन्द।

ऊरध अधो सफेद विंदु हंकार विराजे,
अकारादि स्वर्लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे।
वर्गनिपूरित वसुदल अम्बुज तत्व संधिधर,
अग्रभागमें मंत्र अनाहित सोहत अतिवर॥
फुनि अन्त ही वेढ्यो परम सुर, ध्यावत ही अरिनागको।
है केहरिसम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नमोसिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः सोलहगुण-सँयुक्ताय अतरावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

दोहा।

सूक्ष्मादि गुण सहित हैं, कर्म रहित निररोग।
सिद्धचक्र सो थापहूं, मिटै उपद्रव जोग॥ २॥

अथाष्टकं।

गीत छन्द।

हिमशैल धवल महान कठिन पाषाण तुम जस भासतें,
शरमाय अरु सकुचाय द्रढ वह वही गंगा तासतें।
सम्बन्ध योग चितार चित भेटार्थ झारीमें भरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं॥

ॐ ह्रीं नमोसिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसमत्त-णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वाबाहं सोलह गुणसंयुक्ताय जलं।

काश्मीर चंदन आदि अन्तर बाह्य बहुविधि तप हरै,
यह कार्य कारण लखि नमित मम भाव बहु उद्यम करै।
मैं हूं दुखी भवतापसे घसि मलय चरनन ढिग धरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं॥

ॐ ह्रीं नमोसिद्धाणं श्रीसिद्धपमेष्ठिभ्यो नमः श्री समत्त णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं सोलहगुणसंयुक्ताय चन्दनं।

सौरभ चमक जिस गह न मक्र अम्बुज वसे सरतालमें,
शशि गगन वस नित होत कृश अहिनिश भ्रमे इस ख्यालमें ।
सो अक्षतौघ अखण्ड अनुपम पुंज धरि सन्मुख धरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं ॥अक्षतं॥
जग प्रगट काम सुभट विकट कर हट करत जिय घट जगा,
तुम शील कटक सु घट निकट सरचाप पटक सुभट भगा ।
इह पुष्प राशि सुवास तुम ढिग कर सुयश वह उच्चरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं ॥पुष्पं॥ ४ ॥
जीवन मतावत जाहि अघावत क्षुधा डाइनसी बनी ।
सो तुम हनी तुम ढिग न आवत जान यह विधि हम ठनी ॥
नैवेद्यके संकेत करि निज क्षुधानाशन विधि वरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं ॥ नैवेद्यं ॥५
मैं मोह अन्ध अशक्य अरि यह मिष्ट भववन है महा,
ऐसे छलेको ज्ञानदुति विनपार निवरण हो कहा ।
सो ज्ञान चक्षु उघार स्वामी दीप ले पाइन परूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं ॥ दीपं ॥६॥
प्राशुक सुगंधित द्रव्य सुन्दर दिव्य घ्राण सुहावनो,
धरि अग्नि दश दिश वास पूरित ललित धूम्र सुहावनो ।
तुम भक्तिभाव उमंग करत प्रसंग धूप सु विस्तरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं धूपं ॥ ७ ॥
चित हरन अचित सुरंग रस पूरित विविध फल सोहने,
रसना लुभावन कल्पतरुके सुर असुर मन मोहने ।

भरि थाल कंचन भेट धरि संभार फल त्रिष्णा हरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं । फलं ॥ ८ ॥
शुभनीर वर काश्मीर चन्दन धवल अक्षत युत अनी,
वर पुष्पमाल विशाल चरु सुरशाल दीपक दुति मनी ।
वर धूप पक्क मधुर सुफल लै अघ अठ विधि संचरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं ॥ अर्घ ॥ ९ ॥

गीताछन्द ।

निर्मल सलिल शुभवास चन्दन धवल अक्षत युत अनी,
शुभ पुष्प मधुकर नित रमें चरु प्रचुर स्वाद सुविधि घनी ।
करि दीपमाल उजाल धूपाइन रसायन फल भले,
करि अर्घ सिद्ध समूह पूजत कर्मदल सब दलमले ॥
ते कर्मवर्त नशाय युगपत ज्ञान निर्मलरूप है,
दुख जन्म टाल अपार गुण सूक्षम सरूप अनूप है ।
कर्माष्ट विन त्रैलोक्य पूज्य अछेद शिव कमलापती,
मुनि ध्येय सेय अभेय चहुंगुण ज्ञेय द्यौ हम शुभमती ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धचक्राधिपतये नमः संमत्तणाणादि अठ्ठ गुणाणं महार्घ ।

अथ सोलह गुण सहित अर्घ ।

त्रोटक छन्द

दर्शन आवर्णी परकरत हनी, अतिथं अवलोक सुभावतनी ।
इक साथ समान लखो सब ही, नमूं सिद्ध अनंत द्रगन अब ही ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाय नमः अर्घ ।

विधि ज्ञानावर्ण विनाश कियो, निज ज्ञान स्वभाव विकाश लियो ।
समयांतर सर्व विशेष जनों, नमूं ज्ञान अनंत सु सिद्ध तनों ॥२॥

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानाय नमः अर्घ्यं ।

सुख अमृत पीवत खेद न हो, जिन भाव विराजत खेद न हो ।
असमान महाबल धारत हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥३॥

ॐ ह्रीं अतुलवीर्याय नमः अर्घ्यं ।

विपरीति ये भीत पराजितता, अतिरिक्त धरे न करें थिरता ।
परकी अभिलाप न सेवत हैं, निज भाविक आनन्द वेवत हैं ॥४॥

ॐ ह्रीं अनन्तसुखाय नमः अर्घ्यं ।

निज आत्म विकाशक बोध लह्यो, भ्रमको परवेश न लेश कह्यो ।
निजरूप सुधारस मग्न भये, हम सिद्धन शुद्ध प्रतीति नये ॥५॥

ॐ ह्रीं अनन्तसम्यक्त्वाय नमः अर्घ्यं ।

निज भाव विडार विभावन हो, गमनादिक भेद विकारन हो ।
निज थान निरूपम नित्य वसे, नमूं सिद्ध अनाचल रूप लसे ॥६॥

ॐ ह्रीं अचलाय नमः अर्घ्यं ।

चौपाई ।

गुणपर्यय परणतिके भेद, अति सूक्षम असमान अछेद ।
ज्ञान गहे न कहै जड बैन, नमो सिद्ध सूक्षम गुण ऐन ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं अनन्तसूक्ष्माय नमः अर्घ्यं ।

जन्म मरण युत धरे न काय, रोगादिक संक्लेश न पाय ।
नित्य निरंजन निर अविकार, अव्याबाध नमो सुखकार ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधाय नमः अर्घ्यं ।

एक पुरुष अवगाह अनंत, राजत सिद्ध समूह अनन्त ।
एकमेक बाधा नहिं लहैं, भिन्न भिन्न निजगुणमें रहैं ॥ ९ ॥

ॐ ह्री अवगाहनाय नमः अर्घं ।

काययोग पर्यापति प्रान, अनवधि छिन छिन होवे हान ।
जरा कष्ट जग प्रानी लहै, नमों सिद्ध यह दोष न सहै ॥१०॥

ॐ ह्रीं अजराय नमः अर्घं ।

काल अकाल प्राणको नाश, पावे जीव मरणकी त्रास ।
तासौं रहित अमर अधिकार, सिद्ध समूह नमूं सुखकार ॥११॥

ॐ ह्रीं अमराय नमः अर्घं ।

गुण गुण प्रति है भेद अनन्त, यो अथाह गुण युत भगवन्त ।
है परमाण अगोचर तेह, अप्रमेय गुण वंदूं एह ॥१२॥

ॐ ह्रीं अप्रमेयाय नमः अर्घं ।

भुजगप्रयात् छन्द ।

अनूकर्मतें फर्स वर्णादि जानो,
किसी एक वीशेषको किं प्रमानो ।
पराधीन आवर्ण अज्ञान त्यागी,
नमूं सिद्ध अत्येन्द्रिय ज्ञान भागी ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियोत्सवाय नमः अर्घं ।

त्रिधा भेद भावित महा कष्ट कारै,
रमण भावसो आकुलित जीव सारै ।
निजानन्द रमणीय शिवनार स्वामी,
नमो पुरुष प्राकृत सवै सिद्धनामी ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं अवेदाय नमः ।

विशेषं सकल चेतना धार मांही,
भले लैं भली विधि रहो भेद नाहीं।
तथा हीन अधिकायको भाव टारी,
नमो सिद्ध पूरण कला ज्ञान धारी ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं अभेदाय नमः अर्घ ।

निजानन्दरस स्वादमें लीन अंता,
मगन हो रहे राग वर्जित निरंता।
कहांलों कहूं आपका पार नाहीं,
धरो आपको आप ही आपमाही ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं निजाधीनजिनाय नमः अर्घ ।

यहां १०८ बार जाप देना चाहिये ।

दोहा ।

पंच परम परमात्मा, रहित कर्मके फंद ।
जगत प्रपंच रहित सदा, नमों सिद्ध सुखकंद ।

अथ जयमाला ।

त्रोटक छन्द ।

दुखकारन द्वेष विडारन हो, वश डारन राग निवारन हो ।
भवितारन पूरण कारण हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो ॥१॥
समयामृत पूरित देवमही, पर आकृत मूरति लेश नहीं ।
विपरीत विभाव निवारन हो, सब सिद्ध नमो सुखकारन हो ॥२॥
अखिना अभिना अछिना सुपरा, अभिदा अखिदा अलनाशवरा।
यमजाम जरा दुखजारन हो, सब सिद्ध नमो सुखकारन हो ॥३॥

निर आश्रित स्वाश्रित वासित हो, परकाशित खेद विनाशित हो।
विधि धारन हारन पारन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो ।४॥
असुधा अछुधा अद्विधा अत्रिधं, अकुधा सुसुधा सुबुधा सुसिधं।
विधि पारन जारन हारन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो ॥५॥
शरनं चरनं वरनं करनं, धरनं चरनं मरनं हरनं।
तरनं भव वारिधि तारन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो ॥६॥
भववास पगास विनाशन हो, दुखरास विनाश हुताशन हो।
निज दासन त्रास निवारन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो ॥७॥
तुम ध्यावत शाश्वत व्याधि दहै, तुम पूजत ही पद पूजि लहै।
शरणागत संत उभारन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो ॥८॥

दोहा।

सिद्धवर्ग गुण अगम है, शेष न पावें पार।
हम किह विधि वरणन करें, भक्ति भाव उर धार ॥९॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनज्ञानादि शोडषगुणयुक्तसिद्धेभ्यो महार्घं।

इति द्वितीय पूजा सम्पूर्णम।

अथ तृतीय पूजा बत्तीस गुणसहित।

छप्पय छन्द।

ऊरध अधो सुरेफ सु बिंदु हकार बिराजे,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अंत सु छाजै।
वर्गन पूरित वसुदल अम्बुज तत्व संधिवर,
अग्रभागमें मंत्र अनाहत सोहत अतिवर।।

फुनि अति ही वैढ्यो परम, स्वर व्यावत अरि नागको।
केहरि मम पूजन निमित्त, सिद्धचक्र मंगल करो ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिने बत्तीसगुणसहित विराजमान अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सान्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

दोहा।

सूक्ष्मादि गुण सहित है, कर्म रहित निःरोग।
सकल सिद्ध सो थापहूं, मिटे उपद्रव योग ॥

इति यंत्रस्थापनं।

अथाष्टकं।

'प्रभु पूजोरे भाई' इस चालमें।

तुम पूजोरे भाई, सिद्धचक्र बत्तीस गुण, तुम पूजोरे भाई।
भवत्रासित आकुलित रहे, भवि कठिन मिटन दुखताई ॥
विमल चरण तुम सलिल धार दे, पायो सहज उपाई।
तुम पूजोरे भाई ॥ सिद्धचक्र बत्तीसगुण, तुम०।

ॐ ह्रीं नमोसिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्त णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं बत्तीस-गुणसंयुक्ताय जन्मजरारोगविनाशनाय जलं ॥ १ ॥

जगवंदन परसत पद चन्दन, महाभाग उपजाई।
हरिहर आदि लोकवर उत्तम, कर धर शीश चढाई ॥
तुम पूजोरे भाई ॥ सिद्धचक्र बत्तीस गुण, तुम०।

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्त णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं बत्तीसगुणसंयुक्ताय संसारतापविनाशनाय चन्दनं० ॥ २ ॥

शिवनायक पूजन लाइक हैं, यह महिमा अधिकाई ।
अक्षयपद दायक अक्षय यह, सांचो नाम धराई ॥
तुम पूजोरे भाई ॥ सिद्धचक्र बत्तीस गुण, तुम० ।

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने श्रीसमत्तणाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं बत्तीसगुणसंयुक्ताय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं ॥ ३ ॥

कामदाह अति ही दुखदायक, मम उरसे न टराई ।
ताहि निवारण पुष्प भेट धरि, मांगू वर शिवराई ॥
तुम पूजोरे भाई ॥ सिद्धचक्र बत्तीस गुण, तुम० ॥

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने श्रीसमत्तणाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वाबाहं बत्तीसगुणसंयुक्ताय कामबाणविनाशनाय पुष्पं ॥ ४ ॥

चरुवर प्रचुर क्षुधा नहीं मेटे, पूर परो इनताई ।
भेट करत तुम इनहूं न भेटूं, रहूं चिरकाल अघाई ॥
तुम पूजोरे भाई ॥ सिद्धचक्र बत्तीस गुण, तुम० ॥

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने श्रीसमत्तणाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं बत्तीसगुणसंयुक्ताय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दिव्य रत्न इस देश कालमें, कहै कौन है नाई।
तुम पद भेट दीप प्रगटा यह, चिंतामणि पद पाई॥
तुम पूजोरे भाई॥ सिद्धचक्र बत्तीस गुण, तुम०॥

ॐ ह्रीं नमोसिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने श्रीसमत्तणाणदंसण वीर्यसुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वाबाहं बत्तीसगुणसंयुक्ताय मोहांधकारविनाशनाय दीपं॥ ६॥

धूप हुताशन वासनमें धर, दस दिश वास बसाई।
तुम पद पूजत या विधि वसु विधि, ईंधन जर हो छाई॥
तुम पूजोरे भाई॥ सिद्धचक्र बत्तीस गुण, तुम०॥

ॐ ह्रीं नमोसिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्तणाणदंसण वीर्यसुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं बत्तीसगुणसंयुक्ताय अष्टकर्मदहनाय धूपं॥ ७॥

सर्वोत्तम फल द्रव्य ठान मन, पूजूं हूं तुम पाई
जासौं जजें मुक्तिपद पइये, सर्वोत्तम फलदाई॥
तुम पूजोरे भाई॥ सिद्धचक्र बत्तीस गुण, तुम०॥

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिने श्री सम्मत्तणाणदंसण वीर्यसुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं बत्तीसगुणसंयुक्ताय मोक्षफलप्राप्तये फलं॥ ८॥

वसुविधि देऊं अर्घ तुम मम द्यो, वसुविधि गुण सुखदाई।
जासु पाय वसु त्रास न पाऊं, सन्त कहे हर्षाई॥
तुम पूजोरे भाई॥ सिद्धचक्र बत्तीस गुण, तुम०॥

ॐ ह्रीं नमोसिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने श्रीसमत्तणाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं बत्तीसगुणसंयुक्ताय सर्वसुखप्राप्तये अर्घं ॥ ९ ॥

गीता छन्द।

निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन धवल अक्षतयुत अनी,
शुभ पुष्प मधुकर नित रमें चरु प्रचुर स्वादसु विधि घनी।
वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भलै,
करि अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्मदल सब दलमलै ॥
ते कर्मवर्त्त नसाय युगपत्, ज्ञान निर्मल रूप है,
दुख जन्म टाल अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप है।
कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अछूज शिव कमलापती,
मुनि ध्येय सेय अभेय चाहूं, गुण गेह द्यो हम शुभ मती ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धचक्राधिपतये नमः संमत्तणाणादि अष्टगुणाणं महार्घं।

अथ बत्तीस गुण सहित अर्घ।

पद्धडी छन्द।

चेतन विभाव पुद्गल विकार, है शुद्ध बुद्ध तिस निमित टार।
दृगबोध सुरूप सुभाव एह, नमूं साध चेतना सिद्ध देह ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं शुद्धचेतनाय नमः अर्घं ॥ १ ॥

मति आदि भेद त्रिविछेद कीन, छायक विशुद्ध निज भाव लीन।
निरपेक्ष निरन्तर निर्विकार, नमूं शुद्ध ज्ञानमय सिद्ध सार ॥२॥

ॐ ह्रीं शुद्धज्ञानाय नमः अर्घं।

सर्वांग चेतना व्यक्तरूप, तुम हो चेतन व्यापक सरूप ।
परलेश न निज परदेश मांहि, नमूं शुद्ध सिद्ध चिद्रूप ताहि ॥३॥

ॐ ह्रीं शुद्धचिद्रूपाय नमः अर्घ ।

अन्तरविधि उदय विपाक टार, तुम जातिभेद बाहिज विडार।
निज परिणतिमें नहिं लेश शेष, नमूं शुद्धरूप गुणगण विशेष ॥४॥

ॐ ह्रीं शुद्धसरूपाय नमः अर्घ ।

रागादिक परिणतिको विध्वंश, आकुलित भाव राखा न अंश ।
पायो निज शुद्ध सरूप भाव, नमूं सिद्धवर्ग धर हिये चाव ॥५॥

ॐ ह्रीं शुद्धसरूपभावाय नमः अर्घ ।

दोहा ।

तिहूं कालमें ना डिगे, रहै निजानन्द थान ।
नमूं शुद्ध दृढ गुण सहित, सिद्धराज भगवान ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं शुद्धदृढाय नमः अर्घ ।

निज आवर्तकमें वसे, नित ज्यों जलधि कलोल ।
नमूं शुद्ध आवर्तकी, करि निज हिये अडोल ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं शुद्धआवर्तकाय नमः अर्घ ।

परकृत कर उपज्यो नहीं, ज्ञानादिक निज भाव ।
नमो सिद्ध निज अमलपद, पायो सहज सुभाव ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं शुद्धस्वयंभवे नमः अर्घ ।

पद्धड़ी छन्द ।

स्वैसिद्ध अनन्त अतुट पाय, स्वैशुद्ध चेतना पुंजकाय ।
स्वैशुद्ध सबै पायो संजोग, तुम सिद्धराज स्वैशुद्ध जोग ।९॥

ॐ ह्रीं शुद्धयोगाय नमः अर्घ ।

एकेन्द्रिय आदिक जातभेद, हीनाधिक नामा प्रकृति छेद।
संपूरण लब्धि विशुद्ध जात, हम पूजैं हैं पद जोर हाथ ॥१०॥
ॐ ह्रीं शुद्धजाताय नमः अर्घं।

दोहा।

महातेज आनन्दघन, महातेज परताप।
नमो सिद्ध निजगुण महित, दीपै अनूपम आप॥ ११ ॥

पद्धडी छन्द।

वर्णादिकको अधिकार नाहिं, संस्थान आदि आकार नाहिं।
अति तेजपिंड चेतन अखण्ड, नमूं शुद्ध मूर्तिक कर्म खण्ड। १२॥
ॐ ह्रीं शुद्धमूर्तये नमः अर्घ।

बाहिज पदार्थको इष्ट मान, नहिं रमत ममत तासों जु ठान।
निज अनुभवरसमें सदा लीन, तुम शुद्ध सुखी हम नमन कीन॥१३
ॐ ह्रीं शुद्धसुखाय नमः अर्घ।

दोहा।

धर्म अर्थ अरु काम विन, अन्तिम पौरुष साध।
भये शुद्ध पुरुषारथी, नमूं सिद्ध निरबाध॥ १४॥
ॐ ह्रीं शुद्धपौरुषाय नमः अर्घ

पद्धडी छन्द।

पुद्गल निरमापित वर्ण युक्त, विधि नाम रचित तासों विमुक्त।
पुरुशांकित चेतनपद प्रदेश, ते शुद्ध शरीर नमूं हमेश ॥१५॥
ॐ ह्रीं शुद्धशरीराय नमः अर्घ।

दोहा।

पूरण केवलज्ञान गम, तुम स्वरूप निर्बाध।
और ज्ञान जाने नहीं, नमो सिद्ध तज आध॥ १६ ॥

ॐ ह्री शुद्धप्रमेयाय नमः अर्घ ।

दरशन ज्ञान सुभेद है, चेतन लक्षण योग ।
पूरण भई विशुद्धता, नमो शुद्ध उपयोग । १७ ॥

ॐ ह्रीं शुद्धोपयोगाय नमः अर्घ ।

पद्धडी छन्द ।

परद्रव्य जनित भोगोपभोग, ते खेदरूप प्रत्यक्ष योग ।
निजरस साधन है भोग सार, सो भोगो तुम हम नमस्कार ॥१८॥

ॐ ह्रीं शुद्धभोगाय नमः अर्घ ।

दोहा ।

निर्ममत्व युगपद लखो, तुम सब लोकालोक ।
शुद्ध ज्ञान तुमको लखो, नमों शुद्ध अवलोक ॥ १९ ॥

ॐ ह्री शुद्धावलोकाय नमः अर्घ ।

पद्धडी छन्द ।

निरइक्षक मन वेदी महान, प्रज्वलित अग्नि है शुक्लध्यान ।
निर्भेद अर्घ दे मुनि महान, तुम ही पूजत अर्हत जान ॥२०॥

ॐ ह्री अर्हं प्रज्वलितशुक्लध्यानाग्निजिनाय नमः अर्घ ।

दोहा ।

आदि अन्त वर्जित महा, शुद्ध द्रव्यकी जात ।
स्वयं सिद्ध परमात्मा, प्रणमूं सिद्ध निपात ॥ २१ ॥

ॐ ह्रीं शुद्धनिपाताय नमः अर्घ ।

लोकालोक अनन्तवें, भाग वसो तुम आन ।
ये तुमसों अति भिन्न है, शुद्ध गर्भ यह जान ॥ २२ ॥

ॐ ह्रीं शुद्धगर्भाय नमः अर्घ ।

लोकशिखर शुभ थान है, तथा निजातम वास ।
शुद्ध वास परमात्मा, नमों सुगुणकी रास ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं शुद्धवासाय नमः अर्घ ।

अति विशुद्ध निज धर्ममें, वसत नशत सब खेद ।
परम वाम नमि सिद्धको, वासी वास अभेद ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं विशुद्धपरमवासाय नमः अर्घ ।

बहिरंतर द्वै विधि रहित, परमातम पद पाय ।
निरविकार परमातमा, नमूं नमूं सुखदाय ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं शुद्धपरमात्मने नमः अर्घ ।

हीन अधिक इक देशको, विकल विभाव उछेद ।
शुद्ध अनन्त दशा लई, नमूं सिद्ध निरभेद ॥ २६ ॥

ॐ ह्रीं शुद्धअनन्ताय नमः अर्घ ।

त्रोटक छन्द

तुम राग विरोध बिनाश कियो, निज ज्ञान सुधारस स्वाद लियो ।
तुम पूरण शांति विशुद्ध धरो, हमको इक देश विशुद्ध करो ॥२७॥

ॐ ह्रीं शुद्धशांताय नमः अर्घ ।

विद् पंडित नाम कहावत है, विद् अन्त जु अन्तहि पावत है ।
निज ज्ञान प्रकाश सु अन्त लहो, कुछ अंश न जानन माहिं रहो ॥२८॥

ॐ ह्रीं शुद्धविदंताय नमः अर्घ ।

चरणादि क भेद विडारन हो, परिणाम कषाय निवारन हो ।
मन इन्द्रिय ज्ञान न पावत हो, अति शुद्ध निरूपम ज्योति लही ॥२९॥

ॐ ह्रीं शुद्धज्योतिजिनाय नमः अर्घ ।

जन्मादिक व्याधि न फेरि धरो, मरणादिक आपद नाहिं वरो।
निर्वाण महान विशुद्ध अहो, जिन शासनमें परसिद्ध कहो ॥३०॥

ॐ ह्रीं शुद्धनिर्वाणाय नमः अर्घं ।

करि अन्त न गर्भ लियो फिरकें, जनमें शिववास जनक घरके।
जिनको फिर गर्भ नहीं कबहूं, शिवराज कहाय नमूं अबहूं ॥३१॥

ॐ ह्रीं शुद्धसंदर्भगर्भाय नमः अर्घं ।

जगजीवन काम नशायक हो, तुम आप महा सुखनाइक हो।
तुम मंगल मूरति शांति मही, सब पाप नशें तुम पूजत ही ॥३२॥

ॐ ह्रीं शुद्धशांताय नमः अर्घं ।

दोहा ।

पंच परम पद ईश हैं, पंचमगति जग शीश ।
जगत प्रपंच रहित बसे, नमूं सिद्ध जग ईश ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये नमः महार्घं निर्वपामि स्वाहा ।

यहां १०८ बार जाप देना चाहिये ।

अथ जयमाला ।

दोहा ।

परम ब्रह्म परमातमा, परम ज्योति शिवथान ।
परमातम पद पाइयो, नमो सिद्ध भगवान ॥ १ ॥

छन्द कामिन मोहन मात्रा २० ।

जय मरण कष्टको टार अमरा भये,
जय जन्म व्याधि परिहार अजरा भये ।

जय द्विविध कर्ममल जार अमला भये,
जय दुविधि टार संसार अचला भये ॥ १ ॥
जय जगत वास तज जगत स्वामी भये,
जय विनाशमान थित परम नामी भये ।
जय कुबुद्धि रूप तजि सुविधि रूपा भये,
जय निषध दोप तज सुगुण भूपा भये ॥ २ ॥
कर्मरिपु नाशकर परम जय पाइए,
लोकत्रयपूरि तुम सुजस घन छाइये ।
इन्द्र नागेन्द्र धर सीस तुम पद जजैं,
महा वैराग रस पाग मुनिगण भजै ॥ ३ ॥
विघन वन दहन दौ अगन वन पौन हो,
सघन गुण रासके, वासके भोन हो ।
शिव तिय वसकरन मोहनी मंत्र हो,
कर्म छयकार वैतालके यंत्र हो ॥ ४ ॥
कोटि थित क्लेशकी पोट शिव होय हो,
उपलकी नकल हो अचल इक थल रहो ।
स्वप्नमें हूं न निज अर्थको पावही,
जे महा खलन तुम ध्यान धरि ध्यावही ॥ ५ ॥
आपके जाप बिन पाप सब मेंटही,
पापकी तापको पाप कब मेंटही ।
संत निज दासकी आस पूरी करो,
जगतसे काढ निज चरणमें ले धरो ॥ ६ ॥

घत्ता नद छन्द ।

जय अमल अनूपम शुद्ध स्वरूपं, निखिल निरूपं धर्म धरा ।
जय विघन नशायक मंगलदायक, तिहुँ जगनायक परमपरा ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये नमः द्वात्रिंशत्गुणयुक्तसिद्धेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति तृतीय पूजा सम्पूर्णम् ।

अथ चतुर्थ पूजा चौसठ गुण सहित ।

छप्पय छन्द ।

ऊरध अधो सुरेफ सु बिंदु हंकार विराजे,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे ।
वर्गन पूरित वसुदल अम्बुज तत्त्व संधि धर,
अग्रभागसे मंत्र अनाहत सोहन अतिवर ॥
फुनि अति ह्रीं वेढ्यो परम, स्वर ध्यावत अरि नागकों ।
है केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करों ॥

ॐ ह्रीं नमोसिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं । परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

दोहा ।

सूक्ष्मादिक गुण सहित हैं, कर्म रहित निररोग ।
सिद्धचक्रसे थापहूं, मिटै उपद्रव योग ॥

इति यंत्र स्थापनं ।

अथाष्टकं ।

चाल लावनी ।

सिद्धगण पूजो हरखाई, चौसठ गुणनामा विधिमाला,
सुमरों सुखदाई. सिद्धगण पूजोरे भाई ॥ आंचली ॥
त्रिभुवन उपमा वास लखै, तुम पद अम्बुजके माई ।
निर्मल जलकी धार देहुं, अवशेष करणताई,
सिद्धगण पूजोरे भाई ॥
चौसठ गुणमाला विधिनामा, सुमरो सुखदाई ।
सिद्धगण पूजोरे भाई ॥

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने चौसठगुणसहित श्रीसमत्तणाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं जन्मजरारोगविनाशनाय जलं ॥ १ ॥

तुम पद अम्बुज वास लेन मनु, चन्दनमन भाई,
निजसों गुणाधिक्य संगतिको. लहिय न हर्षाई ।
सिद्धगण पूजोरे भाई ॥
चौसठ गुणनामा विधिमाला, सुमरो सुखदाई ।
सिद्धगण पूजोरे भाई ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने चौसठ गुणसहित श्री समत्तणाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं संसारतापविनाशनाय चंदनं ॥ २ ॥

धीरर धान सुवासित नीरज, करसों छरलाई ।
अंगुलसे तंदुलसे पूजत, अक्षय पद पाई ॥ सि० ॥

चौसठ गुण नामाविधिमाला सुमरों सुखदाई ॥
सिद्धगण पूजोरे भाई ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने चौसठ गुणसहित श्रीसमत्त-णाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं अक्षय-पद प्राप्तये अक्षत ॥ ३ ॥

धूलि मार छवि हरण विवर्जित, फूलमाल लाई ।
काम शूल निर्मूल करणको, पूजहुं तुम पाई ॥ सिद्ध०
चौसठ गुणनामा विधिमाला, सुमरो सुखदाई । सिद्ध०॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने चौसठ गुणसहित श्री समत्तणाण-दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं कामवाण-विनाशनाय पुष्पं ॥ ४ ॥

भूख व्याधि अक्षीण लगी है, पूरति है नाई ।
चरुमात्र तुम पद पूजत हों, पूरन शिवराई ॥
सिद्धगण पूजोरे भाई ॥
चौसठ गुणनामा विधिमाला, सुमरो सुखदाई ॥ सिद्ध०

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने चौसठगुणसहित श्री समत्तणाण-दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीप निमित तुम पद पूजत. शिव मारग दरशाई ।
घोर अंध संसार हरणकी, भली सूझ पाई ॥
सिद्धगण पूजोरे भाई ॥
चौसठ गुणनामा विधि माला, सुमरो सुखदाई ॥सिद्ध०॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो चौसठगुण सहित श्री समत्त-णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं मोहांधकार विनाशनाय दीपं ॥ ६ ॥

कृष्णागरु कर्पूर पूर घट, अगनिसे प्रजलाई ।
उडै धूम यह उडै किधों यह, जर करमनकी छाई ॥
सिद्धगण पूजोरे भाई ॥
चोसठ गुणनामा विधि माला, सुमरो सुखदाई ॥सिद्ध०॥

ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिभ्यो चौसठ गुण सहित श्री सम्मत्त-णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहण अगुरुलघुमव्वावाहं अष्टकर्मदहनाय धूपं ॥ ७ ॥

मधुर मनोग सुप्रासुक फलसों, पूजों शिवराई ।
यथायोग विधि फलको दे गुण, फलकी अधिकाई ॥ सि०
चोसठ गुणनामा विधिमाला, सुमरो सुखदाई ।
सिद्धगण पूजोरे भाई ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने चौसठगुणसहित श्रीसमत्तणाण-दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं मोक्षफल-प्राप्तये फलं ॥ ८ ॥

निरघ उपावन पावन वसुविधि, अर्घ हर्ष ठाई ।
भेट धरत तुम पद पाऊं पद, निर आकुलताई ॥सिद्ध०॥
चौसठ गुणनामा विधिमाला, सुमरो सुखदाई ॥सिद्ध०॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने चौसठ गुण सहित श्री समत्त णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं सर्वसुखप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ चोसठ गुण सहित अर्घ ।

चाल छन्द ।

चउ घाती कर्म नशायो, अरहंत परम पद पायो ।
द्वै धर्म कहो सुखकारा, नमूं सिद्ध भए अविकारा ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं अरहंत जिन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।
संक्लेश भाव परिहारी, भए अमलअवधि बलधारी ।
सो अतिशय केवलज्ञाना, उपजाय लियो शिवथाना ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं अवधि जिन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।
निर्मल चारित्र ससारा, परमावधि पटल उघारा ।
केवल पायो तिस कारण, नमूं सिद्ध भये जग तारन ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं परमावधि जिन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।
वर्द्धमान विशद परिणामी, सर्वावधिके हो स्वामी ।
अन्तम वसुकर्म नसाया, नमूं सिद्ध भये सुखदाया ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं सर्वावधि जिन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।
जिस अन्त अवधिको नाहीं, तुम उपजायो पद ताहीं ।
निर्मल अवधी गुण धारी, सब सिद्ध नमू सुखकारी ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं अनन्तावधि जिन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।
तप बल महिमा अधिकाई, बुद्धि कोष्ट रिद्धि उपजाई ।
श्रुत ज्ञान कोष्ट भंडारी, नमूं सिद्ध भये अविकारी ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं कोष्ट बुद्धि ऋद्धि सिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।
ज्यो बीज फले बहुरासी, त्यो छिनही बहु अभ्यासी ।
यह पावत ही योगीशा, भये सिद्ध नमूं शिव ईशा ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं बीजबुद्धिऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घं।

पदमात्र समस्त चितारे. है रिद्धि यह पद अनुसारे।
यह पाय यतीश्वर ज्ञानी, भये सिद्ध नमूं शिवथानी ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं पादानुसारणीऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घ।

जो भिन्न भिन्न इक लारै, शब्दन सुन अर्थ विचारै।
यह ऋद्धि पाय सुखदाता, नमूं सिद्ध भये जगत्राता ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घ।

मति श्रुत अर अवधि अनूपा, विन गुरुके सहज सरूपा।
भयो स्वयंबुद्धि निज ज्ञानी, नमूं सिद्ध भये सुखदानी ॥१०॥

ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाणं नमः अर्घ।

जो पायन पर उपदेशा, जाने तप ज्ञान विशेषा
प्रत्येक बुद्ध गुण धारी, भये सिद्ध नमूं हितकारी ॥११॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घ।

गणधरसे समकित धारी, तुम दिव्यध्वनि अनुसारी।
ज्ञानी सिरताज कहाये, भये सिद्ध सुजस हम गाये ॥१२॥

ॐ ह्रीं बोधबुद्धेभ्यो नमः अर्घ।

मन योग सरलता धारै, तिस अन्तर भेद उघारै।
यो होय ऋजुमति ज्ञानी, नमूं सिद्ध भये सुखदानी ॥१३॥

ॐ ह्रीं ऋजुमतिऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घ।

वाके मनको सब बाता, जाने सो विपुल कहाता।
तुम पाय भये शिवधामी, नमूं सिद्धराज अभिरामी ॥१४॥

ॐ ह्रीं विपुलमतिऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घ।

सुर विद्याको नहिं चाहैं, निज चारित विरद निवाहैं ।
दस पूर्व ऋद्धि यह पायो, भये सिद्ध मुनिन गुण गायो ॥१५
ॐ ह्रीं दमपूर्वऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।

चौदस पूरव श्रुतज्ञानी, जाने परोक्ष परमानी ।
प्रत्यक्ष लखो तिस सारूं, भये सिद्ध हरो अघ म्हारूं ॥१६॥
ॐ ह्रीं चौदहपूर्वऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।

मुन्दरी छन्द ।

ज्योतिषादिक लक्षण जानकैं, शुभ अशुभ फल कहत बखानिकैं।
नमित ऋद्धि प्रभाव न अन्यथा, होय सिद्ध भये प्रणमूं यथा॥१७
ॐ ह्रीं अष्टांगनिमित्तऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।
बहुत विधि अणिमादिक रिद्धि जू, तप प्रभाव भई तिन सिद्ध जू ।
निष्प्रयोजन निजपद लीन है, नमूं सिद्ध भये स्वाधीन है ॥१८॥
ॐ ह्रीं विवर्णऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।
भूमि जल तंतून जिय ना हरैं, नमूं ते मुनि शिव कामिन वरैं ।
नेक नहिं बाधा परिहार हो, नमूं सिद्ध सभी सुखकार हो ॥१९॥
ॐ ह्रीं विज्ञाहरणऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।
जंघपर दो हाथ लगावहीं, अन्तरीक्ष पवनवत जावहीं ।
पाय ऋद्धि महामुनि चारणी, यथायोग्य विशुद्ध विहारणी ॥२०॥
ॐ ह्रीं चारणऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।
खग समान चलैं आकाशमें, लीन चित निज धर्म प्रकाशमें ।
शुद्ध चारित करि निज सिद्धता, पाय पहुपन गमन करें यथा ॥२१॥
ॐ ह्रीं आकाशगामिनीऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।

बाद विद्या फुरत प्रमाणमें, वज्रसम पर्वत गिरहानमें।
सब कुपक्षी दोष प्रगट करें, स्यादवाद महाद्युतिको धरैं ॥२२॥

ॐ ह्रीं परामर्शऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घ।

विषम जहर मिला भोजन करै, लेत ग्रास हि तिस शक्ती हरैं।
ते महामुनि जग सुखदाय जू, हम नमें तिन शिवपद पाय जू ॥२३

ॐ ह्रीं आशीविषऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घ।

जो महाविष अति परचण्ड हो, दृष्टि करि तिन कीने खण्ड हो।
सो यतीश्वर कर्म विडारकैं, भये सिद्ध नमूं उर धारकैं ॥२४॥

ॐ ह्रीं दृष्टिविषऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घ।

अनशनादिक नित प्रति साधना, मरण काल तई न विराधना।
उग्र तप करि वसुविधि नासतैं, हम नमें शिवलोक प्रकाशतैं ॥२५

ॐ ह्रीं उग्रतपऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घ।

चढ़ति नित प्रति सहज प्रभावना, उग्र तप करि क्लेश न पावना।
दीप्ति तप करि कर्म जरायकैं, भये सिद्ध नमूं सिर नायकैं ॥२६॥

ॐ ह्रीं दीप्ततपऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घ।

अन्तराय घटे उत्सव बढ़ै, बाल चन्द्र समान कला चढ़ै।
वृद्ध तपकी ऋद्धि लहै यती, भये सिद्ध नमत सुख हो अती ॥२७॥

ॐ ह्रीं तपवृद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घ।

सिंह क्रीड़ित आदि विधानतें, नित बढ़ावत तप विधि मानतें।
महामुनीश्वर तप परकासतें, नमूं मुक्ति भए जगवासतें ॥२८॥

ॐ ह्रीं महातपऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घ।

सिषिरिगिरि ग्रीषम हिम सरतटे, तरु निकट पावस निजपद रटैं।
घोर परिषह करि नाहीं हटैं, भये सिद्ध नमत हम दुख कटैं ॥२९

ॐ ह्रीं घोरऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।

महाभयंकर निमित मिलै जहां, निरविकार यती तिष्ठैं तहां ।
महापराक्रम गुणकी खान है, नमो सिद्ध जगत सुखदान है ॥३०

ॐ ह्रीं घोरगुणरिद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।

सघन गुणकी रास महायती, रत्नराशि समान दीपै अती ।
शेष जिन वर्णन करि थकि रहै, नमूं सिद्ध महापदको लहै ॥३१

ॐ ह्रीं गुणपरिक्रमाणिऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।

अतुल वीर्य धनी हन कामको, चलत मन न लखत सुहि वामको ।
वालब्रह्मचारी योगीश्वरा, नमूं सिद्ध भए वसुविधि हरा ॥३२॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।

सकल रोग मिटैं संस्पर्शते, महायतीश्वरके आमर्शतें ।
औषधी यह ऋद्धि प्रभावना, भये सिद्ध नमत सुख पावना ॥३३

ॐ ह्रीं आमर्षऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।

मूत्रमें अमृत अतिशय वसे, जा परसते सब व्याधि तुरत नसै ।
औषधी यह ऋद्धि प्रभावना, भये सिद्ध नमत सुख पावना ॥३४

ॐ ह्रीं आमोसियऔषधिऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।

तन पसीजत जलकण लगत ही, रोग व्याधि सर्व जन भगत ही ।
औषधी यह ऋद्धि प्रभावना, भये सिद्ध नमत सुख पावना ॥३५

ॐ ह्रीं जलोसियऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।

हस्त पादादिक नखकेशमें, सर्व औषधी हैं सब देशमें ।
औषधी यह ऋद्धि प्रभावना, भये सिद्ध नमत सुख पावना ॥३६

ॐ ह्रीं सर्वोसियऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं ।

अडिल्ल।

मन सम्बंधी वीर्य बढ़े अतिशय महा,
एक महूरत अन्तर श्रुत चितवन लहा।
मनोबली यह ऋद्धि भई सुखदाइ जू,
भये सिद्ध सुखदाय जजूं तिन पांय जू॥३७॥

ॐ ह्रीं मनोबलीऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं।

भिन्न भिन्न अति शुद्ध उच्च स्वर उच्चरै,
एक महूरत अन्तर श्रुत वर्णन करै।
वचनबली यह ऋद्धि भई सुखदाय जू,
भये सिद्ध सुखदाय जजूं तिन पांय जू॥३८॥

ॐ ह्रीं वचनबलीऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं।

खड्गासन इक अंग मास छै मास लो,
अचल रूप थिर रहै छिनक खेदित न हो।
कायबली यह ऋद्धि भई सुखदाय जू,
भये सिद्ध सुखदाय जजों तिन पांय जू॥३९॥

ॐ ह्रीं कायबलीऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं।

अति अरूच सु क्षीर होय कर श्रवत हो,
वचन खिरत पर श्रवण तुष्टता करन हो।
क्षीरश्रवी एह ऋद्धि भई सुखदाय जू,
भये सिद्ध सुखदाय जजूं तिन पांय जू॥४०॥

ॐ ह्रीं क्षीरस्रावीऋद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घं।

सोरठा।

सिद्धरास सुखदाय, वर्धमान नितप्रति लसे।
नमूं ताहि सिर नाय, वृद्ध रूप गुण अगम है॥ ४५॥
ॐ ह्रीं बड्ढमाणसिद्धेभ्यो नमः अर्घ।
रागादिक परिणाम, अन्तरके अरि नाशके।
लहि अरहंत सु नाम, नमों सिद्धपद पाइया॥ ४६॥
ॐ ह्रीं अरहन्तसिद्धेभ्यो नमः अर्घ।

दो अन्तिम गुण थान, भाव सिद्ध इस लोकमें।
तथा द्रव्य शिव थान, सर्व सिद्ध प्रणमूं सदा॥ ४७॥
ॐ ह्रीं लोऐसर्वसिद्धाणं नमः अर्घ।
शत्रु व्याधि भय नाहिं, महावीर धीरज धनी।
नमूं सिद्ध जिननाह, संतनिके भवभय हरै॥ ४८॥
ॐ ह्रीं भयवदो महावीरवर्धमाणं नमः अर्घ।
क्षपकश्रेणी आरूढ़, निजभावी योगी यथा।
निश्चय दर्श अमूढ़, सिद्धयोग सब ही जजों॥ ४९॥
ॐ ह्रीं योगसिद्धाणं नमः अर्घ
वीतराग परधान, ध्यान करे तिनको सदा।
सोई ध्येय महान, नमों सिद्ध हम अघ हरो॥ ५०॥
ॐ ह्रीं ध्येयसिद्धाणं नमः अर्घ।

लोक शिखर शिव थान, अचल विराजित सिद्ध जिन।
लोकवास सर्वान, भए सिद्ध प्रणमूं सदा॥ ५१॥
ॐ ह्रीं सर्वसिद्धाणं नमः अर्घ।

स्वयं सिद्ध भगवान, ज्ञानभूत परकाश मय।
लमत नमूं मन आन, मम उर चिंता दुख हरो॥ ५९॥
ॐ ह्रीं स्वयंभूसिद्धाणं नमः अर्घ।
मन इन्द्रियसों भिन्न, मन इन्द्री परकाश कर।
सोई ब्रह्म अखिन्न, साधित सिद्ध भए नमूं॥ ६०॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मसिद्धाणं नमः अर्घ।
द्रव्य अनन्त गुणात्म, परणामी परसिद्धके,
सोई पद निज आत्म, साधत सिद्ध अनंत गुण॥ ६१॥
ॐ ह्रीं अनन्तगुणसिद्धाणं नमः अर्घ।
सर्व तत्वमें पर्म, गुण अनन्त परमातमा।
सो पायो निजधर्म, परम सिद्ध तिनको नमूं॥ ६२॥
ॐ ह्रीं परमअनंतसिद्धाणं नमः अर्घ।
लोक शिखरके वास, पायो अविचल थान निज।
सर्व लोक परकाश, ज्ञानज्योति तिनको नमों॥ ६३॥
ॐ ह्रीं लोकवाससिद्धाणं नमः अर्घ।
काल त्रिभाग अनादि, शास्वत रूप विराजते।
यातें नाहिं सो आदि, नमि अनादि सिद्धानको॥ ६४॥
ॐ ह्रीं अनादिसिद्धाणं नमः अर्घ।

गीताछन्द।

निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी,
शुभ पुष्प मधुकर नृत्य सूचरु, प्रचुर स्वादसु विधि घनी।
वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भले,
करि अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्मदल सब दलमलै॥१॥

जिन चित ध्यान सलिल तुम धारा, ते मुनि तीरथ है निरधारा।
तुम गुण हंस तुम्हीं सरवाशी, वचन जालमें ले तन फासी ॥८॥
जगत् बंधु गुणसिंधु दयानिधि, बीजभूत कल्याण सर्वसिधि।
अक्षय शिव स्वरूप श्रिय स्वामी, पूर्ण निजानन्दी विश्रामी ॥९॥
शरणागत सर्वस्व सुहितकर, जन्म मरण दुख आधि व्याधि हरि।
संत भक्ति तुम हो अनुरागी, निश्चै अजर अमर पद भागी ॥१०॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठीदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः महार्घं निर्वपामि स्वाहा।

घत्ता नद छन्द।

सुखसागर सुजस उजागर, गुण गण आगर भव तारण हो।
संत उधारण विपति विडारन, सुख कारण विस्तारन हो ॥
तुम गुण गान परम फलदान, सो मंत्र प्रमान विधान करूं।
जहरी कर्मनि वैरी कहरी, असहैरी भवकी व्याधि हरूं ॥

इत्याद्याशीर्वादः।

॥ चतुर्थ पूजा सम्पूर्णम ॥

अथ पंचमी पूजा।

छप्पै छन्द।

ऊरध अधो सुरेफ सु बिंदु हंकार बिराजे,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे।
वर्गन पूरित वसुदल अम्बुज तत्व संधिवर,
अग्रभागमें मंत्र अनाहत सोहत अतिवर ॥

गुणसंयुक्ताय श्री समत्त णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं संसारतापविनाशनाय चन्दनं० ॥ २ ॥

चंपक हीके भ्रम भ्रमरावलि, भ्रमत चकित चकराज भए,
शशि मण्डल जानो सो अक्षत, पुंजधार पद कंज नये ।
लोकाधीश शीश चूडामणि, सिद्ध चरण उर धारा हो,
चौसठ दुगुण सुगुण मणि सुमिरन, सुमिरत ही भवपारा हो ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने १२८ गुणसहित श्रीसमत्तणाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं अक्षयपद-प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति ॥ ३ ॥

मदन वदन दुतिहरन वरन रति, लोचन अलिगण छाय रहे ।
पुष्पमाल वासित विशाल सो, भेंट धरत उर काम दहै ॥
लोकाधीश०, चौसठ० ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने १२८ गुण संयुक्ताय श्रीसमत्त-णाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं काम-बाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

चितवत मन वरणत रसना रस, स्वाद लेत ही तृप्त थये ।
जन्मातरहु छुधा निवारै, सो नेवज तुम भेट धरै ॥
लोकाधीश शीश चूडामणि, सिद्धचक्र उरधारा हो ।
चौसठ दुगुण सुगुण मणि सुमिरन, सुमरतही भवपारा हो ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने १२८ गुणसहित श्री समत्तणाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥ ५ ॥

लवमणि प्रभा अनूपम सुर निज, शीश धरणकी शास करे हो ।
या विन तुच्छ विभव निज जानें, सो दीपक तुम भेट धरे हो ॥
लोकाधीश०, चौसठ० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने १२८ गुण संयुक्ताय श्रीसमत्त-णाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं मोहांधकारविनाशनाय दीपं ॥ ६ ॥

नीलंजसा करी नभमें ज्यों, ऋषभ भक्तिकर नृत्य कियो हो ।
सो तुम सन्मुख धूप उड़ावत, तिस छविको नहि भाव लियो हो।
लोकाधीश शीश चूडामणि, सिद्धचक्र उरभारा हो ।
चौसठ दुगुण सुगुण मणि सुमिरन, सुमरतही भवपारा हो ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने १२८ गुण संयुक्ताय श्रीसमत्त-णाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं अष्ट-कर्मदहनाय धूपं ॥ ७ ॥

सेव रंगीले अनार रसीले, केलाकी लै डाल फली हो ।
डाली हू नृपमाली हू, नातर प्राशुककी रीति भली हो ॥
लोकाधीश०, चौसठ० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने १२८ गुण संयुक्ताय श्रीसमत्तणाण-दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं मोक्षफल-प्राप्ताय फलं ॥ ८ ॥

एकसे एक अधिक सोहत वसु, जाति अर्घ करि चरण नमूं हूं ।
आनंद आरति आरत तजिकै, परमारथ हित कुमति चमूं हूं ॥
लोकाधीश०, चौसठ० ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने १२८ गुण संयुक्ताय श्रीसमत्त-णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं अनर्घ-पदप्राप्ताय अर्घं ।

गीता छन्द ।

निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी,
शुभ पुष्प मधुकर नृत्य भूचरू, प्रचुर स्वाद सुविधि घनी।
वर दीपमाल उजाल, धूपायन रसायन फल भलै,
करि अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्मदल सब दलमलै ।।
ते क्रमावर्त नशाय युगपति, ज्ञान निर्मल रूप है,
दुख जन्म टाल अपार गुण, सूक्षम सरूप अनूप है ।
कर्माष्ट विन त्रैलोक्य पूजा, अदूज शिव कमलापती,
मुनि ध्येय सेय अभेय चाहुं, गेह द्यो हम शुभमती ।।१०।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति अधिकशत गुणयुक्तसिद्धेभ्यो नमः पूर्णार्घं ।

अथ एकसै अठाईस गुण सहित अर्घ ।

त्रोटक छन्द

निरबाध सु तत्व सरूप लखो, इक लेश विशेष न शेष रखो ।
अति शुद्ध सुभाविक छायक है, नमूं दर्श महासुखदायक है ।।१।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः अर्घं ।

निरमोह अकोह अबाधित हो, परभाव थकी न बिराधित हो ।
निरसंस चराचर जानत है, हम सिद्ध सु ज्ञान प्रमानत है ।।२।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः अर्घं ।

सब राग विरोध निवारन है, निज भाव थकी निज धारन है।
परमें न कभी निज भाव वहै, अति सम्यक्चारित्र नाम यहै॥
ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः अर्घं।

उतपाद विनाशन साथ धरै, परनाम सुभाव नहीं निशरै।
तुम धारत हो यह धर्म महा, हम पूजत हैं पद शीश गहा॥४॥
ॐ ह्रीं अस्तित्वधर्माय नमः अर्घं।

निज भावनतें व्यतिरिक्त न हो, प्रणमो गुणरूप गुणानम हो।
यह वस्तु सुभाव सदा विलसो, हम पूजत हैं सब पाप नसो॥५॥
ॐ ह्रीं वस्तुत्वधर्माय नमः अर्घं।

परमातम जानत है तिनको, छिन राग न आवत है जिनको।
अप्रमेय महागुण धारत है, हम पूजत पाप विडारत है॥६॥
ॐ ह्रीं अप्रमेयत्वधर्माय नमः अर्घं।

गुण पर्य प्रमाण दसा नित ही, निजरूप न छांडत है कित ही।
जिन बैन प्रमाण सु धारत है, हम पूजत पाप निडारत है॥
ॐ ह्रीं अगुरुलघुधर्माय नमः अर्घं।

जितने कछु है परिणाम विषै, सब चित्त स्वरूप सुजान तिसैं।
सुख चेतनता गुण धारत है, हम पूजत पाप विडारत है॥८॥
ॐ ह्रीं चेतनत्वधर्माय नमः अर्घं।

जिन अंग उपंग शरीर नहीं, जिन रंग प्रसंग सु तीर नहीं।
नभसार अमूरति धारत हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं॥९॥
ॐ ह्रीं अमूर्तित्वधर्माय नमः अर्घं।

परको न कदाचित धर्म गहैं, निज धर्म सरूप न छांडत हैं।
अति उत्तम धर्म सु धारत है, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥१०॥

ॐ ह्रीं समकितधर्माय नमः अर्घं।

जितने कछु हैं परिणाम विषैं, सब ज्ञान स्वरूप सु जान तिसैं।
सुख ज्ञानमई गुण धारत हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥११॥

ॐ ह्रीं ज्ञानधर्माय नमः अर्घं।

चिन्मय चिन्मूरति जीव सही, अति पूरणता विन भेद कही।
निज जीव सुभाव सुधारत हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥१२

ॐ ह्रीं जीवधर्माय नमः अर्घं।

मनको नहिं वेग लखावत हैं, जिस वेन नहीं बतलावत हैं।
अति सूक्षम भावसु धारत हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥१३

ॐ ह्रीं सूक्षमधर्माय नमः अर्घं।

परघात न आप न घात करैं, इक खेत समूह अनन्त वरैं।
अवगाह सरूप सुधारत हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥१४॥

ॐ ह्रीं अवगाहधर्माय नमः अर्घं।

अविनाश सुभाव विराजत हैं, विन व्याधि सरूप सु छाजत हैं।
यह धर्म महागुण धारत हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥१५॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधधर्माय नमः अर्घं।

निजसों निजकी अनभूति करैं, अपनो परसिद्ध सुभाव वरैं।
निज ज्ञान प्रतीति सुधारत हैं, हम पूजत पाप बिडारत हैं ॥१६

ॐ ह्रीं स्वसंवेदनज्ञानाय नमः अर्घं।

निज ज्योति स्वरूप उद्योतमई, जिसमें परदेश रहे नित ही ।
यह ताप स्वरूप उधारत हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥१७॥
ॐ ह्रीं स्वरूपतापतपसे नमः अर्घं ।

निज नंत चतुष्टय राजत हैं, दृग ज्ञान बलासुख छाजत हैं ।
यह आप महागुण सागर हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥१८॥
ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टयाय नमः अर्घं ।

सुख समकित आदि महागुण हो, तुम साधित सिद्ध सरूप अब हो ।
यह उत्तम भाव सुधारत हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥१९॥
ॐ ह्रीं सम्यक्त्वादिगुणात्मकसिद्धेभ्यो नमः अर्घं ।

दोहा ।

निश्चय पंचाचार सब, भेद रहित तुम साध ।
चेतनकी अति शक्तिमें, सब सुर्ने निरबाध ॥ २० ॥
ॐ ह्रीं पंचाचारचार्येभ्यो नमः अर्घं ।

चौपाई ।

सब विकल्प तजि भेद सरूपी, निज अनभूति मग्न चिद्रूपी ।
निश्चय रत्नत्रय परकाशी, पूजूं भाव भेद हम नाशी ॥ २१ ॥
ॐ ह्रीं रत्नत्रयप्रकाशाय नमः अर्घं ।

करण भेद रत्नत्रय धारी, कर्म भेद निज भाव संचारी ।
करता भेद आप परिणामी, भेदाभेद रूप प्रणमामी ॥२२॥
ॐ ह्रीं स्वरूपसाधकमनोसाधुभ्यो नमः अर्घं ।

मनोयोग कृत जिय संसारी, क्रोधारम्भ करत दुखकारी ।
तासों रहित सिद्ध भगवाना, अन्तर शुद्ध करूं तिन ध्याना ॥२३

ॐ ह्रीं अकृतमनःक्रोधसंरम्भमनोगुप्तये नमः अर्घं।

परके मन क्रोधी संरम्भा, करत मूढ़ नाना आरम्भा।
सिद्धराज प्रणमूं तिस त्यागी, निर्विकल्प निज गुणके भागी ॥२४

ॐ ह्रीं अकारितमनःक्रोधसंरम्भनिर्विकल्पधर्माय नमः अर्घं।

भुजगप्रयात् छन्द।

मनोयोग रंभा प्रशंसीक रोधा, निजानंदको मान ठाने अबोधा।
महानिंदनी भावको त्याग दीना, निजानंदको स्वाद ही आप लीना

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनःक्रोधसंरम्भसानंदधर्माय नमः अर्घं।

मनोयोग क्रोधी समारंभ धारी, सदा जीव भोगे महाखेद भारी।
महानंद आख्यातको भाव पायो, नमो सिद्ध सो दोष नाहीं उपायो ॥

ॐ ह्रीं अकृतमनक्रोधसमारंभपरमानंदाय नमः अर्घं।

दोहा।

समारम्भ क्रोधित सुमन, परकारित दुख नाहिं।
परमातम पद पाइयो, नमूं सिद्ध गुण ताहि ॥ २७ ॥

ॐ ह्रीं अकारितमनक्रोधसमारम्भपरमानन्दाय नमः अर्घं।

भुजगप्रयात् छन्द।

समारम्भ क्रोधी मनोयोग माही धरे मोदना भावको जीव नाही।
भये आप संतुष्ट ये त्याग भावा, नमूं सिद्ध सो दोस नाहीं उपावा।२८

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनक्रोधसमारंभपरमानंदसंतुष्टाय नमः अर्घं।

पद्धडी छन्द।

निज क्रोधित मन आरम्भ ठान, जग जिय दुखमें सुख रहै मान।
सो आप त्याग संक्लेश भाव, भये सिद्ध नमूं धर हिये चाव ॥२९॥

ॐ ह्रीं अकृतमनः क्रोधारम्भस्वगस्थानाय नमः अर्घं।

क्रोधित मनसों आरम्भ हेत, पर प्रेरित निज अपराध लेत।
जग जीवनको विपरीत रीति, तुम त्याग भये शिव वर पुनीत ॥३०॥

ॐ ह्रीं अकारितमनः क्रोधारम्भवन्धसंस्थानाय नमः अर्घं।

क्रोधित मनसों आरंभ हेत, पर प्रेरित निज अपराध लेत।
जग जीवनको विपरीति रीति, तुम त्याग भये शिव वर पुनीत ॥३१॥

ॐ ह्रीं अकारित मनः क्रोधारंभबंधसंस्थानाय नम अर्घं।

क्रोधित मनसों आरंभ देख, जिस मानत है आनंद विशेष।
तुम सत्य सुखी इह भाव धार, भये सिद्ध नमूं उर हर्ष धार॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनः क्रोधारंभस्थापनाय नमः अर्घं।

दोहा।

मान योग मन रंभमें, वरतत है जगजीव।
भये सिद्ध संक्लेश तजि, तिन पद नमूं सदीव ॥ ३२ ॥

ॐ ह्रीं अकृतमनोमानारम्भसाधमाग नमः अर्घं।

मान उदय मन योगतें, परको रम्भ करान।
त्याग भये परमातमा, नमूं सुगन पर हान ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं अकारितमनोमानसंरम्भअनन्यशरणाय नमः अर्घं।

मान सहित मन रंभमें, जगजिय राखे चाव।
नमो सिद्ध परमातमा, जिन त्यागो इह भाव॥ ३४ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मानसंरम्भसुगुणभावाय नमः अर्घं।

अडिल्ल छन्द।

समारम्भ परिवर्तमान युत मन धरे,
विकलपमई उपकरण विविध इकठे करै।

महा कष्टको हेत भाव यह नाग हो,
प्रणमूं सिद्ध अनन्त सुखातम गुण लहो ॥ ३५ ॥
ॐ ह्रीं अकृतमनो मानसमारम्भ सुखात्मगुणाय नमः अर्घं ।

मान महित मनयोग द्वार चितवन करे,
समारम्भ पर कृत्य करावन विधि वरै ।
तहां कष्टको हेत भाव यह नाग हो,
प्रणमूं सिद्ध अनन्तगुणातम पद लहो ॥ ३६ ॥
ॐ ह्रीं अकारितमनो मानसमारम्भअनन्यगताय नमः अर्घं ।

जोडे चित न समाज विविध जिस काजमें,
समारम्भ तिस नाम सोम जिनराजमें ।
माने मानी मन आनन्द सु निमितसे.
नमूं सिद्ध है अतुल वीर्य त्यागत तिसे ॥ ३७ ॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितमनो मानसमारंभअनन्तवीर्याय नम अर्घं ।

अशुभ काज परिवर्त नाम आरम्भको,
मान सहित मन द्वार तास उद्यम गहो ।
जगवासी जिय नित प्रति पाप उपाय है,
नमो सिद्ध या रहित अतुल सुखराय है ॥ ३८ ॥
ॐ ह्रीं अकारितमनो मानारम्भअनन्तज्ञानाय नमः अर्घं ।

दोहा ।

मनो मान आरम्भके, भये अकारित आप ।
अतुल ज्ञान धारी भए, नमत नसै सब पाप ॥ ३९ ॥
ॐ ह्रीं अकारितमनो मानारम्भअनन्तज्ञानाय नमः अर्घं ।

मनो मान आरम्भमें, नानुमोदि भगवंत ।
गुण अनन्त युत सिद्धपद, पूजत हैं नित संत ॥ ४० ॥
ॐ ह्रीं नानुमोदित मनोमान आरम्भअनंतगुणाय नमः अर्घं ।

गीताछन्द ।

जो अशुभ काज विकल्प हो, संरम्भ मनयुत कुटिलता ।
कर कर अनादित रंकजिय, बहु भांति पाप उपावता ॥
सो त्याग सकल विभाव यह तुम, सिद्ध ब्रह्मस्वरूप हो ।
हम पूजि हैं नित भक्ति युत, तुम भक्ति वत्सलरूप हो ॥४१॥
ॐ ह्रीं अकृत मनोमायासंरम्भब्रह्मस्वरूपाय नमः अर्घं ।

दोहा ।

मायावी मनतें नहीं, कबहूं आरम्भ कराय ।
सिद्ध चेतना गुण सहित, नमूं सदा मन लाय ॥ ४२ ॥
ॐ ह्रीं अकारित मनोमाया संरम्भ ब्रह्मस्वरूपाय नमः अर्घं ।
मायावी मनतें कभी, संमानन्द न होय ।
सिद्ध अनन्य सुभाव युत, नमूं सदा मद खोय ॥ ४३ ॥
ॐ ह्रीं नानुमोदित मनोमाया संरम्भ अनन्य स्वभावाय नमः अर्घं ।

पद्धड़ी छन्द ।

मायावी मनतें समारंभ, नहिं करत सदा हो अचल खंभ ।
तुम स्वानुभूति रमणीय संग, नित नमन करो धरि मन उमंग ॥४४॥
ॐ ह्रीं अकृतमनो मायासमारंभस्वानुभूतिरताय नमः अर्घं ।
मन वक्र द्वार उपकर्ण ठान, विधि समारंभको नहिं करान ।
निज साम्य धर्ममें रहो लिप्त, तुम सिद्ध नमो पद धार चित्त ॥४५॥
ॐ ह्रीं अकारितमनो मायासमारंभसाम्यधर्माय नमः अर्घं ।

दोहा ।

मायावी मनमें नहीं, समारंभ आनन्द ।
नमो सिद्धपद परम गुरु, पाऊं पद सुख वृन्द ॥ ४६ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मनोमायासमारंभगुरुवे नमः अर्घं ।

पद्धड़ी छन्द ।

बहु विधिकर जोड़ें अशुभ काज, आरम्भ नाम हिंसा समाज ।
मायावी मन द्वारै करेय, तुम सिद्ध नमूं यह विधि हरेय ॥४७॥

ॐ ह्रीं अकृत मनोमायारम्भपरमशांताय नमः अर्घं ।

पूर्वोक्त अकारित विधि सरूप, पायो निर आकुल सुख अनूप ।
सर्वोत्तम पद पायो महान, हम पूजत हैं उर भक्ति ठान ॥४८॥

ॐ ह्रीं अकारितमनोमायारंभनिराकुलाय नमः अर्घं ।

दोहा ।

मायावी आरम्भ करि, मनमें आनंद मान ।
सो तुम त्यागो भाव यह, भये परम सुख खान॥ ४९ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमायारंभअनन्तसुखाय नमः अर्घं ।

लोभी मनद्वारे नहीं, करै सदा समरंभ ।
हम अनन्तद्रिग सिद्धपद, पूजत हैं मनथंभ ॥ ५० ॥

ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसंरम्भअनंतद्रगाय नमः अर्घं ।

लोभी मन समरंभको. परसों नहिं कराय ।
द्रगानन्द भावातमा, सिद्ध नमूं मन लाय ॥ ५१ ॥

ॐ ह्रीं अकारितमनःलोभसंरंभद्रिगानंदभावाय नमः अर्घं ।

लोभी मन समरंभको, भावे नहीं आनन्द ।
नमूं नमूं परमातमा, भये सिद्ध जगवंद ॥ ५२ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मनोलोभसंरंभसिद्धभावाय नमः अर्घं ।

समारम्भ नहिं करत हैं, लोभी मनके द्वार ।
चिदानन्द चिद्देव तुम, नमूं लहूं पद सार ॥ ५३ ॥

ॐ ह्रीं अकृतमनो लोभसमारम्भनचिद्देवाय नमः अर्घं ।

परमें भी पूर्वोक्त विधि, करहूं नहीं करार ।
निराकार परमात्मा, नमूं सिद्ध स्वपाय ॥ ५४ ॥

ॐ ह्रीं अकारितमनो लोभसमारंभअनाकाराय नमः अर्घं ।

ऐसे ही पूर्वोक्त विधि, हर्षित होवे नाहिं ।
चित्स्वरूप साकारपद, धारत हूं उरमाहिं ॥ ५५ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनो लोभसमारंभसाकाराय नमः अर्घं ।

रचना क्रिया काजकी, लोभी मनके द्वार ।
नहीं करें हैं ते नमूं, चिदानद पद सार ॥ ५६ ॥

ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभारंभचिदानंदाय नमः अर्घं ।

लोभी मन प्रेरित नहीं, परको आरंभ हेत ।
चिन्मय रूपी पद धरें, नमूं लहूं निज खेत ॥ ५७ ॥

ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभारम्भचिन्मयस्वरूपाय नमः अर्घं ।

मन लोभी आरंभमें, आनंद लहें न लेस ।
निजपदमें नित रमत हैं, ध्याऊं भक्ति विशेष ॥ ५८ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभारंभस्वरूपाय नमः अर्घं ।

अडिल्ल छन्द ।

क्रोधित जिय वचयोग द्वार उपयोगको,
रचना विधि संकल्प नाम समरंभ सो ।

तामें करैं प्रवृत्ति पाय उपजावते,

नमूं सिद्ध या बिन वचगुप्ति उपावते ॥ ५९ ॥

ॐ ह्रीं अकृत वचन क्रोध संरंभ वाग्गुप्ताय नमः अर्घ्यं ।

क्रोध अग्नि करि निज उपयोग जरावही,

वचन योग करि विधि संरंभ करावही ।

सो तुम त्याग विभाव सुभाव सरूप हो,

नमूं उगनन्द धार चिदानन्द रूप हो ॥ ६० ॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसंरंभस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

सोरठा ।

क्रोधित निज वच द्वार, मोदित हो संरंभमें ।

सो तुम भाव निवार, नमूं स्वानुभव लब्धियुत ॥ ६१ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसंरंभस्वानुभवलब्धये नमः अर्घ्यं ।

दोहा ।

क्रोध सहित वाणी नहीं, समारंभ परवृत्त ।

स्वानुभूति रमणी रमण, नमूं सिद्ध कृतकृत्य ॥ ६२ ॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसमारंभस्वानुभूतिरमणाय नमः अर्घ्यं ।

समारंभ क्रोधित जिये, प्रेरित पर वच द्वार ।

नमूं सिद्ध इम कर्म बिन, धर्मधरा साधार ॥ ६३ ॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसमारंभसाधारणधर्माय नमः अर्घ्यं ।

समारंभ भय वचन करि, हर्षित हो युत क्रोध ।

नमूं सिद्ध या बिन लहो, परम शांति सुख बोध ॥ ६४ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसमारम्भपरमशांताय नमः अर्घ्यं ।

छन्द मोतीदाम ।

वर वचयोग धरें जिय रोष, करें त्रिधि भेद अरम्भ सदोष ।
तजो यह सिद्ध भये सुखकार, नमूं परमामृत तुष्ट अपार ॥६५॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधारम्भपरमामृततुष्टाय नमः अर्घं ।

अकारित बैन सदा युत क्रोध, महा दुखकार अरम्भ अबोध ।
भये समरूप महारस धार, नमें हम सिद्ध लहैं भवपार ॥६६॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधारम्भसमरसाय नमः अर्घं ।

दोहा ।

नानुमोदु आरम्भमें, क्रोध सहित वच द्वार ।
परम प्रीति निज आत्मरति, नमूं सिद्ध सुखकार ॥६७॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधारंभपरमप्रीतये नमः अर्घं ।

अडिल्ल ।

वचन द्वार संरम्भ मानयुत जे करें,
जोड़ करन उपकरण मानसों ऊचरें ।
नाना विधि दुख भोग निजातमको हरे,
नमूं सिद्ध या विन अविनश्वर पद धरें ॥ ६८ ॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसंरम्भअविनश्वरधर्माय नमः अर्घं ।

मान प्रकृति करि उदै करावे ना कदा,
वचनन करि संरम्भ भेद वरणूं सदा ।
मन इन्द्रिय अव्यक्त स्वरूप अनूप हो,
नमूं सिद्ध गुण सागर स्वातम रूप हो ॥ ६९ ॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमानसंरम्भअव्यक्तस्वरूपाय नमः अर्घं ।

सोरठा।

नानुमोद वच योग, मान सहित संरम्भ मय।
दुर्लभ इन्द्री भोग, परम सिद्ध प्रणमूं सदा ॥ ७० ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानसंरम्भदुर्लभाय नमः अर्घ।

चौपाई।

समारंभ जिन वैन न द्वार, करत नहीं है मान संभार।
ज्ञान सहित चिन्मूरति सार, परम गम्य है निर आकार ॥७१॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसमारंभपरमगम्यनिराकाराय नमः अर्घ।

वचन प्रवृत्ति मानयुत ठान, समारंभ विधि नाहिं करान।
शुद्ध स्वभाव परम सुखकार, नमूं सिद्ध उर आनंद धार ॥७२॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमानसमारंभपरमस्वभावाय नमः अर्घ।

वचन प्रवृत्ति मानयुत होय, समारंभ मय हर्षित सोय।
त्यागत एक रूप ठहराय, नमूं एकत्व गती सुखदाय ॥७३॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनसमारंभएकत्वगताय नमः अर्घ।

मानीजिय निज वचन उचार, वरतत है आरंभ मझार।
परमातम हो तजि यह भाव, नमूं धर्मपति धर्म प्रभाव ॥७४॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमानारंभपरमात्मधर्माधधर्मस्वभावाय नमःअर्घ।

सोरठा।

मानी बोले बेन, परप्रेरण आरम्भमे।
सो त्यागो तुम ऐन, शाश्वत सुख आतम नमूं ॥ ७५ ॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमानारम्भशाश्वतानन्दाय नमः अर्घ।

हर्षित वचन उचार, मान सहित आरंभमय।
सो तुम भाव विडार, निजानन्द रस घन नमूं ॥ ७६ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनारंभमानअमृतपूरणाय नमः अर्घ।

पद्धडी छन्द।

धरि कुटिल भाव जो कहत वैन, संरम्भ रूप पापिष्ट एन।
तुम धन्य धन्य यही रीति त्याग, होवे हृद धर्मस्वरूप भाग ॥७७॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासंरम्भअनतधर्मैकरूपाय नमः अर्घ।

मायायुत वचननको प्रयोग, संरंभ करावत अशुभ योग।
तुम यह कलंक नहीं धरो लेश, हो अमृत शशि पूजूं हमेश ॥७८॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमायासंरंभअमृतचन्द्राय नमः अर्घ।

वचमाया युत संरंभ कीन, सो पापरूप भावी मलीन।
तिस त्याग अनेक गुणात्म रूप, राजत अनेक मूरत अनूप ॥७९॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासंरभअनेकमूर्तये नमः अर्घ।

तुम समारंभकी विधि विधान, नहीं करत कुटिलता भेद ठान।
हो नित्य निरञ्जन भाव युक्त, मैं नमू सदा संशय विमुक्त ॥८०॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासमारंभनित्यनिरञ्जनस्वभावाय नमः अर्घ।

दोहा।

मायायुत निज बैंनते, समारंभके हेत।
नहीं प्रेरित परको नमूं, निजगुण धर्म समेत ॥ ८१ ॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमायासमारंभआत्मैकधर्माय नमः अर्घ।

मायाकरि बोलत नहीं, समारंभ हर्षाय।
सूक्षम अतीन्द्रिय वृष नमूं, नमूं सिद्ध मन लाय ॥८२॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासमारंभपरमसूक्ष्माय नम अर्घ।

मायायुत आरंभकी, वचन प्रवृत्ति नशाय ।

नमूं अनन्त अवकाश गुण, ज्ञान द्वार सुखदाय ॥८३॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमायारम्भअनन्तावकाशाय नमः अर्घं ।

मायायुत आरम्भ मय, मेट वचन उपदेश ।

भये अमल गुण ते नमूं, रागद्वेष नहीं लेश ॥ ८४ ॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमायारम्भअमलगुणाय नमः अर्घं ।

मायायुत आरम्भ मय, मेट वचन आनन्द ।

भये अनन्त सुखी नमूं, सिद्ध सदा सुखवृन्द ॥ ८५ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायारम्भनिरन्तरसुखाय नमः अर्घं ।

[illegible]

जो परिग्रहकी चाह लोभमयी मानिये,

विधि विधान ठानत संरम्भ बखानिये ।

वचन द्वार नहीं करें नमूं परमातमा,

सब प्रत्यक्ष लखें व्यापक धर्मातमा ॥ ८६ ॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभसंरम्भव्यापकधर्माय नमः अर्घं ।

वर्तावन संरंभ हेत परके तई,

लोभ उदै करि वचन कहैं हिंसामई ।

नमूं सिद्ध पद यह विपरीति सु जिन हरी,

सकल चराचर ज्ञानी व्यापक गुण वरी ॥ ८७ ॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभसंरंभव्यापकगुणाय नमः अर्घं ।

लोभी वच संरंभ हर्ष परकाशन,

नाना विधि सञ्चरे पाप दुख राशनं ।

मो तुम नाशत शाश्वत ध्रुवपद पाइयो,
नमूं अचल गुण सहित सिद्ध मन भाइयो ॥ ८८ ॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभसंरंभअचलाय नमः अर्घ ।

सोरठा।

समारम्भके वेन, लोभ सहित पर आसरैं।
तज निरलम्बी ऐन, नमूं सिद्ध उर धारिके ॥ ८९ ॥
ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभसमारंभनिरालंबाय नमः अर्घ।
समारंभ उपदेश, लोभ उदै थिति मेटिके।
पायौ अचल स्वदेश, नमूं निराश्रय सिद्ध गुण ॥९० ॥
ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभसमारंभनिराश्रयाय नमः अर्घ।
नानुमोदु वच लोभ, ममारंभ परवृत्तमें।
नमूं तिन्हैं तजि क्षोभ, नित्य अखण्ड विराजतें ॥ ९१ ॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभसमारंभअखण्डाय नमः अर्घ।

दोहा ।

लोभ सहित आरंभको, करत नहीं व्याख्यान।
नूतन पचम गति लहो, नमूं सिद्ध भगवान ॥ ९२ ॥
ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभारंभपरितावस्थाय नमः अर्घ ।
लोभ वचन आरंभको, कहत न परके हेत।
ममैसार परमातमा, नमत सदा सुख देत ॥ ९३ ॥
ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभारंभसमयसाराय नमः अर्घ ।

सोरठा।

नानुमोद वच द्वार, लोभ महित आरंभमय ।
अजर अमर सुखदाय, नमूं निरन्तर सिद्धपद ॥ ९४ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभारंभनिरंतराय नमः अर्घ।

अडिल्ल।

क्रोधित रूप भयंकर हस्तादिक तनी,
करत समस्या निंद्य संरंभ प्रकाशनी।
सो तुम नाशो काय गुप्ति करि यह तदा,
दृष्टि अगोचर काय गुप्ति प्रणमूं सदा ॥ ९५ ॥

ॐ ह्रीं अकृतक्रोधसंरंभकायगुप्तये नमः अर्घ।

सोरठा।

पर प्रेरण निज काय, क्रोध सहित संरंभ तज।
चेतन मूरति पाय, शुद्ध काय प्रणमूं सदा ॥ ९६ ॥

ॐ ह्रीं अकारित काय क्रोध संरंभ शुद्ध कायाय नमः अर्घ।

हर्षित शीश हिलाय, क्रोध उदय समरंभमें।
त्यागत भये अकाय, नमूं सिद्ध पद भावयुत ॥ ९७ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित काय क्रोध समरंभ अकायाय नमः अर्घ।

समारंभ विधि मेटि, कायिक चेष्टा क्रोधकी।
स्वै गुणपर्य समेट, भक्ति सहित प्रणमूं सदा ॥ ९८ ॥

ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधसमारंभस्वान्वयगुणाय नमः अर्घ।

दोहा।

समारंभ विधि क्रोध युत, तनसों नहीं कराय।
नित प्रति रति निजभावमें, वंदूं तिनके पाइ ॥ ९९ ॥

ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधसमारम्भभावरतये नमः अर्घ।

समारंभ सो कायसो, क्रोध सहित परसंस।
स्वै अभिन्न पद पाइयो, नमूं त्याग सरवंस ॥ १०० ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधसमारंभसान्वयधर्माय नमः अर्घं।

क्रोधित कायारंभ तजि, परसो रहित स्वभाव।
शुद्ध द्रव्यमें रत नमूं, निज सुख सहज उपाव॥१०१॥

ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधारंभशुद्धद्रव्यरताय नमः अर्घं।

क्रोधित कायारंभ नहीं, रंच प्रपंच कराय।
पंच रूप संसार हनि, नमूं पंचमगति राइ॥ १०२ ॥

ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधारम्भसंसारछेदनाय नमः अर्घं।

क्रोधित कायारम्भमें, हर्ष विषाद विडार।
अनेकान्त वस्तुत्व गुण, धरै नमो पद सार॥ १०३ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितक्रोधारम्भजैनधर्माय नमः अर्घं।

मान सहित संरंभकी, तनसो रचना त्याग।
पर प्रवेश विन रूप जिन, लियो नमूं बडभाग॥१०४॥

ॐ ह्रीं अकृतमानकायसंरंभस्वरूपगुप्तये नमः अर्घं।

मान उदय संरंभ विधि, तनसों नहीं कराय।
निज कृत पर उपकार विन, लियो नमूं तिन पाइ॥१०५॥

ॐ ह्रीं अकारितमानकायसंरम्भनिजकृतये नमः अर्घं।

मान रहित संरंभमें, तिनसों हर्ष न लेश।
ध्यान योग निज ध्येय पद, भावित नमूं अशेश॥१०६॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमानकायसंरंभध्येयभावाय नमः अर्घं।

मदयुत तनसों रंच भी, समारंभ विधि नाहिं।
परमाराधन योगपद, पायो प्रणमूं ताहि॥ १०७ ॥

ॐ ह्रीं अकृतमानकायसमारंभपरमाराधनाय नमः अर्घं।

समारंभ निज कायसों, मदयुत नहीं कराय ।
ज्ञानानंद सुभाव युत, प्रणमूं शीश नवाय ॥ १०८ ॥

ॐ ह्रीं अकारितमानकायसमारंभआनंदगुणाय नमः अर्घं ।

समारंभ मय विधि सहित, तनसों हर्ष न होय ।
निजानन्द नंदित तिन्हैं, नमूं सदा मद खोय ॥१०९॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमानकायसमारंभस्वानंदनंदिताय नमः अर्घं ।

अर्घ चौपाई ।

अकृत मानारम्भ शरीर, पर अनिंद्य वन्दूं धर धीर ॥ ११० ॥

ॐ ह्रीं अकृतमानकायारम्भसंतोषाय नमः अर्घं ।

कायारम्भ अकारित मान, स्वसरूप रत वन्दू तान ॥ १११ ॥

ॐ ह्रीं अकारितमानकायारम्भस्वसरूपारताय नमः अर्घं ।

मानारम्भ अनंदित काय । प्रणमूं विमल शुद्ध पर्याय ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायारम्भशुद्धपर्याय नमः अर्घं ।

दोहा ।

मायायुत संरम्भ विधि, तनसों करत न आप ।
गुप्त निजामृत रस लहै, नमूं तिन्हैं तज पाप ॥ ११२ ॥

ॐ ह्रीं अकृतकायमायासंरम्भअमृतगर्भाय नमः अर्घं ।

मायायुत संरम्भ विधि, तनसों नहीं कराय ।
मुख्य धर्म चैतन्यता, तिनसैं प्रणमूं पाय ॥ ११३ ॥

ॐ ह्रीं अकारितकायमायासंरम्भचैतन्यताय नमः अर्घं ।

मायायुत संरम्भ मय, नानुमोदयुत काय ।
वीतराग आनंद पद, समरस भावन भाय ॥ ११४ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासंरम्भसमरसीभावाय नमः अर्घं ।

समारम्भ माया सहित, अकृत तन विच्छेद ।
बन्ध दशा स्वै परहि विधि, नमत नसै भव खेद ॥११५॥

ॐ ह्रीं अकृतकायमायासमारम्भभवछेदकाय नमः अर्घं ।

समारम्भ तन कुटिलसों, भए अकारित स्वामि ।
निज परिणति परिणाए विन, गुण स्वातंत्र नमामि ॥११६॥

ॐ ह्रीं अकारितकायमायासमारंभस्वातंत्रधर्माय नमः अर्घं ।

नानुमोदित तन कुटिलता, समारंभ विधि देव ।
गुण अनंत युत परिणमूं, धर्म समूही एव ॥ ११७ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासमारम्भधर्मसमूहाय नमः अर्घं ।

मायायुत निज देहसों, नहीं आरम्भ करेह ।
परमातम सुख अक्ष विन, पायो वन्दूं तेह ॥ ११८ ॥

ॐ ह्रीं अकृतकायमायासमारम्भपरमातमासुखाय नमः अर्घं ।

मायारम्भ शरीर करि, परसो नहीं करान ।
निष्टातम स्वस्थित नमूं, सिद्धराज गुणखान ॥ ११९ ॥

ॐ ह्रीं अकारितकायमायारम्भनिष्टात्मने नमः अर्घं ।

मायारम्भ शरीरसो, नानुमोद भगवन्त ।
दर्श ज्ञानमय चेतना, सहित नमें नित सन्त ॥ १२० ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायारम्भचेतनाय नमः अर्घं ।

अर्द्ध-पद्धडी छन्द ।

संरम्भ चाह नहिं काययोग, चित परिणति नमि शुद्धोपयोग ॥१२१

ॐ ह्रीं अकारितकायलोभसंरम्भपरमचितप्रणिनाय नमः अर्घं ।

संरम्भ अकारित लोभ देह ।
निज आतम रत स्वसमेय तेह ॥ १२२ ॥

ॐ ह्रीं अकारितकायलोभसंरम्भस्वसमयरताय नमः अर्घं ।

संरम्भ लोभ तन हर्ष नाश ।
नमि व्यक्त धर्म केवल प्रकाश ॥ १२३ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसंरम्भव्यक्तधर्माय नमः अर्घं ।

सोरठा ।

लोभी योग शरीर, समारम्भ विधि नाशके ।
ध्रुव आनन्द अतीव, पायो पूजूं सिद्धपद ॥ १२४ ॥

ॐ ह्रीं अकृतकायलोभसमारम्भनित्यसुखाय नमः अर्घं ।

लोभ अकारित काय, समारम्भ निज कर्म हनि ।
पायो पद अकषाय, सिद्ध वर्ग पूजूं सदा ॥ १२५ ॥

ॐ ह्रीं अकारितकायलोभसमारम्भअकषायाय नमः अर्घं ।

पूर्ववर्त नानन्द, परिग्रह इच्छा मेटिकें ।
पायो सोच स्वछन्द, नमूं सिद्धपद भक्ति युत ॥ १२६ ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसमारम्भशौचगुणाय नमः अर्घं ।

दोहा ।

काय द्वार आरम्भकी, लोभ उदय विधि नाश ।
नमो चिदातम पद लियो, शुद्ध ज्ञान परकाश ॥ १२७ ॥

ॐ ह्रीं अकृतलोभारम्भचिदात्मने नमः अर्घं ।

काय द्वार आरम्भ विधि, लोभ उदय न कराय ।
निज अवलम्बित पद लियो, नमूं सदा तिन पाइ ॥ १२८ ॥

ॐ ह्रीं अकारितकायलोभनिरालंबाय नमः अर्घं ।

लोभी जन आरम्भमें, आनंद रीती मेंट ।
नमूं सिद्ध पद पाइयो, निज आतम दृग श्रेष्ठ ॥१२९॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभारंभआत्मने नमः अर्घ ।

सवैया इकतीसा ।

जेते कछु पुदगल परमाणु शब्दरूप,
भये हैं अतीत काल आगे होनहार हैं ।
तिनको अनन्त गुण करत अनन्तवार,
ऐसे महाराशी रूप धरैं विसतार हैं ॥
सब ही एकत्र होय सिद्ध परमातमके,
मानो गुण गण उचरन अर्थ धार है ।
तौभी एक समयके अनन्त भाग आनंद–
कहत न कहैं हम कौन परकार हैं ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणयुक्तसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।
१०८ वार जाप देना चाहिये ।

अथ जयमाला ।

दोहा ।

शिवगुण सरधा धार उर, भक्ति भाव है सार ।
केवल निज आनंद करि, करूं सुजस उचार ॥ २ ॥

पद्धडी छन्द ।

जय मदन कदन मन करण नाश,
जय शांतिरूप निज सुख विलास ।
जय कपट सुभट पट करन सूर,
जय लोभ क्षोभ मद दम्भ चूर ॥ ३ ॥

पर परणति सो अत्यन्त भिन्न,
निज परणति सो अति ही अभिन्न।
अत्यन्त विमल सब ही विशेष,
मल लेश शोध राखो न लेश ॥ ४ ॥
मणि दीप सार निर्विघन ज्योति,
स्वाभाविक नित्य उद्योत होत।
त्रैलोक्य शिखर राजत अखण्ड,
सम्पूरण द्युति प्रगटी प्रचण्ड ॥ ५ ॥
मुनि मन मन्दिरको अन्धकार,
तिस ही प्रकाशसौं नशत सार।
सो सुलभ रूप पावै निजार्थ,
जिस कारण भव भव भ्रमें व्यर्थ ॥ ६ ॥
जो कल्प कालमें होत सिद्ध,
तुम छिन ध्यावत लहिये प्रसिद्ध।
भवि पतितनको उद्धार हेत,
हस्तावलम्ब तुम नाम देत ॥ ७ ॥
तुम गुण सुमिरण सागर अथाह,
गणधर शरीर नहीं पार पाह।
जो भवदधि पार अभव्य रास,
पावे न वृथा उद्यम प्रयास ॥ ८ ॥
जिन मुख द्रहसों निकसो अभंग,
अति वेग रूप सिद्धान्त गंग।

नय सप्त भंग कल्लोल मान,
तिहुँ लोक वही धारा प्रमान ॥ ९ ॥
याते जगमें तीरथ सुधाम,
कहिलायो है सत्यार्थ नाम ।
सो तुम ही सो हैं शोभनीक,
नातर जल सम जु वहै सु ठीक ॥ १० ॥
निजपर आतम हित आत्म भूत,
जबसे है जब उतपत्ति सूत ।
ज्यो महाशीत ही हिम प्रवाह,
है मेटन समरथ अगिन दाह ॥ ११ ॥
त्यों आप महामंगल स्वरूप,
पर विघन विनाशन सहज रूप ।
हूं सन्त दीन तुम भक्ति लीन,
सो निश्चय पावै पद प्रवीण ॥ १२ ॥
तातै मन वच तन भाव धार ।
तुम सिद्धनकूं मम नमस्कार ॥

दोहा ।

जो तुम ध्यावें भावसों, ते पावें निज भाव ।
अगिन पाक संयोग करि, शुद्ध सुवर्ण उपाय ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविंशत्यधिकशतदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः अर्घं ।

इति पंचमी पूजा सम्पूर्णम ।

अथ श्री षष्ठमी पूजा २५६ गुण सहित।

छप्पै छन्द।

ऊरध अधो सरेफ बिन्दु हंकार विराजैं,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजैं।
वर्गनि पूरित वसुदल अम्बुज तत्व सन्ध धर.
अग्र भागमें मंत्र अनाहत सोहत अतिवर॥
फुनि अन्त ही वेढ्यो परम सुर, ध्यावत ही अरि नागको।
है केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुण सहित विराजमान अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरण।

दोहा।

सूक्ष्मादिक गुण सहित हैं, कर्म रहित निरोग।
सकल सिद्ध सो थापहूं, मिटे उपद्रव योग॥ २॥

इति यंत्र स्थापनं।

अथाष्टकं।

गीताछन्द।

अति नम्रता तिहुं योगमें निज भक्ति निर्मल भावहीं।
यह गुप्त जल प्रत्यक्ष निर्मल सलिल तीरथ लावहीं॥
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावहीं।
द्वै अर्द्धशत षट अधिक नाम उचार विरद सु गावहीं॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुण सहित श्री समस्त-

णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं जन्म-जरारोगविनाशनाय जलं ॥ १ ॥

अति वास विषयन वासना युत मलय शील सुभावही,
अरु चन्दनादि सुगन्ध द्रव्य मनोग्य प्राशुक लावहीं।
यह उभय० ॥ द्वै अर्द्धशत षट० ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुण सहित श्री समत्त-णाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं संसार-तापविनाशनाय चन्दनं ॥ २ ॥

परिणाम धवल सुवर्ण अक्षत मलिन मन न लगावही,
तिम सार अक्षत अखय स्वच्छ सुवास पुंज बनावहीं।
यह उभय द्रव्य संजोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावही,
द्वै अर्ध शत षट अधिक नाम उचार विरद सु गावहीं ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने दोसेछप्पन गुण सहित विराज-मान श्री समत्त णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरु-लघुमव्वावाहं अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मन पाग भक्त्यनुराग आनंद ताग माल पुरावही।
तिस भाग कुसुम सुहाग अर सुर नाग वास सु लावही ॥
यह उभय० द्वै अर्द्ध शत षट० ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने दोसैछप्पन गुण सहित श्री समत्त-णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

जिन भक्ति रसमें तृप्तता मन आन स्वाद न चावही ।
अंतर चरू बाहिज मनोहर रसिक नेवज लावही ॥
यह उभय० द्वै अर्द्ध शत षट० ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुण सहित श्री समत्त-णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥ ५ ॥

सरधान दीप प्रदीप्त अंतर मोह तिमिर नशावही ।
मणिदीप जगमग ज्योति तेज सुभास मेंट धरावही ॥
यह उभय० द्वै अर्द्ध शत षट० ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुण सहित श्री समत्त-णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि० ॥ ६ ॥

आनन्द धर्म प्रभावना मनघटा धूम्र सु छावहीं ।
गंधित दरव शुद्ध घ्राण प्रिय अति अग्नि संग जरावहीं ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुण सहित श्री समत्त-णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघु मव्वाबाहं अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

शुभ चिंतवन फल विविध रस युत भक्ति तरु उपजावही ।
रसना लुभावन कल्पतरुके सुर असुर मन भावही ॥
यह उभय० द्वै अर्द्ध शत षट० ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुणसहित श्री समत्त-

णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गणं अगुरुलघुमव्वावाहं मोक्षफलप्राप्ताय फलं नि० ॥ ८

समकित विमल वसु अंग युत करि अर्घ अन्तर भावही ।
वसु दरव अर्घ बनाय उत्तम देहु हर्ष उपावही ।
यह उभय संजोग त्रिभुवन पूज्य पूज्य रचावही ।
द्वै अद्ध शत षट् अधिक नाम उचार विरद सुगावही ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुणसहित श्री समत्त-णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ ।

गीता छन्द ।

निर्मल सलिल शुभ वास चंदन, धवल अक्षत युत अनी ।
शुभ पुष्प मधुकर नित रमें, चरु प्रचुर स्वादसु विधि घनी ॥
वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भलै ।
करि अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्मदल सब दलमलै ॥
ते कर्मावर्त नशाय युगपति, ज्ञान निर्मल रूप है ।
दुख जन्म टाल अपार गुण, सूक्षम सरूप अनूप है ॥
कर्माष्ट विन त्रैलोक्य पूज्य, अछेद शिव कमलापती ।
मुनि ध्येय सेय अभेय चाहूं, गेह द्यो हम शुभमती ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपतये संमत्तणाणादि अट्ठगुणाणं पूर्णार्घं ।

अथ २५६ गुण महित नामावली अर्घ ।

चौपाई ।

मिथ्यातम कारण दुखकारा, नित्य निरंजन विधि संमारा ।
तिस हनि समरथ अतिशय रूपा, केवल पाय नमूं शिव-भूपा ॥१॥

ॐ ह्रीं चिरतरसंसारकारणज्ञाननिर्द्धूतोद्भूतकेवलज्ञानातिशय-संपन्नाय सिद्धाधिपतये नमः अर्घं ।

मन इंद्रियनिमित मति ज्ञाना, योग देश तिष्ठत पद जाना ।
क्षय उपशम आवर्ण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥२॥

ॐ ह्रीं अभिनिबोधवारकविनाशकाय अर्घं ।

द्वादश अंगरूप अज्ञाना, श्रुत आवरणी भेद वखाना ।
क्षय उपशम आवर्ण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥३॥

ॐ ह्रीं द्वादशश्रुतावरणीकर्मविमुक्ताय नमः अर्घं ।

है असंख्य लोकावधि जेते, अवधिज्ञानके भेद सु तेते ।
क्षय उपशम आवर्ण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥४॥

ॐ ह्रीं असंख्यलोकभेदे अवधिज्ञानावरणीविमुक्ताय नमः अर्घं ।

है असंख्य परमान प्रमाना, मनपर्ययके भेद वखाना ।
क्षय उपशम आवर्ण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥५॥

ॐ ह्रीं असंख्यप्रकारमनःपर्ययज्ञानावरणीविमुक्ताय नमः अर्घ ।

निखिल रूप गुणपर्यय ज्ञानं, सत्व स्वरूप प्रत्यक्ष प्रमानं ।
केवल आवर्णी विधि नाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥६॥

ॐ ह्रीं निखिलरूपगुणपर्यायबोधककेवलज्ञानावर्णविमुक्ताय नमः अर्घं ।

द्वारपती भूपतिके ताई, रोक रहै देखन दे नाहीं।
सोई दर्शनावरण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥७॥
ॐ ह्रीं सकलदर्शनावरणीविनाशकाय नमः अर्घं।

मूर्तीक पदको प्रतिभासन, नेत्र द्वार होवे परकाशन।
चक्षु दर्शनावरण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरणकर्मरहिताय नमः अर्घं।

दृगविन अन्य इन्द्री मन द्वारे, वस्तुरूप सामान्य उधारे।
अदृग दर्शनावरणविनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरणरहिताय नमः अर्घं।

देशकाल द्रव भाव प्रमानं, अवधि दर्श होवे सब ठानं।
अवधि दर्श आवरण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥१०॥
ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरणरहिताय नमः अर्घं।

विन मर्याद सकल तिहु काल, होय प्रगट घटपट तिहं हाल।
केवल दर्शनावरण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥११
ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरणरहिताय नमः अर्घं।

बैठे खड़े पड़े घुम्मरिया, देखे नहीं निद्राकी त्रिरिया।
निद्रा दर्शनावरण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥१२॥
ॐ ह्रीं निद्राकर्मरहिताय नमः अर्घं।

सावधान कितनी की जावे, रंच नेत्र उघड़न नहीं पावे।
निद्रा निद्रा कर्म विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥१३॥
ॐ ह्रीं निद्रानिद्राकर्मरहिताय नमः अर्घं।

मंदरूप निद्राका आना, अवलोकै जाग्रतके समाना।
प्रचला दर्शनावरण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो॥१४॥
ॐ ह्रीं प्रचलाकर्मरहिताय नमः अर्घं।

मुखसों लार बहै अति भारी, हस्त पाद कंपत दुखकारी।
प्रचला प्रचला वर्ण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो॥१५
ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचलाकर्मरहिताय नमः अर्घं

सोता हुआ करै सब काजा, प्रगटावै प्राकर्म समाजा।
यह स्त्यानगृद्धि विधि नाशौ, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो॥१६
ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धिकर्मरहिताय नम अर्घं।

जै पदार्थ है इन्द्रीय योग, ते सब वेदे जिय निज जोग।
सोई नाम वेदनी होई, नमूं सिद्ध तुम नासो सोई॥ १७॥
ॐ ह्रीं वेदनीकर्मरहिताय नमः अर्घं।

रतिके उदय भोग सुखकार, पावे जिय शुभ विविध प्रकार।
साता भेद वेदनी होय, नमूं सिद्ध तुम नाशो सोय॥ १८॥
ॐ ह्रीं सातावेदनीकर्मरहिताय नमः अर्घ।

अरति उदय जिय इन्द्री द्वार, विषयभोग वेदे दुखकार।
एही भेद असाता होय, नमूं सिद्ध तुम नाशो सोय॥ १९॥
ॐ ह्रीं असातावेदनीकर्मरहिताय नमः अर्घं।

ज्यों असावधानी मदपान, करत मोह विधितें सो जान।
ता विधि करि निज लाभ न होय, नमूं सिद्ध तुम नाशो सोय॥
ॐ ह्रीं मोहकर्मरहिताय नमः अर्घं।

जाके उदय तत्व परतीत, सत्य रूप नहीं हो विपरीत ।
पंच भेद मिथ्यात निवार, भये, सिद्ध प्रणमूं सुखकार ॥ २१ ॥
ॐ ह्रीं मिथ्याकर्मविनाशनाय नमः अर्घं ।

प्रथमोपशम समकित जब गले, मिथ्या समकित दोनों मिले ।
मिश्र भेद मिथ्यात निवार, भये सिद्ध प्रणमूं सुखकार ॥२२॥
ॐ ह्रीं सम्यक्मिथ्यात्वकर्मरहिताय अर्घं ।

दर्शनमें कुछ मल उपजाय, करै समल नहिं मूल नसाय ।
समय प्रकृति मिथ्यात निवार, भये सिद्ध प्रणमूं सुखकार ॥२३॥
ॐ ह्रीं सम्यक्त्वप्रकृतिमिथ्यातरहिताय नमः अर्घं ।

धर्ममार्गमें उपजे रोष, उदय भये मिथ्यात सदोष ।
यह अनन्त अनुबंध निवार, भये सिद्ध प्रणमूं सुखकार ॥२४॥
ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीक्रोधकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

देव धर्म गुरुसों अभिमान, उदय भये मिथ्या सरधान ।
यह अनन्त अनुबंध निवार, भये सिद्ध प्रणमूं सुखकार ॥२५॥
ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीमानकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

छलसो धर्म रीति दलमलै, उदय होय मिथ्या जब चलै ।
यह अनन्त अनुबन्ध निवार, प्रणमूं सिद्ध महासुखकार ॥२६॥
ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीमायाकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

लोभ उदय निर्माल्य दर्वे, भक्षे महानिंद मति सर्वे ।
यह अनन्त अनुबन्ध निवार, भये सिद्ध प्रणमूं सुखकार ॥२७॥
ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीलोभकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

सुन्दरी छन्द ।

क्रोध करि अणुव्रत नहिं लीजिये, चारित मोह प्रकृति सु भनीजिए ।
है अप्रत्याख्यानी कर्मसो, भये सिद्ध नमूं तिन नासियो ॥२८॥
ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणक्रोधकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

मान करि अणुव्रत न हो कदा, रहै अव्रत युत दर्शन सदा ।
है अप्रत्याख्यानी कर्मसो, भये सिद्ध नमूं तिन नासियो ॥२९॥
ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानानीमानरहिताय नमः अर्घं ।

देशव्रती श्रावक नहीं होत है, वक्रताको जहं उद्योत है ।
है प्रत्याख्यानी कर्मसों, भये सिद्ध नमूं तिन नासियो ॥३०॥
ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमायाविमुक्ताय नमः अर्घं ।

मोह लोभ चरित जे जिय वसे, देशव्रत श्रावक नहीं ते लसे ।
है अप्रत्याख्यानी कर्मसो, भये सिद्ध नमूं तिन नासियो ॥३१॥
ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभविमुक्ताय नमः अर्घं ।

अडिल्ल छन्द मात्रा २१ ।

प्रत्याख्यानी क्रोध सहित जे आचरे,
देशव्रती सो सकल व्रत नाहीं धरें ।
चारित मोह सु प्रकृति रूप तिह नाम है,
नाश कियो मैं नमूं सिद्ध शिवधाम है ॥ ३२ ॥
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानीक्रोधविमुक्ताय नमः अर्घं ।

प्रत्याख्यानभिमान महान न शक्ति है,
जास उदय पूरण संयम अव्यक्त है ।
चारित मोह० ॥ नाश कियो० ॥ ३३ ॥
ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमानरहिताय नमः अर्घं ।

प्रत्याख्यानी माया मुनि पदकों हतैं,
श्रावक व्रत पूरण नहीं खण्डे जासतैं ।
चारित० ॥ नाश कियो० ॥ ३४ ॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमायारहिताय नमः अर्घं ।

श्रावक पदमें जास लोभको वास है ।
प्रत्याख्यानी श्रुतमें संज्ञा तास है ॥
चारित० ॥ नाश कियो० ॥ ३५ ॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणलोभरहिताय नमः अर्घं ।

भुजगप्रयात् छन्द ।

यथाख्यात चारित्रको नाश कारा,
महावृत्तको जासमें हो उजारा ।
यही संज्वलन क्रोध सिद्धांत गाया,
नमूं सिद्धके चरण ताको नसाया ॥ ३६ ॥

ॐ ह्रीं संज्वलनावरणक्रोधरहिताय नमः अर्घं ।

रहै संज्वलन रूप उद्योत जेते,
न हो सर्वथा शुद्धता भाव तेते ।
यही संज्वलन मान सिद्धांत गाया,
नमूं सिद्धके चरण ताको नसाया ॥ ३७ ॥

ॐ ह्रीं संज्वलनमानरहिताय नमः अर्घं ।

वहै संज्वलनकी जहां मंद धारा,
लहै है तहां शुक्लध्यानी उभारा ।



यही संज्वलन वक्र सिद्धांत गाया,
नमूं सिद्धके चरण ताको नसाया ॥ ३८ ॥

ॐ ह्रीं संज्वलनमायारहिताय नम अर्घं ।

जहां संज्वलन लोभ है रंच नाही,
निजानन्दको वास होवे तहांही ।
यही संज्वलन लोभ सिद्धांत गाया,
नमूं सिद्धके चरण ताको नसाया ॥ ३९ ॥

ॐ ह्रीं संज्वलनलोभरहिताय नमः अर्घं ।

छन्द मोदक

जा करि हास्य भाव जुत होतहिं, हास्य किये परकी यह पातहिं ।
सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीश नमूं तुमको धरि हाथहिं ॥ ४०

ॐ ह्रीं हास्यकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

प्रीत करै पर सो रति मानहिं, सो रति भेद विधी तिस जानहिं ।
सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीश नमूं तुमको धरि हाथहिं ॥ ४१

ॐ ह्रीं रतिकर्मरहिताय नमः अर्घ ।

जो परसों परमन्न न हो मन, आरति रूप रहै नित आनन ।
सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीस नमूं तुमको धरि हाथहिं ॥ ४२

ॐ ह्रीं अरतिकर्मरहिताय नमः अर्घ ।

जा करि पावत इष्ट वियोगहिं, खेदमई परिणाम सु शोगहिं ।
सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीस नमूं तुमको धरि हाथहिं ॥ ४३

ॐ ह्रीं शोककर्मरहिताय नमः अर्घ ।

हो उद्वेग उच्चाटन रूपहिं, मन तन कंपित होत अरूपहिं ।

सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीस नमूं तुमको धरि हाथहिं ॥४४

ॐ ह्रीं भयकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

सवैया ।

जो परको अपराध उचारत, जो अपनो कछु दोष न जाने,
जो परके गुण औगुण जानत, जो अपने गुणको प्रगटाने ·
सो जिनराज बखान जुगुप्सित, है जियनो विधिके वश ऐसो,
हे भगवंत! नमूं तुमको तुम, जीति लियो छिनमें अरि तैसो ॥४५॥

ॐ ह्रीं जुगुप्साकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

जो नर नारि रमा वनकी, निजसो अभिलाश धरै मनमाहीं,
सो अति ही परकाश हिये नित, कामकी दाह मिटै छिन माहीं।
सो जिनराज बखान नपुंसक, वेद हनो विधिके वश ऐसो,
हे भगवंत! नमूं तुमको तुम, जीति लियो छिनमें अरि तैसो ॥४६॥

ॐ ह्रीं नपुंसकवेदरहिताय नमः अर्घं ।

जो तिय संग रमें विधि यो मन, औरनमें कछु आनन्द माने।
किंचित काम जगै उरमें नित, शांति सुभावनकी शुद्धि ठाने ॥
सो जिनराज बखानत है नर, वेद हनो विधिके वश ऐसो।
हे भगवन्त! नमूं तुमको तुम, जीत लियो छिनमें अरि तैसो ॥४७

ॐ ह्रीं पुरुषवेदरहिताय नमः अर्घं ।

जो नर संग रमें सुख मानत, अन्तर गूढ़ न जानत कोई।
हाव विलास हि लाज धरै मन, आतुरता करि तृप्त न होई ॥
सो जिनराज बखानत है तिय, वेद हनो विधिके वश ऐसो।

हे भगवन्त नमूं तुमको तुम, जीति लियो छिनमें अरि तैसो ॥४८॥

ॐ ह्रीं स्त्रीवेदरहिताय नमः अर्घं ।

वसततिलका छद ।

आयु प्रमाण दृढ बन्धन और नाहीं,
गत्यानुसार थिति पूरण कर्ण नाहीं ।
सोई विनाश कीनो तुम देव नाथा,
वंदू तुम्हैं तरण कारण जोर हाथा ॥४९॥

ॐ ह्रीं आयुकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

जो है कलेश अवधि सब होत जासो,
तेतीस सागर रहै थिति नर्क जासो ।
सोई विनाश कीनो तुम देव नाथा,
वंदू तुम्हैं तरण कारण जोर हाथा ॥ ५० ॥

ॐ ह्रीं नरकायुरहिताय नमः अर्घं ।

याही प्रकार जितने दिन देव देही,
नासै अकाल नहि जे सुर आयुसे ही ।
सोई विनाश कीनो तुम देव नाथा,
वंदू तुम्हैं तरण कारण जोर हाथा ॥ ५१ ॥

ॐ ह्रीं देवायुरहिताय नमः अर्घं ।

जासो करैं त्रिजगकी थिति आउ पूरी,
सोई कहो त्रिजग आयु महात्म पूरी ।
सोई विनाश कीनो तुम देव नाथा,
वंदू तुम्हैं तरण कारण जोर हाथा ॥ ५२ ॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचायुरहिताय नमः अर्घ।

जेते नरायु विधि दे रस आप जाको,
　　ते ते प्रजाय नर रूप भुगाय ताको।
सोई विनाश कीनो तुम देव नाथा,
　　वंदूं तुम्हें तरण कारण जोर हाथा॥ ५३॥

ॐ ह्रीं मनुष्यायुरहिताय नमः अर्घ।

पद्धरी छन्द।

जो करे जीवको बहु प्रकार, ज्यों चित्रकार चित्राम सार।
सो नाम कर्म तुम नाश कीन, मैं नमूं सदा उर भक्ति लीन॥५४॥

ॐ ह्रीं नामकर्मरहिताय नमः अर्घ।

जासो उपजे तिर्यंच जीव, रहै ज्ञान हीन निर्मल सदीव।
सो तिर्यंचगति तुम नाश कीन, मैं नमूं सदा० ॥ ५५ ॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचगतिरहिताय नमः अर्घ।

जा उदय नारकी देह पाय, नाना दुख भोगे नर्क जाय।
सो नर्कगती तुम नाश कीन॥ मैं नमूं सदा० ॥ ५६ ॥

ॐ ह्रीं नर्कगतिरहिताय नमः अर्घ।

चउ विधि सुरपद जासो लहाय, विषयातुर नित भोगे उपाय।
　　सो देवगती तुम नाश कीन॥ मैं नमूं० ॥ ५७॥

ॐ ह्रीं देवगतिरहिताय नमः अर्घ।

जा उदय भये मानुष्य होन, लहै नीच ऊंच नाको उद्योत।
सो मनुष्य गती तुम नाश कीन, मैं नमूं सदा उर भक्ति लीन॥५८॥

कामिनीमोहन छन्द ।

एक ही भाव सामान्यका पावना,
जीवकी जातिका भेद सो गावना ॥
होत जो थावरा एक इंद्री कहो,
पूज हूं सिद्धके चरण ताको दहो ॥ ५९ ॥

ॐ ह्रीं एकइन्द्रीजातिरहिताय नमः अर्घ ।

फर्सके साथमें जीभ जो आमिलें,
पायसों आपने आप भूपर चलें ।
गामिनी कर्म सो दोय इन्द्री कहो,
पूजहूं सिद्धके चरण ताको दहो ॥६०॥

ॐ ह्रीं दोइन्द्रीजातिरहिताय नमः अर्घ ।

नाक हो और दो आदिके जोडमें,
हो उदय चालना योगसों लोडमें ।
गामिनी कर्म सो तीन इन्द्री कहो, पूजहूं० ॥ ६१ ॥

ॐ ह्रीं त्रीइन्द्रियजातिरहिताय नमः अर्घ ।

आंख हो नाक हो जीभ हो फर्श हो,
कानके शब्दका ज्ञान जामें न हो ।
गामिनी कर्म सो चार इन्द्री कहो, पूजहूं० ॥ ६२ ॥

ॐ ह्रीं चतुरिंद्रियजातिरहिताय नमः अर्घ ।

कान भी आमिलै जीभ जा जातिमें,
हो असंज्ञी सुसंज्ञी दो भांतिमें ।
गामिनी कर्मकी पञ्च इन्द्री कहो, पूजहूं० ॥ ६३ ॥

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियजातिरहिताय नमः अर्घं ।

छन्द लावनी ।

हो उदार जो प्रगट उदारिक, नाम कर्मकी प्रकृति भनी,
लहै औदारिक देह जीव तिस, कर्म प्रकृतिके उदय तनी।
भये अकाय अमूरति आनन्द, पुञ्ज चिदारत ज्योति घनी,
नमूं तुम्है कर जोर युगल तुम, सकल रोगथल काय हनी ॥६४॥

ॐ ह्रीं औदारिकशरीरविमुक्ताय नमः अर्घं ।

निज शरीरको अणिमादिक करि, बहु प्रकार प्रणमाय वरे,
वैक्रिय तन कहलावे है यह, देव नारकी मूल धरे।
भए अकाय अमूरति आनन्द, पुञ्ज चिदारत ज्योति घनी,
नमूं तुम्हें करजोर युगल तुम, सकल रोगथल काय हनी ॥६५॥

ॐ ह्रीं वैक्रियिकशरीरविमुक्ताय नमः अर्घं ।

धवल वर्ण शुभ योगी संशय. हरण आहारकका पुतला,
जो प्रमत्त गुणथानक मुनिके, देह औदारिक सो निकला।
भए अकाय० ॥ नमूं तुम्हें० ॥६६॥

पुद्गलीक तन कर्म वर्गणा, कारमाण परदीप्त करन,
तेजस नाम शरीर शास्त्रमें, गावत है नहिं तेज वरण।
भए अकाय० ॥ नमूं तुम्हें ॥६७॥

ॐ ह्रीं तैजसशरीररहिताय नमः अर्घं ।

पुद्गलीक वरगणा जीवसों, एक क्षेत्र अवगाही है,
नूतन कारण करण मूल तन, कारमाण तिस नाम कहे।
भए अकाय० ॥ नमूं तुम्हें० ॥६८॥

ॐ ह्रीं कारमाणशरीररहिताय नमः अर्घं ।

इन्द्रवज्रा छन्द ।

जेते प्रदेशा तन बीच आवैं, सारे मिलैं जोड न छिद्र पावें ।
संघात नामा जिम देह जानों, पूजूं तुम्हैं सिद्ध यह कर्म भानो ॥ ६९

ॐ ह्रीं औदारिकसंघातरहिताय अर्घ ।

ऐसे प्रकारा तनमें अकारा, संधी मिलाया कर चेत सारा ।
संघात नामा जिम देह जानो, पूजूं तुम्हैं सिद्ध यह कर्म भानो ॥७०

ॐ ह्रीं आहारसंघातरहिताय नमः अर्घ ।

वैक्रियके जोड़ जो होत नाहीं, संघातनामा जिन बैन नाहीं ।
संघात नामा जिय देह जानो, पूजूं तुम्हैं सिद्ध यह कर्म मानो ॥७१

ॐ ह्रीं वैक्रियकसंघातरहिताय नमः अर्घ ।

तेजसमकी अङ्ग उपङ्ग सारे, संधी मिलाया तिम मांहि धारे ।
संघात नामा जिम देह जानो, पूजूं तुम्हैं सिद्ध यह कर्म भानो ॥७२

ॐ ह्रीं तेजससंघातरहिताय नमः अर्घ ।

ज्ञानादि आवर्ण जो कर्म काया, ताको मिलाया श्रुत माहिं गाया ।
संघात नामा जिय देह जानो, पूजूं तुम्हैं सिद्ध यह कर्म भानो ॥७३

ॐ ह्रीं कारमाणसंघातरहिताय नमः अर्घ ।

चौबोला छन्द ।

पुद्गलीक वर्गणा जोगते, जब जिय करत अहारा ।
प्रणवावे तिनको एकत्र करि, बंध उदय अनुसारा ॥
यही औदारिक बन्धन तुमने, छेद किये निरधारा ।
भए अबंध अकाय अनूपम, जजूं भक्ति उर धारा ॥ ७४ ॥

ॐ ह्रीं औदारिकबन्धरहिताय नमः अर्घ ।

वैक्रियक तनु परमाणु मिल, परस्पर अनिवारा ।
हो स्कन्ध रूप पर्याई, यह बन्धन परकारा ॥
वैक्रियिक तनु बन्धन तुमने, छेद किया निरधारा ॥ भए० ॥७५
ॐ ह्रीं वैक्रियिकबंधनछेदकाय नमः अर्घं ।
मुनि शरीरसों बाहिज निसरे, संशय नाशनहारा ।
ताको मिले प्रदेश परस्पर, हो सम्बन्ध अवारा ॥
यही आहारक बंधन तुमने, छेद कियो निरधारा ।
भए अबन्ध अकाय अनूपम, जजूं भक्ति उर धारा ॥ ७६ ॥
ॐ ह्रीं आहारकबन्धनछेदकाय नमः अर्घं ।
दीप्त जोति जो कारमाणकी, रहै निरन्तर लारा,
जहां नाहिं तहां दर्प रोकन ज्यों, रहै एक ही धारा ।
तैजस नामा बन्धन तुमने छेद, किया निरधारा ॥भए०। ७७॥
ॐ ह्रीं तैजसबन्धरहिताय नमः अर्घं ।
द्रव्य कर्म ज्ञानावरणादिक, पुद्गल जानिय सारा,
एक क्षेत्र अवगाही जियको, द्विविधि भाव करतारा ।
कारमाण यह बन्धन तुमने० ॥ भये अबंध० ॥ ७८ ॥
ॐ ह्रीं कारमाणबन्धरहिताय नमः अर्घं ।

रूप चाल ।

तन आकृति संस्थान आदि, समचतुरस्र बखानो,
ऊपर तले समान, यथाविधि सुन्दर जानो ।
यह विपरीति स्वरूप त्याग, पायो निजात्म पद,
बीजभूत कल्याण नमूं भव्यनि प्रति सुखप्रद ।।७९।।
ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानविमुक्ताय नमः अर्घं ।

ऊपरसे हो थूल तले हो, न्यून देह जिस ·
परिमण्डलनिग्रोध नाम, वरणो सिद्धांत तिम ॥
यह विपरीति०, बीजभूत कल्याण० ॥ ८० ॥

ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थानरहिताय नमः अर्घं ।

नीचेसे हो थूल न्यून होवे उपराही.
बंमई सम वामीक देह जिन आज्ञा माहीं ।
यह विपरीति० ॥ बीजभूत कल्याण० ॥ ८१ ॥

ॐ ह्रीं वामीकसंस्थानरहिताय नमः अर्घं ।

जो कूबड़ आकार रूप पावे तन प्राणी,
कुब्ज नाम संस्थान ताहि वरणों जिन वानी ।
यह विपरीति० ॥ बीजभूत कल्याण० ॥ ८२ ॥

ॐ ह्रीं कुब्जनामसस्थानरहिताय नमः अर्घं ।

लघुसों ठिगना रूप एम तन होवे जाको,
वामन है परसिद्ध लोकमें कहिये ताको ।
यह विपरीति स्वरूप त्याग, पायो निजात्म पद,
बीजभूत कल्याण नमूं, भव्यनि प्रति सुखप्रद ॥८३॥

ॐ ह्रीं वामनसंस्थानरहिताय नमः अर्घं ।

जिततित बहु आकार कही नहिं हो यक मारूं,
हुंडक अति असुहावन पाप फल प्रगट उधारूं ।
यह विपरीति० ॥ बीतभूत कल्याण० ॥ ८४ ॥

ॐ ह्रीं हुंडकसंस्थानरहिताय नमः अर्घं ।

ज्यों वज्रकी कीली ठुकी हो हाड संधिमय जहां,
सामान वृषभ जु जेवरी ताकरि बंधाई हो तहां।
है दूसरा संहनन यह नाराच वज्र प्रकार हो,
यह त्याग बंध अबन्ध निवसो परम आनंद धार हो ॥८९॥

ॐ ह्रीं वज्रनाराचसंहननरहिताय नमः अर्घ।

नहि वज्रकी हो वृषभ अरु नाराच भी नहीं वज्र हो,
सामान कीलि करि ठुकी सब हाड वज्र हो।
है तीसरा संहनन जो नाराच ही परकार हो,
यह त्याग बन्ध अबन्ध निवसो परम आनंद धार हो ॥९०॥

ॐ ह्रीं नाराचसंहननरहिताय नमः अर्घं।

हो जडित छोटी कीलिका, सो संधि हाडोंकी जबै,
कछु ना विशेषण वज्रके, सामान्य ही होवे सबै।
है चौथवां संहनन जो, नाराच अर्द्ध प्रकार हो,
यह त्याग बंध अबंध निवसो, परम आनंद धार हो ॥९१॥

ॐ ह्रीं अर्द्धनाराचसंहननरहिताय नमः अर्घ।

जो परस्पर जडित होवे, संधि हाडनकी जहां,
नहीं कीलिका सो ठुकी होवे, शाल संधीके तहां।
है पांचवां संहनन जो, कीलक नाम कहाय हो,
यह त्याग बंध अबंध निवसो, परम आनंद धार हो ॥९२॥

ॐ ह्रीं कीलिकसंहननरहिताय नमः अर्घ।

कछु छिद्र कछुक मिलाप होवे, संधि हाड़ोमय सही,
केवल नसासों हाय वेढ़ी, माससों लतपत रही।

अन्तिम स्फाटिक संहनन यह हीन शक्ति असार हो,
यह त्याग बन्ध अबन्ध निवसो परम आनंद धार हो ९३॥
ॐ ह्रीं स्फटिकसंहननरहिताय नमः अर्घं ।

दोहा ।

वर्ण विशेष न स्वेत है, नामकर्म तन धार ।
स्वच्छ स्वरूपी हो नमूं, ताहि कर्मरज टार ९४ ॥
ॐ ह्रीं स्वेतनामाकर्मरहिताय नमः अर्घं ।
वर्ण विशेष न पीत है । नामकर्म तन धार ॥ स्वच्छ० ॥९५॥
ॐ ह्रीं पीतनामकर्मरहिताय नमः अर्घं ।
वर्ण विशेष न रक्त है । नामकर्म तन धार ॥
स्वच्छ स्वरूपी हो नमूं, ताहि कर्मरज टार ॥ ९६ ॥
ॐ ह्रीं रक्तनामकर्मरहिताय नमः अर्घं ।
वर्ण विशेष न हरित है । नामकर्म तन धार ॥ स्वच्छ० ॥९७॥
ॐ ह्रीं हरितनामकर्मरहिताय नमः अर्घं
वर्ण विशेष न कृश्न हैं । नामकर्म तन धार ॥ स्वच्छ० ॥९८॥
ॐ ह्रीं कृश्ननामकर्मरहिताय नमः अर्घं ।
गंध विशेष न शुभ कहो । नामकर्म तन धार ॥ स्वच्छ० ॥९९॥
ॐ ह्रीं सुगंधनामकर्मरहिताय नमः अर्घं ।
गंध विशेष न अशुभ है । नामकर्म तन धार ॥ स्वच्छ० ॥१००॥
ॐ ह्रीं दुर्गंधनामकर्मरहिताय नमः अर्घं ।
स्वाद विशेष न त्यक्त है । नामकर्म तन धार ॥ स्वच्छ० ॥१०१॥
ॐ ह्रीं त्यक्तरसरहिताय नमः अर्घं ।

स्वाद विशेष न कटुक है। नामकर्म तन धार॥
स्वच्छ स्वरूपी हो नमूं, ताहि कर्मरज टार॥१०२॥
ॐ ह्रीं कटुकरसरहिताय नमः अर्घं।
स्वाद विशेष न आम्ल है। नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ० १०३॥
ॐ ह्रीं आम्लरसरहिताय नमः अर्घं।
स्वाद विशेष न मधुर है। नामकर्म तन धार। स्वच्छ०॥१०४॥
ॐ ह्रीं मधुररसरहिताय नमः अर्घं।
स्वाद विशेष न कषाय है। नामकर्म तन धार॥स्वच्छ०॥१०५॥
ॐ ह्रीं कषायरसरहिताय नमः अर्घं।
फर्स विशेष न नर्म है। नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ०॥१०६॥
ॐ ह्रीं मृदुत्वस्पर्शरहिताय नमः अर्घं।
फर्स विशेष न कठिन है। नामकर्म तन धार॥स्वच्छ०॥१०७॥
ॐ ह्रीं कठिनस्पर्शरहिताय नमः अर्घं।
फर्स विशेष न भार है। नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ०॥१०८॥
ॐ ह्रीं गुरुस्पर्शरहिताय नमः अर्घं।
फर्स विशेष न अगुरु है। नामकर्म तनधार॥स्वच्छ०॥१०९॥
ॐ ह्रीं लघुस्पर्शरहिताय नमः अर्घं।
फर्स विशेष न शीत है। नामकर्म तनधार॥स्वच्छ०॥११०॥
ॐ ह्रीं शीतस्पर्शरहिताय नमः अर्घं।
फर्स विशेष न उष्ण है। नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ०॥१११॥
ॐ ह्रीं उष्णस्पर्शरहिताय नमः अर्घं।
फर्स विशेष न चिकण है। नामकर्म तन धार॥ स्वच्छ०॥११२॥

छन्द त्रोटक।

तनभार भए निज घात ठने, तिसकी कछु विधि ऐसी जु बने।
अपघात सुकर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भए तसु मूल हनों॥११८॥
ॐ ह्रीं अपघातकर्मरहिताय नमः अर्घं।

विष आदि अनेक उपाधि धरै, पर प्राणनिको निर्मूल करै।
परघाति सु कर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तसु मूल हनों॥११९॥
ॐ ह्रीं परघातनामकर्मरहिताय नमः अर्घं।

अति तेजमई परदीप्त महा, रवि बिंब विषैं जिय भूमि लहा।
यह आतप कर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य०॥१२०॥
ॐ ह्रीं अतितेजमईआतापनामकर्मरहिताय नमः अर्घं।

परकासमई जिम बिंब शशि, पृथिवी जिय पावत देह इसी।
द्युति नाम सुकर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य०॥१२१॥
ॐ ह्रीं उद्योतनामकर्मरहिताय नमः अर्घं।

तनकी थिति कारण स्वास गहैं, स्वर अंतर बाहर भेद वहैं।
यह स्वास सुकर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तसु मूल हना॥१२२
ॐ ह्रीं स्वांसकर्मरहिताय नमः अर्घं।

शुभ चाल चलैं अपनी जिममें, शशि ज्यों नभ मोहत है तिसमें।
नभमें गति कर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य०॥१२३॥
ॐ ह्रीं विहायोगतिकर्मविमुक्ताय नमः अर्घं।

इक इन्द्रीय जात विरोध मई, चतुरांति सुभावक प्राप्त भई।
त्रस नाम सु कर्मसिद्धांत भनो, जग पूज्य०॥१२४॥
ॐ ह्रीं त्रसनामकर्मविमुक्ताय नमः अर्घं।

इक इन्द्री जातहि पावत हैं, अरु शेष न ताहि धरावत हैं।
यह थावर कर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य० ॥ १२५ ॥

ॐ ह्रीं थावरनामकर्मरहिताय नमः अर्घं।

परमें परवेश न आप करैं, परको निजमें नहिं थाप धरैं।
यह बादर कर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य० ॥ १२६ ॥

ॐ ह्रीं बादरनामकर्मरहिताय नमः अर्घं।

जलसों देवसो नहीं आप मरै, सब ठौर रहै परको न हरै।
यह सूक्षम कर्मसिद्धांत भनो, जग पूज्य० ॥ १२७ ॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मनामकर्मरहिताय नमः अर्घं।

जिसते परिपूरणता करि है, निज शक्ति समाज उदय धरि है।
पर्याप्त सुकर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य० ॥ १२८ ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकर्मरहिताय नमः अर्घं।

पर पूर्णरता नहि धारमके, यह होत सभी साधारणके।
अपर्यापति कर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तसु मूल हनों ॥ १२९

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकर्मरहिताय नमः अर्घं।

जिम लोह न भार धरै तनमें, जिम आनन फूल उडे बनमें।
अगुरुय लघु यह भेद भनो, जग पूज्य भये तसु मूल हनों ॥ १३० ॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुकर्मछेदकाय नमः अर्घं।

इक देह विषै इक जीव रहै, इकलो जिसको सब भोग लहै।
परतेक सुकर्म सिद्धांत भनो, जगपूज्य भये तसु मूल हनों ॥ १३१ ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येककर्मरहिताय नमः अर्घं।

इक देह विषैं बहु जीव रहै, इक साथ सभी तिस भोग लहैं ।
इह भेद निगोद सिद्धांत भनों, जग पूज्य भये तसु मूल हनों ॥१३२

ॐ ह्रीं साधारणनामकर्मरहिताय नम अर्घ ।

उपेन्द्रवज्रा छन्द ।

चले न जो धातु तजै न वासा, यथाविधि आप धरैं निवासा ।
यही प्रकारा थिर नाम भासो, नमामि देवं तिस देह नासो ॥१३३

ॐ ह्रीं स्थिरनामकर्मरहिताय नमः अर्घ ।

अनेक थानं मुख गौण धातं, चलंति धारं निजवास धातं ।
यही प्रकारा थिर नाम भासो, नमामि देवं तिस देह वासो ॥१३४

ॐ ह्रीं अस्थिरनामकर्मरहिताय नमः अर्घ ।

यथाविधी देह विलास सोहै, मुखारविंदादिक सर्व मोहै ।
यही प्रकारा शुभ नाम भासो, नमामि देवं तिस देह नासो ॥१३५

ॐ ह्रीं शुभनामकर्मरहिताय नमः अर्घ ।

असुन्दराकार शरीरमाहीं, लखो जहासों विढ़रूप ताहीं ।
यही प्रकारा अशुभ नाम भासो, नमामि देवं तिस देव नासो ॥१३६

ॐ ह्रीं अशुभनामकर्मरहिताय नमः अर्घ ।

अनेक लोकोत्तम भावधारी, करैं सभी तापर प्रीति भारी ।
सुभगताको यह भेद भासो, नमामि देवं तिस देव नासो ॥१३७

ॐ ह्रीं सुभगनामकर्मरहिताय नमः अर्घ ।

धरें अनेका गुण तोन जासों, करैं कभी प्रीति न कोई तासों ।
दुर्भाग ताको यह भेद भासो, नमामि देवं तिस देव नासो ॥१३८

ॐ ह्रीं दुर्भगकर्मरहिताय नमः अर्घ ।

पद्धडी छन्द।

ध्वनि वीन भांति ज्यों मधुर बेन, निसैर पिक आदिक सुरस दैन।
यह सुस्वर नामा प्रकृति कहाय, तुम हनो नमूं निज सीस लाय॥ १३९

ॐ ह्रीं सुस्वरनामकर्मरहिताय नमः अर्घं।

गर्दभस्वर जैसो कहो भास, तैसो रव अशुभ कहो सु भास।
यह दुस्वर नाम प्रकृत कहाय, तुम हनों नमूं निज शीस लाय॥ १४०

ॐ ह्रीं दुस्वरनामकर्मरहिताय नमः अर्घं।

अडिल्ल छन्द।

होत प्रभा मई क्रांति महारमणीक जू।
जग जनमन भावन माने यह ठीक जू॥
यह आदेय सुप्रकृति नाश निजपद लहो।
ध्यावत हैं जगनाथ तुम्हें हम अघ दहो॥१४१॥

ॐ ह्रीं आदेयनामकर्मरहिताय नमः अर्घं।

रूखो मुखको वरण लेश नहिं कांतिको।
रूखे केश नखाकृति तन वह भांतिको॥
अनादेय यह प्रकृति नाश निजपद लहो।
ध्यावत हैं जगनाथ तुम्हें हम अघ दहो॥१४२॥

ॐ ह्रीं अनादेयनामकर्मरहिताय नमः अर्घं।

होत गुप्त गुण तौ भी जगमें विस्तरै।
जगजन सुजस उचारत ताकी थुति करै॥
यह जस प्रकृति विनाश सुभावी यश लहो।
ध्यावत हैं जगनाथ तुम्हें हम अघ दहो॥१४३॥

ॐ ह्रीं यशप्रकृतिछेदकाय नमः अर्घं ।

जासु गुणनको औगुण कर सब ही गृहैं ।
करत काज परसंशित पण निंदित कहैं ॥
अयश प्रकृति विनाश सुभावी यश लहो ।
ध्यावत हैं जगनाथ तुम्हैं हम अघ दहो ॥१४४॥

ॐ ह्रीं अपयशनामकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

योग थान नैत्रादिक ज्योंके त्यों बनो,
रचित चतुर कारीगर करते हैं तनो ।
यह निर्माण विनाश सुभावी पद लहो,
ध्यावत हैं जगनाथ तुम्हैं हम अघ दहो ॥१४५॥

ॐ ह्रीं निर्माणकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

पंचकल्याणक चोतिस अतिशय राज ही,
प्रातिहार्य अठ समोशरण द्युति छाज ही ।
तीर्थंकर विधि विभय नाश स्वयं पद लहो,
ध्यावत हैं जगनाथ तुम्हैं हम अघ दहो ॥१४६॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरप्रकृतिरहिताय नमः अर्घं ।

चाल छन्द ।

जो कुम्भकारकी नाईं, छिन घट छिन करत सुराई ।
सो गोत कर्म परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१४७॥

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

लोकनिमें पूज्य प्रधाना, सब करत विनय मनमाना ।
यह ऊँच गोत्र परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१४८॥

ॐ ह्रीं ऊँचगोत्रकर्मरहिताय नमः अर्घं।

जिसको सब कहत कमीना, आचरण धरे अति हीना।
यह नीच गोत्र परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१४९॥

ॐ ह्रीं नीचगोत्रकर्मरहिताय नमः अर्घं।

ज्यों दे न सके भण्डारी, परधनको हो रखवारी।
यह अन्तराय परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥ १५० ॥

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मरहिताय नमः अर्घं।

हो दान देनको भावा, दे सके न कोटि उपावा।
दानांतराय परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥ १५१ ॥

ॐ ह्रीं दानांतरायकर्मरहिताय नमः अर्घं।

मनो दान लेन के भावे, दातार प्रसंग न पावे।
लाभांतराय परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥ १५२ ॥

ॐ ह्रीं लाभांतरायकर्मरहिताय नमः अर्घं।

पुष्पादिक चाहै भोगा, पर पाये न अवसर योगा।
भोगांतराय परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥ १५३ ॥

ॐ ह्रीं भोगांतरायकर्मरहिताय नमः अर्घं।

तिय आदिक वारम्बारा, नही भोग सके हितकारा।
उपभोगांतराय परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥ १५४ ॥

ॐ ह्रीं उपभोगांतरायकर्मरहिताय नमः अर्घं।

चेतन निज बल प्रगटावे, यह योग कभू नहीं पावे।
वीर्यांतराय परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥ १५५ ॥

ॐ ह्रीं वीर्यान्तरायकर्मरहिताय नमः अर्घं।

ज्ञानावरणादिक नामी, निज भाग उदय परिणामी ।
अठ भेद कर्म परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥ १५६ ॥
ॐ ह्रीं अष्टकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

इकसो अड़ताल प्रकारी, उत्तर विधि सत्ता धारी ।
सब प्रकृति कर्म परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥ १५७ ॥
ॐ ह्रीं एकशताष्टचत्वारिंशत्कर्मप्रकृतिरहिताय नमः अर्घं ।

परणाम भेद संख्याता, जो वचन योगमें आता ।
संख्यात कर्म परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥ १५८ ॥
ॐ ह्रीं संख्यातकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

है वचनन सो अधिकाई, परिणाम भेद दुखदाई ।
विधि असंख्यात परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥ १५९ ॥
ॐ ह्रीं असंख्यातकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

अविभाग प्रछेद अनन्ता, जो केवलज्ञान लहन्ता ।
यह कर्म अनन्त परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥ १६० ॥
ॐ ह्रीं अनन्तकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

सब भाग अनन्तानन्ता, यह सूक्ष्म भाव धरंता ।
विधि नन्तानन्त परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥ १६१ ॥
ॐ ह्रीं अनन्तानन्तकर्मरहिताय नमः अर्घं ।

मोतीदाम छन्द ।

न हो परिणाम विषे कछु खेद, सदा इमका प्रणवै विन भेद ।
निजाश्रित भाव रमै सुखधाम, करूं तिस आनन्दको परिणाम ॥ १६२
ॐ ह्रीं आनन्दस्वभावाय नमः अर्घं ।

धरैं जितने परिणमन भेद, विशेषन ते सब ही विन खेद।
पराश्रितता विन आनन्द धर्म, नमूं तिन पाय लहूं पद शर्म॥१६३॥

ॐ ह्रीं आनन्दधर्माय नमः अर्घ।

न हो परयोग निमित्त विभाव, सदा निवसे निज आनन्द भाव।
यही वरणे परमानन्द धर्म, नमूं तिन पाय लहूं पद शर्म॥१६४॥

ॐ ह्रीं परमानन्दधर्माय नमः अर्घ।

कभूं परसों कछु द्वेष न होत, कभूं फुनि हर्ष विशेष न होत।
रहै नित ही निज भावन लीन, नमूं पद साम सुभाव सु लीन॥१६५

ॐ ह्रीं साम्यसरूपाय नमः अर्घ।

निजाकृतिमें नहीं लेश कषाय, अमूरति शांतिमई सुखदाय।
अनाकुलता विन साम्य स्वरूप, नमूं तिनको नित आनंद रूप॥१६६

ॐ ह्रीं साम्यसरूपाय नमः अर्घ।

अनन्त गुणातम द्रव्य पर्याय, यही विधि आप धरैं वहु भाय।
सभी कुमती करि हो अलखाय, नमूं जिनवैन भली विधि गाय।१६७

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय नमः अर्घ।

अनन्त गुणातम रूप कहाय, गुणी गुण भेद सदा प्रणमाय।
महागुण स्वच्छ सदा तुम रूप, नमूं तिनको पद पांइ अनूप॥१६८

ॐ ह्रीं अनन्तगुणस्वरूपाय नमः अर्घ।

अभेद सुभेद अनेक सु एक, धरो इन आदिक धर्म अनेक।
विरोधित भावनसों अविरुद्ध, नमूं जिन आगमकी विधि शुद्ध १६९

ॐ ह्रीं अनन्तधर्माय नमः अर्घ।

रहै धर्मी नित धर्म सरूप, न हो परदेशनसों अणुरूप।

चिदातम धर्म सभी निजरूप, धरों प्रणमूं मन भक्ति स्वरूप ॥१७०॥

ॐ ह्रीं अनन्तधर्मस्वरूपाय नमः अर्घ ।

चौपाई ।

हीनाधिक नहीं भाव विशेष, आतमीक आनन्द हमेश ।
सम स्वभाव सोई सुखराज, प्रणमूं सिद्ध मिटै भववास ॥१७१॥

ॐ ह्रीं समस्वभावाय नमः अर्घ ।

इष्टानिष्ट मिटी भ्रम जाल, पायो निज आनन्द विशाल ।
साम्य सुधारसको नित भोग, नमूं सिद्ध सन्तुष्ट मनोग ॥१७२

ॐ ह्रीं संतुष्टाय नमः अर्घ ।

पर पदार्थको इच्छक नाहिं, सदा सुखी स्वातम पदमाहिं ।
मेंटो सकल राग अरु दोष, प्रणमूं राजत सम सन्तोष ॥१७३॥

ॐ ह्रीं समसन्तोषाय नमः अर्घ

मोह उदय सब भाव नसाय, मेंटो पुद्गलीक पर्याय ।
शुद्ध निरंजन समगुण लहो, नमूं सिद्ध परकृत दुख दहों ॥१७४

ॐ ह्रीं साम्यगुणाय नमः अर्घ ।

निजपदसों थिरता नहीं तजै, स्वानुभूत अनुभव नित भजै ।
निराबाध तिष्ठै अविकार, सम स्थाई गुण भण्डार ॥ १७५ ॥

ॐ ह्रीं साम्यस्थाय नमः अर्घ ।

भव सम्बन्धी काज निवार, अचल रूप तिष्ठै समधार ।
कृत्याकृत्य सम गुण पाइयो, भक्ति सहित हम सिर नाइयो ॥१७६

ॐ ह्रीं साम्यकृत्याकृत्यगुणाय नमः अर्घ ।

छन्द झूलना ।

भूल नहीं भय करै छोभ नाहीं धरै,
गैरकी आसको त्रास नाहीं धरै ।
शरण काकी चहै सबनको शरण है,
अन्यकी शरण विन नमूं ताही वरै ॥१७७॥

ॐ ह्रीं अनन्यशरणाय नमः अर्घं ।

द्रव्य षट्में नहीं आप गुण आप ही,
आपमें राजते सहज नीको सही ।
स्वगुण अस्तित्वता वस्तुकी वस्तुता,
धरत हो मैं नमूं आपहीको स्वता ॥१७८॥

ॐ ह्रीं अनन्यगुणाय नमः अर्घं ।

गैरसे गैर हो आपमें लैरहो,
स्वैचतुर खेतमें वास पायो ।
धर्म समुदाय हो परमपद पाइयो,
मैं तुम्हें भक्तियुत शीश नायो ॥ १७९ ॥

ॐ ह्रीं अनन्यधर्माय नमः अर्घं ।

साधना जबतईं होत है तबतईं,
दोऊ परिमाणका काज जामें ।
आप स्वपद लियो तिन जलांजलि दियो,
अन्य नहीं चहत निज शुद्धतामें ॥ १८० ॥

ॐ ह्रीं परिमाणविमुक्ताय नमः अर्घं ।

तोमर छन्द ।

दृग ज्ञान पूरणचन्द्र, अकलंक ज्योति अमन्द ।
निरद्वंद ब्रह्मस्वरूप, नित पूजहूं चिद्रूप ॥ १८१ ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मस्वरूपाय नमः अर्घं ।

सब ज्ञानमय परिणाम, वर्णादिको नहिं काम ।
निरद्वंद ब्रह्मस्वरूप, नित पूजहूं चिद्रूप ॥ १८२ ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मगुणाय नमः अर्घं ।

निज चेतना गुण धार, विन रूप हो अधिकार ।
निरद्वंद ब्रह्मस्वरूप, नित पूजहूं चिद्रूप ॥ १८३ ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचेतनाय नमः अर्घं ।

सुन्दरी छन्द ।

अन्य रूप सु अन्य रहै सदा, पर निमित्त विभाव न हो कदा ।
कहते हैं मुनि शुद्ध सुभावजी, नमूं सिद्ध सदा तिन पायजी ॥ १८४

ॐ ह्रीं शुद्धस्वभावाय नमः अर्घं ।

पर परिणामनसो नहिं मिलत है निज परिणामन सो नहिं चलत हैं ।
शुद्धपरिणामी तुम पद नमूं, नमत तुम सब पद अघको दमूं ॥१८५॥

ॐ ह्रीं शुद्धपरिणामकाय नमः अर्घं ।

वस्तुता व्यवहार नहीं ग्रहैं, उपस्वरूप असत्यारथ कहैं ।
शुद्ध स्वरूपनता करि साध्य है, निर्विकल्प समाधि अराध्य है ॥ १८६

ॐ ह्रीं अशुद्धरहिताय नमः अर्घं ।

द्रव्य पर्यायार्थिक नय दोऊ, स्वानुभवमें विकलप नहिं कोऊ ।
सिद्ध शुद्धाशुद्ध अतीत हो, नमत तुम तिनपद परतीत हो ॥१८७॥

ॐ ह्रीं शुद्धाशुद्धरहिताय नमः अर्घं ।

चौपाई ।

क्षय उपशम अवलोकन टारो, निज गुण क्षाइक रूप उघारो ।
युगपत सकल चराचर देखा, ध्यावत हूं मन हर्ष विशेखा ॥१८८॥

ॐ ह्रीं अनन्तद्रिगसुरूपाय नमः अर्घं ।

जब पूरण अवलोकन पायो, तब पूरण आनन्द उपायो ।
अविनाभाव स्वयं पद देखा. ध्यावत हूं मन हर्ष विशेखा ॥१८९॥

ॐ ह्रीं अनन्तद्रिगानन्दस्वभावाय नमः अर्घं ।

नाश सु पूर्वक हो उतपाता, सत् लक्षण परिणति मरजादा ।
क्षय उपशम तन क्षायक पेखा, ध्यावत हूं मन हर्ष विशेखा ॥१९०॥

ॐ ह्रीं अनन्तद्रगोत्सनानंदकाय नमः अर्घं ।

नित्य रूप निज चित पद मांही, अन्य रूप पलटन हो नाहीं ।
द्रव्य दृष्टिमें यह गुण देखा, ध्यावत हूं मन हर्ष विशेखा ॥१९१॥

ॐ ह्रीं अनन्तध्रुवाय नमः अर्घं ।

कर्म नाश जो स्वापद पावै, रञ्च मात्र फिर अन्त न आवै ।
यह अव्यय गुण तुममें देखा, ध्यावत हूं मन हर्ष विशेखा ॥१९२॥

ॐ ह्रीं अव्ययभावाय नमः अर्घं ।

पर नहीं व्यापे तुमपद मांही, परमें रमण भाव तुम नाहीं ।
निज करि निजमें निज गुण देखा, ध्यावत हूं मन हर्ष विशेखा॥१९३॥

ॐ ह्रीं अनन्तनिलयाय नमः अर्घं ।

गखनारी छन्द ।

अनन्ताभिधानो, गुणाकार जानो ।
धरो आप सोई, नमूं मान खोई॥ १९४ ॥

ॐ ह्रीं अनन्ताकाराय नमः अर्घं ।

अनन्ता स्वभावा, विशेषन उपावा ।
धरो आप सोई, नमूं मान खोई ॥ १९५ ॥

ॐ ह्रीं अनन्तस्वभावाय नमः अर्घं ।

विनाकार रूपा चिन्मय स्वरूपा।
धरो आप सोई, नमूं मान खोई ॥ १९६ ॥

ॐ ह्रीं चिन्मयस्वरूपाय नमः अर्घं ।

सदा चेतनामें, न हो अन्यतामें।
धरो आप सोई, नमूं मान खोई ॥ १९७ ॥

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय नमः अर्घं ।

दोहा।

जो कछु भाव विशेष है, सब चिद्रूपी धर्म।
असाधार पूरण भये, नमत नशें सब कर्म ॥ १९८ ॥

ॐ ह्रीं चिद्रूपायधर्माय नमः अर्घं ।

परकृति व्याधि विनाशके, स्वै अनुभवकी प्राप्त।
भई, नमूं तिनको लहूं, यह जगवास समाप्त ॥ १९९ ॥

ॐ ह्रीं स्वानुभवउपलब्धिरमाय नमः अर्घं ।

निरावरण निज ज्ञान करि, निज अनुभवकी डोर।
गहो लहो थिरता रहो, रमण ठोर नहीं और ॥२००॥

ॐ ह्रीं स्वानुभूतरताय नमः अर्घं ।

सरवोत्तम लोकीक रस, सुधा कुरस सब त्याग।
निज पद परमामृत रसिक, नमूं चरण वडभाग ॥ २०१ ॥

ॐ ह्रीं परमामृतरताय नमः अर्घं ।

विषयामृत विषसम अरुचि, अरस अशुभ असुहान।
जान निजानन्द परम रस, तुष्ट सिद्ध भगवान ॥२०२॥

ॐ ह्रीं परमामृततुष्टाय नमः अर्घं।

शंकातीत अतीतसो, धरे प्रीति निज माहि।
अमल हिये संतनि प्रिये, परम प्रीति नम ताहि॥ २०३॥

ॐ ह्रीं परमप्रीताय नमः अर्घं।

अक्षय आनन्द भाव युत, निज हितकार मनोग।
सज्जन चित वल्लभ परम, दुर्ज्जन दुर्ल्लभ योग॥ २०४॥

ॐ ह्रीं परमवल्लभयोगाय नमः अर्घं।

शब्द गन्धरसफरश नहीं, नहीं वरण आकार।
बुद्धि गहै नहिं पार तुम, गुप्त भाव निरधार॥ २०५॥

ॐ ह्रीं अव्यक्तभावाय नमः अर्घं।

सर्व दर्वसो भिन्न है, नहिं अभिन्न तिहुं काल।
नमूं सदा परकाश धर, एक हि रूप विशाल॥ २०६॥

ॐ ह्रीं एकत्वस्वरूपाय नमः अर्घं।

सर्व दर्वतें भिन्नता, जिन गुण निजमें वास।
नमूं अखंड परमातमा, सदा सुगुणकी राश॥ २०७॥

ॐ ह्रीं एकत्वगुणाय नमः अर्घं।

सर्व दर्व परिणामसौ, मिलें न निज परिणाम।
नमूं निजानन्द ज्योति घन, नित्य उदय अभिराम॥ २०८॥

ॐ ह्रीं एकत्वभावाय नमः अर्घं।

चौपाई।

पर संयोग तथा समवाय, यह सम्वाद नहीं है भाय।
नित्य अभेद एकता धरो, प्रणमूं द्वैत भाव हम हरो॥२०९॥

ॐ ह्रीं द्वैतभावविनाशनाय नमः अर्घं।

पूर्व पर्याय नासियो सोई, जाको फिर उतपाद न होई।
अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूं सुखधाम ॥२१०॥

ॐ ह्रीं शाश्वताय नमः अर्घं।

निर्विकार निर्मल निजभाव, नित्य प्रकाश अमन्द प्रभाव।
अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूं सुखधाम ॥२११॥

ॐ ह्रीं शाश्वतप्रकाशाय नमः अर्घं।

निरावरण रवि बिम्ब समान, नित्य उद्योत धरो निज ज्ञान।
अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूं सुखधाम ॥२१२॥

ॐ ह्रीं शाश्वतउद्योताय नमः अर्घं।

ज्ञानानंद सुधारकचन्द्र, सोहत पूरण ज्योति अमन्द।
अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूं सुखधाम ॥२१३॥

ॐ ह्रीं अमृतचन्द्राय नमः अर्घं।

ज्ञानानन्द सुधारस धार, निरविच्छेद अभेद अपार।
अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूं सुखधाम ॥२१४॥

ॐ ह्रीं शाश्वतअमृतमूर्तये नमः अर्घं।

पद्धडी छन्द।

मन इन्द्रिय ज्ञान न पाय जेह, है सूक्षम नाम सरूप तेह।
मनःपर्यय जाकूं नाहिं पाय, सो सूक्षम परम सुगुण नमाय ॥२१५

ॐ ह्रीं परमसूक्ष्माय नमः अर्घं।

बहु तास नभो दरसे समाय, प्रत्यक्ष स्थल ताकों न पाय।
इकसों इकको बाधा न होय, सूक्षम अविनाशी नमों सोहि २१६

ॐ ह्रीं सूक्ष्मावकाशाय नमः अर्घं।

नम गुण ध्वनि जो यह जोग नाहीं, हो जिसो गुणी गण तिसो ताहि।
सो राजत हो सूक्षम स्वरूप, नमहूं तुम सूक्षम गुण अनूप ॥२१७

ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणाय नमः अर्घ ।

तुम त्याग द्वैत ताको प्रसंग, पायौ एकाकी छवि अभंग ।
जाको कबहूं अनुभव न होय, नमूं परम रूप है गुण सोय ॥२१८

ॐ ह्रीं परमरूपगुणाय नमः अर्घ ।

छन्द त्रोटक ।

सर्वार्थ विमानिक देव तथा, मन इन्द्रिय भोगन शक्ति यथा ।
इनके सुखको इक भीम सही, तुम आनंदको पर अन्त नहीं ॥२१९

ॐ ह्रीं निरवधिसुखाय नमः अर्घ ।

जग जीवनिको नहिं भाग्य यहै, निज शक्ति उदय करि व्यक्ति लहै ।
तुम पूरण क्षायक भाव लहो, इम अन्त विना गुणरास गहो ॥२२०

ॐ ह्रीं निरवधिगुणाय नमः अर्घ ।

भवि जीव सदा यह रीति धरैं, नित नूतन पर्य विभाव धरैं ।
तिस कारणको सब व्याधि दहो, तुम पाइ सुरूप जु अन्त न हो ॥२२१

ॐ ह्रीं निरवधिसुखाय नमः अर्घ ।

अवधि मनःपर्य सु ज्ञान महा, दर्वादि विषैं मरजाद लहा ।
तुम ताहि उलंघ सुभावमई, निजबोध लहो जिस अन्त नहीं ॥२२२

ॐ ह्रीं अतुलज्ञानाय नमः अर्घ ।

तिहुं काल तिहूं जगके सुखको, कर वार अनंत जु पावतको ।
तुम एक समय सुखकी ममता, नहीं पाय नमूं मन आनंदता ॥२२३

ॐ ह्रीं अतुलसुखाय नमः अर्घ ।

नाराच छन्द।

सवे जीव राशके सुभाव आप जान हो,
आपके सुभाव अंश और कौन ज्ञान हो।
सो विशुद्ध भाव पाय जासकौ न अन्त हो,
राज हो सदीव देव चरण दास सन्त हो ॥२२४

ॐ ह्रीं अतुलभावाय नमः अर्घं।

आपकी गुणौघ वेलि फैलि है अलोकलों,
शेषसे भ्रमाय अन्तकी न पाय नोकलों।
सो विशुद्ध भाव पाय जासकौ न अन्त हो,
राज हो सदीव देव चरण दास सन्त हो ॥२२५

ॐ ह्रीं अतुलगुणाय नमः अर्घं

सूर्यको प्रकाश एक देश वस्तु भांस ही,
आपको सुज्ञान भान सर्वथा प्रकाश हीं।
सो विशुद्ध भाव पाय जासकौ न अन्त हो,
राज हो सदीव देव चरण दास सन्त हो ॥२२६॥

ॐ ह्रीं अतुलप्रकाशाय नमः अर्घं।

तास रूपको गहो न फेरि जास नाश हो,
स्वात्मवासमें विलास आश नाश त्रास हो।
सो विशुद्ध भावपाय जासकौ न अन्त हो,
राज हो सदीव देव चरण दास सन्त हो ॥२२७

ॐ ह्रीं अचलाय नमः अर्घं।

सोरठा।

मोहादिक रिपु जीति, निजगुण निधि सहजे लहो।
विलसो सदा पुनीति, अचल रूप वन्दों सदा ॥ २२८ ॥
ॐ ह्रीं अचलगुणाय नमः अर्घं ।

उत्तम क्षाइक भाव, क्षय उपशम सब गये विनशि ।
पायो सहज सुभाव, अचल रूप वन्दों सदा ॥ २२९ ॥
ॐ ह्रीं अचलस्वभावाय नमः अर्घ

अथिर रूप संसार, त्याग सुथिर निज रूप गहि ।
रहो सदा अविकार, अचल रूप वन्दो सदा ॥ २३० ॥
ॐ ह्रीं अचलस्वरूपाय नमः अर्घं ।

मोतीयादाम छन्द ।

निराश्रित स्वाश्रित आनन्द धाम, परै परसो न परै कछु काम ।
अविन्दु अबंधु अबंध अमंद, करूं पद वन्दूं रहूं सुखवृन्द ॥२३१॥
ॐ ह्रीं निरालम्बाय नमः अर्घं ।

अराग अदोष अशोक अभोग, अनिष्ट संयोग न इष्ट विजोग ।
अविन्दु अबंधु अबन्ध अमन्द, करूं पद वन्दूं रहूं सुखवृन्द ॥२३२
ॐ ह्रीं आलम्बरहिताय नमः अर्घं ।

अजीव न जीव न धर्म अधर्म, न काल अकाश लहै तिस धर्म ।
अविन्दु अबंधु अबन्ध अमंद, करूं पद वन्दूं रहूं सुखवृन्द ॥२३३॥
ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः अर्घ ।

अवर्ण अकर्ण अरूप अकाय, अयोग असंयमता अकषाय ।
अविन्दु अबंधु अबंध अमंद, करूं पद वन्दूं रहूं सुखवृन्द ॥२३४॥
ॐ ह्रीं निष्कषायाय नमः अर्घ ।

न हो परसो रूप राग विभाव, निजातममें अवलीन स्वभाव।
अविन्दु अबंधु अबंध अमन्द. करूं पद वन्दू रहूं सुखवृन्द ॥ २३५॥
ॐ ह्रीं आत्मरतये नमः अर्घं।

दोहा।

निज स्वरूपमें लीनता, ज्यों जल पुतली वार।
गुप्त स्वरूप नमूं सदा, लहूं भवार्णव पार ॥ २३६ ॥
ॐ ह्रीं स्वरूपगुप्ताय नमः अर्घं
जोहे सोहे और नहीं, कछु निश्चय व्यवहार।
शुद्ध द्रव्य परमातमा, नमूं शुद्धता धार ॥ २३७ ॥
ॐ ह्रीं शुद्धद्रव्याय नमः अर्घं।
पूर्वोत्तर सन्तति तनी, भव भव छेद कराय।
असंसार पदको नमूं, यह भव वास नशाय ॥ २३८ ॥
ॐ ह्रीं असंसाराय नमः अर्घं।

नागरूपिणी तथा अर्धनाराच छन्द।

हरो सहाय कर्णको, सुभोगता विवर्णको।
निजातमीक एक ही, लहो अनंद तास ही ॥ २३९ ॥
ॐ ह्रीं स्वानन्दाय नमः अर्घं।
न हो विभावना कदा, स्वभावमें सुखी सदा।
निजातमीक एक ही, लहो अनंद तास ही ॥ २४० ॥
ॐ ह्रीं स्वानन्दभावाय नमः अर्घं।
अछेद रूप सर्वथा, उपाधिकी नहीं व्यथा।
निजातमीक एक ही, लहो अनंद तास ही ॥ २४१ ॥

ॐ ह्रीं स्वानंदस्वरूपाय नमः अर्घं ।

दुबंद तीन वेद ही, सचेतना अभेद ही ।
निजातमीक एक ही, लहा अनंद तास ही ॥ २४२ ॥

ॐ ह्रीं स्वानंदगुणाय नमः अर्घं ।

न अन्यकी प्रवाह है, अचाह है न चाह है ।
निजातमीक एक ही, लहो अनंद तास ही ॥ २४३ ॥

ॐ ह्रीं स्वानंदसंतोषाय नमः अर्घं ।

सोरठा ।

रागादिक परिणाम, हैं कारण संसारके ।
नाश लियो सुखधाम, नमत सदा भव भय हरूं ॥२४४॥

ॐ ह्रीं शुद्धभावपर्यायाय नमः अर्घं ।

उदइक भाव विनाश, प्रगट कियो निज अर्थको ।
स्वातम गुण परकाश, नमत सदा भव भय हरूं ॥२४५॥

ॐ ह्रीं स्वतंत्रधर्माय नमः अर्घं ।

निजगुण पर्ययरूप, स्वयं-सिद्ध परमातमा ।
राजत हैं शिव-भूप, नमत सदा भव भय हरूं ॥२४६॥

ॐ ह्रीं आत्मस्वभावाय नमः अर्घं ।

विमल विशद निज ज्ञान, है स्वभाव परिणति मई ।
राजे हैं सुखखानि, नमत सदा भव भय हरूं ॥२४७॥

ॐ ह्रीं परमचित्परिणामाय नमः अर्घं ।

दर्श ज्ञानमई धर्म, चेतन धर्म प्रगट कहो ।
भेदाभेद सुपर्म, नमत सदा भव भय हरूं ॥२४८॥

ॐ ह्रीं चिद्रूपधर्माय नमः अर्घं ।

दर्शज्ञान गुणसार, जीवभूत परमातमा ।
राजत सब परकार, नमत सदा भव भय हरण ॥२४९॥

ॐ ह्रीं चिद्रूपगुणाय नमः अर्घं ।

अष्ट कर्म मल जार, दीप्तरूप निज पद लहों ।
स्वच्छ हेम उनहार, नमत सदा भव भय हरण ॥२५०॥

ॐ ह्रीं परमस्नातकाय नमः अर्घं ।

रागादिक मल सोध, दोऊ विधि विवधान विघ ।
लहो शुद्ध प्रतिबोध, नमत सदा भव भय हरण ॥२५१॥

ॐ ह्रीं स्नातकधर्माय नम अर्घं ।

विधि आवरण विनाश, दर्श ज्ञान परिपूर्ण हो ।
लोकालोक प्रकाश, नमत सदा भव भय हरण ॥२५२॥

ॐ ह्रीं सर्वावलोकाय नमः अर्घं ।

निजकर निजमें वास, भई लोकसों भिन्नता ।
पायो शिव-सुख रास, नमत सदा भव भय हरण ॥२५३॥

ॐ ह्रीं लोकाग्रस्थिताय नमः अर्घं ।

ज्ञान भावकी जोति, व्यापक लोकालोकमें ।
दर्शन विन उद्योत, नमत सदा भव भय हरण ॥२५४॥

ॐ ह्रीं लोकालोकव्यापकाय नमः अर्घं ।

जो कछु धरत विशेष, सब ही सब आनंदमय ।
लेश न भाव कलेश, नमूं सदा भव भय हरण ॥२५५॥

ॐ ह्रीं आनंदविश्रानाय नमः अर्घं ।

जिस आनंदको पार, पावत नहीं यह जगतजन ।
सो पाये हितकार, नमत सदा भव भय हरण ॥२५६॥

ॐ ह्रीं आनंदपूर्णाय नमः अर्घं ।

दोहा ।

इत्यादिक आनंद गुण, धारत सिद्ध अनंत ।
तिन पद आठो दरवसो, पूजत हो नित संत ॥

ॐ ह्रीं षट्पंचाशतअधिकद्विशतगुणयुक्ताय सिद्धाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा । (यहां १०८ बार जाप देना चाहिये ।)

अथ जयमाला ।

दोहा ।

थावर शब्द विषय धरै, त्रस थावर पर्याय ।
यो न होय तो तुम सुगुण, हम किहविधि वर्णाय ॥ १ ॥
तिसपर जो कछु कहत हैं, केवल भक्ति प्रमान ।
बालक जल शशिबिंबको, चाहत ग्रहण निज पान ॥ २ ॥

पद्धडी छन्द ।

जय पर निमित्त व्यवहार त्याग, पायो निज शुद्ध स्वरूप भाग।
जय जग पालन विन जगत देव, जय दयाभाव विन शांतिभेव ॥१॥
परसुख दुखकरण कुरीति टार, परसुख दुख कारण शक्ति वार ।
फुनि फुनि नव नव नित जन्मरीत, विन सर्वलोक थापी पुनीत ॥२॥
जय लीला रास विलास नाश, स्वाभाविक निजपद रमण वास ।
शयनासन आदि क्रिया कलाप, तज सुखी सदा शिवरूप आप ॥३॥
विन कामदाह नहीं नार भोग, निरद्वंद निजानंद मगन योग ।

वरमाल आदि श्रृंगार रूप, विन शुद्ध निरंजन पद अनूप ॥४॥
जय धर्म मर्म वन हन कुठार, परकाश पूञ्ज चिद्रूप सार ।
उपकरण हरण दव सलिलधार, स्वैशक्ति प्रभावउ पय अपार ॥५॥
नभ सीम नहीं अरु होत होउ, नहीं काल अन्त लहो अन्त सोउ ।
पर तुम गुण रास अनंत भाग, अक्षय विधि राजत अवधि त्याग ॥६॥
आनंद जलधि धारा प्रवाह, विज्ञानसुरी मुखद्रह अथाह ।
निज शांति सुधारस परम खान, समभाव बीज उत्पत्ति थान ॥७॥
निज आत्मलीन विकलप विनाश, शुद्धोपयोग परिणति प्रकाश ।
द्रग ज्ञान असाधारण स्वभाव, स्पर्श आदि परगुण अभाव ॥८॥
निज गुणपर्यय समुदाय स्वामि, पायो अखण्ड पद परम धाम ।
अव्यय अबाध पद स्वयं सिद्ध, उपलब्धि रूप धर्मी प्रसिद्ध ॥९॥
एकाग्ररूप चिंता निरोध, जे ध्यावें पावें स्वयं बोध ।
गुण मात्र संत अनुराग रूप, यह भाव देहो तुम पद अनूप ॥१०

घत्ता—दोहा ।

सिद्ध सुगुण सुमरण महा, मन्त्रराज है सार ।
सर्व सिद्ध दातार है, सर्व विघन हर्तार ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं षट्पंचाशदधिकद्विशतदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः पूर्णार्घम् ।

तीन लोक चूडामणी, सदा रहो जयवन्त ।
विघन हरण मंगल करण, तुम्हें नमै नित संत ॥ १२ ॥

इत्याद्याशीर्वादः ।

इति षष्ठमी पूजा सम्पूर्णम् ।

अथ सप्तमी पूजा ।

छप्पय छन्द ।

ऊरध अधो सरेफ बिंदु हंकार विराजे;
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे ।
वर्गन पूरित वसुदल अम्बुज तत्व संधि धर,
अग्र भागमें मंत्र अनाहत सोहत अतिवर ।।
फुनि अन्त ह्री वेढ्यो परम सुर, ध्यावत ही अरि नागको ।
ह्वै केहरि सम पूजन निमित्त, सिद्धचक्र मंगल करों ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने पांचसैबारह ५१२ गुणसंयुक्ताय विराजमानाय अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

दोहा ।

सूक्ष्मादि गुण सहित हैं, कर्म रहित निररोग ।
सिद्धचक्र सो थापहूं, मिटैं उपद्रव योग ।।२।। इति यंत्र स्थापनं ।

अथाष्टकं ।

चाल बारामासा छन्द ।

सुरमणि कुम्भ क्षीरभर धारत, मुनि मन शुद्ध प्रवाह बहावहि ।
हम दोऊ विधि लाइक नाहीं, कृपा करहु लहि भवतट आवहि ॥
शक्ति सारू सामान्य नीरसो, पूजूं हूं शिवतियके स्वामी ।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हू सुख धामी ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने ५१२ गुण सहित श्री समत्त-णाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं जन्म-जरारोगविनाशनाय जलं।

नतु कोऊ चन्दन नतु कोऊ केसरि, भेट किये भवपार भयो है।
केवल आप कृपा द्रग हीसों, यह अथाह दधि पार लयो है॥
रीति सनातन भक्तिनकी लख, चन्दनकी यह भेट धरामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूं सुखधामी॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने ५१२ गुण संयुक्ताय श्रीसमत्त-णाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं संसार-तापविनाशनाय चंदनं।

इन्द्रादिक पदहूं अनवस्थित, दीखत अन्तर रुचि न करैं हैं।
केवल एकहि स्वच्छ अखण्डित, अक्षयपदकी चाह धरैं हैं॥
तातें अक्षतसों अनुरागी, हूं सो तुम पद पूजकरामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक नाम उचारत हूं सुख धामी॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने ५१२ गुण संयुक्ताय श्री समत्त-णाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं अक्षय-पदप्राप्ताय अक्षतं।

पुष्प बाण हीसों मन्मथ जग, विजई जगमें नाम धरावे।
देखहु अद्भुत रीति भक्तकी, तिस ही भेट धर काम हनावे॥
शरणागतिकी चूक न देखी, तातें पूज्य भए शिरनामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूं सुखधामी॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने ५१२ गुण संयुक्ताय श्री समत्त-

णाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघु कामबाण-विनाशनाय पुष्पं।

हनन असाता पीर नहीं यह, भीर परै चरु भेटन लायो।
भक्त अभिमान मेंट हो स्वामी, यह भव कारण भाव मतायो॥
मम उद्यम करि कहा आप ही, सो एकाकी अर्थ लहामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूं सुखधामी॥

ॐ ह्रीं श्री समत्तणाणदंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं ५१२ गुण सयुक्ताय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं।

पूरण ज्ञानानन्द ज्योति घन, विमल गुणातम शुद्ध स्वरूपी।
हो तुम पूज्य भये हम पूजक, पाय विवेक प्रकाश अनूपी॥
मोह अन्ध विनसा तिह कारण, दीपनसो अर्चूं अभिरामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूं सुखधामी॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्त णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं ५१२ गुण संयुक्ताय मोहांधकारविनाशनाय दीपं।

धूप दहैं उत्तरैं प्रजरैं मणि, हम धरैं तुम पदपर वारूं।
बारंबार आवर्त जोरि करि, धार धार निज शीशन हारूं॥
धूम्र धार ममतन रोमांचित, हर्ष सहित अष्टांग नमामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूं सुखधामी॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्त णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं ५१२ गुण संयुक्ताय अष्टकर्मदहनाय धूपं।

तुम हो वीतराग निज पूजन, बन्धन श्रुति परवाह नहीं है।
अरु अपने समभाव वहै कछु, पूजा फलकी चाह नहीं है ॥
तौभी यह फल पूजि फलदि, अनिवार निजानन्द कर इच्छामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूं सुख धामी ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्त णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं ५१२ गुण संयुक्ताय मोक्षफलप्राप्ताय फलं ।

तुमसे स्वामीके पद सेवत, यहविधि दुष्ट अंक कहा कर है।
ज्यों मयूरध्वनि सुनि अहि निज विल, विलय जाय छिनबिल मनंधर है
तातें तुम पद अर्घ उतारण, विरद उचारण करहुं सुदामी।
हो तुम पूज्य भए हम पूजक, पाय विवेक प्रकाश अनूपी ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्त णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वाबाहं ५१२ गुणसंयुक्ताय सर्वसुखप्राप्ताय अर्घं ।

गीता छन्द ।

निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी,
शुभ पुष्प मधुकर नितरमें चरु, प्रचुर स्वाद सु विधि घनी।
वर दीपमाल उजाल धूपायन, रसायन फल भले,
करि अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्मदल सब दलमलै ॥
ते कर्मवर्त नशाय युगपति, ज्ञान निर्मल रूप है,
दुख जन्म टाल अपार गुण, सूक्षम सरूप अनूप है।
कर्माष्ट विन त्रैलोक्य पूज्य, अछेद शिव कमलापती,

मुनि ध्येय सेय अभेय चहुं गुण, गेह द्यो हम शुभ मती ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धचक्राधिपतये नमः सम्मत्तणाणादि अट्ठ-गुणाणं पूर्वपदप्राप्ताय महार्घं ।

पांचसैबारह गुणसहित नाम अर्घ ।

अर्द्ध छन्द जोगीरासा ।

लोकत्रय करि पूज्य प्रधाना, केवल जोति प्रकाशी ।
भव्यन मन तम मोह विनाशक, वन्दूं शिव थल वासी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अर्हंताय नमः अर्घं ।

सुरनर मुनिमन कुमुदन मोदन, पूरण चन्द्र समाना ।
हो अर्हंत जात जन्मोत्सव, वन्दूं श्री भगवाना ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं अर्हज्जाताय नमः अर्घं ।

केवल दर्श ज्ञान किरणावलि, मंडित तिहुं जग चन्दा ।
मिथ्या तप हर जग आदि करि, वन्दूं पद अरि वृन्दा ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं अर्हच्चिद्रूपाय नमः अर्घं ।

घाति कर्म रिपु जारि छारकर स्वै चतुष्ट पद पायो ।
निज स्वरूप चिद्रूप गुणातम, हम तिन पद शिर नायो ॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हच्चिद्रूपगुणाय नमः अर्घं ।

ज्ञानावरणी पटल उघारत, केवल भान उगायो ।
भव्यनको प्रतिबोध उधारे, सहुर मुक्ति पद पायो ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्ज्ञानाय नमः अर्घं ।

धर्म अधर्म तास फल दोनों, देखो जिम कर रेखा ।
वतलायो परतीत विषय करि, यह गुण जिनमें देखा ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनाय नमः अर्घं ।

मोह महा द्रढ बंध उधारो, करभिस तंतु समाना ।
अतुल बली अरहंत कहायो, पाय नमूं शिवथाना ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्याय नमः अर्घं ।

युगपति लोकालोक विलोकन, है अनन्त द्रगधारी ।
गुप्तरूप शिवमग दरसायो, तिनपद धोक हमारी ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनगुणाय नमः अर्घं ।

घटपटादि सब परकाशत जद, हो रवि किरण पसारा ।
तैसो ज्ञान भान अरहंतको, ज्ञेय अनंत उधारा ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानगुणाय नमः अर्घं ।

आसन शयन पान भोजन विन, दीप्त देह अरहंता ।
ध्यानवान करतान हानविधि, भए सिद्ध भगवंता ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्यगुणाय नमः अर्घं ।

सप्त तत्व षट् द्रव्य भेद सब, जानत संशय खोई ।
ताकरि भव्य जीव संबोधे, नमूं भये सिद्ध सोई ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सम्यक्त्वगुणाय नमः अर्घं ।

ध्यान सलिलसो धोय लोभ मल, शुद्ध निजातम कीनो ।
परम शौच अरहंत स्वरूपी, पाय नमूं शिव लीनो ॥१२॥

ॐ ह्रीं अरहतशौचगुणाय नमः अर्घं ।

नय प्रमाण श्रुतज्ञान प्रकारा, द्वादशांग जिनवानी ।
प्रगटायो परतक्ष ज्ञानमें, नमूं भये शिव-थानी ॥१३॥

ॐ ह्रीं अर्हद्द्वादशांगाय नमः अर्घं ।

मन इन्द्रिय विन सकल चराचर, जगपद करि प्रगटायो ।
यह अरहन्त मती कहलायो, वंदू तिन शिव पायो ॥१४॥
ॐ ह्रीं अर्हदभिन्नबोधकाय नमः अर्घं ।

अनुभव सम नहीं होत दिव्यध्वनि, ताको भाग अनंता ।
जानो गणधर यह श्रुत अवधी, पाइ नमूं अरहन्ता ॥१५॥
ॐ ह्रीं अर्हत्श्रुतावधिगुणाय नमः अर्घं ।

सर्वावधि निधि वृद्धि प्रवाही, केवल सागर मांही ।
एक भयो अरहन्त अवधि यह, मुक्त भए नमि ताही ॥१६॥
ॐ ह्रीं अर्हद्‌अवधिगुणाय नमः अर्घं ।

अति विशुद्ध मय विपुलमति लहि, हो पूर्वोक्त प्रकारा ।
यह अरहन्त पाय मनःपर्यय, नमूं भए भवपारा ॥१७॥
ॐ ह्रीं अर्हच्छुद्धमनःपर्ययभावाय नमः अर्घं ।

मोह मलिनता जग जिय नाशै, केवलता गुण पावैं ।
सर्व शुद्धता पाइ नमत हैं, इम अरहन्त कहावैं ॥१८॥
ॐ ह्रीं अरहन्तकेवलगुणाय नमः अर्घं ।

मोह जनित सो रूप विरूपी, तिस विन केवलरूपा ।
श्री अरहन्त रूप सर्वोत्तम, वन्दूं हो शिवभूपा ॥१९॥
ॐ ह्रीं अर्हत्‌केवलस्वरूपाय नमः अर्घं ।

तास विरोधी कर्म जीति करि, केवल दरशन पायो ।
इम गुण सहित नमत तुम पद प्रति, भावसहित शिर नायो ॥२०
ॐ ह्रीं अर्हत्केवलदर्शनाय नमः अर्घं ।

निर आवरण करण विन जाको, शरण हरण नहीं कोई।
केवलज्ञान पाय शिव पायो, पूजत हैं हम सोई ॥२१॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलज्ञानाय नमः अर्घं।

अगम अतीर भवोदधि उतरे, सहज ही गोखुर मानो।
केवल बल अरहन्त नमें हम, शिव थल वास करानो ॥२२॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलवीर्याय नमः अर्घं।

सब विधि अपने विघ्न निवारण, औरन विघ्न विडारी।
मंगलमय अर्हत सर्वदा, नमूं मुक्ति पदधारी ॥२३॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलाय नमः अर्घं।

चक्षु आदि सब विघन विदूरित, छाइक मंगलकारी।
यह अर्हत दर्श पायो मैं, नमूं भये शिव धारी ॥२४॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलदर्शनाय नमः अर्घं।

निजपर संशय आदि तिन, निरावरण विकसानो।
मंगलमय अरहंत ज्ञान है, वन्दूं शिव सुख थानो ॥२५॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलाय नमः अर्घं।

परकृत जरा आदि संकट विन, अतुल बली अर्हंता।
नमूं सदा शिवनारीके संग, सुखसो केलि करंता ॥२६॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलवीर्याय नमः अर्घं।

पापरूप एकान्त पक्ष विन, सर्व तत्व परकाशी।
द्वादशांग अरहंत कहो मैं, नमूं भये शिववासी ॥२७॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलद्वादशांगाय नमः अर्घं।

विन प्रतक्ष अनुमान सबाधित, सुमतिरूप परिणामा।

मंगलमय अर्हन्तमती मैं, नमूं देउ शिव धामा ॥२८॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलअभिन्नबोधकाय नमः अर्घं ।

नय विकल्प श्रुतांग पक्षके, त्यागी है भगवन्ता ।
ज्ञाता दृष्टा वीतराग, विख्यात नमूं अरहन्ता ॥२९॥

ॐ ह्रीं अर्हत्श्रुतात्मकजिनाय नमः अर्घं ।

मंगलमय सर्वाविधि जाकरि, पावे पद अरहन्ता ।
वन्दूं ज्ञान प्रकाश नाश भव, शिव थल वास करंता ॥३०॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलावधये नमः अर्घं ।

वर्धमान मनपर्य ज्ञान करि, केवल भानु उगायो ।
भव्यनि प्रति शुभ मार्ग बतायो, नमूं सिद्ध पद पायो ॥३१॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलमनःपर्यायाय नमः अर्घं ।

जा विन और अज्ञान सकल, जग कारण बंध प्रधाना ।
नमूं पाइ अरहन्त मुक्ति पद, मंगल केवलज्ञाना ॥३२॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलज्ञानाय नमः अर्घं ।

निरावरण निरखेद निरन्तर, निराबाधमई राजै ।
केवलरूप नमूं सब अघहर, श्री अरहन्त विराजैं ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलस्वरूपाय नमः अर्घं ।

चक्षु आदि सब भेद विघनहर, क्षायक दर्शन पाया ।
श्री अरहन्त नमूं शिववासी, इह जग पाप नशाया ॥३४॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलदर्शनाय नमः अर्घं ।

जग मंगल सब विघन रूप है, इक केवल अरहन्ता ।
मंगलमय सब मंगलदायक, नमूं कियो जग अन्ता ॥३५॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलाय नमः अर्घं ।

केवलरूप महामंगलमय, परम शत्रु छयकारा ।
सो अरहन्त सिद्धपद पायो, नमूं पाय भवपारा ॥ ३६ ॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलरूपाय नमः अर्घं ।

शुद्धातम निजधर्म प्रकाशी, परमानंद विराजैं ।
सो अरहन्त परम मंगलमय, नमूं शिवालय राजैं ॥ ३७ ॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलधर्माय नमः अर्घं ।

सब विभावमय विघन नाशकर, मंगल धर्म स्वरूपा ।
सो अरहन्त भये परमातम, नमूं त्रियोग निरूपा ॥ ३८ ॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलधर्मस्वरूपाय नमः अर्घं ।

सर्व जगत सम्बन्ध विघन नहीं, उत्तम मंगल सोई ।
सो अरहन्त भये शिवगामी, पूजत शिवसुख होई ॥ ३९ ॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलउत्तमाय नमः अर्घं ।

लोकातीत त्रिलोक पूज्य जिन, लोकोत्तम गुणधारी ।
लोकशिखर सुखरूप विराजैं, तिनपद धोक हमारी ॥ ४० ॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाय नमः अर्घं ।

लोकाश्रित गुण सब विभाव हैं, श्री जिनपदसों न्यारे ।
तिनको त्याग भये शिव वन्दूं, काटो बन्ध हमारे ॥ ४१ ॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमगुणाय नमः अर्घं ।

मिथ्या मतिकर सहित ज्ञान, अज्ञान जगतमें सारो ।
ता विन ज्ञान अरहन्त कहाये, लोकोत्तम पूज हमारो ॥४२॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमज्ञानाय नमः अर्घं ।

क्षायक दरशन है अरहन्ता, और लोकमें नाहीं ।
सो अरहन्त भये शिववासी, लोकोत्तम सुखदाई ॥ ४३ ॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमदर्शनाय नमः अर्घं ।

कर्मबलीने सब जग बांध्यो, ताहि हनो अरहन्ता ।
यह अरहन्त वीर्य लोकोत्तम, पायो सिद्ध अनन्ता ॥ ४४ ॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्याय नमः अर्घं ।

अक्षयतीत ज्ञान लोकोत्तम, परमातम पद मूला ।
सो अरहंत नमूं शिवनाइक, पाऊं भवदधि कूला ॥ ४५ ॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमअभिन्नबोधकाय नमः अर्घं ।

परमावधि ज्ञानमो छानी, केवलज्ञान प्रकाशी ।
यहै अवधि अरहन्त नमूं मै, संशय तमको नाशी ॥ ४६ ॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमअवधिज्ञानाय नमः अर्घं ।

जो अरहन्त धरै मनपर्यय, सो केवलके माहीं ।
साक्षात् शिवरूप नमो मै, अन्य लोकमें नाहीं ॥ ४७ ॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तममनःपर्ययज्ञानाय नमः अर्घं ।

तीन लोकमें सुसार श्री, अरहंत स्वयंभू ज्ञानी ।
नमूं सदा शिवरूप आप हो, भविजन प्रति सुखदानी ॥४८॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानाय नमः अर्घं ।

सर्वोत्तम तिहुं लोक प्रकाशित, केवलज्ञान स्वरूपी ।
सो अरहन्त नमूं शिवनायक, सुखप्रद सार अनूपी ॥ ४९ ॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलस्वरूपाय नमः अर्घं ।

ज्ञान तरंग अभंग वहै लोकोत्तम धार अनूपी।
सो अरहन्त नमूं शिवनायक, सुखप्रद सार अनूपी ॥ ५० ॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलपर्यायाय नमः अर्घं।

असाधारण गुण पर्यय सहित सब केवलज्ञान सरूपी।
सो अरहंत नमूं शिवनायक, सुखप्रद सार अनूपी ॥ ५१ ॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलद्रव्याय नमः अर्घं।

जगजिय सब अशुद्ध कहो, एक केवल शुद्ध सरूपी।
सो अरहन्त नमूं शिवनायक, सुखप्रद सार अनूपी ॥५२॥
ॐ ह्रीं लोकोत्तमकेवलाय नमः अर्घं।

विविध कुरूप सर्व जगवासी, केवल स्वयं सुरूपी।
सो अरहंत नमूं शिवनायक, सुखप्रद सार अनूपी ॥५३॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलस्वरूपाय नमः अर्घं।

हीनाधिक धिक धिक जग प्राणी, धन्य एक ध्रुवरूपी।
सो अरहंत नमूं शिवनायक, सुखप्रद सार अनूपी ॥५४॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमध्रुवभावाय नमः अर्घं।

दोहा।

संसारिनके भाव सब, बन्ध हेत वरणाय।
मुक्तिरूप अरहंतके, भाव नमूं सुखदाय ॥ ५५ ॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमभावाय नमः अर्घं।

कबहुं न होय विभावमय, सो थिर भाव जिनेश।
मुक्तिरूप प्रणमूं सदा, नाशे विघन विशेष ॥ ५६ ॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमस्थिरभावाय नमः अर्घं।

जा सेवत वेवत स्वसुख, सो सर्वोत्तम देव ।
शिववासी नाशी त्रिजग, फासी नमहूं एव ॥ ५७ ॥

ॐ ह्रीं अर्हच्छरणाय नमः अर्घ्य ।

जिन ध्यायो तिन पाइयो, निश्चय सो सुखरास ।
शरण स्वरूपी जिन नमूं, करैं सदा शिववास ॥ ५८ ॥

ॐ ह्रीं अर्हच्छरणरूपाय नमः अर्घ्य ।

पद्धडी छन्द ।

स्वाभाविक गुण अरहंत गाय, जासों पूरण शिवसुख लहाय ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं संत आनंद पाय ॥५९॥

ॐ ह्रीं अर्हद्गुणशरणाय नमः अर्घ्य ।

विन केवलज्ञान न मुक्ति होय, पायो है श्री अरहन्त जोय ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥६०॥

ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानशरणाय नमः अर्घ्य ।

प्रत्यक्ष देख सर्वज्ञ देव, भाख्यो है शिव मारग असेव ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥६१॥

ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनशरणाय नमः अर्घ्य ।

संसार विषम बन्धन उछेद, अरहन्त वीर्य पायो अखेद ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥६२॥

ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्यशरणाय नमः अर्घ्य ।

सब कुमति विगत मत जिन प्रतीत, हो जिसते शिवसुख दे अभीत ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥६३॥

ॐ ह्रीं अर्हद्द्वादशांगशरणाय नमः अर्घ्य ।

अनुमानादिक साधत विज्ञान, अरहन्त मती प्रत्यक्ष जान ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥६४॥
ॐ ह्रीं अर्हद्‌भिन्नबोधकाय नमः अर्घं ।

जिन भाषित श्रुत सुनि भव्य जीव, पायो शिव अविनाशी सदीव ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥६५॥
ॐ ह्रीं अर्हच्छ्रुतशरणाय नमः अर्घं ।

प्रतिपक्षी सब जीते कषाय, पायो अवधि शिव-सुख कराय ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥६६॥
ॐ ह्रीं अर्हदवधिबोधशरणाय नमः अर्घं ।

मुनि लहैं गहैं परिणाम श्वेत, जिन मनपर्यय शिव वास देत ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥६७॥
ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणाय नमः अर्घं ।

आवर्ण रहित प्रत्यक्ष ज्ञान, शिवरूप केवली जिन सुजान ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥६८॥
ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणाय नमः अर्घं ।

मुनि केवलज्ञानी जिन अराध, पावे शिव-सुख निश्चय अबाध ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥६९॥
ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणस्वरूपाय नमः अर्घं ।

शिव-सुखदायक निज आत्म ज्ञान, सो केवल पावै जिन महान ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥७०॥
ॐ ह्रीं अर्हत्केवलधर्मशरणाय नमः अर्घं ।

यह केवल गुण आतम स्वभाव, अरहन्तन प्रति शिव-सुख उपाव ।

हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥७१॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलगुणशरणाय नमः अर्घं ।

संसार रूप सब विघन टार, मंगल गुण श्री जिन मुक्त कार ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥७२॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलगुणशरणाय नमः अर्घं ।

छय उपशम ज्ञानी विघन रूप, ता विन जिन ज्ञानी शिव सुरूप ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥७३॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलज्ञानशरणाय नमः अर्घं ।

अरहन्त दर्श मंगल स्वरूप, तासों दरशै शिव-सुख अनूप ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥७४॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलदर्शनशरणाय नमः अर्घं ।

अरहन्त बोध है मंगलीक, शिव मारग प्रति वरते अलीक ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥७५॥

ॐ ह्रीं अर्हन्बोधशरणाय नमः अर्घं ।

निज ज्ञानानन्द प्रवाह धार, वरते अखण्ड अव्यय अपार ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥७६॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलशरणाय नमः अर्घं ।

जाविन तिहुं लोक न और ठाम, भवसिंधु तरण तारण प्रकाम ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥७७॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमशरणाय नमः अर्घं ।

स्वाभाविक भव्यन प्रति दयाल, विच्छेद करण संसार जाल ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥७८॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमगुणशरणाय नमः अर्घ ।

तुम विन समरथ तिहुं लोकमांहि, भवसिंधु उतारण और नाहिं ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥७९॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्यशरणाय नमः अर्घ ।

बिन परिश्रम तारण तरण होय, लोकोत्तम अद्भुत शक्ति सोय ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥८०॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्यगुणशरणाय नमः अर्घ ।

अप्रसिद्ध कुनय अल्पज्ञ भास, ताको विनाश शिवमग प्रकाश ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥८१॥

ॐ ह्रीं अर्हद्द्वादशांगशरणाय नमः अर्घ ।

सब कुनय कुपक्ष कुसाध्य नाश, सत्यारथ मत कारण प्रकाश ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥८२॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमअभिन्नबोधकाय नमः अर्घ ।

मिथ्यारत प्रकृति अवधि विनाश, लोकोत्तम अवधीको प्रकाश ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥८३॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमअवधिशरणाय नमः अर्घ ।

मनपर्यय शिव मंगल लहाय, लोकोत्तम श्री गुरु सो कहाय ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥८४॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तममनःपर्ययशरणाय नमः अर्घ ।

आवरणतीत प्रत्यक्ष ज्ञान, है सेवनिक जगमें प्रधान ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥८५॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानशरणाय नमः अर्घ ।

हो बाह्य विभव सुरकृत अनूप, अन्तर लोकोत्तम ज्ञानरूप ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥८६॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमविभूतिप्रधानशरणाय नमः अर्घं ।

रतनत्रय निमित मिलो अबाध, पायो निज आनन्द धर्म साथ ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥८७॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमविभूतिधर्मशरणाय नमः अर्घं ।

सुख ज्ञान वीर्य दर्शन सुभाव, पायो सबकर प्रकृति अभाव ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं सन्त आनन्द पाय ॥८८॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमअनन्तचतुष्टयशरणाय नमः अर्घं ।

अडिल्ल छन्द ।

दर्श ज्ञान सुख बल निज गुण ये चार हैं,
आतमीक परधान विशेष अपार हैं ।
इनहींसो हैं पूज्य सिद्ध परमेश्वरा,
हम हूं यह गुण पाय नमन यातें करा ॥ ८९ ॥

ॐ ह्रीं अर्हदनन्तगुणचतुष्टाय नमः अर्घं ।

क्षयोपशम सम्बादित ज्ञान कलाहरी,
पूरण ज्ञायक स्वयंबुद्धि श्री जिनवरी ।
इनहींसो हैं पूज्य सिद्ध परमेश्वरा,
हम हूं यह गुण पाय नमन यातें करा ॥ ९० ॥

ॐ ह्रीं अर्हन्निजज्ञानस्वयंभवे नमः अर्घं ।

जनमत ही दश अतिशय शासनमें कही,
स्वयं शक्ति भगवान आप तिनको लही ।

इनहीसो हैं पूज्य सिद्ध परमेश्वरा,
हम हूं यह गुण पाय नमन यातें करा ॥ ९१ ॥

ॐ ह्रीं अर्हद्दशअतिशयस्वयंभुवे नमः अर्घं ।

जे दश अतिशय घाति कर्म छयको करै,
महा विभवको पाय मोक्ष नारी वरैं ।
इनहींसो हैं पूज्य सिद्ध परमेश्वरा,
हम हूं यह गुण पाय नमन यातें करा ॥ ९२

ॐ ह्रीं अर्हद्दशअतिशयघातिक्षयाय नमः अर्घं ।

केवल विभव उपाय प्रभू जिनपद लहो,
चौदै अतिशय देवन करि सेवन कियो ।
इनहींसो हैं पूज्य सिद्ध परमेश्वरा,
हम हूं यह गुण पाय नमन यातें करा ॥ ९३ ॥

ॐ ह्रीं अर्हच्चतुर्दशअतिशयदेवकृताय नमः अर्घं ।

चौतीस अतिशय जे पुराण वरनी महा,
मुक्ति समाज अनूपम श्रीगुरुने कहा ।
इनहींसो हैं पूज्य सिद्ध परमेश्वरा,
हम हूं यह गुण पाय नमन याते करा ॥ ९४ ॥

ॐ ह्रीं अर्हच्चतुस्त्रिंशतअतिशयविराजमानाय नमः अर्घं ।

डालर छन्द ।

लोकालोक अगुण सम जानो, ज्ञानानंत सुगुण पहिचानो ।
सो अरहन्त सिद्धपद पाया, भावसहित हम शीश नवाया । ९५॥

ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानानन्दगुणाय नमः अर्घं ।

समरस सुस्थिर भाव उधारा, युगपति लोकालोक निहारा।
सो अरहन्त सिद्धपद पाया, भाव सहित हम शीश नवाया॥९६

ॐ ह्रीं अर्हद्ध्यानानन्तध्येयाय नमः अर्घं।

इक इक गुणका भाव अनन्ता, पर्ययरूप सोहै अरहन्ता।
सो अरहन्त सिद्धपद पाया, भाव सहित हम शीश नवाया॥९७

ॐ ह्रीं अर्हदनंतगुणाय नमः अर्घं।

उत्तर गुण सब लख चौरासी, पूरण चारित भेद प्रकाशी।
सो अरहन्त सिद्धपद पाया, भाव सहित हम शीश नवाया॥९८

ॐ ह्रीं अर्हत्तपअनन्तगुणाय नमः अर्घं।

आतम शक्ति जास करि छीनी, तास नाश प्रभुताई लीनी।
सो अरहन्त सिद्धपद पाया, भाव सहित हम शीश नवाया॥९९

ॐ ह्रीं अर्हत्परमात्मने नमः अर्घं।

निज गुण निज ही माँहि समाये, गणधरादि वरनन करि गाये।
सो अरहन्त सिद्धपद पाया, भाव सहित हम शीश नवाया॥१००

ॐ ह्रीं अर्हद्गुणस्वरूपाय नमः अर्घं।

दोधक छन्द।

जो निज आतम साधु सुखाई, सो जगतेश्वर सिद्ध कहाई।
लोक शिरोमणि है शिवस्वामी, भावसहित तुमको प्रणमामी॥१०१

ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः अर्घं।

सर्व विशुद्ध विरूप सरूपी, स्वातम रूप विशुद्ध अनूपी।
लोक शिरोमणि है शिवस्वामी, भावसहित तुमको प्रणमामी॥१०२

ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपेभ्यो नमः अर्घं।

प्राभृत सर्व विभाव निवारा, स्वाश्रित सर्व अबाध अपारा।
लोक शिरोमणि है शिवस्वामी, भावसहित तुमको प्रणमामी॥१०३

ॐ ह्रीं सिद्धगुणेभ्यो नमः अर्घं।

आकुलता सब ही विधि नाशी, ज्ञायक लोकालोक प्रकाशी।
लोक शिरोमणि है शिव स्वामी, भाव सहित तुमको प्रणमामी॥१०४

ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानेभ्यो नमः अर्घं।

जीव अजीव लखे अविचारा, हो नहीं अन्तर एक प्रकारा।
लोक शिरोमणि है शिवस्वामी, भावसहित तुमको प्रणमामी॥१०५

ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनेभ्यो नमः अर्घं।

अन्तर बाहिर भेद उघारी, दर्श विशुद्ध सदा सुखकारी।
लोक शिरोमणि है शिवस्वामी, भावसहित तुमको प्रणमामी॥१०६

ॐ ह्रीं सिद्धशुद्धसम्यक्तेभ्यो नमः अर्घं।

एक अणुमल कर्म लजावै, सोय निरंजनता नहि पावै।
लोक शिरोमणि है शिवस्वामी, भावसहित तुमको प्रणमामी॥१०७

ॐ ह्रीं सिद्धनिरञ्जनेभ्यो नमः अर्घं।

अर्धरोला छन्द।

चारों गतिको भ्रमण नाशकर, थिरता पाई।
निज स्वरूपमें लीन, अन्य सो मोह नशाई॥ १०८॥

ॐ ह्रीं सिद्धअचलपदप्राप्ताय नमः अर्घं।

रत्नत्रय आराधि साधि, निज शिवपद पायो।
संख्या भेद उलंघि, शिवालय वास करायो॥ १०९॥

ॐ ह्रीं संख्यातीतसिद्धेभ्यो नमः अर्घं।

असंख्यात मरजाद एक ताहू सौं वीते ।
विजय लक्ष्मीनाथ, महाबल सब विधि जीते ॥ ११० ॥
ॐ ह्रीं असंख्यातसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

काल मर्याद अनादि आदि, सोई विधि जारी ।
भए अनन्त दिगम्बर साधु जु, शिवपद धारी ॥ १११ ॥
ॐ ह्रीं अनन्तसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

पुष्करार्द्ध सागर लों, जे जल थान बखानो ।
देव सहाइ उपाइ, उर्द्ध गति गमन करानो ॥ ११२ ॥
ॐ ह्रीं जलसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

वन गिर नगर गुफादि सर्व थलसो, शिव पाइ ।
सिद्धक्षेत्र सब ठोर बखानत, श्री जिनराई ॥ ११३ ॥
ॐ ह्रीं स्थलसिद्धेभ्यो नमः अर्घं ।

नभहीमें जिन शुकलध्यान, बल कर्म नाश किय ।
आउ पूर्ण वश ततछिन, ही शिववास जाय लिय ॥११४
ॐ ह्रीं गगनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

आयु स्थिति सम अन्न कर्म, कारण परदेशा ।
परसै पूरण लोक आत्मा, केवली जिनेशा ॥ ११५ ॥
ॐ ह्रीं समगुतसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

केवलि जिन विन समुद्घात, शिववास लिया है ।
स्वते स्वभाव समान, अघाती कर्म किया है ॥ ११६ ॥
ॐ ह्रीं समुद्धातसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

उल्लाला छन्द ।

तिन विशेष अतिशय सहित, सामान केवली नाम है ।
सिद्ध भये तिहुं योगतें, तिनके पद परिणाम है ॥११७॥

ॐ ह्रीं साधारणसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

त्रिभुवनमें नहीं पावतो, जो जिन गुण अभिराम है ।
सिद्ध भये तिहुं योगतें, तिनके पद परिणाम है ॥११८॥

ॐ ह्रीं असाधारणसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

गर्भ कल्याणक आदि युत, तीर्थंकर सुख धाम है ।
सिद्ध भये तिहुं योगतें, तिनके पद परिणाम है ॥११९॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

तीर्थंकरके समयमें, केवली जिन अभिराम है ।
सिद्ध भये तिहुं योगतें, तिनके पद परिणाम है ।१२०॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरअनन्तसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

पंच शतक पच्चीस फुनि, धनुषकाय अभिराम है ।
सिद्ध भये तिहुं योगतें, तिनके पद परिणाम है ॥१२१॥

ॐ ह्रीं उत्कृष्टअवगाहनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

आदि अन्त अन्तर विषैं, मध्यवगाहन नाम है ।
सिद्ध भये तिहुं जोगते, तिनके पद परिणाम है ॥१२२॥

ॐ ह्रीं मध्यमअवगाहनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

तीन अर्घ तन केवली, हस्त प्रमाण कहाय है ।
सिद्ध भये तिहुं जोगते, तिनके पद परिणाम है ॥१२३॥

ॐ ह्रीं जघन्यअवगाहनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

देव निमित्त मिलो जहां, त्रिजग केवली धाम है ।
सिद्ध भये तिहुं जोगते, तिनके पद परिणाम है ॥१२४॥
ॐ ह्रीं त्रिजगलोकसिद्धेभ्यो नमः अर्घं ।

षट्‌विधि परिणति कालकी, तिन अपेक्ष यह नाम है ।
सिद्ध भये तिहुं योगतें, तिनके पद परिणाम है ॥१२५॥
ॐ ह्रीं षट्‌विधिकालसिद्धेभ्यो नमः अर्घं ।

अंत समय उपसर्गतें, शुकल ध्यान अभिराम है ।
सिद्ध भये तिहुं योगतें, तिनके पद परिणाम है ॥१२६॥
ॐ ह्रीं उपसर्गसिद्धेभ्यो नमः अर्घं ।

पर उपसर्ग मिलै नहीं, स्वतः शुक्ल शुभ धाम है ।
सिद्ध भये तिहुं योगतें, तिनके पद परिणाम है ॥१२७॥
ॐ ह्रीं निरुपसर्गसिद्धेभ्यो नमः अर्घं ।

अन्तर दीप महां जहां, देवनके अभिराम है ।
सिद्ध भये तिहुं योगतें, तिनके पद परिणाम है । १२८॥
ॐ ह्रीं दीपसिद्धेभ्यो नमः अर्घं ।

देव गये ले सिंधु जब, कर्म छयो तिह ठाम है ।
सिद्ध भये तिहुं योगतें, तिनके पद परिणाम है ॥१२९॥
ॐ ह्रीं उदधिसिद्धेभ्यो नमः अर्घं ।

भुजगप्रयात् छन्द ।

धरैं जोग आसन गहैं शुद्ध ताई,
न हो खेद ध्यानांग सो कर्म छाई ।
भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,
यही मोक्ष जाना नमः सिद्ध काजा ॥१३०॥

ॐ ह्रीं स्वस्थित्यासनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

महा शांति मुद्रा पलौथी लगाये,
किथो कर्मको नाश ज्ञानी कहाये ।
भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,
यही मोक्ष जाना नमः सिद्ध काजा ॥१३१॥

ॐ ह्रीं पर्यंकासनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

लहै आदिको संहनन पूर्व देही,
लखायो परारंभमें भावते ही ।
भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,
यही मोक्ष जाना नमः सिद्ध काजा ॥१३२॥

ॐ ह्रीं पुरुषवेदसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

खपायो प्रथम सात प्रकृति विमोहा,
गहै शुद्ध श्रेणी क्षयो कर्म लोहा ।
भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,
यही मोक्ष जाना नमः सिद्ध काजा ॥१३३॥

ॐ ह्रीं क्षायिकश्रेणीसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

समय एकमें एक वासौ अनंता,
धरो आठ तापं यही भेद अन्ता ।
भये सिद्ध राजा निजानन्द साजा,
यही मोक्ष जाना नमः सिद्ध काजा ॥१३४॥

ॐ ह्रीं एकसमयसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

किसी देशमें वा किसी काल माहीं,
गिने दो समयमें तथा अन्तराई ।

भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,
यही मोक्ष जाना नमः सिद्ध काजा ॥१३५॥

ॐ ह्रीं द्वयसमयसिद्धेभ्यो नमः अर्घ।

समय एक दो तीन धाराप्रवाही,
कियो कर्म छय अन्तराय होय नाहीं।
भये सिद्ध राजा निजानन्द साजा,
यही मोक्ष जाना नमः सिद्ध काजा ॥१३६॥

ॐ ह्रीं त्रिसमयसिद्धेभ्यो नमः अर्घ।

हुवे हो सु होगे सुहो है अवारी,
त्रिकालं सदा मोक्ष पन्थं विहारी।
भये सिद्ध राजा निजानन्द साजा,
यही मोक्ष जाना नमः सिद्ध काजा ॥१३७॥

ॐ ह्रीं त्रिकालसिद्धेभ्यो नमः अर्घ।

तिहूं लोकके शुद्ध सम्यक्त धारी,
महा भार संजम धरै हैं अवारी।
भये सिद्ध राजा निजानंद साजा,
यही मोक्ष जाना नमः सिद्ध काजा ॥१३८॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसिद्धेभ्यो नमः अर्घ।

मरहठा छन्द।

तिहुं लोक निहारा सब दुखकारा, पापरूप ससार।
ताको परिहारा सुलभ सु काला, भये सिद्ध अविकार॥

है जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ काला, तपहर शशि उनहार ॥१३९॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलेभ्यो नमः अर्घं।

तिहुं कर्म कालमा लगी जालमा, करै रूप दुखदाय।
तुम ताको नाशो स्वयं प्रकाशो, स्वातम रूप सुभाय॥
है जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ काला, तपहर शशि उनहार॥१४०॥
ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलरूपेभ्यो नमः अर्घं।

तिहुं जगके प्राणी सब अज्ञानी, फँसे मोह जंगाल।
हो तिहु जगत्राता पूरण ज्ञाता, तुम ही एक खुशहाल॥
है जगत्रय नायक मंगलदायक, मगलमय सुखकार।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ काला, तपहर शशि उनहार॥१४१॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलज्ञानेभ्यो नमः अर्घं।

यह मोह अन्धेरी छई घनेरी, प्रबल पटल रहो छाय।
तुम ताहि उघारो सकल निहारो, युगपद आनन्ददाय॥
है जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ काला, तपहर शशि उनहार॥१४२॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलदर्शनेभ्यो नमः अर्घं।

निजबंधन डोरी छिनमें तोरी, स्वयं शक्ति परकाश।
निरभय निरमोही परम अछोही, अन्तराय विधि नाश॥
है जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ काला, तपहर शशि उनहार॥१४३॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलवीर्येभ्यो नमः अर्घं ।

जाके प्रसादकर सकल चराचर, निजसों भिन्न लखाय ।
रुखराग निवारा सुख विस्तारा, आकुलता विनशाय ॥
है जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ काला, तपहर शशि उनहार ॥१४४॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलसम्यक्तेभ्यो नमः अर्घं ।

अस्पर्श अमूरति चिनमय मूरति, अरस अलिंग अनूप ।
मन अक्ष अलक्षं ज्ञान प्रत्यक्षं, शुभ अवगाह स्वरूप ॥
है जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ काला, तपहर शशि उनहार ॥१४५॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलअवगाहनेभ्यो नमः अर्घं ।

अव्यक्त स्वरूपं अमल अनूपं, अलख अगम असमान ।
अवगाह उदर धर वास परस्पर, भिन्न भिन्न परमान ॥
है जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ काला, तपहर शशि उनहार ॥१४६॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलसूक्ष्मत्वेभ्यो नमः अर्घं ।

अनुभूति विलासी समरस रासी, हीनाधिक विधि नाश ।
विधि गोत्र नाशकर पूरण पदधर, असंवाद परकाश ॥
है जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ काला, तपहर शशि उनहार ॥१४७॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलअगुरुलघुभ्यो नमः अर्घं ।

पुद्गल कृत सारी विविधि प्रकारी. द्वैतभाव अधिकार।
सब भांति निवारी निज सुखकारी, पायो पद अविकार ॥
है जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ काला, तपहर शशि उनहार ॥१४८॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलअव्याबाधितेभ्यो नमः अर्घ।

अवगाह प्रणामी ज्ञानारामी, दर्शन वीर्य अपार।
सूक्षम अवकाशं अज अविनाशं, अगुरुलघू सुखकार ॥
है जगत्रय नायक मंगलदायक, मगलमय सुखकार।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ काला, तपहर शशि उनहार ॥१४९॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलगुणेभ्यो नमः अर्घ।

सुद्धातम सारं अष्ट प्रकारं, शिव स्वरूप अनिवार।
निज गुणपर ध्यानं सम्यकज्ञानं, आदि अन्त अविकार ॥
है जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ काला, तपहर शशि उनहार ॥१५०॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलअष्टस्वरूपेभ्यो नमः अर्घ।

मंगल अरहन्तं अष्टम भन्तं, सिद्ध अष्ट गुण भास।
ये ही बिलसावै अन्य न पावै, असाधारण परकाश ॥
है जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ काला, तपहर शशि उनहार ॥१५१॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलअष्टप्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ।

निर आकुलताई सुख अधिकाई, परम शुद्ध परिणाम।
संसार निवारण बन्ध विडारन, यही धर्म सुखधाम ॥

है जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ काला, तपहर शशि उनहार ॥१५२॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलधर्मेभ्यो नमः अर्घं।

चूलिका छन्द।

तीनि काल तिहुं लोकमें, तुम गुण ओरन माहिं लखाने।
लोकोत्तम पर सिद्ध हो सिद्धराज, सुख साज बखाने ॥१५३॥
ॐ ह्रीं लोकोत्तमगुणेभ्यो नमः अर्घं।

लोकत्रय शिर छत्र मणि, लोकत्रय वर पूज्य प्रधाने।
लोकोत्तम पर सिद्ध हो सिद्धराज, सुख साज बखाने ॥१५४॥
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमेभ्यो नमः अर्घं।

अमल अनूप तेज घन निरावर्ण, निजरूप प्रमाने।
लोकोत्तम पर सिद्ध हो सिद्धराज, सुख साज बखाने ॥१५५॥
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमस्वरूपाय नमः अर्घं।

लोकालोक प्रकाश कर, लोकातीत प्रत्यक्ष प्रमाने।
लोकोत्तम पर सिद्ध हो सिद्धराज, सुख साज बखाने ॥१५६॥
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमज्ञानाय नमः अर्घं।

सकल दर्शनावरण बिन पूरन, दृग्स जोत उगाने।
लोकोत्तम पर सिद्ध हो सिद्धराज, सुख साज बखाने ॥१५७॥
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमदर्शनाय नमः अर्घं।

अतुल अतीन्द्रिय वीर्यकर, भोगे नित शिवनारी अघाने।
लोकोत्तम पर सिद्ध हो सिद्धराज, सुख साज बखाने ॥१५८॥
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमवीर्याय नमः अर्घं।

त्रोटक छन्द।

विन कारण ही सबके मितु हो, सर्वोत्तम लोक विषैं हितु हो।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं ॥१५९
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमशरणाय नमः अर्घं।

तुम रूप अनूपम ध्यान किये, निज रूप दिखावत स्वच्छ हिये।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं ॥१६०
ॐ ह्रीं सिद्धरूपशरणाय नमः अर्घं।

निरभेद अछेद विकाशित हैं, सब लोक अलोक विभाषित हैं।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं ॥१६१
ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनाय नमः अर्घं।

निरबाध अगाध प्रकाशमई, निरद्वंद अबंध अभय अजई।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं ॥१६२
ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानशरणाय नमः अर्घं।

हित कारण तारण तरण कहै, अप्रमाद प्रमाद प्रकाशन है।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं ॥१६३
ॐ ह्रीं सिद्धवीर्यशरणाय नमः अर्घं।

अविरुद्ध विशुद्ध प्रसिद्ध महा, निज आतमतत्त्व प्रबोध लहा।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं ॥१६४
ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वशरणाय नमः अर्घं।

जिनको पूर्वापर अन्त नहीं, नित धार प्रवाह वहै अति ही।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं ॥१६५
ॐ ह्रीं सिद्धअनन्तशरणाय नमः अर्घं।

कबहूं नहीं अन्त समावत है, सु अनन्त अनन्त कहावत है।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं ॥१६६

ॐ ह्रीं सिद्धअनन्तानन्तशरणाय नमः अर्घ।

तिहुं काल सु सिद्ध महा सुखदा, निजरूप विषैं थिर भाव सदा
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं ॥१६७॥

ॐ ह्रीं सिद्धत्रिकालशरणाय नमः अर्घ ।

तिहुं लोक शिरोमणि पूजि महा, तिहुं लोक प्रकाशक तेज कहा।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं॥१६८॥

ॐ ह्रीं सिद्धत्रिलोकशरणाय नमः अर्घ ।

गिणती परमाण जु लोक धरे, परदेश समूह प्रकाश करे ।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं॥१६९॥

ॐ ह्रीं सिद्धअसंख्यातलोकशरणाय नमः अर्घ ।

पूर्वापर एकहि रूप लसे, नित लोक सिंघासन वास वसै ।
इनहीं गुणमें मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं॥१७०॥

ॐ ह्रीं सिद्धध्रौव्यगुणशरणाय नमः अर्घ ।

जगवास परजाय विनाश कियो, अवनीश्वर रूप विशुद्ध भयो ।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं॥१७१॥

ॐ ह्रीं सिद्धउत्पादगुणशरणाय नमः अर्घ।

पर द्रव्य थकी रुष राग नहीं, निज भाव विना कहुं लाग नहीं।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं ॥१७२॥

ॐ ह्रीं सिद्धसाम्यगुणशरणाय नमः अर्घ ।

विन कर्म कलंक बिराजत है, अति स्वच्छ महागुण राजत है।

इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं॥१७३॥

ॐ ह्रीं सिद्धस्वक्षगुणशरणाय नमः अर्घं।

मन इन्द्रिय आदि न व्याधि तहां, रूप राग कलेश प्रवेश न ह्वां।
इनही गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं॥१७४॥

ॐ ह्रीं सिद्धस्वस्थितगुणशरणाय नमः अर्घं।

निज रूप विषैं नित मगन रहैं, परयोग वियोग न दाह लहैं।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं॥१७५॥

ॐ ह्रीं सिद्धसमाधिगुणशरणाय नमः अर्घं।

श्रुतज्ञान तथा मतिज्ञान दऊ, परकाशत हैं यह व्यक्त सऊ।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं॥१७६॥

ॐ ह्रीं सिद्धव्यक्तगुणशरणाय नमः अर्घं।

परतक्ष अतीन्द्रिय भाव महा, मन इन्द्रिय बोधन गुह्य कहा।
इनही गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत हैं॥१७७॥

ॐ ह्रीं सिद्धअव्यक्तगुणशरणाय नमः अर्घं।

मालिनी छन्द।

निज गुणवर स्वामी शुद्ध संबोध नामी,
परगुण नहिं लेशा एक ही भाव शेषा।
मन वच तन लाई पूजहों भक्ति भाई,
भवि भव भय चूरं शाश्वतं सुक्ख पूरं॥१७८॥

ॐ ह्रीं सिद्धगुणागुणस्वरूपाय नमः अर्घं।

सब विधि मल जारा बन्ध संसार टारा,
जग जिय हितकारी उच्यता पाप सारी।

मन वच तन लाई पूजहों भक्ति भाई,
भवि भव भय चूरं शाश्वतं सुक्ख पूरं ॥ १७९॥
ॐ ह्रीं सिद्धपरमात्मस्वरूपाय नमः अर्घं ।
परपर नितखण्डं भेद बाधा विहण्डं,
शिव सदन निवासी नित्य स्वानंदरासी ।
मन वच तन लाई पूजहो भक्ति भाई,
भवि भव भय चूरं शाश्वतं सुक्ख पूरं ॥ १८०॥
ॐ ह्रीं सिद्धअखण्डस्वरूपाय नमः अर्घं ।
चित सुख विलसानं आकुलं भाव हानं,
निज अनुभव सारं द्वैत संकल्प टारं ।
मन वच तन लाई पूजहों भक्ति भाई,
भवि भव भय चूरं शाश्वतं सुक्ख पूरं ॥ १८१॥
ॐ ह्रीं सिद्धचिदानंदस्वरूपाय नमः अर्घं ।
परकरण निवारं भाव संभाव धारं,
निज अनुपम ज्ञानं सुक्ख रूपं निधानं ।
मन वच तन लाई पूजहों भक्ति भाई,
भवि भव भय चूरं शाश्वतं सुक्ख पूरं ॥ १८२॥
ॐ ह्रीं सिद्धसहजानंदाय नमः अर्घं ।
विधि वश सब प्रानी हीन आधिक्य ठानी,
तिस करन निमूला पापरूपा धरूला ।
मन वच तन लाई पूजहो भक्ति भाई,
भवि भव भय चूरं शाश्वतं सुक्ख पूरं ॥ १८३॥

ॐ ह्रीं सिद्धअछेदरूपाय नमः अर्घं ।

जबलग परजाया भेद नाना धराया,
इक शिवपद मांहीं भेद आभास नांही ।
मन, वच, तन लाई पूजहों भक्ति भाई,
भवि भव भय चूरं शाश्वतं सुक्ख पूरं ॥१८४॥

ॐ ह्रीं सिद्धअभेदगुणाय नमः अर्घं ।

अनुपम गुण धारी लोक सम भावटारी,
सुरनर पशु ध्यावैं सो नहीं पार पावैं ।
मन वच तन लाई पूजहो भक्ति भाई,
भवि भव भय चूरं शाश्वतं सुक्ख पूरं ॥ १८५ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धअनूपगुणाय नमः अर्घं ।

जिस अनुभव सरसै धार आनन्द बरसै,
अनुपम रस सोई स्वाद जासो न कोई ।
मन वच तन लाई पूज हो भक्ति भाई,
भवि भव भय चूरं शाश्वतं सुक्ख पूरं ॥ १८६ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धअमृततत्त्वाय नमः अर्घं ।

सब श्रुत विस्तारा जास माहीं उजारा,
यही निजपद जानो आतम संभाव मानो ।
मन वच तन लाई पूजहों भक्ति भाई,
भवि भव भय चूरं शाश्वतं सुक्ख पूरं ॥ १८७ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धश्रुतप्राप्ताय नमः अर्घं ।

दोधक छन्द ।

जीव अजीव सबय प्रतिभासी, केवल जोति लहो तम नाशी ।
सिद्ध समूह नमूं शिरनाई, पाप कलाप सबै खिर जाई ॥१८८॥
ॐ ह्रीं सिद्धकेवलप्राप्ताय नमः अर्घं ।

चेतन रूप प्रदेश विराजै, आकृत रूप अलिंग सु छाजै ।
सिद्ध समूह नमूं शिरनाई, पाप कलाप सबै खिर जाई ॥१८९॥
ॐ ह्रीं सिद्धसाकारनिराकाराय नमः अर्घं ।

नाहीं गहैं पर आश्रित जानो, सो अवलम्ब विना पद मानो ।
सिद्ध समूह जजों मन लाई, पाप कलाप सबै खिर जाई ॥१९०
ॐ ह्रीं सिद्धनिरालंबाय नमः अर्घं ।

राग विषाद बसै नहिं जामें, जोग वियोग भोग नहिं तामें ।
सिद्ध समूह जजों मन लाई, पाप कलाप सबै खिर जाई ॥१९१
ॐ ह्रीं सिद्धनिष्कलंकाय नमः अर्घं ।

ज्ञान प्रभाव प्रकाश भयो है, कर्म समूह विनाश भयो है ।
सिद्ध समूह जजो मन लाई, पाप कलाप सबै खिरजाई ॥१९२
ॐ ह्रीं सिद्धतेजसंपन्नाय नमः अर्घं ।

आतम लाभ निजाश्रित पाया, द्वैत विभाव समूह नसाया ।
सिद्ध समूह जजों मन लाई, पाप कलाप सबै खिर जाई ॥१९३
ॐ ह्रीं सिद्धआतमसंपन्नाय नमः अर्घं ।

मोतियादाम छन्द ।

चहूं गति काय स्वरूप प्रत्यक्ष, शिवालय वास अनूप अलक्ष ।
भजो मन आनंदसों शिवनाथ, धरों चरणांबुजको निज माथ ॥१९४

ॐ ह्रीं सिद्धगर्भवासाय नमः अर्घ्यं ।

निजानंद श्रीयुत ज्ञान अथाह, सुशोभित ब्रह्म भयो सुख पाय ।
भजो मन आनन्दसों शिवनाथ, धरों चरणांबुजको निज माथ ॥१९५

ॐ ह्रीं सिद्धलक्ष्मीसंतर्पकाय नमः अर्घं ।

सुभाव निजातम अन्तर लीन, विभाव परातम आपद कीन ।
भजो मन आनंदसों शिवनाथ, धरों चरणांबुजको निज माथ ॥१९६

ॐ ह्रीं सिद्धअन्तराकाराय नमः अर्घं ।

जहां लग द्वेष प्रवेश न होय, तहां लग सार रसायन होय ।
भजो मन आनंदसों शिवनाथ, धरों चरणांबुजको निज माथ ॥१९७

ॐ ह्रीं सिद्धसाररसाय नमः अर्घं ।

जिसो निरलेप हुए विष तुंब्य, तिसो जग आग्र निराश्रय लुंब्य ।
भजो मन आनंदसों शिवनाथ, धरों चरणांबुजको निज माथ ॥१९८

ॐ ह्रीं सिद्धशिखरमण्डनाय नमः अर्घ्यं ।

तिहूं जग शीस बिराजित नित्य, शिरोमणि सर्व समाज अनित्य ।
भजो मन आनंदसों शिवनाथ, धरों चरणांबुजको निज माथ ॥१९९

ॐ ह्रीं सिद्धत्रिलोकाग्रनिवासिने नमः अर्घ्यं ।

अकाय अरूप अलक्ष अवेद, निजातम लीन सदा अविछेद ।
भजो मन आनंदसों शिवनाथ, धरों चरणांबुजको निज माथ ॥२००

ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपगुप्तेभ्यो नमः अर्घं ।

अडिल्ल छन्द ।

ऋषभ आदि चित धारि प्रथम दीक्षा धरी ।
केवलज्ञान उपाय धर्म विधि उच्चरी ॥

निज स्वरूप थितिकरण हरण विधि चार है ।
परमारथ आचार्य सिद्ध सुखकार है ॥ २०१ ॥

ॐ ह्रीं सूरिभ्यो नमः अर्घं ।

निज ही निज उर धार हैत सामर्थ है ।
आतमशक्ति कर व्यक्ति करण विधि व्यर्थ है ॥
निज स्वरूप थितिकरण हरण विधि चार है ।
परमारथ आचार्य सिद्ध सुखकार है ॥ २०२ ॥

ॐ ह्रीं सूरिगुणेभ्यो नमः अर्घं ।

साधन साधक साध्य भाव सब ही गयो ।
भेद अगोचर रूप महासुख संचयो ॥
निज स्वरूप थितिकरण हरण विधि चार है ।
परमारथ आचार्य सिद्ध सुखकार है ॥ २०३ ॥

ॐ ह्रीं सूरिस्वरूपगुणेभ्यो नमः अर्घं ।

तत्व प्रतीत निजातम रूप अनुभव कला ।
पायो सत्यानन्द कुमारग दल मला ॥
निज स्वरूप थितिकरण हरण विधि चार है ।
परमारथ आचार्य सिद्ध सुखकार है ॥ २०४ ॥

ॐ ह्रीं सूरिसम्यक्तगुणेभ्यो नमः अर्घं ।

वस्तु अनंत धर्म प्रकाशक ज्ञान है ।
एक पक्ष हट सहित निपट असुहान है ॥
निज स्वरूप थितिकरण हरण विधि चार है ।
परमारथ आचार्य सिद्ध सुखकार है ॥ २०५ ॥

ॐ ह्रीं सूरिज्ञानगुणेभ्यो नमः अर्घं ।

वस्तु धर्म समान ताह अवलोकना ।
शुद्ध निजातम धर्म ताहि नहीं लोपना ॥
निज स्वरूप थितिकरण हरण विधि चार है ।
परमारथ आचार्य सिद्ध सुखकार है ॥ २०६ ॥

ॐ ह्रीं सूरिदर्शनगुणेभ्यो नम अर्घं ।

अतुल अकम्प अखेद शुद्ध परणति धरै ।
जगतरूप व्यापार न इक छिन आदरैं ॥
निज स्वरूप थितिकरण हरण विधि चार है ।
परमारथ आचार्य सिद्ध सुखकार है ॥ २०७ ॥

ॐ ह्रीं सूरिवीर्यगुणेभ्यो नमः अर्घं ।

षट् त्रिंशति गुण सूरि मोक्ष-फल पाइयो ।
तातैं हम इन गुण कर ही जश गाइयो ॥
निज स्वरूप थितिकरण हरण विधि चार है ।
परमारथ आचार्य सिद्ध सुखकार है ॥ २०८ ॥

ॐ ह्रीं सूरिषट्त्रिंशतिगुणेभ्यो नमः अर्घं ।

पंचाचार आचार्य साथ शिवपद लियो ।
वास्तवमें ये गुण निजमें परगट कियो ॥
निज स्वरूप थितिकरण हरण विधि चार है ।
परमारथ आचार्य सिद्ध सुखकार है ॥ २०९ ॥

ॐ ह्रीं सूरिपंचाचारगुणेभ्यो नमः अर्घं ।

गुण समुदाय सरूप द्रव्य आतम मद्दा ।
परसो भिन्न अभेद निजातम पद लहा ॥
निज स्वरूप थितिकरण हरण विधि चार है ।
परमारथ आचार्य सिद्ध सुखकार है ॥ २१० ॥

ॐ ह्रीं सूरिद्रव्यगुणेभ्यो नमः अर्घं ।

वीतराग परणति रचही सुखकार जू ।
परम शुद्ध स्वैसिद्ध भयो अनिवार जू ॥
निज स्वरूप थितिकरण हरण विधि चार है ।
परमारथ आचार्य सिद्ध सुखकार है ॥ २११ ॥

ॐ ह्रीं सूरिपर्यायगुणेभ्यो नमः अर्घं ।

छन्द चञ्चला एक ह्रस्व एक ही दीर्घ है ।

आप सुक्खरूप हो सु, और सौख्यकार होत ।
ज्यूं घटादिको प्रकाश कार है सुदीप जोत ॥
सूरि धर्मको प्रकाश सिद्ध धर्म, रूप जान ।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥ २१२ ॥

ॐ ह्रीं सूरिमंगलेभ्यो नमः अर्घं ।

संस अंश भानु वस्तु भावको प्रकाशमान ।
ज्ञान इन्द्रिया तिइन्द्रिया कहै उभय प्रमाण ॥
सूरि धर्मको प्रकाश सिद्ध धर्म रूप जान ।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥ २१३ ॥

ॐ ह्रीं सूरिज्ञानमंगलेभ्यो नमः अर्घं ।

लोक उत्तमा सु वसु कर्मको प्रसंग टार ।
शुद्ध बुद्ध रिद्धि पाय लोक वेदना निवार ॥

सूरि धर्मको प्रकाश सिद्ध धर्म रूप जान।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥ २१४॥

ॐ ह्रीं सूरिलोकोत्तमेभ्यो नमः अर्घं।

लोकभीत सो अतीत आदि अन्त एक रूप।
लोकमें प्रसिद्ध सर्व भावका अनूप भूप॥
सूरि धर्मको प्रकाश सिद्ध धर्म रूप जान।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥ २१५॥

ॐ ह्रीं सूरिज्ञानलोकोत्तमेभ्यो नमः अर्घं।

विश्वमें न अन्तराय, आप ही सुखाय धाय।
या अबाध धर्मको, प्रकाशमें करै सहाय॥
सूरि धर्मको प्रकाश, सिद्ध धर्म रूप जान।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥ २१६॥

ॐ ह्रीं सूरिदर्शनलोकोत्तमेभ्यो नमः अर्घं।

मोह भारको निवार, शुद्ध चेतना सुधार।
येह वीर्यता अपार, लोकमें प्रशंसकार॥
सूरि धर्मको प्रकाश, सिद्ध धर्म रूप जान।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥ २१७॥

ॐ ह्रीं सूरिवीर्यलोकोत्तमेभ्यो नमः अर्घं।

धर्म केवली महान, मोह अन्ध तेज भान।
सप्त तत्वको बखानि, मोक्षमार्गको निधान॥
सूरि धर्मको प्रकाश, सिद्ध धर्म रूप जान।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥ २१८॥

ॐ ह्रीं सूरिकेवलधर्माय नमः अर्घं ।

शील आदि पूर भेद, कर्मके कलाप छेद ।
आत्म-शक्तिको प्रकाश, शुद्ध चेतना विलास ॥
सूरि धर्मको प्रकाश, सिद्ध धर्म रूप जान ।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥ २१९ ॥

ॐ ह्रीं सूरितपेभ्यो नमः अर्घं ।

लोक चाहकी न दाह, द्वेषको प्रवेश नाह ।
शुद्ध चेतना प्रवाह, वृद्धता धरै अथाह ॥
सूरि धर्मको प्रकाश, सिद्ध धर्म रूप जान ।
मै नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥ २२० ॥

ॐ ह्रीं सूरिपरमतपेभ्यो नमः अर्घं ।

मोहको न जोर जाय, घोर आपदा नसाय ।
घोरतें तपो सु लोक सिद्ध जाय मुक्ति पाय ॥
सूरि धर्मको प्रकाश, सिद्ध धर्म रूप जान ।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥ २२१ ॥

कामिनीमोहं छन्द मात्रा २० ।

वृद्धपर वृद्ध गुण गहन नित हो जहां,
शाश्वतं पूर्णता सातिशय गुण तहां ।
सूरि सिद्धांतके पारगामी भये,
मैं नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ॥ २२२ ॥

ॐ ह्रीं सूरिघोरगुणपराक्रमेभ्यो नमः अर्घं ।

एक सम भाव सम और नहीं ऋद्धि है,
सर्व ही रिद्धि जाके भये सिद्ध है।
सूरि सिद्धांतके पारगामी भये,
मैं नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ॥ २२३ ॥
ॐ ह्रीं सूरिरिद्धिऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं ।
जोगके रोकसे कर्मका रोक हो,
गुप्त साधन किये साध्य शिवलोक हो ।
सूरि सिद्धांतके पारगामी भये,
मैं नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ॥ २२४ ॥
ॐ ह्रीं सूरिसुयोगेभ्यो नमः अर्घ्यं ।
ध्यान बल कर्मके नाशके हेतु है,
कर्मको नाश शिववास ही देतु है ।
सूरि सिद्धान्तके पारगामी भये,
मैं नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ॥ २२५ ॥
ॐ ह्रीं सूरिध्यानेभ्यो नमः अर्घ्यं ।
पंचधाचारमें आत्म अधिकार है,
बाह्य आधार आधेय सुविकार है ।
सूरि सिद्धान्तके पारगामी भये,
मैं नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ॥ २२६ ॥
ॐ ह्रीं सूरिधात्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।
सूर सम आप पर तेज करतार है,
सूर ही मोक्षनिधि पात्र सुखकार है ।

सूरि सिद्धान्तके पारगामी भये,
मै नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ॥ २२७॥

ॐ ह्रीं सूरिपात्रेभ्यो नम: अर्घ ।

बाह्य छत्तीस अन्तर अभेदात्मा,
आप थिर रूप है सूर परमात्मा ।
सूरि सिद्धांतके पारगामी भये,
मैं नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ॥ २२८॥

ॐ ह्रीं सूरिगुणशरणाय नमः अर्घ ।

ज्ञान उपयोगमें स्वस्थिता शुद्धता,
पूर्ण चारित्रता पूर्ण ही बुद्धता ।
सूरि सिद्धान्तके पारगामी भये,
मै नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ॥ २२९॥

ॐ ह्रीं सूरिधर्मगुणशरणाय नमः अर्घ ।

शरण दुख हरण पर आप स्वै शर्ण है,
आपने कार्यमें आप ही कर्ण हैं ।
सूरि सिद्धांतके पारगामी भये,
मैं नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ॥ २३०॥

ॐ ह्रीं सूरिस्वरूपशरणाय नमः अर्घ ।

दोहा ।

ज्यों कञ्चन विन कालिमा, उज्जल रूप सुहाय ।
त्योंही कर्म-कलंक विन, निज स्वरूप दरशाय ॥२३१॥

ॐ ह्रीं सूरिस्वरूपस्मरणाय नमः अर्घ ।

भेदाभेद सु नय थकी, एक ही धर्म विचार।
पायो सूरि सुबोध करि, भवदधि करि उद्धार ॥२३२॥
ॐ ह्रीं सूरिधर्मस्वरूपशरणाय नमः अर्घं।

अन्य समस्त विकल्प तजि, केवल निजपद लीन।
पूरण ज्ञान स्वरूप यह, पायो सूरि सुधीन ॥२३३॥
ॐ ह्रीं सूरिज्ञानस्वरूपाय नमः अर्घं।

सुखाभास इन्द्रीजनित, त्यागी सूरि महन्त।
पूरण सुख स्वाधीन निज, साध्य भये सुखवन्त ॥२३४॥
ॐ ह्रीं सूरिसुखस्वरूपाय नमः अर्घं।

अनेकांत तत्वार्थके, ज्ञाता सूरि महान।
निरावर्ण निजरूप लखि, पायो पद निरवाण ॥ २३५॥
ॐ ह्रीं सूरिदर्शनस्वरूपाय नमः अर्घं।

मोहादिक रिपु नाशिके, सूर्य महा सामर्थ।
शिव भामिन भरतार नित, रमै साध निज अर्थ ॥२३६॥
ॐ ह्रीं सूरिवीर्यस्वरूपाय नमः अर्घं।

पद्धडी छन्द।

जिन निज आतम निष्पाप कीन, ते सन्त करैं पर पाप छीन।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२३७॥
ॐ ह्रीं सूरिमंगलशरणाय नमः अर्घं।

रत्नत्रै जीव सुभाव भाय, भवि पतित उधारण हो सहाय।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२३८॥
ॐ ह्रीं सूरिधर्मशरणाय नमः अर्घं।

तपकर ज्यों कञ्चन अग्नि जोग, है शुद्ध निजातम पद मनोग ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२३९॥

ॐ ह्रीं सूरितपशरणाय नमः अर्घं ।

एकाग्रह चिंताकर निरोध, पावै अबाध शिव आत्म सोध ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४०॥

ॐ ह्रीं सूरिध्यानशरणाय नमः अर्घं ।

केवलज्ञानादि विभूति पाइ, है शुद्ध निरंजन पद सुखाइ ।
शिव मग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४१॥

ॐ ह्रीं सूरिसिद्धशरणाय नमः अर्घं ।

तिहुं लोकनाथ तिहुं लोक माहिं, यासम दूजो सुखदाय नाहिं ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४२॥

ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकशरणाय नमः अर्घं ।

आगत अतीत अरु वर्तमान, तिहुं काल भव्य पावै निर्वाण ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४३॥

ॐ ह्रीं सूरित्रिकालशरणाय नमः अर्घं ।

मध अधो ऊर्द्ध तिहुं जगतमाहिं, सब जीवन सुखकर और नाहिं ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४४॥

ॐ ह्रीं सूरित्रिजगन्मंगलाय नमः अर्घं ।

तिहुं लोकमाहिं सुखकार आप, सत्यारथ मंगल हरण पाप ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४५॥

ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकमंगलशरणाय नमः अर्घं ।

उत्तम मंगल परमार्थ रूप, जग दुख नासे शिव सुख स्वरूप।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥२४६॥
ॐ ह्रीं सूरित्रिजगन्मङ्गलोत्तमशरणाय नमः अर्घं।

शरणागत दुखनाशन महान, तिहुं जगहित कारण सुख निधान।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥२४७॥
ॐ ह्रीं सूरित्रिजगमङ्गलशरणाय नमः अर्घं।

तिहुं लोकनाथ तिहुं लोकपूज्य, शरणागत प्रतिपालन अदूज्य।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥२४८॥
ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकमण्डनशरणाय नमः अर्घं।

अव्यय अपूर्व सामर्थ युक्त, संसारातीत विमोह मुक्त।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर॥२४९॥
ॐ ह्रीं सूरिरिद्धिमण्डलशरणाय नमः अर्घं।

त्रोटक छन्द।

जिन रूप अनूप लखें सुख हो, जगमें यह मंत्र महान कहो।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूं शिववास करै सुखदा॥२५०
ॐ ह्रीं सूरिमंत्रस्वरूपाय नमः अर्घं।

जिम नागदेव वश मंत्र विधि, भव त्रास हरण तुम नाम निधी।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूं शिववास करै सुखदा॥२५१
ॐ ह्रीं सूरिमंत्रगुणाय नमः अर्घं।

जग मोहित जीवन पावत हैं, यह मंत्र सु धर्म कहावत है।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूं शिववास करै सुखदा॥२५२
ॐ ह्रीं सूरिधर्माय नमः अर्घं।

चिद्‌रूप चिदातम भाव धरें, गुण सार यही अविरुद्ध वरें ।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूं शिववास करै सुखदा ॥२५३

ॐ ह्रीं सूरिचैतन्यस्वरूपाय नमः अर्घ ।

अविकार चिदातम आनंद हो, परमातम हो परमानंद हो ।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूं शिववास करै सुखदा ॥२५४

ॐ ह्रीं सूरिचिदानंदाय नमः अर्घ ।

निज ज्ञान प्रमाण प्रकाश करै, सुख रूप निराकुलता सु धरै ।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूं शिववास करै सुखदा ॥२५५

ॐ ह्रीं सूरिज्ञानानन्दाय नमः अर्घ ।

धरि योग महा शम भाव गहै, सुख राशि महा शिववास लहैं ।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूं शिववास करै सुखदा ॥२५६॥

ॐ ह्रीं सूरिसमभावाय नमः अर्घ ।

सम भाव महा गुण धारत हैं, निज आनद भाव निहारत हैं ।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा. प्रणमूं शिववास करै सुखदा ॥२५७॥

ॐ ह्रीं सूरितपोगुणानन्दाय नमः अर्घ ।

शिवसाधनको विध नाश कहा, विध नाशनको तप कर्ण महा ।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूं शिववास करै सुखदा ॥२५८॥

ॐ ह्रीं सूरितपोगुणसुरूपाय नमः अर्घ ।

निज आत्म विषैं नित मगन रहै. जगके सुख मूल न भूलि चहै ।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूं शिववास करै सुखदा ॥२५९॥

ॐ ह्रीं सूरिहंसाय नमः अर्घ ।

वनवास उदास सदा जगतै, पर आसन खास विलास रतै।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूं शिववास करै सुखदा ॥२६०॥
ॐ ह्रीं सूरिहंसगुणाय नमः अर्घं।

निज नाम महागुण मंत्र धरै, छिन मात्र जपे भवि आश वरै।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूं शिववास करै सुखदा ॥२६१॥
ॐ ह्रीं सूरिमंत्रगुणानन्दाय नमः अर्घं।

परमोत्तम सिद्ध परियाय कही, अति शुद्ध प्रसिद्ध सुखात्म मही।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूं शिववास करै सुखदा ॥२६२॥
ॐ ह्रीं सूरिसिद्धानन्दाय नमः अर्घं।

माला छन्द।

शशि सन्ताप कलाप निवारण ज्ञान कला सरसै,
मिथ्यातम हरि भवि आनन्द करि अनुभव भाव दरसै।
सूरि निज भेद कियो परसै,
भये मुक्ति मैं नमूं शीश नित जोर युगल करसै ॥२६३॥
ॐ ह्रीं सूरिअमृतचन्द्राय नमः अर्घं।

पूरण चंद्र सरूप कलाधर ज्ञान सुधा वरसै,
भवि चकोर चित चाहत नित मनु चरण जोति परसै।
सूरि निज भेद किये परसै,
भये मुक्ति मैं नमूं शीश नित जोर युगल करसै ॥२६४॥
ॐ ह्रीं सूरिसुधाचंद्रस्वरूपाय नमः अर्घं।

जगजिय ताप निवारन कारण विलसे अन्दरसै,
देव सुधा सम गुण निवाहकर सकल चराचरसै।

सूरि निज भेद किये परसै,
भये मुक्ति मैं नमूं शीश नित जोर युगल करसैं ॥२६५॥
ॐ ह्रीं सूरिसुधागुणाय नमः अर्घं ।
जा धुनि सुनि संशय विनसे जिम ताप मेघ वरसै,
मनहुं कमल मकरंद वृन्द अलि पाय सुधारससै
सूरि निज भेद कियो परसै,
भये भक्ति मैं नमूं शीश नित जोर युगल करसैं ॥२६६॥
ॐ ह्रीं सूरिसुधाध्वनये नमः अर्घं ।
अजर अमर सुखदाय भाय मन ज्यों मयूर हरसै,
गाजत घन बाजत ध्वनि सुनि मनु भाजत भय उरसैं ।
सूरि निज भेद किये परसैं,
भये मुक्ति मैं नमूं शीश नित जोर युगल करसैं ॥२६७॥
ॐ ह्रीं सूरिअमृतध्वनिसुरूपाय नमः अर्घं ।

चकोर छन्द ।

जो अपने गुण वा पर्याय, धरै निज धर्म न होत विनास ।
द्रव्य कहावत है सु अनंत, स्वभाव धरै निज आतम विलास ॥
सूरि कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम ।
सु आतमराम सदा अभिराम, भये सुख काम नमूं वसु जाम ॥२६८
ॐ ह्रीं सूरिद्रव्याय नमः अर्घं ।
ज्यों शशि जोति रहै सियरा, नित ज्यों रवि जोति रहै नितताप।
ज्यों निज ज्ञानकला परिपूरण, राजत हो निज करणसु आप ॥
सूरि कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम ।

सु आतमराम सदा अभिराम, भये सुखकाम नमूं वसु जाम ।।२६९।।

ॐ ह्रीं सूरिगुणद्रव्याय नमः अर्घं ।

हो अविनाश अनूपम रूप सु, ज्ञानमई नित केलि करान ।
पै न तजै मरजाद रहै, जिम सिन्धु कलोल सदा परमाण ।।
सूरि कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम ।
सु आतमराम सदा अभिराम, भये सुखकाम नमूं वसु जाम ।।२७०।।

ॐ ह्रीं सूरिपर्याय नमः अर्घं ।

जे कछु द्रव्य तनी गुण है, सु समस्त मिले गुण आतम माहीं ।
ताकरि द्रव्य कहावत है, अविनाश उनको नमैं हम ताईं ।।
सूरि कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम ।
सु आतमराम सदा अभिराम, भये सुखकाम नमूं वसु जाम ।।२७१।।

ॐ ह्रीं सूरिद्रव्यस्वरूपाय नमः अर्घं ।

जा गुणमें गुण और न हो, निज द्रव्य रहै नित और न ठौर ।
सो गुण रूप सदा निवसै, हम पूजत हैं करके कर जोर ।।
सूरि कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम ।
सु आतमराम सदा अभिराम, भये सुखकाम नमूं वसु जाम ।।२७२।।

ॐ ह्रीं सूरिगुणस्वरूपाय नमः अर्घं ।

जो परणाम धरैं तिनसो, तिनमें करहै वरतै तिम रूप ।
सो पर्याय उपाय विना नित, आप विराजत हैं सु अनूप ।
सूरि कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम ।
सु आतमराम सदा अभिराम, भये सुखकाम नमूं वसु जाम ।।२७३।।

ॐ ह्रीं सूरिपर्यायस्वरूपाय नमः अर्घं ।

हो नित ही परणाम समै प्रति, सो उत्पाद कहो भगवान ।
सो तुम भाव प्रकाश कियो, निज यह गुणका उत्पाद महान ॥
सूरि कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम ।
सु आतमराम सदा अभिराम, भये सुखकाम नमूं वसु जाम ॥२७४॥

ॐ ह्रीं सूरिगुणोत्पादाय नमः अर्घं ।

ज्यों मृतिका निज रूप न छाडत, है घटमांहि अनेक प्रकार ।
सो तुम जीव सुभाव धरौ नित, मुक्त भए जगवास निवार ॥
सूरि कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम ।
सु आतमराम सदा अभिराम, भये सुखकाम नमूं वसु जाम ॥२७५॥

ॐ ह्रीं सूरिध्रुवगुणोत्पादाय नमः अर्घं ।

थे जगमें सब भाव विभाव, पराश्रित रूप अनेक प्रकार ।
ते सब त्याग भए शिवरूप, अबंध अमन्द महा सुखकार ॥
सूरि कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम ।
सु आतमराम सदा अभिराम, भये सुखकाम नमूं वसु जाम ॥२७६॥

ॐ ह्रीं सूरिव्ययगुणोत्पादाय नमः अर्घं ।

जे जगमें षट्द्रव्य कहै, तिनमें इक जीव सुज्ञान स्वरूपा ।
और सभी विन ज्ञान कहै, तुम राजत हो नित ज्ञान अनूपा ॥
सूरि कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम ।
सु आतमराम सदा अभिराम, भये सुखकाम नमूं वसु जाम ॥२७७॥

ॐ ह्रीं सूरिजीवतत्त्वाय नमः अर्घं ।

ज्ञान सुभाव धरो नित ही नहीं, छाड़त हो कबहूं निज थान ।
येही विशेष भयो मन मों नहीं, औरनमें गुण ये परधान ॥

सूरि कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम।
सु आतमराम सदा अभिराम, भये सुखकाम नमूं वसु जाम॥२७८॥
ॐ ह्रीं सूरिजीवतत्वगुणाय नमः अर्घं।

हो कर्तादि अनेक सुभाव, निजातममें परमै अनिवार।
सो परको न लगाव रहो, निज ही निज कर्म रहो सुखकार॥
सूरि कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम।
सु आतमराम सदा अभिराम, भये सुखकाम नमूं वसु जाम॥२७९
ॐ ह्रीं सूरिजीवचिदेभ्यो नमः अर्घं।

द्रव्य तथापि विभाव दऊ, विधि कर्म प्रवाह वहै विन आदि।
ते सब एक भये थिररूप, निजातम शुद्ध सुभाव प्रसाद॥
सूरि कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पाय गये शिवधाम।
सु आतमराम सदा अभिराम, भये सुखकाम नमूं वसु जाम॥२८०॥
ॐ ह्रीं सूरिआश्रयविनाशाय नमः अर्घं।

मोदक छन्द।

बंध दऊ विधिके दुख कारण, नाश कियो भवपार उतारण।
सूरि भये निज ज्ञान कलाकर, सिद्ध भये प्रणमूं मैं मनधर॥२८१
ॐ ह्रीं सूरिबंधतत्वविनाशाय नमः अर्घं।
सम्वर तत्व महासुख देत हैं, आश्रव रोकनको यह हेत है।
सूरि महा निज ज्ञान कलाकर, सिद्ध भये प्रणमूं मैं मनधर॥२८२
ॐ ह्रीं सूरिसंवरगुणाय नमः अर्घं।
ज्यूं मणि दीप अडोल अनूप ही, संवर तत्व निराकुलरूप ही।
सूरि महा निज ज्ञान कलाकर, सिद्ध भये प्रणमूं मैं मनधर॥२८३

ॐ ह्रीं सूरिसंवरतत्त्वस्वरूपाय नमः अर्घं।

संवरके गुण ते मुनि पावत, जो मुनि शुद्ध सुभाव सुध्यावत।
सूरि महा निज ज्ञान कलाकर, सिद्ध भये प्रणमूं मैं मनधर॥२८४॥

ॐ ह्रीं सूरिसंवरगुणाय नमः अर्घं।

संवर धर्मतनी शिव पावहि, संवर धरम तहां दरशावें।
सूरि महा निज ज्ञान कलाकर, सिद्ध भये प्रणमूं मैं मनधर॥२८५॥

ॐ ह्रीं सूरिसंवरधर्माय नमः अर्घं।

दोहा।

एक देश वा सर्व विधि, दोनों मुक्ति स्वरूप।
नमूं निरजरा तत्त्वसों, पायो सिद्ध अनूप॥२८६॥

ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरातत्त्वाय नमः अर्घं।

शुद्ध सुभाव जहां तहां, कहो कर्मको नाश।
एम निरजरा तत्वका, रूप कियो परकाश॥ २८७॥

ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरातत्वस्वरूपाय नमः अर्घं।

कोटि जन्मके विघन सब, सूके त्रिण सम जान।
दहे निर्जरा अग्निसों, इह गुण है परधान॥ २८८॥

ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरागुणस्वरूपाय नमः अर्घं।

निज बल कर्म खपाइये, कहो निर्जरा धर्म।
धर्मी सोई आतमा, एक हि रूप सुधर्म॥ २८९॥

ॐ ह्रीं सूरिनिर्जराधर्मस्वरूपाय नमः अर्घं।

समय समै गुण श्रेणिका, खिरै कर्म बल ध्यान।
ये सम्बंध अनिवार करि, करै मुक्ति सुख पान॥२९०॥

ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरानुबंधाय नमः अर्घं ।

अतुल शक्ति थिर भावकी, सो प्रगटो तुम माहिं ।
यही निर्जरा रूप है, नमूं भक्ति कर ताहि ॥ २९१ ॥

ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरास्वरूपाय नमः अर्घं ।

सर्व कर्मके नाश विन, लहै न शिव-सुखरास ।
निश्चय तुम ही निर्जरा, कियो प्रतीत प्रकाश ॥२९२॥

ॐ ह्रीं सूरिनिर्जराप्रतीताय नमः अर्घं ।

सकल कर्ममल नाशतें, शुद्ध निरंजन रूप ।
ज्यों कंचन विन कालिमा, राजै मोक्ष अनूप ॥ २९३ ॥

ॐ ह्रीं सूरिमोक्षाय नमः अर्घं ।

द्रव्य भाव दोनों सुविधि, करे जगतमें वास ।
दोउ विध बन्ध उखारके, भये मुक्त सुखरास ॥२९४॥

ॐ ह्रीं सूरिबन्धमोक्षाय नमः अर्घं ।

पर विकलप सुख दुख नहीं, अनुभव निज आनन्द ।
जन्म मरण विधि नाशकर, राजत शिवसुख कंद ॥२९५॥

ॐ ह्रीं सूरिमोक्षस्वरूपाय नमः अर्घं ।

जहां न दुखको लेश है, उदय कर्म अनुसार ।
सो शिवपद पायो महा, नमूं भक्त उर धार ॥ २९६ ॥

ॐ ह्रीं सूरिमोक्षगुणाय नमः अर्घं ।

जो शिव सुगुण प्रसिद्ध है, तिनसों नित्त प्रवन्ध ।
जे जगत्रास विलास दुख, तिनकूं नमूं अवन्ध ॥२९७॥

ॐ ह्रीं सूरिमोक्षानुबंधाय नमः अर्घं ।

जैसी निज तन आकृती, तज कीनो शिववास।
ते तैसैं नित अचल हैं, ज्ञानानन्द प्रकाश ॥ २९८ ॥

ॐ ह्रीं सूरिमोक्षानुप्रकाशाय नमः अर्घ।

खयोपशम परणाम कर, साध न निजका रूप।
वा निजपद्में लीनता, ये ही गुप्त स्वरूप ॥ २९९ ॥

ॐ ह्रीं सूरिस्वरूपगुप्तये नमः अर्घ।

इन्द्रियजनित न दुख जहां, सदा निजानन्द रूप।
निर आकुल स्वाधीनता, वरते शुद्ध स्वरूप ॥ ३०० ॥

ॐ ह्रीं सूरिपरमात्मस्वरूपाय नमः अर्घ।

रोला छन्द।

संपूरण श्रुत सार निजातम बोध लहानो,
निज अनुभव शिव मूल मानु उपदेश करानो।
शिष्यनके अज्ञान हरै ज्यूं रवि अन्धियारा,
पाठक गुण संभवे सिद्ध प्रति नमन हमारा ॥ ३०१ ॥

ॐ ह्रीं पाठकेभ्यो नमः अर्घ।

मुक्त मूल है आत्मज्ञान सोई श्रुत ज्ञानी,
तत्व ज्ञानसों लहै निजातम पद सुख दानी।
शिष्यनके अज्ञान हरै ज्यूं रवि अन्धियारा,
पाठक गुण संभवे सिद्ध प्रति नमन हमारा ॥ ३०२ ॥

ॐ ह्रीं पाठकमोक्षमण्डनाय नमः अर्घ।

भवसागरते भव्य जीव तारन अनिवारा,
तुममें यह गुण अधिक आप पाओ तिम पारा।

शिष्यनके अज्ञान हरै ज्यूं रवि अन्धियारा,
पाठक गुण संभवे सिद्ध प्रति नमन हमारा ॥३०३॥
ॐ ह्रीं पाठकगुणेभ्यो नमः अर्घ।

दर्शन ज्ञान स्वभाव धरो तद्रूप अनूपी,
हीनाधिक बिन अचल बिराजत शुद्ध सरूपी।
शिष्यनके अज्ञान हरै ज्यूं रवि अन्धियारा,
पाठक गुण संभवे सिद्ध प्रति नमन हमारा। ३०४॥
ॐ ह्रीं पाठकगुणस्वरूपेभ्यो नमः अर्घ।

निज गुण वा परयाय अखण्डित नित्य धरै है,
तिहूं काल प्रति अन्य भाव नहीं ग्रहण करै हैं।
शिष्यनके अज्ञान हरै ज्यूं रवि अन्धियारा,
पाठक गुण सम्भवे सिद्ध प्रति नमन हमारा ॥ ३०५॥
ॐ ह्रीं पाठकद्रव्याय नमः अर्घ।

सह भावी गुण सार जहांपर भाव न लेसा,
अगुरुलघू परणाम वस्तु सद्भाव विशेखा।
शिष्यनके अज्ञान हरै ज्यूं रवि अंधियारा,
पाठक गुण सम्भवे सिद्ध प्रति नमन हमारा ॥ ३०६॥
ॐ ह्रीं पाठकगुणपर्यायेभ्यो नमः अर्घ।

गुण समुदायी द्रव्य याहितैं निरगुण नाहीं,
सो अनन्त गुण सदा विराजत तुम पद माहीं।
शिष्यनके अज्ञान हरै ज्यूं रवि अंधियारा,
पाठक गुण सम्भवे सिद्ध प्रति नमन हमारा ॥ ३०७॥

ॐ ह्रीं पाठकगुणद्रव्याय नमः अर्घं ।

सत सरूप सब द्रव्य सधै नीके अबाधकर,
सो तुम सत्य सरूप विराजो द्रव्य भाव धर ।
शिष्यनके अज्ञान हरै ज्यूं रवि अंधियारा,
पाठक गुण संभवे सिद्ध प्रति नमन हमारा ॥ ३०८ ॥

ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यसरूपाय नमः अर्घं ।

जे जे हैं परनाम विना परनामी नाहीं,
परनामी परनाम एक ही है तुममाही ।
शिष्यनके अज्ञान हरै ज्यूं रवि अंधियारा,
पाठक गुण सम्भवे सिद्ध प्रति नमन हमारा ॥ ३०९ ॥

ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यपर्याय नमः अर्घं ।

अगुरुलघु पर्याय शुद्ध परनाम बखानी,
निज सरूपमें अंतरगत श्रुतज्ञान प्रमानी ।
शिष्यनके अज्ञान हरै ज्यूं रवि अंधियारा,
पाठक गुण सम्भवे सिद्ध प्रति नमन हमारा ॥ ३१० ॥

ॐ ह्रीं पाठकपर्यायस्वरूपाय नमः अर्घं ।

जक्तवास सब पापमूल जियको दुखदाई,
ताको नाशन हेत कहो शिव मूल उपाई ।
शिष्यनके अज्ञान हरै ज्यूं रवि अंधियारा,
पाठक गुण संभवे सिद्ध प्रति नमन हमारा ॥ ३११ ॥

ॐ ह्रीं पाठकमंगलाय नमः अर्घं ।

शिष्यनके अज्ञान हरै ज्यूं रवि अंधियारा,
पाठक गुण सम्भवे सिद्ध प्रति नमन हमारा ॥ ३१६ ॥
ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यमंगलपर्यायाय नमः अर्घं ।

भेदाभेद प्रमाण वस्तु सर्वस्व बखानो,
वचन अगोचर कहो तथा निर्देष कहानो ।
शिष्यनके अज्ञान हरै ज्यूं रवि अंधियारा
पाठक गुण सम्भवे सिद्ध प्रति नमन हमारा ॥ ३१७ ॥
ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यगुणपर्यायमंगलाय नमः अर्घं ।

सर्व विशेष प्रतिभा समान मंगलमय भासे,
निर्विकल्प आनन्दरूप अनुभूति प्रकाशे ।
शिष्यनके अज्ञान हरै ज्यूं रवि अंधियारा,
पाठक गुण सम्भवे सिद्ध प्रति नमन हमारा ॥ ३१८ ॥
ॐ ह्रीं पाठकस्वरूपमंगलाय नमः अर्घं ।

पायता छन्द ।

निर्विघ्न निराश्रय होई, लोकोत्तम मंगल सोई ।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥ ३१९ ॥
ॐ ह्रीं पाठकमंगलोत्तमाय नमः अर्घं ।

जगजीवनको हम देखा, तुम ही गुण सार विशेखा ।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥ ३२० ॥
ॐ ह्रीं पाठकगुणलोकोत्तमाय नमः अर्घं ।

षट्द्रव्य रचित जग मारा, तुम उत्तम रूप निहारा ।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥ ३२१ ॥
ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यलोकोत्तमाय नमः अर्घं ।

निज ज्ञान शुद्धता पाई, जिस करि यह है प्रभुताई।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३२२॥
ॐ ह्रीं पाठकज्ञानाय नमः अर्घ

जग जीव अपूरण ज्ञानी, तुम ही लोकोत्तम मानी।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३२३॥
ॐ ह्रीं पाठकज्ञानलोकोत्तमाय नमः अर्घं।

तुम पद निरभेद निहारा, तुम दर्शन भेद उघारा।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३२४॥
ॐ ह्रीं पाठकदर्शनाय नमः अर्घं।

हम सोवत हैं निरमोही, देखे देखत तुमको ही।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३२५॥
ॐ ह्रीं पाठकदर्शनलोकोत्तमाय नमः अर्घ।

द्रगवंत महा सुखकारा, तुम ज्ञान महा अविकारा।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३२६॥
ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपाय नमः अर्घं।

निरशंस अनंत अबाधा, निज बोधन भाव अराधा।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३२७॥
ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वाय नमः अर्घं।

सम्यक्त महा सुखकारी, निज गुण स्वरूप अविकारी।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया। ३२८॥
ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वगुणस्वरूपाय नमः अर्घं।

निरखेद अछेद अभेदा, सुख रूप वीर्य निर्वेदा ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३२९॥
ॐ ह्रीं पाठकवीर्याय नमः अर्घ ।

निज भोग कलेश न लेशा, यह वीर्य अनन्त अनेशा ।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३३०॥
ॐ ह्रीं पाठकवीर्यगुणाय नमः अर्घं ।

परनाम सुथिर निज माही, उपजै न कलेश कदाही ।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३३१॥
ॐ ह्रीं पाठकवीर्यपर्यायाय नमः अर्घं ।

द्रव्य भाव लहो तुम जैसो, पावे जगवासी न ऐसो ।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३३२॥
ॐ ह्रीं पाठकवीर्यद्रव्याय नमः अर्घं ।

निज ज्ञान सुधारस पीवत, आनन्द सुभाव सु जीवत ।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३३३।
ॐ ह्रीं पाठकवीर्यगुणपर्यायाय नमः अर्घ ।

अविशेष अनन्त सुभावा, तुम दर्शन माहिं लखावा ।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३३४॥
ॐ ह्रीं पाठकदर्शनपर्यायाय नमः अर्घ ।

एकवार लखे सबहीको, तद्रूप निजातमहीको ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ।३३५॥
ॐ ह्रीं पाठकदर्शनपर्यायस्वरूपाय नमः अर्घ ।

सपरस आदिक गुण नाही, चिद्रूप निजातम माहीं ।

तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३३६॥

ॐ ह्रीं पाठकज्ञानद्रव्याय नमः अर्घं ।

सरनागति दीनदयाला, हम पूजत भाव विशाला ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३३७॥

ॐ ह्रीं पाठकशरणाय नमः अर्घं ।

जिनशरण गही शिव पायो, इम शरण महा गुण गायो ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३३८॥

ॐ ह्रीं पाठकगुणशरणाय नमः अर्घं ।

अनुभव निज बोध करावै, यह ज्ञान शरण कहलावै ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३३९॥

ॐ ह्रीं पाठकज्ञानगुणशरणाय नमः अर्घं ।

द्रग मात्र तथा सरधाना, निश्चय शिववास कराना ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३४०॥

ॐ ह्रीं पाठकदर्शनशरणाय नमः अर्घं ।

निरभेद स्वरूप अनूपा, है शर्ण तणीं शिव भूपा ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३४१॥

ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपशरणाय नमः अर्घं ।

निज आतम-स्वरूप लखाया, इह कारण शिवपद पाया ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३४२॥

ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वशरणाय नमः अर्घं ।

आतम-सरूप सरधाना, तुम शरण गहौ भगवाना ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३४३॥

ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वस्वरूपाय नमः अर्घ्य ।

निज आतम साधन माहीं, पुरषारथ छूटै नाहीं ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३४४॥

ॐ ह्रीं पाठकवीर्यशरणाय नमः अर्घ ।

आतम शकती प्रगटावै, तब निज स्वरूप जिय पावै ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३४५॥

ॐ ह्रीं पाठकवीर्यस्वरूपशरणाय नमः अर्घ्य ।

परमातम वीर्य महा है, पर निमित न लेश तहां है ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३४६॥

ॐ ह्रीं पाठकवीर्यपरमात्मशरणाय नमः अर्घ ।

श्रुत द्वादशांग जिनवानी, निश्चय शिववास करानी ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३४७॥

ॐ ह्रीं पाठकद्वादशांगशरणाय नमः अर्घ्य ।

दश पूर्व महा जिनवानी, निश्चय शिववास करानी ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३४८॥

ॐ ह्रीं पाठकदशपूर्वांगाय नमः अर्घ ।

दश चार पूर्व जिनवानी, निश्चय शिववास करानी ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३४९॥

ॐ ह्रीं पाठकचतुर्दशपूर्वांगाय नमः अर्घ ।

निज आत्म चर्ण प्रगटावै, आचार अंग कहलावै ।
तुम गुण अनंत श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥३५०॥

ॐ ह्रीं पाठकआचारांगाय नमः अर्घ ।

रेखता छन्द ।

विविध संस्यादि तम टारी, निरंतर ज्ञान आचारी ।
पूर्ण श्रुतंज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३५१ ॥
ॐ ह्रीं पाठकज्ञानाचाराय नमः अर्घं ।

पराश्रित भाव विनशाया, सुथिर निजरूप दर्शाया ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३५२ ॥
ॐ ह्रीं पाठकतपसाचाराय नमः अर्घं ।

मुक्तपद दैन अनिवारी, सर्व बुध चरण आचारी ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३५३ ॥
ॐ ह्रीं पाठकरत्नत्रयाय नमः अर्घं ।

शुद्ध रत्नत्रय धारी, निजातमरूप अविकारी ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३५४ ॥
ॐ ह्रीं पाठकरत्नत्रयसहायाय नमः अर्घं ।

चो ध्रुव पंचमगती पाई, जन्म फुनि मरण छुट काई ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३५५ ॥
ॐ ह्रीं पाठकध्रुवसंसाराय नमः अर्घं।

अनूपम रूप अधिकाई, असाधारण रत्नपद पाई ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३५६ ॥
ॐ ह्रीं पाठकएकत्वस्वरूपाय नमः अर्घं ।

आन तुम सम न गुण होई, कहो एकत्व गुण सोई ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३५७ ॥
ॐ ह्रीं पाठकएकत्वगुणाय नमः अर्घं ।

निजानन्द पूर्ण पद पाया, सोय परमात्म कहलाया ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३५८ ॥
ॐ ह्रीं पाठकएकत्वपरमात्मने नमः अर्घ ।

उच्चगत मोक्षका दाता, एक निजधर्म विख्याता ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३५९ ॥
ॐ ह्रीं पाठकएकत्वधर्माय नमः अर्घ ।

जो तुम चेतनता परकाशी, न पावैं ऐसी जगवासी ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३६० ॥
ॐ ह्रीं पाठकएकत्वचेतनाय नमः अर्घ ।

ज्ञान दर्शन सरूपी हो, असाधारण अनूपी हो ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३६१ ॥
ॐ ह्रीं पाठकएकत्वचेतनस्वरूपाय नमः अर्घं ।

गहै नित निज चतुष्टयको, मिलै कबहूं नहीं परसो ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३६२ ॥
ॐ ह्रीं पाठकएकत्वद्रव्याय नमः अर्घ ।

स्वपद अनुभूत सुख रासी, चिदानन्द भाव परकासी ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३६३ ॥
ॐ ह्रीं पाठकचिदानन्दाय नमः अर्घ ।

अन्त पुरुषार्थ साधक हो, जन्म मरणादि बाधक हो ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३६४ ॥
ॐ ह्रीं पाठकसिद्धसाधकाय नम॰ अर्घ ।

स्वआतम ज्ञान दरशाया, ये पूरण रिद्ध पद पाया ।

पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३६५ ॥

ॐ ह्रीं पाठकऋद्धिपूर्णाय नमः अर्घ ।

सकल विधि मूर्छा त्यागी, तुम्ही निग्रन्थ बडभागी ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३६६ ॥

ॐ ह्रीं पाठकनिग्रन्थाय नमः अर्घं ।

निजाश्रित अर्थ जानाहीं, अवाधित अर्थ तुममाहीं ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३६७ ॥

ॐ ह्रीं पाठकअर्थविधानाय नमः अर्घ ।

न फिर संसार पद पाया, अपूरव बन्ध विनसाया ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३६८ ॥

ॐ ह्रीं पाठकसंसारानुबन्धाय नमः अर्घ ।

आप कल्याणमय राजो, सकल जगवास दुख त्याजो ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥३६९॥

ॐ ह्रीं पाठककल्याणाय नमः अर्घ ।

स्वपर हितकार गुणधारी, परम कल्याण अविकारी ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया. नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥३७०॥

ॐ ह्रीं पाठककल्याणगुणाय नमः अर्घ ।

अहित परहार पद जोहै, परम कल्याण तासो है ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥३७१॥

ॐ ह्रीं पाठककल्याणस्वरूपाय नमः अर्घ ।

स्वसुख द्रव्याश्रयें माहीं, जहां कछु पर निमित्त नाहीं ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥३७२॥

ॐ ह्रीं पाठककल्याणद्रव्याय नमः अर्घ ।

जोहै मोहै अमित काला, अन्यथा भाव विधि टाला ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥३७३॥

ॐ ह्रीं पाठकतत्वगुणाय नमः अर्घ ।

रहै नित चेतना माही, कहैं चिद्रूप मुनि ताही ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३७४ ॥

ॐ ह्रीं पाठकचिद्रूपाय नमः अर्घ ।

सर्वथा ज्ञान परिणामी, प्रगट है चेतना नामी ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३७५॥

ॐ ह्रीं पाठकचेतनाय नमः अर्घ ।

नहीं अन्यत्व भेदा है, गुणी गुण निर विछेदा है ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३७६॥

ॐ ह्रीं पाठकचेतनागुणाय नमः अर्घ ।

घटाघट वस्तु परकाशी, धरे हैं जाति प्रतिभाशी ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३७७॥

ॐ ह्रीं पाठकजातिप्रकाशाय नमः अर्घ ।

वस्तु सामान्य अवलोका, है युगपत दर्श सिद्धोंका ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३७८ ॥

ॐ ह्रीं पाठकदर्शनचेतनाय नमः अर्घ ।

विशेषण युक्त साकारा, ज्ञान दुतिमें प्रगट सारा ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३७९ ॥

ॐ ह्रीं पाठकज्ञानचेतनाय नमः अर्घ ।

ज्ञानसो जीव नामी है, भेद समवाय स्वामी है।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३८० ॥
ॐ ह्रीं पाठकचिदानंदाय नमः अर्घं ।

चराचर वस्तु स्वाधीना, एक ही समय लखलीना ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३८१ ॥
ॐ ह्रीं पाठकवीर्यचेतनाय नमः अर्घं ।

सकल जीवोंके सुख कारन, सरन तुमही हो अनिवारन ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३८२ ॥
ॐ ह्रीं पाठकसकलशरणाय नमः अर्घं ।

तुम हो त्रयलोक हितकारी, छूते शरण बलिहारी ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३८३॥
ॐ ह्रीं पाठकत्रैलोक्यशरणाय नमः अर्घं ।

तुमारी शरण तिहूं काला, करन जग जीव प्रतिपाला ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३८४॥
ॐ ह्रीं पाठकत्रिकालशरणाय नमः ।

शर्ण अनिवार सुखदाई, प्रगट सिद्धांतमें गाई ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३८५ ॥
ॐ ह्रीं पाठकत्रिमंगलशरणाय नमः अर्घं ।

लोकमें धर्म विख्याता, सो तुम हीमें सुखसाता ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३८६ ॥
ॐ ह्रीं पाठकलोकशरणाय नमः अर्घं ।

जोग विन आश्रव नाहीं, भये निर आश्रवा ताही ।

पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३८७ ॥

ॐ ह्रीं पाठकआश्रववेदाय नमः अर्घं ।

आश्रव कर्मका होना, कार्य था अपना खोना ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३८८ ॥

ॐ ह्रीं पाठकआश्रवविनाशाय नमः ।

तत्व निर्बाध उपदेशा, विनाशे कर्म परवेशा ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३८९ ॥

ॐ ह्रीं पाठकआश्रयउपदेशछेदकाय नमः अर्घं ।

प्रकृति सब कर्मकी चूरी, भाव मल नाश दुख पूरी ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३९० ॥

ॐ ह्रीं पाठकबंधमुक्ताय नमः अर्घं ।

न फिर संसार अवतारा, बंध विधि अन्त कर डारा ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३९१ ॥

ॐ ह्रीं पाठकबन्धमुक्तरूपाय नमः अर्घं ।

आश्रव कर्म दुखदाई, रुके संवर ये सुखदाई ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३९२ ॥

ॐ ह्रीं पाठकसंवराय नम अर्घं ।

सर्वथा जोग विनसाया, स्वसंवर रूप दरशाया ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३९३ ॥

ॐ ह्रीं पाठकसंवरस्वरूपाय नमः अर्घं ।

भावमें कलुषता नाहीं, भये संवर करण ताहीं ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३९४ ॥

ॐ ह्रीं पाठकसंवरकरणाय नमः अर्घं ।

कुपरणति राग रुख नाशन, निरजरा रूप प्रतिभासन ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३९५ ॥

ॐ ह्रीं पाठकनिरजरास्वरूपाय नमः अर्घं ।

काम दव दाह जग सारा, आपतिसे भस्म कर डारा ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३९६ ॥

ॐ ह्रीं पाठकरूपछेदकाय नमः अर्घं ।

चहूं विधि बंध विधि चूरा, ये विस्फोटक कहो पूरा ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३९७ ॥

ॐ ह्रीं पाठककर्मविस्फोटकाय नमः अर्घं ।

दऊ विधि कर्मका खाना, सोई है मोक्षका होना ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३९८ ॥

ॐ ह्रीं पाठकमोक्षाय नमः अर्घं ।

द्रव्य अर भाव मल टारा, नमूं शिवरूप सुखकारा ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ३९९ ॥

ॐ ह्रीं पाठकमोक्षस्वरूपाय नमः अर्घं ।

अरति रति परिणमित खोई, आत्म रति है प्रगट सोई ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥ ४०० ॥

ॐ ह्रीं पाठकआत्मरतये नमः अर्घं ।

लोलतरग छन्द तथा बडी चौपाई ।

अठाइस मूल गुणधारी, सो सब साध वरैं शिव नारी ।
साधु भये शिव साधनहारे, सो तुम साधु हरो अघ म्हारे ॥४०१॥

ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः अघ ।

मूल तथा सब उत्तर गाये, ये गुण पालत साधु कहाये ।
साधु भये शिव साधनहारे, सो तुम साधु हरो अघ म्हारे ॥४०२॥

ॐ ह्रीं सर्वसाधुगुणेभ्यो नमः अर्घं ।

साधुनके गुण साधु ही जाने, होत गुणी गुण ही परमाने ।
साधु भये शिव साधनहारे, सो तुम साधु हरो अघ म्हारे ॥४०३

ॐ ह्रीं सर्वसाधुगुणस्वरूपाय नमः अर्घं ।

नेम थकी शिववास करे जो, द्रव्य थकी शिवरूप करो जो
साधु भये शिव साधनहारे, सो तुम साधु हरो अघ म्हारे ॥४०४

ॐ ह्रीं सर्वसाधुद्रव्याय नमः अर्घं ।

जीव सदा चित भाव विलासी, आप ही आप सधे शिव राशी ।
साधु भये शिव साधनहारे, सो तुम साधु हरो अघ म्हारे ॥४०५

ॐ ह्रीं साधुगुणद्रव्याय नमः अर्घं ।

ज्ञानमई निज ज्योति प्रकाशी, भेद विशेष सबै प्रतिभाशी ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४०६

ॐ ह्रीं साधुज्ञानगुणाय नमः अर्घं ।

एक हि वार लखाय अभेदा, दर्शनको सब एक विछेदा ।
साधु भये शिव साधन हारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४०७

ॐ ह्रीं साधुदर्शनाय नमः अर्घं ।

आपहि साधन साध्य तुम्ही हो, एक अनेक अभेद तुम्हीं हो ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४०८॥

ॐ ह्रीं साधुद्रव्यभावाय नमः अर्घं ।

चेतनता निज भाव न छारे, रूपन तर्पन औगुन धारै ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४०९

ॐ ह्रीं साधुद्रव्यस्वरूपाय नमः अर्घं ।

जो उतपाद भयो इकसारा, सो निरबाध रहै अविकारा ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४१०

ॐ ह्रीं साधुवीर्याय नमः अर्घं ।

है परनाम अभिन्न प्रणामी, सो तुम साधु भये शिवगामी ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४११॥

ॐ ह्रीं साधुद्रव्यपर्यायाय नमः अर्घं ।

जो गुण वा परियाय धरो हो, सो निज माहिं अभिन्न वरो हो।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ।४१२॥

ॐ ह्रीं साधुद्रव्यगुणपर्यायाय नमः अर्घं ।

मंगलमय तुम नाम कहावै, लेतहि नाम सु पाप नसावै ।
साधु भये शिवसाधन हारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४१३॥

ॐ ह्रीं साधुमंगलाय नमः अर्घं ।

मंगल रूप अनूपम सोहै, ध्यान किये नित आनंद होहै ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४१४॥

ॐ ह्रीं साधुमंगलस्वरूपाय नमः अर्घं ।

पाप मिटै तुम शरण गहेतें, मंगल शरण कहाय लहैतें ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४१५॥

ॐ ह्रीं साधुमंगलशरणाय नमः अर्घं ।

देखत ही सब पाप नसे है, आनंद मंगलरूप लसे है ।

साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै॥४१६॥

ॐ ह्रीं साधुमंगलशरणाय नमः अर्घं।

जानत हैं तुमको मुनिनीके, पाप कलाप मिटै तिनहीके।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै॥४१७॥

ॐ ह्रीं साधुमंगलज्ञानाय नमः अर्घं।

ज्ञानमई तुम हो गुणरासा, मंगल जोति धरै रवि जैसा।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै॥४१८

ॐ ह्रीं साधुज्ञानगुणमंगलाय नमः अर्घं।

मंगल वीर्य तुम्हीं दर्शाया, काल अनंतन पाप गलाया।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै॥४१९

ॐ ह्रीं साधुवीर्यमंगलाय नमः अर्घं।

वीर्य महा सुखरूप निहारा, पाप विना नित ही अविकारा।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै॥४२०

ॐ ह्रीं साधुवीर्यमंगलाय नमः अर्घं।

मंगल वीर्य महा गुणधामी, निज पुरुषार्थ हि मोक्ष लहामी।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै॥४२१

ॐ ह्रीं साधुवीर्यपरममंगलाय नमः अर्घं।

वीर्य स्वभाविक पूर्ण तिहारा, कर्म नशाय भये भवपारा।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै॥४२२

ॐ ह्रीं साधुवीर्यद्रव्याय नमः अर्घं।

तीन हि लोक लखे सब जोई, आप समान न उत्तम कोई।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै॥४२३

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमाय नमः अर्घं ।

लोक सभी विधि बन्धन माही, उत्तम रूप धरो तुम नाहीं ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ।४२४

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमगुणाय नमः अर्घं ।

लोकनके गुण पाय कलेशा, उत्तम रूप नहीं तुम जैसा ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४२५

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमगुणस्वरूपाय नमः अर्घं ।

लोक अलोक निहारक नामी, उत्तम द्रव्य तुम्हीं अभिरामी ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४२६

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमद्रव्याय नमः अर्घं ।

लोक सभी षट्द्रव्य रचाया, उत्तम द्रव्य तुम्हीं हम पाया ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४२७

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमद्रव्यस्वरूपाय नमः अर्घं ।

ज्ञानमई चित उत्तम सोहै, ऐसो लोक विषैं अरु कोहै ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४२८

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमज्ञानाय नमः अर्घं ।

ज्ञान स्वरूप सुभाव तिहारा, उत्तम लोक कहै इम सारा ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४२९

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमज्ञानस्वरूपाय नमः अर्घं ।

देखनमें कछु आड न आवैं, लोक तनी सब उत्तम गावैं ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४३०

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमदर्शनाय नमः अर्घं ।

देखन जानन भाव धरो हो, उत्तम लोकके हेतु गहो हो।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४३१

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमज्ञानदर्शनाय नमः अर्घं।

जाकर लोक शिखरपद धारा, उत्तम धर्म कहो जग सारा।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४३२

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमधर्माय नमः अर्घं।

धर्म स्वरूप निजातम मांही, उत्तम लोक विषैं ठहराई।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४३३

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमधर्मस्वरूपाय नमः अर्घं।

अन्य महायन चाहत जाको, उत्तम लोक कहै बल ताको।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४३४

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमवीर्याय नमः अर्घं।

उत्तम वीर्य सरूप निहारा, साधन मोक्ष कियो अनिवारा।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४३५

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमवीर्यसरूपाय नमः अर्घं।

पूर्ण आतम कला परकाशी, लोक बिषये अतिशय अविनाशी।
साधु भये शिव साधनहारै, सो तुम साधु हरो अघ म्हारै ॥४३६

ॐ ह्रीं लोकोत्तमअतिशयाय नम अर्घं।

राग विरोधन चेतन माहीं, ब्रह्म कहो जग उत्तम ताही।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४३७

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तमब्रह्मज्ञानाय नमः अर्घं।

ज्ञान सरूप अकम्प अडोला, पूरण ब्रह्म प्रकाश अटोला।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४३८
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमब्रह्मज्ञानसरूपाय नमः अर्घं।

राग विरोध जयो शिवगामी, आतम अनातम अन्तरजामी।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४३९
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमजिनाय नमः अर्घं।

भेद विना गुण भेद धरो हो, सांख्य कुवादिक पक्ष हरो हो।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४४०
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमायगुणसम्पनाय नमः अर्घं।

साधत आतम पुरुष सवाई, उत्तम पुरुष कहो जगताई।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४४१
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमपुरुषाय नमः अर्घं।

साधु समान न दीनदयाला, शरण गहै सुख होत विशाला।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४४२
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमशरणाय नमः अर्घं।

जे जन साधू शरण गही है, ते शिव आनन्द लाभ लही है।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४४३
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमगुणशरणाय नमः अर्घं।

साधुनके गुण द्रव्य चितारे, होत महासुख शरण उभारे।
साधु भये शिव साधनहारै, सो सब साधु हरो अघ म्हारै ॥४४४
ॐ ह्रीं साधुगुणद्रव्यशरणाय नमः अर्घं।

लावनी छन्द।

तुम चितवत वा अवलोकत वा सरधानी,
इम शरण गहै पावै निश्चय शिवरानी।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४४५॥

ॐ ह्रीं साधुदर्शनशरणाय नमः अर्घं।

तुम अनुभव करि शुद्धोपयोग मन धारा,
यह ज्ञान शरण पायो निश्चै अविकारा।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मै नमूं साधु सम सिद्ध अकंप विराजै ॥४४६॥

ॐ ह्रीं साधुज्ञानशरणाय नमः अर्घं।

निज आतम रूपमें दृढ़ सरधा तुम पाई,
थिर रूप सदा निवसो शिववास कराई।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकंप विराजै ॥४४७॥

ॐ ह्रीं साधुआत्मशरणाय नमः अर्घं।

तुम निराकार निरभेद अछेद अनूपा,
तुम निरावरण निरद्वंद स्वदर्श सरूपा।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजैं,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकंप विराजै ॥४४८॥

ॐ ह्रीं साधुदर्शनस्वरूपाय नमः अर्घं।

तुम परम पूज्य परमेश परम पद पाया,
हम शरण गही पूजैं नित मन वच काया।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकंप विराजै ॥४४९॥

ॐ ह्रीं साधुपरमात्मशरणाय नमः अर्घं।

तुम मन इन्द्री व्यापार जीत सुभ भीता,
हम शरण गही मनु आज कर्मरिपु जीता।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकंप विराजै ॥४५०॥

ॐ ह्रीं साधुनिजात्मशरणाय नमः अर्घं।

भववास दुखी जे शरण गहैं तुम मनमें,
तिनको अवलम्ब उभारो भय हर छिनमें।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४५१॥

ॐ ह्रीं साधुवीर्यशरणाय नमः अर्घं।

द्रिगबोध अनन्तानन्त धरो निरखेदा,
तुम बल अपार शरणागति विघन विछेदा।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकंप विराजै ॥४५२॥

ॐ ह्रीं वीर्यात्मशरणाय नमः अर्घं।

निज ज्ञानानन्दी महालक्षिमी तुम सोहै,
सुर असुरनमें नित परम मुनी मन मोहै।

निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प बिराजै ॥४५३॥
ॐ ह्रीं साधुलक्ष्मीअलंकृताय नमः अर्घं ।

भववाम तहा दुखरास ताहि विनशाया,
अतिछीन लीन स्वाधीन महासुख पाया ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प बिराजै ॥४५४॥
ॐ ह्रीं साधुलक्ष्मीप्रणीताय नमः अर्घं ।

त्रिभुवनका ईश्वर पना तुम्हींमें पाया,
त्रिभुवनके पातिक हरै मनू रवि छाया ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प बिराजै ॥४५५॥
ॐ ह्रीं लक्ष्मीरूपाय नमः अर्घं ।

तुम काल अनन्तानन्त अबाध बिराजो,
परनिमित्त विकार निवार सु नित्य सु छाजो ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प बिराजै ॥४५६॥
ॐ ह्रीं साधुध्रुवाय नमः अर्घं ।

तुम छायक लब्धि प्रभाव परम गुण धारी,
निवसो निज आनन्द मांहि अचल अविकारी ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकंप बिराजै ॥४५७॥
ॐ ह्रीं साधुगुणध्रुवाय नमः अर्घं ।

तेरम चौदस गुण थान द्रव्य है जैसो,
रहै काल अनन्तानन्त शुद्धता तैसो।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरैं मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकंप विराजै ॥४५८॥

ॐ ह्रीं साधुद्रव्यगुणध्रुवाय नमः अर्घ।

फिर जन्म मरण नहीं होय जन्म वो पाया,
संसार विलक्षण स्वै अपूर्व पद पाया।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरैं मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकंप विराजै ॥४५९॥

ॐ ह्रीं साधुद्रव्योत्पादाय नमः अर्घ।

सूक्षम अलब्धि अपर्याप्त निगोद शरीरा,
ते तुछ द्रव्य कर नाश भये भव तीरा।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४६०॥

ॐ ह्रीं साधुद्रव्यव्यापिने नमः अर्घ।

रागादिक परिग्रह टारि तत्व सरधानी,
इम साधु जीव नित साधत शिवसुखदानी।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४६१॥

ॐ ह्रीं साधुजीवाय नमः अर्घ।

स्वसंवेदन विज्ञान परम अमलाना,
इष्ट अरु निष्ट विकल्प जाल दुख माना।

निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकंप विराजै ॥ ४६२॥
ॐ ह्रीं साधुजीवगुणाय नमः अर्घं ।

देखन जानन चेतन सुरूप अविकारी,
गुण गुणी भेदमें अन्य भेद व्यभिचारी ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४६३॥
ॐ ह्रीं साधुचेतनगुणाय नमः अर्घं ।

चेतनकी परिणति रहै सदा चित मांही,
ज्यों सिन्धु लहर हो सिंधु और कछु नाहीं ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४६४॥
ॐ ह्रीं साधुचेतनसरूपाय नमः अर्घं ।

चेतन विलास सुख रास नित्य परकाशी,
सो साधु दिगम्बर साधु भये अविनाशी ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मै नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४६५॥
ॐ ह्रीं साधुचेतनाय नमः अर्घं ।

तुम असाधारण अरु परमात्म प्रकाशी,
नहीं अन्य जीव यह लहै गहै भववासी ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४६६॥

ॐ ह्री साधुपरमात्मप्रकाशाय नमः अर्घ्य ।

तुम मोह तिमिर विन स्वयं सूर्य परकाशी,
गुण द्रव्य पर्य सब भिन्न भिन्न प्रतिभाशी ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४६७॥

ॐ ह्रीं साधुज्योतिसरूपाय नमः अर्घ्य ।

ज्यों घटपटादि दीपककी ज्योति दिखावै,
त्यों ज्ञान ज्योति सब भिन्न भिन्न दरशावै ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प बिराजै ॥४६८॥

ॐ ह्रीं साधुज्योतिप्रदीपाय नमः अर्घ्य ।

सामान्य रूप अवलोकन युगपत सारा,
तुम दर्शन ज्योति प्रदीप हरै अन्धियारा ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प बिराजै ॥४६९॥

ॐ ह्रीं साधुदर्शनज्योतिप्रदीपाय नमः अर्घ्य ।

साकार रूप सु विशेष ज्ञान द्युति माहीं,
युगपत कर प्रतिबिंबित वस्तू प्रगटाई ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४७०॥

ॐ ह्रीं साधुज्ञानज्योतिप्रदीपाय नमः अर्घ्य ।

जे अर्थ जन्य कहै ज्ञान वो झूठे वादी,
है स्वपर प्रकाशक आतम ज्योति अनादी ।

निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४७१॥

ॐ ह्रीं साधुआत्मज्योतिषे नमः अर्घं

है तारन तरन जिहाज अथित भवसागर,
हम शरन गहै पावै शिववास उजागर ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकंप विराजै ॥ ४७२ ॥

ॐ ह्रीं साधुशरणाय नमः अर्घं ।

सामान्य रूप सब साधु मुक्ति मग साधै,
हम पावे निज पद नेमरूप आराधै ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४७३॥

ॐ ह्रीं साधुसर्वशरणाय नमः अर्घं ।

त्रिम नाडी ही मै तत्वज्ञान सरधानी,
ताकर साधै निश्चय पावै शिवरानी ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मै नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४७४॥

ॐ ह्रीं साधुलोकशरणाय नमः अर्घं ।

तिहुं लोक करन हित वरते नित उपदेशा,
हम शरण गही मेटो भववास कलेशा ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४७५॥

ॐ ह्रीं साधुत्रिलोकशरणाय नमः अर्घ।

संसार विषम दुखकार असार अपारा,
तिस छेदक वेदक सुखदायक हितकारा।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४७६॥

ॐ ह्रीं साधुसंसारछेदकाय नमः अर्घ।

यद्यपि इक क्षेत्र अवगाह अभिन्न विराजै,
तद्यपि निज सत्ता माहि भिन्नता साजै।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४७७॥

ॐ ह्रीं साधुएकत्वाय नमः अर्घ।

यद्यपि सामान्य सु पूरण ज्ञानी,
तद्यपि निज आश्रय भाव भिन्न परनामी।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४७८॥

ॐ ह्रीं साधुएकत्वगुणाय नमः अर्घ।

है असाधारण एकत्व द्रव्य तुम माही,
तुम सम संसार मंझार और कोऊ नाहीं।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४७९॥

ॐ ह्रीं साधुएकत्वद्रव्याय नमः अर्घ।

यद्यपि सब ही हो असंख्यात परदेशी,
तद्यपि निजमें निज रूप स्वद्रव्य सुदेशी।

निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प बिराजैं ॥४८०॥

ॐ ह्रीं साधुएकत्वस्वरूपाय नमः अर्घ्य ।

सामान्य रूप सब ब्रह्म कहावै ज्ञानी,
तिनमें तुम वृषभ सु पर्म ब्रह्म परणामी ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प बिराजै ॥४८१॥

ॐ ह्रीं साधुपरमब्रह्माय नमः अर्घ्य ।

सापेक्ष एक ही कहै सु नय विस्तारा,
तुम भाव प्रगट कर कहै सु निश्चै कारा ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प बिराजै ॥४८२॥

ॐ ह्रीं साधुपरमस्याद्वादाय नमः अर्घ्य ।

है ज्ञान निमत यह वचन जाल परमाणा,
है वाचक वाच्य संयोग ब्रह्म कहलाना ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प बिराजै ॥४८३॥

ॐ ह्रीं साधुशुद्धब्रह्माय नमः अर्घ्य ।

षट् द्रव्य निरूपण करै सोई आगम हो,
तिसके तुम मूल निधान सु परमागम हो ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै ।
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प बिराजै ॥४८४॥

ॐ ह्रीं साधुपरमागमाय नमः अर्घ ।

तीर्थेश कहै सर्वज्ञ दिव्य धुनि माहीं,
तुम गुण अपार इम कहो जिनागम ताहीं ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकंप विराजै ॥४८५॥

ॐ ह्रीं साधुजिनागमाय नम अर्घ ।

तुम नाम प्रसिद्ध अनेक अर्थका बाची,
ताके प्रबोधसो हो प्रतीत मन सांची ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकंप विराजै ॥४८६॥

ॐ ह्रीं अनेकार्थाय नमः अर्घ ।

लोभादिक मेटे विन न सौचता होई,
है वृथा तीर्थ स्नान करो भी कोई ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४८७॥

ॐ ह्रीं साधुशौचत्वाय नमः अर्घ ।

है मिथ्या मोह प्रबल मल इनका खोना,
सो शुद्ध सौच गुण यही न तनका धोना ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४८८॥

ॐ ह्रीं साधुशुचित्वगुणाय नमः अर्घ ।

एकदेश कर्ममल नाश पवित्र कहायो,
तुम सर्व कर्ममल नाशि परम पद पायो ।

निज रूप मगन मनु ध्यान धरैं मुनिराजै,
　　मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४८९॥
ॐ ह्रीं साधुपवित्राय नमः अर्घं ।

तुम रहो बन्धसो दूरि एकांत सुखाई,
　　ज्यों नभ अलिप्त सब द्रव्य रहो तिसमाही ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
　　मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४९०॥
ॐ ह्रीं साधुबन्धविमुक्ताय नमः अर्घं ।

सब द्रव्य भाव नोकर्म बन्ध छुटकाया,
　　तुम शुद्ध निरंजन निज सरूप थिर पाया ।
निज रूप मगन मनु ध्यान धरै मुनिराजै,
　　मैं नमूं साधु सम सिद्ध अकम्प विराजै ॥४९१॥
ॐ ह्रीं साधुबन्धमुक्ताय नमः अर्घं ।

अडिल्ल छन्द ।

भावाश्रव बिन अतिशय सहित अबन्ध हो,
　　मेघ पटल बिन ज्यों रवि किरण अबन्ध हो ।
मोक्षमार्ग वा मोक्षाश्रय सब साधु हैं,
　　नमत निरंतर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥४९२॥
ॐ ह्रीं साधुबन्धप्रतिबन्धकाय नमः अर्घं ।

तुम स्वरूपमें लीन परम संवर करैं,
　　यह कारण अनिवार कर्म आवन हरैं ॥
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
　　नमत निरंतर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥४९३॥

ॐ ह्रीं साधुसंवरकारणाय नमः अर्घ्य ।

पुद्गलीक परिणाम आठ विधि कर्म हैं,
तिनकी करत निरजरा शुद्ध सु परम हैं ।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरन्तर हमहूं कर्मपुरिको दहैं ॥ ४९४ ॥

ॐ ह्रीं साधुनिर्जराद्रव्याय नमः अर्घ्य ।

पर्म शुद्ध उपयोग रूप वरतें जहां,
छिनमें नन्तानन्त कर्म खिरहै तहां ।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरन्तर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥ ४९५ ॥

ॐ ह्रीं साधुनिर्जराविमलाय नमः अर्घ्य ।

सकल विभाव अभाव निरजरा करत हैं,
ज्यों रवि तेज प्रचण्ड सकल तम हरत हैं ।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरंतर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥४९६॥

ॐ ह्रीं साधुनिर्जरागुणाय नमः अर्घ्य ।

जे संसार निमित ते सब दुखरूप हैं,
तुम निमित्त शिव कारण शुद्ध अनूप हैं ।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु है,
नमत निरंतर हमहूं कर्मरिपुको दहैं । ४९७ ॥

ॐ ह्रीं साधुनिमित्तमुक्ताय नमः अर्घ्य ।

संशय रहित सुनिश्चै सम्मतिदाय हो,
मिथ्या भ्रमतम नाशन सहज उपाय हो ।

मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरंतर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥ ४९८ ॥
ॐ ह्रीं साधुबोधधर्माय नमः अर्घं ।
अति विशुद्ध निज ज्ञान स्वभाव सु धरत हो,
भव्यनके संशय आदिक तम हरत हो ।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरंतर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥ ४९९ ॥
ॐ ह्रीं साधुबोधगुणाय नमः अर्घं ।
अविनाशी अविकार परम शिवधाम हो,
पायो सो तुम सुगत महा अभिराम हो ।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरन्तर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥ ५०० ॥
ॐ ह्रीं साधुसुगतिभावाय नमः अर्घं ।
जासों परे न और जन्म वा मरण है,
सो उत्तम उत्कृष्ट परम गतिको लहै ।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरन्तर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥ ५०१ ॥
ॐ ह्रीं साधुसुगतिभावाय नमः अर्घं ।
पर निमित्त रागादिक जे परनाम हैं,
इनसों रहित विभाव इसीसे नाम हैं ।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरन्तर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥ ५०२ ॥

ॐ ह्रीं साधुविभावरहिताय नमः अर्घं ।

निज सुभाव सामर्थ सु प्रभुता पाइयो,
इन्द्र फनेंद्र नरेन्द्र शीश निज नाइयो ।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरन्तर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥ ५०३ ॥

ॐ ह्रीं साधुस्वभावमहिताय नम अर्घं ।

कर्मबन्धमों रहित सोई शिवरूप हैं,
निवसे सदा अबंध स्वशुद्ध अनूप हैं ।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरंतर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥ ५०४ ॥

ॐ ह्रीं साधुमोक्षस्वरूपाय नमः अर्घं ।

सकल द्रव्य पर्याय विषैं स्वज्ञान हो,
सत्यारथ निश्चल निश्चै परमाण हो ।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरंतर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥ ५०५ ॥

ॐ ह्रीं साधुपरमानंदाय नमः अर्घं ।

तीन लोकके पूज्य यतीजन ध्यावही,
कर्म-शत्रुको जीत अर्ह पद पावही ।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरन्तर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥ ५०६ ॥

ॐ ह्रीं साधुअर्हत्स्वरूपाय नमः अर्घं ।

परम इष्ट शिव साधत सिद्ध कहाइयो,
तीन लोक परमेष्ट परम पद पाइयो।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु है,
नमत निरंतर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥ ५०७ ॥

ॐ ह्रीं साधुसिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घं।

शिव मारग प्रगटावन कारण हो तुम्हीं,
भविजन पतित उधारन तारन हो तुम्हीं।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरंतर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥ ५०८ ॥

ॐ ह्रीं साधुसूरिप्रकाशने नमः अर्घं।

स्वपर स्वहितकरि परम बुद्धि भरतार हो,
ध्यान धरत आनंद बोध दातार हो।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरन्तर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥ ५०९ ॥

ॐ ह्रीं साधुउपाध्यायाय नमः अर्घं।

पंच परम गुरु प्रगट तुम्हारो नाम है,
भेदाभेद सुभाव सु आतमराम है।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरन्तर हमहूं कर्मरिपुको दहै ॥ ५१० ॥

ॐ ह्रीं साधुअर्हंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः अर्घं।

लोकालोक सु व्यापक ज्ञान सुभावतें,
तद्यपि निज पद लीन विहीन विभावतें।

मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं.
नमत निरंतर हमहूं कर्मरिपुको दहै ॥ ५११ ॥

ॐ ह्रीं साधुआत्मरते नमः अर्घं ।

रतनत्रय निज भाव विशेष अनन्त हैं,
पंच परम गुरु भये नमें नित मन्त हैं।
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु हैं,
नमत निरंतर हमहूं कर्मरिपुको दहैं ॥ ५१२ ॥

ॐ ह्रीं साधुअर्हतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुरत्नत्रयात्मक-अनन्तगुणेभ्यो नमः अर्घं ।

अडिल्ल छन्द ।

पंच परम गुरु नाम विशेषणको धरैं,
तीन लोकमें मंगलमय आनन्द करैं।
पूरी कर थुति नाम अन्त सुख कारणं,
पूजूं हूं युत भाव सु अर्घ उतारणं ॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशाधिकपंचशतगुणयुतसिद्धेभ्यो नमः पूर्णार्घम् ।

यहां ॐ ह्रीं असि आ उ सा नमः १०८ वार जपना चाहिये।

अथ जयमाला।

रत्नत्रय भूषित महा, पंच सुगुरु शिवकार।
सकल सुरेन्द्र नमें नमूं, पाऊँ सो गुण सार ॥ १ ॥

पद्धडी छन्द ।

जय महामोह दल दलन सूर, जय निर्विकल्प आनंद पूर।
जय दोऊ विधि कर्म विमुक्त देव, जय निजानंद स्वाधीन एव ॥ १॥

जय संशयादि भ्रम तम निवार, जय स्वामिभक्ति द्युति श्रुति अपार।
जय युगपति सकल प्रत्यक्ष लक्ष, जय निरावरण निर्मल अनक्ष ॥२॥
जय जय जय सुखसागर अगाध, निरद्वंद निरामय निर उपाधि।
जय मन वच सब व्यापार नाश, जय थिर स्वरूप निज पद प्रकाश ॥३
जय पर निमित्त सुख दुख निवार, निरलेप निराश्रय निर्विकार।
निजमें परको परमें न आय, परवेश न हो नित निर मिलाय ॥४॥
तुम परम धरम आराध्य सार, निज सम करि कारण दुर्निवार।
तुम पंच परम आचार युक्त, नित भक्त वर्ग दातार मुक्त ॥५॥
एकादशांग सर्वांग पूर्व, स्वै अनुभव पायो फल अपूर्व।
अन्तर बाहिर परिग्रह नसाय, परमारथ साधू पद लहाय ॥६॥
हम पूजत नित उर भक्ति ठान, पावे निश्चय शिवपद महान।
ज्यों शशि किरणावलि सियर पाय, मणि चंद्र-कांति द्रवता लहाय ॥७

घत्तानन्द छन्द।

जय भव भय हारं बन्ध विडारं, सुख सारं शिव करतारं।
नित सन्त सु ध्यावत पाप नसावत, पावत पद निज अधिकारं ॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशाधिकपंचशतदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः पूर्णार्घम्।

सोरठा।

तुम गुण अमल अपार, अनुभवतें भव भय नशै।
सन्त सदा चित धार, शांति करो भवतप हरो ॥

इत्याशीर्वाद।

इति सप्तमी पूजा समाप्त।

अथ अष्टमी पूजा १०२४ नाम सहित।

छप्पय छन्द।

ऊरध अधो सरेफ बिन्दु हंकार विराजै,
अकारादि स्वरलिप्त कर्णिका अन्त सु छाजै।
वर्गनि पूरित वसुदल अम्बुज तत्त्व संधिवर,
अग्र भागमें मंत्र अनाहत सोहत अतिवर॥
पुनि अन्त ह्रीं वेढ्यो परम, सुर ध्यावत अरि नागको,
ह्वै केहरि सम पूजन निमित्त, सिद्धचक्र मंगल करो॥१॥

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिने १०२४ गुण-सहित विराजमान अत्रावतरावतर संवौषट्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। इति यंत्र स्थापनं।

दोहा।

सूक्ष्मादि गुण सहित हैं, कर्म रहित निररोग।
सिद्धचक्र सो थापहूं, मिटै उपद्रव योग॥ २॥

अथाष्टकं।

गीता छन्द।

निज आत्मरूप सु तीर्थ मग नित, सरस आनंद धार हो।
नाशे त्रिविध मल सकल दुखमय, भव जलधिके पार हो॥
यातै उचित ही है जु तुमपद, नीरसों पूजा करूं।
इक सहस अरु चौवीस गुण गण, भावयुत मनमें धरूं॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने एकहजारचौवीसगुणसंयुक्ताय श्री समत्त णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ जलं॥

शीतल सुरूप सुगन्ध चन्दन, एक भव तप नास ही ।
सो भव्य मधुकर प्रिय सु यह नहिं, और ठौर सु बास ही ॥
याते उचित ही है जु तुमपद, मलयसो पूजा करूं ।
इक सहस अरु चौवीस गुण गण, भावयुत मनमें धरूं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने एकहजार चौवीसगुणसंयुक्ताय श्री समत्त णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघु-मव्वावाहं संसारतापविनाशनाय चन्दनं ।

अक्षय अबाधित आदि अन्त, समान स्वच्छ सुभाव हो ।
ज्यों तुम विना तंदुल दिये त्यूं, निखिल अमल अभाव हो ॥
यातें उचित ही है जु तुमपद, अक्षतं पूजा करूं ।
इक सहस अरु चौवीस गुण गण, भावयुत मनमें धरूं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने एकहजारचौवीसगुणसंयुक्ताय श्री समत्तणाणदंसणवीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघु-मव्वावाहं अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं ।

गुण पुष्पमाल विशाल तुम, भवि कंठ पहिरे भावसों ।
जिनके मधुप मन रसिक लुब्धित, रमत नित प्रति चावसों ॥
यातें उचित ही है जु तुमपद, पुष्पसों पूजा करूं ।
इक सहस अरु चौवीस गुण गण, भावयुत मनमें धरूं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने एकहजारचौवीसगुणसंयुक्ताय श्री समस्त णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघु-मव्वावाहं कामवाणविनाशनाय पुष्पं ।

शुद्धात्म सरस सुपाक मधुर, समान और न रस कहीं।
ताके हो अस्वादी सो तुम सम, और संतुष्टित नहीं॥
याते उचित ही है जो तुमपद, चरुनसों पूजा करूं।
इक सहस अरु चौवीस गुण गण, भावयुत मनमें धरूं॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने एकहजारचौवीसगुणसंयुक्ताय श्री समत्तणाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं।

स्वैपर प्रकाश स्वभावधर, ज्यूं निज स्वरूप संभारते।
तू ही त्रिकाल अनंत द्रव्य पर्याय, प्रगट निहारते॥
याते उचित ही है जु तुमपद, दीपसों पूजा करूं।
इक सहस अरु चौवीस गुण गण, भावयुत मनमें धरूं॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने एकहजारचौवीसगुणसंयुक्ताय श्री समत्तणाण दंसणवीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं मोहांधकारविनाशनाय दीपं।

वर ध्यान अगनि जराय वसुविधि, ऊर्द्धगमन स्वभावतें।
राजै अचल शिव थान नित, तिह धर्मद्रव्य अभावतें॥
यातें उचित ही है जु तुमपद, धूपसों पूजा करूं।
इक सहस अरु चौवीस गुणगण, भावयुत मनमें धरूं॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने एकहजारचौवीसगुणसंयुक्ताय श्री समत्त णाण दंसण वीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं अष्टकर्मदहनाय धूपं।

सर्वोत्कृष्ट सु पुण्य फल, तीर्थेश पद पायो महा ।
तीर्थेश पदको स्वरुचिधर, अव्यय अमर शिवफल लहा ॥
यातें उचित ही है जु तुम पद, फलनसो पूजा करूं ।
इक सहस अरु चौवीस गुण गण, भावयुत मनमें धरूं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने १०२४ गुणसंयुक्ताय श्रीसमत्त-णाण दंसणवीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं मोक्ष-फलप्राप्ताय फलं ।

अष्टांग मूल सु विधि हरो, निज अष्ट गुण पायो सही ।
अष्टार्द्ध गति संसार मेटि सु, अचल ह्वै अष्टम मही ॥
यातें उचित ही है जु तुमपद, अर्घसो पूजा करूँ ।
इक सहस अरु चौवीस गुण गण, भाव युत मनमें धरूँ ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने १०२४ गुणसंयुक्ताय श्रीसमत्त-णाणदंसणवीर्य सुहमतहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाहं अनर्थ-पदप्राप्ताय अर्घं ।

गीता छन्द ।

निर्मल सलिल शुभ वास चंदन, धवल अक्षत युत अनी ।
शुभ पुष्प मधुकुर नित रमें, चरु प्रचुर स्वाद सु विधि घनी ॥
वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भले ।
करि अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्मदल सब दलमलै ॥
ते कर्मवर्त नशाय युगपति ज्ञान निर्मल रूप हैं ।
दुख जन्म टार अपार गुण सूक्षम सरूप अनूप हैं ॥
कर्माष्ट विन त्रैलोक्य पूज्य अछेद शिवकमलापती ।
मुनि ध्येय सेय अभेय चहुं गुण गेह द्यो हम शुभ मती ॥ पूर्णार्घम् ॥

अथ १०२४ नामगुणसहित अर्घ ।

दोहा ।

इन्द्रिय विषय कषाय हैं, अन्तर शत्रु महान ।
तिनको जीतत जिन भये, नमूं सिद्ध भगवान ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं जिनाय नमः अर्घ्यं ।

रागादिक जीते सु जिन, तिनमें तुम परधान ।
तातें नाम जिनेन्द्र है, नमूं सदा धरि ध्यान ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्राय नमः अर्घं ।

रागादिक लवलेश विन, शुद्ध निरंजन देव ।
पूरण जिनपद तुम विषै, राजत हो स्वयमेव ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं जिनजिनपूर्णताय नमः अर्घं ।

बाह्य शत्रु उपचरितको, जीतत जिन नहीं होय ।
अन्तर शत्रु प्रबल जये, उत्तम जिन है सोय ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं जिनोत्तमाय नमः अर्घं ।

इन्द्रादिक पूजत चरन, सेवत हैं तिहुं काल ।
गणधरादि श्रुत केवली, जिन आज्ञा निज भाल ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं जिनआज्ञाय नमः अर्घं ।

गणधरादि सत पुरुष जे, वीतराग निरग्रन्थ ।
तुमको सेवत जिन भये, साधत हैं शिवपंथ ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं जिनाधिपाय नमः अर्घं ।

एक देश जिन सर्व मुनि, सर्व भाव अरहंत ।
द्रव्यभाव सर्वातमा, नमूं सिद्ध भगवंत ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं जिनाधीशाय नमः अर्घं ।

गणधरादि सेवत चरन, शुद्धातम लवलाय।
तीन लोक स्वामी भये, नमूं सिद्ध अधिकाय ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं जिनस्वामिने नमः अर्घं ।

नमत सुरासुर जिन चरन, तीन काल धरि ध्यान।
सिद्ध जिनेश्वर मै नमूं, पाऊं शिवसुख थान॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः अर्घं ।

तीन लोक तारण तरण, तीन लोक विख्यात।
सिद्ध महा जिननाथ हैं, सेवत पाप नशात ॥१०॥

ॐ ह्रीं जिननाथाय नमः अर्घं ।

एकदेश श्रावक तथा, सर्वदेश मुनिराज।
नितप्रति रक्षक हो महा, सिद्ध सु पुण्य समाज ॥११॥

ॐ ह्रीं जिनपतये नमः अर्घं

त्रिभुवन शिखाशिरोमणी, राजत सिद्ध अनन्त।
शिवमारग परसिद्ध कर, नमत भवोदधि अन्त ॥१२॥

ॐ ह्रीं जिनप्रभवे नमः अर्घं ।

जिन आज्ञा त्रिभुवनविषैं, वरतै सदा अखण्ड।
मिथ्यामति दुरपक्षको, देत नीति सों दण्ड ॥१३॥

ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः अर्घं ।

तीन लोक परिपूर्ण है, लोकालोक प्रकाश।
राजत है विस्तीर्ण जिन, नमूं हरो भववास ॥१४॥

ॐ ह्रीं जिनविभवे नमः अर्घं ।

आत्मज्ञ जिन नमत हैं, शुद्धातमके हेत।
स्वामी हो तिहुं लोकके, नमूं वसे शिवखेत ॥ १५ ॥
ॐ ह्रीं जिनमंत्रे नमः अर्घ।

मिथ्यामतीको नाश करि, तत्वज्ञान प्रकाश।
दीप्ति रूप रविसम सदा, करो सदा उर वास ॥ १६ ॥
ॐ ह्रीं तत्वप्रकाशाय नमः अर्घ।

कर्मशत्रु जीते सु जिन, तिनके स्वामी सार।
धर्ममार्ग प्रगटात है, शुद्ध सुलभ सुखकार ॥ १७ ॥
ॐ ह्रीं जिनकर्मजिते नमः अर्घ।

अमृत मम निज दृष्टियों, यथाख्यात आचार।
तिन सबके स्वामी नमूं, पायो शिवपद सार ॥ १८ ॥
ॐ ह्रीं जिनेशाय नमः अर्घ।

समोशरण आदिक विभव, तिसके तुम परधान।
शुद्धातम शिवपद लहो, नमूं कर्मकी हान ॥ १९ ॥
ॐ ह्रीं जिननायकाय नमः अर्घ।

सूरज सम तिहुं लोकमें, मिथ्या तिमिर निवार।
सहज दिखायो मोक्षमग, मैं वंदूं हित धार ॥ २० ॥
ॐ ह्रीं जिननेत्रेय नमः अर्घ।

जन्म मरण दुख जीति कर, जिन जिन नाम धराय।
नमूं सिद्ध परमातमा, भवदुख सहज नसाय ॥ २१ ॥
ॐ ह्रीं जिनजेत्रेय नमः अर्घ।

अचल अबाधित पद लहो, निज स्वभाव दिढ भाय ।
नमूं सिद्ध कर जोरिकर, भाव सहित उर लाय ॥ २२ ॥
ॐ ह्रीं जिनपरिदृढाय नमः अर्घं ।

सर्व-व्यापी परमातमा, सर्व पूज्य विख्यात ।
श्री जिनदेव नमूं त्रिविध, सर्व पाप नशि जात ॥ २३ ॥
ॐ ह्रीं जिनदेवाय नमः अर्घं ।

श्री जिनेश जिनराज हो, निज स्वभाव अनिवार ।
पर निमित्त विनशे सकल, वन्दूं शिवसुखकार ॥ २४ ॥
ॐ ह्रीं जिनेशाय नमः अर्घं ।

परम धर्म दातार हो, तीन लोक सुखदाय ।
तीन लोक पालक महा, मैं वन्दूं शिवराय ॥ २५ ॥
ॐ ह्रीं जिनपालकाय नमः ।

गणधरादि सेवत महा, तुम आज्ञा शिर धार ।
अधिक अधिक जिनपद लहो, नमूं करो भवपार ॥ २६ ॥
ॐ ह्रीं जिनअधिराजाय नमः अर्घं ।

परम धर्म उपदेश करि प्रगटायो शिवराय ।
श्री जिन निज आनन्द विषैं, वरतैं वन्दूं ताय ॥ २७ ॥
ॐ ह्रीं जिनशासनेशाय नमः अर्घं ।

पूरण पद पावत निपुण, सब देवनके देव ।
मैं पूजूं नित भावसो, पाऊं शिव स्वयमेव ॥ २८ ॥
ॐ ह्रीं जिनदेवाधिदेवाय नमः अर्घं ।

तीन लोक विख्यात हैं, तारण तरण जिहाज ।
तुम सम देव न और हैं, तुम सबके शिरताज ॥ २९ ॥
ॐ ह्रीं जिनअद्वितीयाय नमः अर्घं ।

तीन लोक पूजत चरन, भाव सहित शिर नाय ।
इन्द्रादिक थुति करि थकित, मैं वंदूं तिस पाय ॥ ३० ॥
ॐ ह्रीं जिनाधिनाथाय नमः अर्घं ।

तुम समान नहीं देव है, भविजन तारन हेत ।
चरणाम्बुज सेवत सुभग, पावें शिवसुख खेत ॥ ३१ ॥
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रविध्वंधसेये नमः अर्घं ।

भवाताप करि तप्त हैं, तिनकी विपत्ति निवार ।
धर्मामृत कर पोखियो, वरते शशि उनहार ॥ ३२ ॥
ॐ ह्रीं जिनचन्द्राय नमः अर्घं ।

मिथ्यातम करि अन्ध थे, तीन लोकके जीव ।
तत्व मार्ग प्रगटाइयो, रवि सम दीप्त अतीव ॥ ३३ ॥
ॐ ह्रीं जिनादित्याय नमः अर्घं ।

विन कारण तारणतरण, दीप्त रूप भगवान ।
इन्द्रादिक पूजत चरण, करत कर्मकी हान ॥ ३४ ॥
ॐ ह्रीं जिनदीप्तरूपाय नमः अर्घं ।

जैसे कुञ्जर चक्रके, जाने दलको साज ।
चार संघ नायक प्रभु, वंदूं सिद्ध समाज ॥ ३५ ॥
ॐ ह्रीं जिनकुञ्जराय नमः अर्घं ।

दीप्त रूप तिहुं लोकमें, है प्रचण्ड परताप ।
भक्तनको नित देत हैं, भोगे शिवसुख आप ॥ ३६ ॥
ॐ ह्रीं जिनार्काय नमः अर्घं ।

रत्नत्रय मग साधकर, सिद्ध भये भगवान ।
पूरण निजसुख धरत हैं, निजमें निज परिणाम ॥ ३७ ॥
ॐ ह्रीं जिनधौर्याय नमः अर्घं ।

तीन लोकके नाथ हो, ज्यूं तारागण सूर्य ।
शिवसुख पायो परम पद, वन्दौ श्री जिन धूर्य्य ॥ ३८ ॥
ॐ ह्रीं जिनधूर्याय नमः अर्घं ।

पराधीन विन परम पद, तुम विन लहै न और ।
उत्तमातमा मै नमूं, तीन लोक शिरमौर ॥ ३९ ॥
ॐ ह्रीं जिनोत्तमाय नमः अर्घं ।

जहां न दुखको लेश है, तहां न परसों कार ।
तुम विन कहूं न श्रेष्ठता, तीन लोक दुख टार ॥ ४० ॥
ॐ ह्रीं त्रिलोकदुःखनिवारणाय नमः अर्घं ।

पूर्ण रूप निज लक्ष्मी, पाई श्री जिनराज ।
परम श्रेय परमातमा, वन्दूं शिवसुख साज ॥ ४१ ॥
ॐ ह्रीं जिनवराय नमः अर्घं ।

निरभय हो निर आश्रय, निरसंगी निरबंध ।
निज साधन साधक सुगुन, परसो नहिं सम्बंध ॥ ४२ ॥
ॐ ह्रीं जिननिसंगाय नमः अर्घं ।

अन्तराय विधि नाशकै, निजानन्द भयो प्राप्त।
संत नमें करजोर युग, भव-दुख करो समाप्त॥ ४३॥
ॐ ह्रीं जिनउद्धराय नमः अर्घं।

शिवमारगमें धरत हो, जग मारगतें काढ़।
धर्म धुरंन्धर मैं नमूं, पाऊं भव वन बाढ़॥ ४४॥
ॐ ह्रीं जिनवृषभाय नमः अर्घं।

धर्मनाथ धर्मेश हो, धर्म तीर्थ करतार।
रहो सु थिर निज धर्ममें, मै वन्दूं सुखकार॥ ४५॥
ॐ ह्रीं जिनवृषभाय नमः अर्घं।

जगत जीव विधि धूलि सों, लिप्त न लहै प्रभाव।
रत्नराशि सम तुम दियो. निर्मल सहज सुभाव॥ ४६॥
ॐ ह्रीं जिनरतनाय नमः अर्घं।

तीन लोकके शिखर पर, राजत हो विख्यात।
तुम सम और न जगतमें. बडा कोई दिखलात॥ ४७॥
ॐ ह्रीं जिनोरसाय नमः अर्घं।

इन्द्रिय मन व्यापार बहु, मोहशत्रुको जीत।
लहो जिनेश्वर सिद्धपद, तीन लोकके मीत॥ ४८॥
ॐ ह्रीं जिनेशाय नमः अर्घं।

चारि घातिया कर्मको, नाश कियो जिनराय।
घाति अघाति विनाश जिन, अग्र भये सुखदाय॥ ४९॥
ॐ ह्रीं जिनाग्राय नमः अर्घं।

निज पौरुषकर साधियो, निज पुरुषारथ सार ।
अन्य सहाय नहीं चहैं, सिद्ध सु वीर्य अपार ॥ ५० ॥
ॐ ह्रीं जिनशार्दूलाय नमः अर्घ ।

इन्द्रादिक नित ध्यावतें, तुम सम और न कोय ।
तीन लोक चूड़ामणी, नमूं सिद्ध सुख होय ॥ ५१ ॥
ॐ ह्रीं जिनपुंगवाय नमः अर्घ ।

निजानंद पदको लहो, अविरोधी मल नाश ।
समकित विन निंद्य लोकमें, और नहीं सुखराम ॥ ५२ ॥
ॐ ह्रीं जिनप्रवेदकाय नमः अर्घ ।

जगत शत्रुको जीतिके, कल्पित जिन कहलाय ।
मोहशत्रु जीते सु जिन, उत्तम सिद्ध सुखाय ॥ ५३ ॥
ॐ ह्रीं जिनहंसाय नमः अर्घ ।

द्रव्य भाव दोनो नहीं, उत्तम शिवसुख लीन ।
मन वच तन करि मैं नमूं, निज सम भाव जु कीन ॥ ५४ ॥
ॐ ह्रीं जिनोत्तमसुखधारकाय नमः अर्घ ।

चार संघ नायक प्रभू, शिवमग सुलभ कराय ।
तारण तरण जहानके, मैं वन्दूं शिवराय ॥ ५५ ॥
ॐ ह्रीं जिननायकाय नमः अर्घ ।

स्वयं शुद्ध शिवमार्गमें, आप चलें अनिवार ।
भविजन अग्रेश्वर भये, वन्दूं भक्ति विचार ॥ ५६ ॥
ॐ ह्रीं जिनाग्रिणे नमः अर्घ ।

शिव मारगके चिह्न हो, सुखसागरकी पाल।
शिवपुरके तुम धनी हो, धर्म नगर प्रतिपाल ॥ ५७ ॥

ॐ ह्रीं जिनग्रामणये नमः अर्घं ।

तुम सम और न जगतमें, उत्तम श्रेष्ठ कहाय ।
आप तिरै पर तारतै, वन्दूं तिनके पाय ॥ ५८ ।

ॐ ह्रीं जिनसत्तमाय नमः अर्घं ।

स्वपर कल्याणक प्रभू, पंचकल्याणक ईश ।
श्रीपति शिव-शंकर नमूं, चरणाम्बुज धरि शीश ॥ ५९ ॥

ॐ ह्रीं जिनप्रभवाय नमः अर्घ ।

मोह महाबल दलमलो, विजय लक्ष्मीनाथ ।
परम ज्योति शिवपद लहो, चरन नमूं धरि माथ ॥ ६० ॥

ॐ ह्रीं परमजिनाय नमः अर्घं ।

चहुं गति दुख विनाशिया, पूरा निज पुरुषार्थ ।
नमूं सिद्ध कर जोरिकैं, पाऊं मैं सर्वार्थ ॥ ६१ ॥

ॐ ह्रीं जिनचहुंगतिदुःखान्तकाय नमः अर्घं ।

जीते कर्म निकृष्टको, श्रेष्ठ भये जिनदेव ।
तुम सम और न जगतमें, वन्दूं मैं तिन भेव ॥ ६२ ॥

ॐ ह्रीं जिनश्रेष्ठाय नमः अर्घं ।

आप मोक्ष मग साधियो, और न सुलभ कराय ।
आदि पुरुष तुम जगतमें, धर्म रीति वरताय ॥ ६३ ॥

ॐ ह्रीं जिनज्येष्ठाय नमः अर्घं ।

मुख्य पुरुषारथ मोक्ष है; साधत सुखिया होय।
मैं वन्दूं तिन भक्तिकर, सिद्ध कहावे सोय ॥ ६४ ॥
ॐ ह्रीं जिनमुखाय नमः अर्घ्यं।

सुरपति सम अग्रेश हो, निज पर भासनहार।
आप तिरे भवि तारियो, वन्दूं योग संभार ॥ ६५ ॥
ॐ ह्रीं जिनाग्राय नमः अर्घ्यं।

रागादिक रिपु जीत तुम, श्री जिन नाम धराय।
सिद्ध भये कर जोरिके, वन्दूं तिनके पाय ॥ ६६ ॥
ॐ ह्रीं श्री जिनाय नमः अर्घ्यं।

विषय कषाय न लेश है, द्रष्टि ज्ञान परिपूर्ण।
उत्तम जिन शिवपद लियो, नमत कर्मको चूर्ण ॥ ६७ ॥
ॐ ह्रीं जिनउत्तमाय नमः अर्घ्यं।

चहुं प्रकारके देवता, नित्य नमावत शीश।
तुम देवनके देव हो, नमूं सिद्ध जगदीश ॥ ६८ ॥
ॐ ह्रीं वृन्दारकाय नमः अर्घ्यं।

जो निज सुख होने न दे, सो सत रिपु है जोय।
ऐसे रिपुको जीतके, नमूं सिद्ध जो होय ॥ ६९ ॥
ॐ ह्रीं अरिजिताय नमः अर्घ्यं।

अविनाशी अविकार हो, अचलरूप विख्यात।
जामें विघ्न न लेश है, नमूं सिद्ध कहलात ॥ ७० ॥
ॐ ह्रीं निर्विघ्नसुमरते नम अर्घ्यं।

रागदोष मद मोह अरु, ज्ञानावरण नशाय।
शुद्ध निरंजन सिद्ध हैं, वन्दूं तिनके पाय॥ ७१॥

ॐ ह्रीं विरजसे नमः अर्घ्यं।

मत्सर भाव दुखी करें, निजानन्दको घात।
सो तुम नाशो छिनकमें, सम सुखिया कहलात॥ ७२॥

ॐ ह्रीं निरस्तमस्काय नमः अर्घ्यं।

परकृत भाव न लेश है, भेद कह्यो न जाय।
वचन अगोचर शुद्ध हैं. सिद्ध महा सुखदाय॥ ७३॥

ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः अर्घ्यं।

रागादिक मल विन दिपो, शुद्ध सुवर्ण समान।
शुद्ध निरंजन पद लियो, नमूं चरण धरि ध्यान॥ ७४॥

ॐ ह्रीं निरंजनाय नमः अर्घ्यं।

द्रव्य भाव दो विधि करम, नाश भये शिवराय।
वन्दूं मन वच काय कर, भविजनको सुखदाय॥ ७५॥

ॐ ह्रीं कर्मघ्ने नमः अर्घ्यं।

ज्ञानावर्णी आदि ले, चार घातिया कर्म।
तिनको अन्त खिपाइके, लियो मोक्षपद पर्म॥ ७६॥

ॐ ह्रीं घातिकर्मान्तकाय नमः अर्घ्यं।

ज्ञानावरणी पटल विन. ज्ञान दीप्त परकाश।
शुद्ध सिद्ध परमातमा, वंदित भवदुख नाश॥ ७७॥

ॐ ह्रीं जिनदीप्तये नमः अर्घ्यं।

कर्म रूलावे आत्मा, रागादिक उपजाय।
तिनसों कर्म विनाशकैं, सिद्ध भये सुखदाय॥ ७८॥
ॐ ह्रीं कर्ममर्मभिदे नमः अर्घं।
पाप कलाप न लेश है, शुद्धाशुद्ध विख्यात।
मुनि मन मोहन रूप है, नमूं जोरि जुग हाथ॥ ७९॥
ॐ ह्रीं अनुदयाय नमः अर्घं।
राग नहीं थुतिकारसों, निंदक मो नहीं द्वेष।
सम सुखिया आनंद घन, वन्दूं सिद्ध हमेश॥ ८०॥
ॐ ह्रीं वीतरागाय नमः अर्घं।
क्षुधा वेदनी नाशकर, स्वै सुख भुंजन हार।
निजानन्द सन्तुष्ट हैं, वन्दूं भाव विचार॥ ८१॥
ॐ ह्रीं अक्षुधाय नमः अर्घं।
एक दृष्टि सबको लखें, इष्ट अनिष्ट न कोई।
द्वेष अंश व्यापै नहीं, सिद्ध कहावत सोय॥ ८२॥
ॐ ह्रीं अद्वेषाय नमः अर्घं।
भवसागरके तीर हो, शिवपुरके हैं राह।
मिथ्यातम हर सूर्य हो, मै वन्दूं हूं ताहि॥ ८३॥
ॐ ह्रीं निर्मोहाय नमः अर्घं।
जग जनमें यह दोष है, सुखी दुखी बहु भेव।
ते सब दोष निवारियो, उत्तम हैं स्वयमेव॥ ८४॥
ॐ ह्रीं निर्मदाय नमः अर्घं।
जनम मरण यह रोग है, तिनको कठिन इलाज।

परमौषध यह रोगकी, वन्दूं मेटन काज ॥ ८५ ॥

ॐ ह्रीं अगदाय नमः अर्घं।

राग कहो ममता कहो, मोह कर्म सो होय।
सो जिन मोह विनाशियो, नमूं सिद्ध है सोय ॥ ८६ ॥

ॐ ह्रीं निर्ममत्वाय नमः अर्घं।

तृष्णा दुखको मूल है, सुखी भये तिस नाश।
मन वच तन करि मैं नमूं, है आनंद विलास ॥ ८७ ॥

ॐ ह्रीं वीततृष्णाय नमः अर्घं।

अन्तर बाह्य निरइछ हैं, एकी रूप अनूप।
निष्पृह परमेश्वर नमूं, निजानन्द शिवभूप ॥ ८८ ॥

ॐ ह्रीं असंगाय नमः अर्घं।

क्षायिक समकितको धरैं, निर्भय थिरता रूप।
निजानन्दसों नहिं चिगें, वन्दूं मैं शिवभूप ॥

ॐ ह्रीं निर्भयाय नमः अर्घं।

स्वप्न प्रमादी जीवके, अल्प-शक्ति सो होय।
निज बल अतुल महा धरै, सिद्ध कहावे सोय ॥ ८९ ॥

ॐ ह्रीं अस्वपनाय नमः अर्घं।

दर्श ज्ञान सुख भोगतें, खेद न रंचक होय।
सो अनंत बलके धनी, सिद्ध नमामी सोय ॥ ९० ॥

ॐ ह्रीं निश्श्रमाय नमः अर्घं।

युगपत सब प्रापत भये, जानत है सब भेव।
संशय विन आश्चर्य नहीं, नमूं सिद्ध स्वयमेव ॥ ९१ ॥

ॐ ह्रीं निःसंशयाय नमः अर्घं।

सिद्ध सनातन कालमें, जगमें हैं परसिद्ध।
नथा जन्म जर नहीं धरै, नमूं जोरि कर सिद्ध॥ ९३॥

ॐ ह्रीं अजन्मिने नमः अर्घं।

भ्रम विन ज्ञान प्रकाशमें, भासें जीव अजीव।
संशय विन निश्चल सुखी, वन्दूं सिद्ध सदीव॥ ९४॥

ॐ ह्रीं निस्वेदाय नमः अर्घं।

तुम पूरण परमातमा, सदा रहो इक सार।
जरा न व्यापै तुम विषै, नमूं सिद्ध अविकार॥ ९५॥

ॐ ह्रीं निर्जराय नमः अर्घं।

तुम पूरण परमातमा. अन्त कभी नहीं होय।
मरण रहित वन्दूं सदा, देउ अमर पद सोय॥ ९६॥

ॐ ह्रीं अमराय नमः अर्घं।

निजानन्दके भोगमें, कभी न आरत आय।
यातैं तुम अरतीत हो, वन्दूं सिद्ध सुभाय॥ ९७॥

ॐ ह्रीं अरतीताय नमः अर्घं।

होन नहीं सोचन करै, ज्ञान धर्म परतक्ष।
नमूं सिद्ध परमात्मा. पाऊं ज्ञान अलक्ष॥ ९८॥

ॐ ह्रीं निश्चिताय नमः अर्घं।

जानत है सब ज्ञेयको, पर ज्ञेयनतैं भिन्न।
यातैं निर्विषयी सदा, लेश न भोगैं अन्य॥ ९९॥

ॐ ह्रीं निर्विषयाय नमः अर्घं।

अर्हंकार आदिक त्रिपट्, तुम पद निवसैं नाहिं ।
सिद्ध भये परमात्मा, मैं वन्दूं हूं ताहि ॥ १०० ॥
ॐ ह्रीं त्रिषड्जिते नमः अर्घं ।
जेते गुण परजाय हैं, द्रव्य अनन्त सुकाल ।
तिनको तुम जानो प्रभू, वन्दूं मैं नमि भाल ॥ १०१ ॥
ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय नमः अर्घं ।
ज्ञान आरसी तुम विषैं, झलके ज्ञेय अनन्त ।
सिद्ध भये तिनको नमें, तीनों काल सु सन्त ॥ १०२ ॥
ॐ ह्रीं सर्वविदे नमः अर्घं ।
चक्षु अचक्षु न भेद हैं, समदर्शी भगवान ।
नमूं सिद्ध परमातमा, तीनो जोग प्रधान ॥ १०३ ॥
ॐ ह्रीं सर्वदर्शिने नमः अर्घं ।
देखन कछु बाकी नहीं, तीनों काल मझार ।
सर्वालोकी सिद्ध हैं, नमूं त्रियोग समार ॥ १०४ ॥
ॐ ह्रीं सर्वावलोकाय नमः अर्घं ।
तुम सम पराक्रम और सब, जगवासीमें नाहिं ।
निज बल शिवपद साधियो, मैं वन्दूं हूं ताहि ॥ १०५ ॥
ॐ ह्रीं अनन्तविक्रमाय नमः अर्घं ।
निजसुख भोगत नहीं चिगे, वीर्य अनन्त धराय ।
तुम अनन्त बलके धनी, वन्दूं मन वच काय ॥ १०६ ॥
ॐ ह्रीं अनन्तवीर्याय नमः अर्घं ।
सुखाभास जग जीवके, पर निमित्तसे होय ।

निज आश्रय पूरण सुखी, सिद्ध कहावै सोय ॥ १०७ ॥

ॐ ह्रीं अनन्तसुखाय नमः अर्घ ।

निज सुखमें सुख होत है, पर सुखमें सुख नाहिं ।
सो तुम निज सुखके धनी, मैं वंदूं हूं ताहि ॥ १०८ ॥

ॐ ह्रीं अनन्तसौख्याय नमः अर्घ ।

तीन लोक तिहुं कालके, गुण पर्यय कछु नाहिं ।
जाको तुम जानों नहीं, ज्ञान भानुके माहि ॥ १०९ ॥

ॐ ह्रीं विश्वज्ञानाय नमः अर्घ ।

द्रव्य तथा गुण पर्यको, देखै एकीवार ।
विश्व दर्श तम नाम है, वंदो भक्ति विचार ॥ ११० ॥

ॐ ह्रीं विश्वदर्शिने नमः अर्घ ।

संपूरण अवलोकतें, दर्शन धरो अपार ।
नमूं सिद्ध कर जोरिके, करो जगतसे पार ॥ १११ ॥

ॐ ह्रीं अखिलार्थदर्शिने नमः अर्घ ।

इन्द्रिय ज्ञान परोक्ष है, क्रमवर्ती कहलाय ।
विन इन्द्रिय प्रत्यक्ष है, धरो ज्ञान सुखदाय ॥ ११२ ॥

ॐ ह्रीं निष्पक्षदर्शनाय नमः अर्घ ।

विश्व मांहि तुम अर्थ सब, देखो एकीवार ।
विश्व चक्षु तुम नाम हैं, वन्दूं भक्ति विचार ॥ ११३ ॥

ॐ ह्रीं विश्वचक्षुषे नमः अर्घं ।

तीन लोकके अर्थ जे, बाकी रहो न शेष ।
युगपति तुम सब जानियो, गुण पर्याय विशेष ॥ ११४ ॥

ॐ ह्रीं अशेषविदे नमः अर्घ ।

परार्धीन अरु विघ्न विन, है सांचा आनन्द।
सो शिवगतिमें तुम लियो, मैं वन्दूं सुखकंद ॥ ११५ ॥
ॐ ह्रीं आनन्दाय नमः अर्घं।
सत प्रशंसता नित्त वहै, या सद्भाव सरूप।
सो तुममें आनन्द है, वन्दत हूं शिवभूप ॥ ११६ ॥
ॐ ह्रीं सदानन्दाय नमः अर्घं।

उदय महा सत रूप है, जामें असत न होय।
अन्तराय अरु विघन विन, सत्य उदै है सोय ॥११७॥
ॐ ह्रीं सदोदयाय नमः अर्घं।
नित्यानन्द महासुखी, हीनाधिक नहीं होय।
नहीं गत्यन्तर रूप हो, शिवगतिमें है सोय ॥११८॥
ॐ ह्रीं नित्यानंदाय नमः अर्घं।
जामों परे न और सुख, अहमिन्द्रनमें नाहिं।
सोई श्रेष्ठ सुख भोगते, वन्दूं हूं मैं ताहि ॥११९॥
ॐ ह्रीं परमानंदाय नमः अर्घं।

पूरण सुखकी हद धरैं, सो महान आनंद।
सो तुम पायो शिव-धनी, वन्दूं पद अरविंद ॥ १२० ॥
ॐ ह्रीं महानंदाय नमः अर्घं।
उत्तम सुख स्वाधीन है, परम नाम कहलाय।
चारों गतिमें सो नहीं, तुम पायो सुखदाय ॥ १२१ ॥
ॐ ह्रीं परमानंदाय नमः अर्घं।
जामें विघन न लेश है, उदय तेज विज्ञान।

जाको हम जानत नहीं, सुलभ रूप विधि दान ॥१२२॥

ॐ ह्रीं परोदयाय नमः अर्घ्यं ।

परम शक्ति परमातमा, पर सहाय विन आप ।
स्वयं वीर्य आनंदके, नमत कटैं सब पाप ॥ १२३ ॥

ॐ ह्रीं परमौजसे नमः अर्घ्यं ।

महातेजके पुंज हो, अविनाशी अविकार ।
झलकत ज्ञानाकार सब, दर्पण वल आधार ॥ १२४ ॥

ॐ ह्रीं परमतेजसे नमः अर्घ्यं ।

परम धाम उतकृष्ट पद, मोक्ष नाम कहलाय ।
जासों फिर आवत नहीं, जन्म मरण नहीं पाय ॥१२५॥

ॐ ह्रीं परमधाम्ने नमः अर्घ्यं ।

जग गुरु सिद्ध परमातमा, जगत सूर्य शिव नाम ।
परम हंस योगीश हैं, लियो मोक्ष अभिराम ॥ १२६ ॥

ॐ ह्रीं परमहंसाय नमः अर्घ्यं ।

दिव्यज्योति स्वज्ञानमें, तीन लोक प्रतिभास ।
शंका विन विश्वास कर, निजपर कियो प्रकाश ॥१२७॥

ॐ ह्रीं प्रत्यक्षज्ञात्रे नमः अर्घ्यं ।

निज विज्ञान सु ज्योतिमें, संशय आदिक नाहिं ।
सो तुम सहन प्रकाशियो, मैं वन्दूं हूं ताहि ॥१२८॥

ॐ ह्रीं ज्योतिषे नमः अर्घ्यं ।

शुद्ध बुद्ध परमातमा, परम ब्रह्म कहलाय ।
सर्व लोक उतकृष्ट पद, पायो वन्दूं पाय ॥ १२९ ॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे नमः अर्घं ।

चार ज्ञान नहीं जासमें, शुद्ध सुरूप अनूप ।
परको नाहिं प्रवेश है, एकाकी शिव रूप ॥ १३० ॥

ॐ ह्रीं परमरहसे नमः अर्घं ।

निज गुण द्रव्य पर्यायमें, भिन्न भिन्न सब रूप ।
एक क्षेत्र अवगाह करि, राजत हैं चिद्रूप ॥ १३१ ॥

ॐ ह्रीं प्रत्यज्ञात्मने नमः अर्घं ।

शुद्ध बुद्ध परमातमा, निज विज्ञान प्रकाश ।
स्वै आतमके बोधतें, कियो कर्मको नाश ॥ १३२ ॥

ॐ ह्रीं प्रबोधात्मने नमः अर्घं ।

कर्म मैलसे लिप्त हैं, जगति आत्म दिन रेन ।
कर्म नाश महापद लियो, वन्दूं हूं सुख देन ॥ १३३ ॥

ॐ ह्रीं महात्मने नमः अर्घं ।

आतमको गुण ज्ञान है, यही यथारथ होय ।
ज्ञानानन्द ऐश्वर्यता, उदय भयो है सोय । १३४ ॥

ॐ ह्रीं आत्ममहोदाय नमः अर्घं ।

दर्श ज्ञान सुख वीर्यको, पाय परम पद होय ।
सो परमातम तुम भये, नमूं जोर कर दोय ॥ १३५ ॥

ॐ ह्रीं परमात्मने नमः अर्घं ।

मोहकर्मके नाशतें, शांति भये सुख देन ।
क्षोभ रहित पर शांति हो, शांत नमूं सुख लेन ॥ १३६ ॥

ॐ ह्रीं प्रशांतात्मने नमः अर्घं ।

पूरण पद तुम पाइयो, बातें परे न कोय ।
तुम समान नहीं और हैं, वन्दूं हूं पद दोय ॥ १३७ ॥

ॐ ह्रीं परमात्मने नमः अर्घं ।

पुद्गल कृत तन छारकै, निज आतममें वास ।
स्वै प्रदेश ग्रहके विषैं, नित ही करत विलास ॥ १३८ ॥

ॐ ह्रीं आत्मनिकेतनाय नमः अर्घं ।

औगनको नित देत हैं, शिवसुख भोगें आप ।
परम इष्ट तुम हो सदा, निज सम करत मिलाप ॥१३९॥

ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः अर्घं ।

मोक्ष लक्ष्मी नाथ हो, भक्तिन प्रति नित देत ।
महा इष्ट कहलात हो, वन्दूं शिवसुख हेत ॥ १४० ॥

ॐ ह्रीं महितात्मने नमः अर्घं

रागादिक मल नासिकै, श्रेष्ठ भये जगमांहि ।
सो उपासना करणको, तुम सम कोई नाहिं ॥ १४१ ॥

ॐ ह्रीं श्रेष्ठात्मने नमः अर्घं ।

परमें ममत विनाशकै, स्व आत्म थिर धार ।
पर विकल्प संकल्प विन, तिष्ठो सुख आधार ॥ १४२ ॥

ॐ ह्रीं स्वात्मनिष्ठिताय नमः अर्घं ।

स्व आतममें मग्न हैं, स्व आतम लवलीन ।
परमें भ्रमण करैं नहीं. सन्त चरण शिर दीन ॥ १४३ ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय नमः अर्घं ।

तीन लोकके नाथ हो, इन्द्रादिक कर पूज ।
तुम सम और महानता, नहिं धारत हैं दूज ॥ १४४ ॥
ॐ ह्रीं महाजेष्ठाय नमः अर्घ ।
तीन लोक परसिद्ध हो, सिद्ध तुम्हारा नाम ।
सर्व सिद्धताईस हो, पूरहु सबके काम ॥ १४५ ॥
ॐ ह्रीं निरूढ़ात्मने नमः अर्घ ।
स्वै आतम थिरता धरैं, नहीं चलाचल होय ।
निश्चल परम सुभावमें, भये प्रकृतिको खोय ॥ १४६ ॥
ॐ ह्रीं द्रढ़ात्मने नमः अर्घ ।
क्षयोपशम नानाविधैं, क्षायक एक प्रकार ।
सो तुममें नहीं औरमें, वन्दूं भाव लगार ॥ १४७ ॥
ॐ ह्रीं एकविद्याय नमः अर्घ ।
कर्म पटलके नाशतें, निर्मल ज्ञान उदार ।
तुम महान विद्या धरैं, वन्दूं योग संभार ॥ १४८ ॥
ॐ ह्रीं महानविद्याय नमः अर्घ ।
परम पूज्य परमेश पद, पूरण ब्रह्म कहाय ।
पायो सहज महान पद, वन्दूं तिनके पाय ॥ १४९ ॥
ॐ ह्रीं महापदेश्वराय नमः अर्घ ।
पंच परम पद पाईयो, ब्रह्म नाम है एक ।
पूजूं मन वच काय करि, नाशै विघन अनेक ॥ १५० ॥
ॐ ह्रीं पंचब्रह्मणे नमः अर्घ ।
निज विभूति सर्वस्व तुम, पायो सहज सुभाव ।

हीनाधिक बिन विलसते, वन्दूं ध्यान लगाय ॥ १५१ ॥

ॐ ह्रीं सर्वाय नमः अर्घं ।

पूरन पंडित ईश. हो, बुद्ध धाम अभिराम ।
वन्दूं मन वच काय करि, पाऊं मोक्ष सु धाम ॥ १५२ ॥

ॐ ह्रीं सर्वविदेश्वराय नमः अर्घं ।

मोह कर्म चकचूरतें, स्वाभाविक शुभ चाल ।
शुभ परिणाम धरैं सदा, वंदूं नित नमि भाल ॥ १५३ ॥

ॐ ह्रीं सुचये नमः अर्घं ।

ज्ञान दर्श, आवर्ण विन, दीपो नंताऽनंत ।
सकल ज्ञेय प्रतिभास है, नमै तुम्हें नित संत ॥ १५४ ॥

ॐ ह्रीं अनंतदीप्तये नमः अर्घं ।

इक इक गुण प्रति छेदको, पार न पायो जाय ।
सो गुण रास अनंत हैं, वंदूं तिनके पाय ॥ १५५ ॥

ॐ ह्रीं अनंतात्मने नमः अर्घं ।

अहमिंद्रनकी शक्ति जो, करो अनंती रास ।
सो तुम शक्ति अनंत गुण, करै अनंत प्रकाश ॥ १५६ ॥

ॐ ह्रीं अनंतशक्तये नम अर्घं ।

छायक दर्शन जोतिमें, निरावरण परकास ।
सो अनंत द्रग तुम धरौ, नमैं चरण नित दास ॥ १५७ ॥

ॐ ह्रीं अनंतदर्शये नमः अर्घं ।

जाकी शक्ति अपार है, हेत अहेत प्रसिद्ध ।
गणधरादि जानत नहीं, मैं वंदूं नित सिद्ध ॥ १५८ ॥

ॐ ह्रीं अनंतसिद्धये नमः अर्घ ।

चेतन शक्ति अनंत है, निरावरण जो होय ।
सो तुम पायो सहज ही, कर्म-पुंजको खोय ॥ १५९ ॥

ॐ ह्रीं अनंतचिदेशाय नमः अर्घ

जो सुख है निज आश्रये, सो सुख परमें नाहिं ।
निजानन्द रस लीन हैं, मैं वन्दूं हूं ताहि ॥ १६० ॥

ॐ ह्रीं अनन्तमुदे नमः अर्घ ।

जाके कर्म लिये न फिर, दिये सदा निरधार ।
सदा प्रकाशक सहित है, वन्दूं योग सम्हार ॥ १६१ ॥

ॐ ह्रीं सदाप्रकाशाय नमः अर्घ ।

निजानन्दके माहि हैं, सर्व अर्थ परसिद्ध ।
सो तुम पायो सहज ही, नमत मिले नवनिद्ध ॥ १६२ ॥

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धेभ्यो नमः अर्घ ।

अति सूक्षम जे अर्थ हैं, काय अकाय कहाय ।
साक्षात् सबको लखो, वन्दूं तिनके पांय ॥ १६३ ॥

ॐ ह्रीं साक्षात्कारिणे नमः अर्घ ।

सकल गुणनमय द्रव्य हो, शुद्ध सुभाव प्रकाश ।
तुम समान नहीं दूसरो, वन्दत पूरै आश ॥ १६४ ॥

ॐ ह्रीं समग्रर्द्धये नमः अर्घ ।

सर्व कर्मको छीन करि, जरी जेवरी सार ।
सो तुम धूलि उडाइयो, वन्दूं भक्ति विचार ॥ १६५ ॥

ॐ ह्रीं कर्मक्षीणाय नमः अर्घ ।

चहुं गत जगत कहात है, ताको करि विध्वंश ।
अमर अचल शिवपुर वसे, मर्म न राखो अंश ॥ १६६ ॥
ॐ ह्रीं जगद्विध्वंसिने नमः अर्घं ।

इन्द्री मन व्यापारमें, जाको नहिं अधिकार ।
सो अलक्ष आतम प्रभू, होउ सुमति दातार ॥ १६७ ॥
ॐ ह्रीं अलक्षात्मने नमः अर्घं ।

नहीं चलाचल अचल है, नहीं भ्रमण थिर धार ।
सो शिवपुरमें वसत है, वन्दूं भक्ति विचार ॥ १६८ ॥
ॐ ह्रीं अचलस्थानाय नमः अर्घं ।

पर कृत नमन बिगाड है, सोई दुविधा जान ।
सो तुममें नहीं लेश है, निराबाध परमाण ॥ १६९ ॥
ॐ ह्रीं निराबाधाय नमः अर्घं ।

जैसे हो तुम आदिमें, सोई हो तुम अन्त ।
एक भांति निवसें सदा, वंदत है नित सन्त ॥ १७० ॥
ॐ ह्रीं प्रतिज्ञानात्मने नमः अर्घं ।

धर्मनाथ जगदीश हो, सुर मुनि माने आन ।
मिथ्यामत नहीं चलत है, तुम आगे परमाण ॥ १७१ ॥
ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः अर्घं ।

ज्ञान शक्ति उतकृष्ट है, धर्म गर्व तिस माहिं ।
श्रेष्ठ ज्ञान तुम पुञ्ज हो, पर निमित्त कछु नाहिं ॥१७२॥
ॐ ह्रीं विदांवराय नमः अर्घं ।

निज अभावसे मुक्त हो, कहैं कुवादी लोग ।

भूतात्मा सो मुक्त हैं, सो तुम पायो जोग ॥ १७३ ॥

ॐ ह्रीं भूतात्मने नमः अर्घ

सहज सुभाव प्रकाशियो, पर निमित कछु नाहि ।
सो तुम पायो सुलभतें, स्व सुभावके मांहि ॥ १७४ ॥

ॐ ह्रीं महजज्योतिषे नमः अर्घ ।

विश्व नाम तिहुँ लोकमें, तिसमें करत प्रकाश ।
विश्वज्योति कहलात हैं, नमत मोह तम नाश ॥ १७५ ॥

ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे नमः अर्घं ।

फरश आदि पन इन्द्रियां, द्वार ज्ञान कछु नाहिं ।
यातें अतिइन्द्रिय कहो, जिन सिद्धांतके मांहि ॥ १७६ ॥

ॐ ह्रीं अतींद्रियाय नमः अर्घ ।

एक मान असहाय हो, शुद्ध बुद्ध निर अंश ।
केवल तुमको धर्म है, नमें तुम्हें नित मंत ॥ १७७ ॥

ॐ ह्रीं केवलाय नमः अर्घ ।

लौकिक जन या लोकमें, तुम सारू गुण नाहिं ।
केवल तुमहीमें वसै, मैं वन्दूं हूं ताहि ॥ १७८ ॥

ॐ ह्रीं केवलअवलोकनाय नमः अर्घं ।

लोक अनंत कहो सही, तातें नन्तानन्त ।
है अलोक अवलोकियो, तुम्हैं नमें नित संत ॥ १७९ ॥

ॐ ह्रीं लोकालोकअवलोकाय नमः अर्घ ।

ज्ञान द्वार निज शक्ति हो, फैलो लोकालोक ।
भिन्न भिन्न सब जानियो, नमूं चरण दे धोक ॥ १८० ॥

ॐ ह्रीं विवृताय नमः अर्घं ।

विन सहाय निज शक्ति हो, प्रगटो आपोआप
स्वयं बुद्ध स्वै सिद्ध है, नमत नसें सब पाप ॥ १८१ ॥

ॐ ह्रीं केवलाय नमः अर्घं ।

सूक्षम सुभग सुभावतें, मन इन्द्री नहिं ज्ञात ।
वचन अगोचर गुण धरें, नमूं चरन दिन रात ॥ १८२ ॥

ॐ ह्रीं अव्यक्ताय नमः अर्घं ।

कर्म उदय दुख भोगवें, सबे जीव संसार ।
तिन सबको तुम ही शरण, देहो सुक्ख अपार ॥ १८३ ॥

ॐ ह्रीं सर्वशरणाय नमः अर्घं ।

चितवनमें आवे नहीं, पार न पावे कोय ।
महा विभवके हो धनी, नमूं जोर कर दोय ॥ १८४ ॥

ॐ ह्रीं अचिन्त्यविभवाय नमः अर्घं ।

छहो कायके वासको, विश्व कहै सब लोक ।
तिनके थंभनहार हो, राज काजके जोग ॥ १८५ ॥

ॐ ह्रीं विश्वभृते नमः अर्घं ।

घट घटमें राजो सदा, ज्ञान द्वार सब ठोर ।
विश्व रूप जीवात्म हो, तीन लोक सिर मोर ॥ १८६ ॥

ॐ ह्रीं विश्वरूपात्मने नमः अर्घं ।

घट घटमें निज व्याप्त हो, ज्यों घर दीपक जोति ।
विश्वनाथ तुम नाम है, पूजत शिवसुख होत ॥ १८७ ॥

ॐ ह्रीं विश्वआत्मने नमः अर्घं ।

इन्द्रादिक जे विश्वपति, तुम पद पूजें आन।
यातें सुखिया ही सही, मैं पूजूं धरि ध्यान॥ १८८॥
ॐ ह्रीं विश्वतोसुखाय नमः अर्घं।
ज्ञान द्वार सब जगतमें, व्यापि रहे भगवान।
विश्वव्यापि मुनि कहत है, ज्यूं नभमें शशि भान॥१८९॥
ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने नमः अर्घं।
निरावरण निरलेप हैं, तेज रूप विख्यात।
ज्ञान कला पूरण धरें, मै वन्दूं दिन रात॥ १९०॥
ॐ ह्रीं विश्वजोतिषे नमः अर्घ।
चिंतवनमें आवे नहीं, धारें सुगुण अपार।
मन वच काय नमूं सदा, मिटे सकल संसार॥ १९१॥
ॐ ह्रीं अचिंत्यात्मने नमः अर्घं।
नय प्रमाणको गमन नहीं, स्वयं ज्योति परकाश।
अद्भुत गुण पर्यायमें, सुखसूं करे विलास॥ १९२॥
ॐ ह्रीं अमितप्रभावाय नमः अर्घं।
मती आदि क्रमवर्त्त विन, केवल लक्ष्मीनाथ।
महाबोध तुम नाम है, नमूं पाय धरि माथ॥ १९३॥
ॐ ह्रीं महाबोधाय नमः अर्घं।
कर्मयोगतें जगतमें, जीव शक्तिका नाश।
स्वयं वीर्य अद्भुत धरें, नमूं चरण सुखरास॥ १९४॥
ॐ ह्रीं महावीर्याय नमः अर्घं।
छायक लब्धि महान है, ताको लाभ लहाय।

ॐ ह्रीं अरहन्ताय नमः अर्घं ।

सुरनर पूजत चरण युग, द्रव्य अर्घ जुत भाव ।

महाअर्घ तुम नाम हैं, पूजत कर्म उड़ाव ॥ २०३ ॥

ॐ ह्रीं महाअर्घाय नमः अर्घं ।

शत इन्द्रन करि पूज्य हो, अहमिंद्रनके ध्येय ।

द्रव्य भाव करि पूज्य हो, पूजक पूज्य अमेय ॥ २०४ ॥

ॐ ह्रीं मयवार्चिताकाय नमः अर्घं ।

छहो द्रव्य गुणपर्यको, जानत भेद अनन्द ।

महापुरुष त्रिभुवन धनी, पूजत हैं नित मन्द ॥ २०५ ॥

ॐ ह्रीं भूतार्थयज्ञपुरुषाय नमः अर्घं ।

तुमसो कछु छाना नहीं, तीन लोकका खेद ।

दर्पण तल सम भास है, नमत कर्ममल छेद ॥ २०६ ॥

ॐ ह्रीं भूतार्थयज्ञाय नमः अर्घं ।

सकल ज्ञेयके ज्ञानतें, हो सबके सिरमौर ।

पुरुषोत्तम तुम नाम हैं, तुम लग भवकी दौर ॥ २०७ ॥

ॐ ह्रीं भूतार्थक्रतुपुरुषाय नमः अर्घं ।

स्वयं बुद्ध शिवमग चरत, स्वयं बुद्ध अविरुद्ध ।

शिवमग चारी नित जजें, पावैं आतम शुद्ध ॥ २०८ ॥

ॐ ह्रीं पूज्याय नमः अर्घं ।

सब देवनके देव हो, तीन लोकके पूज्य ।

मिथ्या तिमिर निवारते, सूरज और न दूज ॥ २०९ ॥

ॐ ह्रीं भट्टारकाय नमः अर्घं ।

सुरनर मुनिके पूज्य हो, तुमसे श्रेष्ठ न कोय ।
तीन लोकके स्वामी हो, पूजत शिवसुख होय ॥ २१० ॥
ॐ ह्रीं तत्रभवते नमः अर्घं ।

महापूज्य महा मान्य हो, स्वयंबुद्ध अविकार ।
मन वच तनसे ध्यावते, सुरनर भक्ति विचार ॥ २११ ॥
ॐ ह्रीं अत्र भवते नमः अर्घं ।

महाज्ञान केवल कहो, सो दीखे तुम मांहि ।
महा नामसों पुजिये, संसारी दुख नाहिं ॥ २१२ ॥
ॐ ह्रीं महते नमः अर्घं ।

पूज्यपणा नहीं औरमें, इक तुमहीमें जान ।
महा अर्ह तुम गुण प्रभू, पूजत हो कल्याण ॥ २१३ ॥
ॐ ह्रीं महाअर्हाय नमः अर्घं ।

अचल शिवालयके विषै, अमित काल रहै राज ।
चिरंजीवी कहलात हो, वन्दूं शिवसुख काज ॥ २१४ ॥
ॐ ह्रीं तत्रायुषे नमः अर्घं ।

मरण रहित शिवपद लसै, काल अनंतानन्त ।
दीर्घायु तुम नाम हैं, वन्दत नितप्रति संत ॥ २१५ ॥
ॐ ह्रीं दीर्घायुषे नमः अर्घं ।

सकल तत्वके अर्थ कहि, निराबाध निरशंस ।
धर्ममार्ग प्रगटाइयो, नमत मिटै दुख अंश ॥ २१६ ॥
ॐ ह्रीं अर्थवाचे नमः अर्घं ।

मुनिजन नितप्रति ध्यावतें, पावें निज कल्याण ।

सज्जन जन आराध्य हो, मैं ध्याऊं धरि ध्यान ॥२१७॥

ॐ ह्रीं सज्जनवल्लभाय नमः अर्घं ।

शिवसुख जाको ध्यावतें, पावें सन्त मुनीन्द्र ।

परमाराध्य कहात हो, पायो नाम अतीन्द्र ॥ २१८ ॥

ॐ ह्रीं परमाराध्याय नमः अर्घं ।

पंचकल्याण प्रसिद्ध हैं, गर्भ आदि निर्वाण ।

देवन करि पूजत भये, पायो शिवसुख थान ॥ २१९ ॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणपूजिताय नमः अर्घं ।

देखो लोकालोकको, हस्त रेखकी सार ।

इत्यादिक गुण तुम विषैं, दीखे उदय अपार ॥ २२० ॥

ॐ ह्रीं दृगविशुद्धिगुणोदयाय नमः अर्घं ।

छायक समकितको धरें, सौधर्मादिक इन्द्र ।

तुम पूजन परभावतें, अन्तिम होय जिनेन्द्र ॥ २२१ ॥

ॐ ह्रीं सुरार्चिताय नमः अर्घं ।

निर्विकल्प शुभ चिह्न है, वीतराग सो होय ।

सो तुम पायो सहज ही, नहिं जोर कर दोय ॥ २२२ ॥

ॐ ह्रीं सुखदात्मने नमः अर्घं ।

स्वर्ग आदि सुख थानके, हो परकाशन हार ।

दीप्त रूप बलवान है, तुम मारग सुखकार ॥ २२३ ॥

ॐ ह्रीं दिवौजसे नमः अर्घं ।

गर्भ कल्याणकके विषैं, तुम माता सुखकार ।

षट् कुमारका सेवती, पावें भवदधि पार ॥ २२४ ।

ॐ ह्रीं सचीसेवितमातकाय नमः अर्घं।

अति उत्तम तुम गर्भ है, भवदुख जन्म निवार।
रतराशि दिवलोकतें, वर्षे मूसलधार ॥ २२५ ॥

ॐ ह्रीं रत्नगर्भाय नमः अर्घं।

सुर शोधनतें गर्भमें, दर्पण सम आकार।
यो पवित्र तुम गर्भ है, पावै शिवसुख सार ॥ २२६ ॥

ॐ ह्रीं पूतिगर्भाय नम अर्घं।

जाके गर्भागमनते, पहले उतसव ठान।
दिव्य नारि मंगल सहित, पूजत श्री भगवान ॥ २२७ ॥

ॐ ह्रीं गर्भोत्सवोत्सवसहिताय नमः अर्घं।

नित नित आनंद उपधैरं, सुर सुरीय हरषात।
मंगल साज समाज सब, उपजावै दिन रात ॥ २२८ ॥

ॐ ह्रीं नित्योपचारोपचिताय नमः अर्घं।

केवलज्ञान सुलक्ष्मी, धरत महा विस्तार।
चरणकमल सुर मुनि जजैं, हम पूजत हित धार ॥२२९॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभवाय नमः अर्घं।

तिहु विधि तन मल धोयकर, उज्जल निर्मल होय।
शिव आलममे वसत हैं, शुद्ध सिद्ध हैं सोय ॥ २३० ॥

ॐ ह्रीं निष्किलाय नमः अर्घं।

असंख्यात परदेशमें, अन्य प्रदेश न होय।
स्वयं स्वभाव स्वजाति हैं, मैं प्रणमामि सोय ॥ २३१ ॥

ॐ ह्रीं स्वयंस्वभावाय नम अर्घं।

पूज्य यज्ञ आराधना, जो कुछ भक्ति प्रमान ।
तुम ही सबके मूल हो, नमत अमंगल हान ॥ २३२ ॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञमनसे नमः अर्घं ।

सूर्य सुमेरु समान हो, भा सुरतरुकी ठौर ।
महा पुन्यकी राश हो, सिद्ध नमूं कर जोर ॥ २३३ ॥

ॐ ह्रीं पुन्यांगाय नमः अर्घं ।

ज्यूं सूरज मध्याह्नमें, दिपै अनंत प्रभाव ।
त्यों तुम ज्ञानकला दिपै, मिथ्या तिमिर अभाव ॥२३४॥

ॐ ह्रीं भास्वते नम अर्घं ।

चहुंविधि देवनमें सदा, तुम मम देव न आन ।
निजानंदमें केलिकर, पूजत हूं धरि ध्यान ॥ २३५ ॥

ॐ ह्रीं अद्भुतदेवाय नम अर्घं ।

विश्व ज्ञात युगपद धरैं, ज्यूं दर्पण आकार ।
स्वपर परकाशक हो सही, नमूं भक्ति उर धार ॥२३६॥

ॐ ह्रीं विश्वज्ञातृसम्भृते नमः अर्घं ।

सत स्वरूप सत ज्ञान है, तुम ही पूज्य निरधान ।
पूजत हैं नित विश्वजन, देव मान परमान ॥ २३७ ॥

ॐ ह्रीं विश्वदेवाय नमः अर्घं ।

सृष्टीको सुख करत हो, हरण दुक्ख भवत्रास ।
मोक्ष लक्ष्मी देत हो, जन्म जरा मृत नास ॥ २३८ ॥

ॐ ह्रीं सृष्टीनिर्वृत्ताय नमः अर्घं ।

इन्द्र सहस लोचन किये, निरखत रूप अपार ।

मोक्ष लहे सो नेमतें, मैं पूजूं निरधार ॥ २३९ ॥

ॐ ह्रीं महस्राक्षदृगोत्सवाय नमः अर्घं ।

संपूरण निज शक्तिके, है परताप अनन्त ।

सो तुम विस्तीरण करो, नमें चरण नित संत ॥ २४० ॥

ॐ ह्रीं सर्वशक्तये नमः अर्घं ।

ऐरावतपर रूढ़ है, देव नृत्यता मांड ।

पूजत है मो भक्तिमों, मेटि भवार्णव हांड ॥ २४१ ॥

ॐ ह्रीं देवैरावताइने नमः अर्घं ।

सुरनर चारण मुनि जजैं, सुलभ गमन आकाश ।

परिपूरण हर्षात हैं, पूरै मनकी आश ॥ २४२ ॥

ॐ ह्रीं हर्षाकुलामरखगचारणर्षिमतोत्सवाय नमः अर्घं ।

रक्षक हो षट कायके, शरणागति प्रतिपाल ।

सर्व व्यापि निज ज्ञानतें, पूजत होय निहाल ॥ २४३ ॥

ॐ ह्रीं विष्णवे नमः अर्घं ।

महा उच्च आसन प्रभू, हैं सुमेर विख्यात ।

जन्म अभिषेक सुरेन्द्र करि, पूजत मन उमगात ॥ २४४ ॥

ॐ ह्रीं स्नानपीठइन्द्रराजते नमः अर्घं ।

जाकरि तरिए तीर्थमो, माने मुनिगण मान्य ।

तुम मम कौन जु श्रेष्ठ हैं, असन्यार्थ हैं अन्य ॥ २४५ ॥

ॐ ह्रीं तीर्थसामान्यदुग्धाब्धये नमः अर्घं ।

लोक स्नान गिलानता, मेटे मल शरीर ।

आतम प्रक्षालित कियो, तुम्हीं ज्ञान सु नीर ॥ २४६ ॥

ॐ ह्रीं स्नानवास्तवव्रताय नमः अर्घं ।

तारण तरण सुभाव हैं, तीन लोक विख्यात ।
ज्यूं सुगन्ध चम्पाकली, गन्धमई कहलात ॥ २४७ ॥

ॐ ह्रीं गन्धपवित्रितत्रिलोकाय नमः अर्घं ।

सूक्षम तथा स्थूलमें, ज्ञान करै परवेश ।
जाको तुम जानो नहीं, खाली रहो न देश ॥ २४८ ॥

ॐ ह्रीं वज्रमूर्चये नमः अर्घं ।

और न प्रति आनंद करि, निर्मल शुचि आचार ।
आप पवित्र भये प्रभू, कर्मधूलिको टार ॥ २४९ ॥

ॐ ह्रीं शुचिश्रवे नमः अर्घं ।

कर्मों करि किरतार्थ हो, कृत फल उत्तम पाय ।
करपर कर राजत प्रभू, वन्दूं हूं युग पांय ॥ २५० ॥

ॐ ह्रीं कृतार्थकृतहस्ताय नमः अर्घं ।

दर्शन इन्द्र अघात हैं, इष्ट मान उर माहिं ।
कर्म नाशि शिवपुर वसै, मैं वन्दूं हूं ताहिं ॥ २५१ ॥

ॐ ह्रीं शक्रेष्टाय नमः अर्घं ।

मघवा जाके नृत्य करि, ताके पितु महान ।
सो मैं उनको जजत हूं, होय कर्मकी हान ॥ २५२ ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रनृत्यतपितृकाय नमः अर्घं ।

शची इन्द्र अरु काम ये, जिन दासनके दास ।
निश्चय मनमें नमन कर, नित वन्दन पद जास ॥ २५३ ॥

ॐ ह्रीं शचीविस्मापिताय नमः अर्घं ।

जिनके सनमुख नृत्य करि, इन्द्र हर्ष उपजाय।
जन्म सुफल मानें सदा, हमपर होउ सहाय॥ २५४॥
ॐ ह्रीं शक्राङ्घिनंदनृत्याय नमः अर्घं।
धन सुवर्णतें लोकमें, पूरण इच्छा होय।
चक्रवर्ती पद पाइये, तुम पूजत हैं सोय॥ २५५॥
ॐ ह्रीं रैदपूर्णमनोरथाय नमः अर्घं।
तुम आज्ञामें हैं सदा, आप मनोरथ मान।
इन्द्र सदा सेवन करैं, पाप विनाशक जान॥ २५६॥
ॐ ह्रीं आज्ञार्थइन्द्रकृतमनोरथाय नमः अर्घं।
सब देवनमें श्रेष्ठ हो, सब देवन सिरताज।
सब देवनके इष्ट हो, वन्दत सुलभ सु काज॥ २५७॥
ॐ ह्रीं देवश्रेष्ठाय नमः अर्घं।
तीन लोकमें उच्च हो, तीन लोक परशंस।
सो शिवगति पायो प्रभू, जजत कर्म विध्वंस॥ २५८॥
ॐ ह्रीं शिवौद्यमाय नमः अर्घं।
जगतपूज्य शिवनाथ हो, तुम ही द्रव्य विशिष्ट।
हित उपदेशक परम गुरु, मुनिजन माने इष्ट॥ २५९॥
ॐ ह्रीं अर्हंजगत्पूज्यशिवनाथाय नमः अर्घं।
मति, श्रुत, अवधि अवर्णको, नाश कियो स्वयमेव।
केवलज्ञान स्वतै लियो, आप स्वयंभू देव॥ २६०॥
ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः अर्घं।
समोशरण अद्भुत महा, और लहै नहीं कोय।

धनपति रचो उछाहसों, मैं पूजूं हूं सोय ॥ २६१ ॥

ॐ ह्रीं कुबेररचितस्थानाय नमः अर्घं ।

जाको अन्त न हो कभी, ज्ञान लक्ष्मी नाथ ।

सोई शिवपुरके धनी, नमूं भाव धरि माथ ॥ २६२ ।

ॐ ह्रीं अनन्तश्रीजुषे नमः अर्घं ।

गणधरादि नित ध्यावते, पावे शिवपुर वास ।

परम ध्येय तुम नाम हैं, पूरैं मनकी आश ॥ २६३ ।

ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय नमः अर्घं ।

परम ब्रह्मका लाभ हो, तुम पद पायो सार ।

त्रिभुवन ज्ञाता हो सही, नय निश्चय व्यवहार ॥ २६४ ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे नमः अर्घ

सर्व तत्त्वके आदिमें, ब्रह्म तत्व परधान ।

तिसके ज्ञाता हो प्रभु, मैं वन्दूं धरि ध्यान ॥ २६५ ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वाय नमः अर्घं ।

द्रव्य भाव द्वै विधि कही, यज्ञ जननकी रीति ।

सो सब तुमहीं हेत हैं, रचत नशैं सब भीति ॥ २६६ ॥

ॐ ह्रीं यज्ञपतये नमः अर्घं ।

महादेव शिवनाथ हो, तुमको पूजत लोक ।

मैं पूजूं हूं भावसों, मेटो मनको शोक ॥ २६७ ॥

ॐ ह्रीं शिवनाथाय नमः अर्घं ।

कृत्य भए निज भावसें, सिद्ध भये सब काज ।

पायो निज पुरुषार्थको, वन्दूं सिद्ध समाज ॥ २६८ ॥

ॐ ह्रीं क्रतविभवे नमः अर्घं ।

यज्ञविधानके अंग हो, मुख्य नामी परधान ।
तुम विन यज्ञ न हो कभी, पूजत होय कल्यान ॥ २६९ ॥

ॐ ह्रीं यज्ञांगाय नमः अर्घं ।

मरण रोगके हरणसे, अमर भये हो आप ।
शरणगतिको अमर कर, अमृत हो निष्पाप ॥ २७० ॥

ॐ ह्रीं अमृताय नमः अर्घं ।

पूजन विधि अस्नान हो, पूजत शिवसुख होय ।
सुरनर नित पूजन करैं, मिथ्या मतिको खोय ॥२७१॥

ॐ ह्रीं यज्ञाय नमः अर्घं ।

जो हो सो सामान्य कर, धरत विशेष अनेक ।
वस्तु सुभाव यही कहो. वन्दूं सिद्ध प्रत्येक ॥ २७२ ॥

ॐ ह्रीं वस्तूत्पादकाय नमः अर्घं ।

इन्द्र सदा तुम थुति करैं, मनमें भक्ति उपाय ।
सर्व शास्त्रमें तुम थुती, गणधरादि करि गाय ॥ २७३ ॥

ॐ ह्रीं स्तुतीस्वराय नमः अर्घं ।

मगन रहो निज तत्वमें, द्रव्य भाव विध नाश ।
जो है सो है विविध विध, नमूं अचल अविनाश ॥२७४॥

ॐ ह्रीं भावाय नमः अर्घं ।

तीन लोक सिरताज हैं, इन्द्रादिक करि पूज्य ।
धर्मनाथ प्रतिपाल जग, और नहीं है दूज्य ॥ २७५ ॥

ॐ ह्रीं महपतये नमः अर्घं ।

महाभाग सग्धानतें, तुम अनुभव करि जीव।
सो पुनि सेवत पाय तज, निजसुख लहै सदीव॥ २७६ ॥
ॐ ह्रीं महायज्ञाय नमः अर्घ्य।

यह विधि उपदेशमें, तुम अग्रेश्वर जान।
यज्ञ रचावनहार तुम, तुम ही हो यजमान॥ २७७ ॥
ॐ ह्रीं अग्रयाजकाय नम अर्घ।

तीन लोकके पूज्य हो, भक्ति भाव उर धार।
धर्म अर्थ अरु मोक्षके, दाता तुम हो सार॥ २७८ ॥
ॐ ह्रीं जगतपूज्याय नमः अर्घ।

दया मोह पर पापतें, दूर भये स्वैतंत्र।
ब्रह्मज्ञानमें लय सदा, जपूं नाम तुम मंत्र॥ २७९ ॥
ॐ ह्रीं दयापराय नमः अर्घ।

तुम ही पूजन योग्य हो, तुम ही हो आराध्य।
महा साधु सुख हेतुतें, सावें हैं निज साध्य॥ २८० ॥
ॐ ह्रीं पूज्यार्हाय नमः अर्घ।

निज पुरुषारथ सधनको, तुमको अर्चत जक्त।
मनवांछित दाता रहो, शिवसुख पावै भक्त॥ २८१ ॥
ॐ ह्रीं जगदार्चिताय नमः अर्घ।

ध्यावत हैं नितप्रति तुम्है, देव चार परकार।
तुम देवनके देव हो, नमूं भक्ति उर धार॥ २८२ ॥
ॐ ह्रीं देवाधिदेवाय नमः अर्घ।

इन्द्र समान न भक्त हैं, तुम समान नहीं देव।

ध्यावत हैं नित भावसों, मोक्ष लहैं स्वयमेव ॥ २८३ ॥

ॐ ह्रीं शक्रार्चिताय नमः अर्घं ।

तुम देवनके देव हो, सदा पूजने योग्य ।
जे पूजत हैं भावसों, भोगें शिवसुख भोग ॥ २८४ ॥

ॐ ह्रीं देवदेवाय नमः अर्घं ।

तीन लोक सिरताज हो, तुमसे बडा न कोय ।
सुरनर पशु खग ध्यावते, दुविधा मनकी खोय ॥२८५॥

ॐ ह्रीं जगतगुरवे नमः अर्घं ।

जोहो सोही तुम सही, नहीं समझमें आय ।
सुरनर मुनि सब ध्यावते, तुम वाणीको पाय ॥ २८६ ॥

ॐ ह्रीं देवसंघाचार्याय नमः अर्घं ।

ज्ञानानन्द स्वलक्ष्मी, ताके हो भरतार ।
स्वसुगंध वासित रहो, कमल गंधकी सार ॥ २८७ ॥

ॐ ह्रीं पद्मनन्दाय नमः अर्घं ।

सब कुवादि वादी हते, वज्र शैल उनहार ।
विजय ध्वजा फहरात है, वंदूं भक्ति विचार ॥ २८८ ॥

ॐ ह्रीं जयध्वजाय नमः अर्घं ।

दशोंदिशा परकाश है, तिनकी ज्योति अमंद ।
भविजन कुमुद विकाश हो, वन्दूं पूरण चन्द ॥ २८९ ॥

ॐ ह्रीं भामण्डलाय नमः अर्घं ।

चमरन करि भक्ति करें, देव चार परकार ।
यह विभूति तुम ही विषैं, वन्दूं पाप निवार ॥ २९० ॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठी चामराय नमः अर्घं।

देव दुंदुभी शब्द करि, सदा करैं जयकार।
तथा आप परसिद्ध हो, ढोल शब्द उनहार॥ २९१॥

ॐ ह्रीं देवदुंदुभीवाद्याय नमः अर्घं।

तुम वाणी सब मनन कर, समझत हैं इक सार।
अक्षरार्थ नहीं भ्रम पड़े, संशय मोह निवार॥ २९२॥

ॐ ह्रीं वागस्पष्टाय नमः अर्घं।

धनपति रचि तुम आसनं, महा प्रभूता जान।
तथा स्व आसन पाइयो, अचल रहो शिवथान॥२९३॥

ॐ ह्रीं लब्धासनाय नमः अर्घं।

तीन लोकके नाथ हो, तीन छत्र विख्यात।
भव्य जीव तुम छांहमें, सदा स्व आनंद पात॥ २९४॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रयाय नमः अर्घं।

पुष्प वृष्टि सुर करत हैं, तीनों काल मझार।
तुम सुगन्ध दश दिश रमी, भविजन भ्रमर निहार॥२९५

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टये नमः अर्घं।

देव रचित आशोक है, वृक्ष महा रमणीक।
समोशरण शोभा प्रभु, शोक निवारण ठीक॥ २९६॥

ॐ ह्रीं दिव्याशोकाय नमः अर्घं।

मानस्तम्भ निहारके, कुमतिन मान गलाय।
समोशरण प्रभूता कहै, नमूं भक्ति उर लाय॥ २९७॥

ॐ ह्रीं मानस्थम्भाय नमः अर्घं।

सुरदेवी संगीत कर, गावैं शुभ गुण गान ।
भक्ति भाव उरमें जगो, वन्दत श्री भगवान ॥ २९८ ॥
ॐ ह्रीं संगीतार्हाय नमः अर्घं ।

मंगल सूचक चिह्न है, कहे अष्ट परकार ।
तुम समीप राजत सदा, नमूं अमंगल टार ॥ २९९ ॥
ॐ ह्रीं अष्टमंगलाय नमः अर्घं ।

भविजन तरिये तीर्थसों, तुम हो श्री भगवान ।
कोई न भंभे आन जिन, तीर्थ चक्रसो जान ॥ ३०० ॥
ॐ ह्रीं तीर्थचक्रवर्त्तये नमः अर्घं ।

सम्यग्दर्शन धरत हो, निश्चै परमावगाढ ।
संशय आदिक मेटिके, नासो सकल विगाढ ॥ ३०१ ॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनाय नमः अर्घं ।

कर्त्ता हो शिव काजके, ब्रह्मा जगकी रीति ।
वर्णाश्रमको थापकें, प्रगटायो शुभ नीत ॥ ३०२ ॥
ॐ ह्रीं कर्त्रे नमः अर्घं ।

सत्य धर्म प्रतिपालके, पोषत हो संसार ।
यति श्रावक दो धर्मके, भये नाथ सुखकार ॥ ३०३ ॥
ॐ ह्रीं तीर्थभर्त्रे नमः अर्घं ।

धर्मतीर्थ मुनिराज हैं, तिनके हो तुम स्वामि ।
धर्मनाथ तुम जानके, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ ३०४ ॥
ॐ ह्रीं तीर्थेशाय नमः अर्घं ।

लोक तीर्थमें गिनत है, धर्मतीर्थ परधान।
सो तुम राजत हो सदा, मैं वन्दूं धरि ध्यान ॥ ३०५ ॥
ॐ ह्रीं धर्मतीर्थंकराय नमः अर्घ्यं।

तुम बिन धर्म न हो कभी, ढूंढो सकल जिहान।
दश लक्षण स्वैधर्मके, तीरथ हो परधान ॥ ३०६ ॥
ॐ ह्रीं धर्मतीर्थयुताय नमः अर्घ्यं।

धर्म तीर्थ करतार हो, श्रावक या मुनिराज।
दोनों विधि उत्तम कहो, स्वर्ग मोक्षके काज ॥ ३०७ ॥
ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकराय नमः अर्घ्यं।

तुमसे धर्म चले सदा, तुम्ही धर्मके मूल।
सुरनर मुनि पूजैं सदा, छिदहिं कर्मके शूल ॥ ३०८ ॥
ॐ ह्रीं तीर्थप्रवर्त्तकाय नमः अर्घ्यं।

धर्मनाथ जगमें प्रगट, तारण तरण जिहाज।
तीन लोक अधिपति कहो, वन्दूं सुखके काज ॥ ३०९ ॥
ॐ ह्रीं तीर्थवेधसे नमः अर्घ्यं।

श्रावक या मुनि धर्मके, हो दिखलावनहार।
अन्य लिंग नहीं धर्मके, बुधजन लखो विचार ॥ ३१० ॥
ॐ ह्रीं तीर्थविधाय नमः अर्घ्यं।

स्वर्ग मोक्ष दातार हो, तुम्ही मार्ग सुखदान।
अन्य कुभोविनमें नहीं, धर्म यथारथ ज्ञान ॥ ३११ ॥
ॐ ह्रीं सत्यतीर्थंकराय नमः अर्घ्यं।

सेवन योग्य सु जक्तमें, तुमी तीर्थ हो सार।

सुरनर मुनि सेवन करैं, मैं वन्दूं दुख टार ॥ ३१२ ॥

ॐ ह्रीं तीर्थसेव्याय नमः अर्घं ।

भव समुद्र भवसै तिरैं, सो तुम तीर्थ कहाय ।

हो तारण तीहूं लोकमें, सेवत हूं तुम पाय ॥ ३१३ ॥

ॐ ह्रीं तीर्थतारकाय नमः अर्घं ।

सर्व अर्थ परकाश करि, निर इच्छा तुम बैन ।

धर्म सुमार्ग प्रवर्त्तको, तुम राजत हो ऐन ॥ ३१४ ॥

ॐ ह्रीं सत्यवाक्याधिपाय नमः अर्घं ।

धर्म मार्ग परगट करै, सो शासन कहलाय ।

सो उपदेशक आप हो, तिस संकेत कराय ॥ ३१५ ॥

ॐ ह्रीं सत्यशासनाय नमः अर्घं ।

अतिशय करि सर्वज्ञ हो, ज्ञानावरण विनाश ।

नेम रूप भवि सुनत ही, शिवसुख करत प्रकाश ॥ ३१६ ॥

ॐ ह्रींअप्रतिशासनाय नमः अर्घं ।

कहै कथंचित धर्मको, स्यात वचन सुखकार ।

सो प्रमाणते सांधियो, नय निश्चय व्यवहार ॥ ३१७ ॥

ॐ ह्रीं स्याद्वाय नमः अर्घं ।

निर अक्षर वाणी खिरै, दिव्य मेघकी गर्ज्जे ।

अक्षरार्थ हो परिणवै, सुन भव्यन मन अर्ज्जे ॥ ३१८ ॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनये नमः अर्घं ।

नय प्रमाण नहीं हतत है, तुम परकाशे अर्थ ।

शिवसुखके साधन विषैं, नहीं गिनत है व्यर्थ ॥ ३१९ ॥

ॐ ह्रीं अव्याहतार्थाय नमः अर्घं ।

करै पवित्र सु आत्मा, अशुभ कर्म मल खोय ।
पहुंचावै ऊंची सुगति, तुम दिखलाओ सोय ॥ ३२० ॥

ॐ ह्रीं पुण्यवाचे नमः अर्घं ।

तत्वारथ तुम भासियो, सम्यक तिमें प्रधान ।
मिथ्या जहर निवारणं, अमृत पान समान ॥ ३२१ ॥

ॐ ह्रीं अर्थवाचे नमः अर्घं ।

देव अतिशय सो खिरत ही, अक्षरार्थ मय होय ।
दिव्य ध्वनि निश्चय करैं, संशय तमको खोय ॥ ३२२ ॥

ॐ ह्रीं अर्द्धमागधीयुक्ताय नमः अर्घं ।

सब जीवनको इष्ट है, मोक्ष निजानन्द वास ।
सो तुमने दिखलाइयो, संशय मोह विनाश ॥ ३२३ ॥

ॐ ह्रीं इष्टवाचे नमः अर्घं ।

नय प्रमाण ही कहत है, द्रव्य पर्याय सु भेद ।
अनेकांत साधै सही, वस्तु भेद निरखेद ॥ ३२४ ॥

ॐ ह्रीं अनेकांतदर्शने नमः अर्घं ।

दुर्नय कहत एकांतको, ताको अन्त कराय ।
सम्यक्मति प्रगटाइयो, पूजूं तिनके पाय ॥ ३२५ ॥

ॐ ह्रीं दुर्नयांतकाय नमः अर्घं ।

एक पक्ष मिथ्यात्व है, ताको तिमिर निवार ।
स्यादवाद सम न्यायतें, भविजन तारे पार ॥ ३२६ ॥

ॐ ह्रीं एकांतध्वांतभेदाय नमः अर्घं ।

जो हैं सो निज भावमैं, रहै सदा निरबार।
मोक्ष साध्यमें सार है, सम्यक् विषैं अपार ॥ ३२७ ॥
ॐ ह्रीं तत्ववाचे नमः अर्घं।
निज गुण निज परयायमें, सदा रहो निरभेद।
शुद्ध बुद्ध अव्यक्त हो, पूजूं हूं निरखेद ॥ ३२८ ॥
ॐ ह्रीं प्रथक्कृताय नमः अर्घ।
स्यातकार उद्योतकर, वस्तु धर्म निरशंस।
तासु ध्वजा निर्विघ्नको, भापो विधि विध्वंस ॥ ३२९ ॥
ॐ ह्रीं स्यात्कारध्वजावाचे नमः अर्घं।
परम्पराइ धर्मको, उपदेशो श्रुत द्वार।
भवि भवसागर तीर लह, पायो शिव सुखकार ॥३३०॥
ॐ ह्रीं अर्हवाचे नमः अर्घ।
द्रव्य द्रष्टि नहिं पुरुष कृत, है अनादि परमान।
सो तुम भाख्यौ है सही, यह पर्याय सु जान ॥ ३३१ ॥
ॐ ह्रीं अपौरुषेयवाचिने नमः अर्घ।
नहीं चलाचल होठ हो, जिस वाणीके होत।
सो मैं वन्दूं हो किया, मोक्षमार्ग उद्योत ॥ ३३२ ॥
ॐ ह्रीं अचलोष्टवाचिने नमः अर्घं।
तुम सन्तान अनादि हैं, शाश्वत नित्य स्वरूप।
तुमको वन्दुं भावसो, पाऊँ शिव–सुख कूप ॥ ३३३ ॥
ॐ ह्रीं शाश्वताय नमः अर्घ।
हीनादिक वा और विधि, नही विरुद्धता जान।

एक रूप सामान्य है, सब ही सुखकी खान ॥ ३३४ ॥

ॐ ह्रीं अविरुद्धाय नमः अर्घं।

नय विवक्षते सधत है, सप्त भंग निरबाध।
सो तुम भाखो नमत हूं, वस्तु रूपको साध ॥ ३३५ ॥

ॐ ह्रीं सप्तभंगवाचिने नमः अर्घं।

अक्षर बिन वाणी खिरे, सर्व अर्थ करि युक्त।
भविजन निज सरधानतें, पावैं जगतें मुक्त ॥ ३३६ ॥

ॐ ह्रीं अवर्णगिरे नमः अर्घं।

क्षुद्र तथा अक्षुद्र मय, सब भासा परकाश।
तुम मुखतें खिरकै करै, भर्म तिमिरका नाश ॥ ३३७ ॥

ॐ ह्रीं सर्वभाषामयगिरे नमः अर्घं।

कहने योग्य समर्थ सब, अर्थ करै परकाश।
तुम वाणी मुखतें खिरे, करे भरम तम नाश ॥ ३३८ ॥

ॐ ह्रीं व्यक्तगिरे नमः अर्घं।

तुम वाणी नहीं व्यर्थ है, भङ्ग कभी नहीं होय।
लगातार मुखतें खिरे, संशय तमको खोय ॥ ३३९ ॥

ॐ ह्रीं अमोघवाचिने नमः अर्घं।

वस्तु अनंत पर्याय है, वचन अगोचर जान।
तुम दिखलाये सहज ही, हरि कुमतिन मतिवान ॥ ३४० ॥

ॐ ह्रीं अवाच्यानंतवाचिने नमः अर्घं।

वचन अगोचर गुण धरो, लहैं न गणधर पार।
तुम महिमा तुमहीं विषैं, मुझ तारो भवपार ॥ ३४१ ॥

ॐ ह्रीं अवांचे नमः अर्घं ।

तुम सम वचन न कहि सकै, असंदमती छद्मस्थ ।
धर्म मार्ग प्रगटाइयो, मेटो कुमति समस्त ॥ ३४२ ॥

ॐ ह्रीं अद्वैतगिरे नमः अर्घ ।

सत्यप्रिय तुम बैन हैं, हितमित भविजन हेत ।
सो मुनिजन तुम ध्यावते, पावे शिवपुर खेत ॥ ३४३ ॥

ॐ ह्रीं सुनृतगिरे नमः अर्घं ।

नहीं सांच नहीं झूठ है, अनुभव वचन कहात ।
सो तीर्थंकर ध्वनि कही, सत्यारथ मत बात ॥ ३४४ ॥

ॐ ह्रीं सत्यानुभयगिरे नमः अर्घ ।

मिथ्या अर्थ प्रकाश करि, कुगिरा ताको नाम ।
सत्यारथ उद्योत कर, सुगिरा ताको नाम ॥ ३४५ ॥

ॐ ह्रीं सुगिरे नमः अर्घ ।

जो जन एक चहूं दिशा, हो वाणी विस्तार ।
श्रवण सुनत भविजन लहै, आनंद हिये अपार ॥ ३४६ ॥

ॐ ह्रीं योजनव्यापितगिरे नमः अर्घ ।

निर्मल क्षीर समान है, गौर श्वेत तुम बैन ।
पाप मलिनता रहित है, सत्य प्रकाशक एन ॥ ३४७ ॥

ॐ ह्रीं क्षीरगौरगिरे नमः अर्घं ।

तीर्थ तत्त्व जो नहीं तजै, तारण भविजन वान ।
यातें तीर्थंकर प्रभू, नमत पाप मल हान ॥ ३४८ ॥

ॐ ह्रीं तीर्थतत्वगिरे नमः अर्घं ।

उत्तम तीर्थ पर्याय करि, आत्म तत्वको जान।
सो तुम सत्यारथ कहो, मुनिजन उत्तम मान ॥ ३४९॥
ॐ ह्रीं परमार्थगवे नमः अर्घ।

भव्यनिके श्रवणनि सुखद, तुम वाणी सुख देन।
मैं वन्दूं हूं भावसो, धर्म बतायो एन ॥ ३५० ॥
ॐ ह्रीं भव्येकश्रवणगिरे नमः अर्घं।

संशय विभ्रम मोहको, नाश करे निर्मूल।
सत्य वचन परमाण तुम, छेदत मिथ्या शूल ॥ ३५१ ॥
ॐ ह्रीं सद्गवे नमः अर्घं।

तुम वाणीमें प्रगट है, सब सामान्य विशेष।
नानाविध सुन तर्कमें, संशय रहै न शेष ॥ ३५२ ॥
ॐ ह्रीं चित्रगवे नमः अर्घं।

परम कहै उतकृष्टको, अर्थ होय गम्भीर।
सो तुम वाणीमें खिरे, वन्दत भवदधि तीर ॥ ३५३ ॥
ॐ ह्रीं परार्थगवे नमः अर्घं।

मोह क्षोभ परशांत हो, तुम वाणी उर धार।
भविजनको सन्तुष्ट कर, भव आताप निवार ॥ ३५४ ॥
ॐ ह्रीं प्रशांतगवे नमः अर्घं।

बारह सभासु प्रश्न कर, समाधान करतार।
मिथ्यामति विध्वंश करि, वन्दूं मनमें धार ॥ ३५५ ॥
ॐ ह्रीं प्राश्निकगिरे नमः अर्घं।

महापुरुष महादेव हो, सुरनर पूजन योग।

वाणी सुन मिथ्यात तज, पावैं शिवसुख भोग ॥ ३५६ ॥

ॐ ह्रीं याज्यंश्रुते नमः अर्घं ।

शिवमग उपदेशक सुश्रुत, मनमें अर्थ विचार ।

साक्षात् उपदेश तुम, तारे भविजन पार ॥ ३५७ ॥

ॐ ह्रीं श्रुते नमः अर्घं ।

तुम समान तिहुं लोकमें, नहीं अर्थ परकाश ।

भविजन सम्बोधे सदा, मिथ्यामतिको नाश ॥ ३५८ ॥

ॐ ह्री महाश्रुते नमः अर्घं ।

जो निज आत्म-कल्याणमें, वरतै सो उपदेश ।

धर्म नाम तिस जानियो, वन्दूं चरण हमेश ॥ ३५९ ॥

ॐ ह्रीं धर्मश्रुते नमः अर्घं ।

जिन शासनके अधिपती, शिव मारग वतलाय ।

या भविजन सन्तुष्ट करि, वन्दूं तिनके पांय ॥ ३६० ॥

ॐ ह्रीं श्रुतपतये नमः अर्घं ।

धारण हो उपदेशके, केवलज्ञान संयुक्त ।

शिवमारग दिखलात हो, तुमको वन्दन युक्त ॥३६१॥

ॐ ह्रीं श्रुतधृताय नमः अर्घं ।

जैसो हो तैसो कहो, परम्पराय सु रीत ।

सत्यारथ उपदेशतैं, धर्म मार्गकी गीत ॥ ३६२ ॥

ॐ ह्रीं ध्रुवश्रुतये नमः अर्घं ।

मोक्षमार्गको देखियो, औरनको दिखलाय ।

तुम सम हितकारक नहीं, वन्दूं हूं तिन पाय ॥३६३॥

ॐ ह्रीं निर्वाणमार्गोपदेशकाय नमः अर्घ्य ।

स्वर्ग मोक्ष मारग कहो, यति श्रावकको धर्म ।
तुमको वन्दत सुख महा, लहै ब्रह्मपद पर्म ॥ ३६४ ॥

ॐ ह्रीं यतिश्रावकमार्गदेशकाय नमः अर्घ्य ।

तत्व अतत्वसु जानियो, तुम सब ही परतक्ष ।
निज आतम सन्तुष्ट हो, देखो लक्ष अलक्ष ॥ ३६५ ॥

ॐ ह्रीं सर्वमार्गदर्शे नमः अर्घ्य ।

सार तत्त्व वर्णन कियो, अयथार्थ मत नाश ।
स्वपर परकाशन हो महा, वन्दूं तिनको दास ॥ ३६६ ॥

ॐ ह्रीं सारतत्वयथार्थाय नमः अर्घ्य ।

आप तीर्थ औरन प्रती, सर्व तीर्थ करतार ।
उत्तम शिवपुर पहुंचना, यही विशेषण सार ॥ ३६७ ॥

ॐ ह्रीं तीर्थपरमतीर्थकृताय नमः अर्घ्य ।

दृष्टा लोकालोकके, रेखा हस्त समान ।
युगपत सबको देखिये, कियो भर्म तम हान ॥ ३६८ ॥

ॐ ह्रीं दृष्टाय नमः अर्घ्य ।

जिनवाणीके रसिक हो, तासो रति दिन रैन ।
भोग उपभोग करो सदा, वन्दत है सुखचैन ॥ ३६९ ॥

ॐ ह्रीं वांग्मीश्वराय नमः अर्घ्य ।

जो संसार-समुद्रसे, पार करत सो धर्म ।
तुम उपदेश्या धर्मकूं, नमत मिटे भव भर्म ॥ ३७० ॥

ॐ ह्रीं धर्मशासनाय नमः अर्घ्य ।

धर्म रूप उपदेश है, भवि जीवन हितकार।
मैं वन्दूं तिनको सदा, करो भवार्णव पार॥ ३७१॥
ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय नमः अर्घं।

सब विद्याके ईश हो, पूरन ज्ञान सु जान।
तिनको वन्दूं भावसे, पाऊं ज्ञान महान॥ ३७२॥
ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः अर्घं।

सुमति नार भरतार हो, कुमति कुसोत विडार।
मैं पूजूं हूं भावसों, पाऊं सुमती सार॥ ३७३॥
ॐ ह्रीं त्रईनाथाय नमः अर्घं।

धर्म अर्थ अरु मोक्षके, हो दाता भगवान।
मैं नित प्रति पाइन परूं, देहो परम कल्याण॥ ३७४॥
ॐ ह्रीं त्रिभङ्गीशाय नमः अर्घं।

गिरा कहै जिन वचनको, तिसका अन्त सु धर्म।
मोक्ष करै भविजननको, नाशै मिथ्या भर्म॥ ३७५॥
ॐ ह्रीं गिरांपतये नमः अर्घं।

जाकी सीमा मोक्ष है, पूरण सुख स्थान।
शरणागतको सिद्ध है, नमूं सिद्ध धरि ध्यान॥ ३७६॥
ॐ ह्रीं सिद्धाज्ञाय नमः अर्घं।

नय प्रमाण सो सिद्ध है, तुम वाणी रवि सार।
मिथ्या तिमिर निवारकैं, करै भव्य जन पार॥ ३७७॥
ॐ ह्रीं सिद्धवाङ्मयाय नमः अर्घं।

निज पुरुषारथ साधकैं, सिद्ध भये सुखकार।

मन वच तन करि मैं नमूं, करो जगतसै पार ॥ ३७८ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः अर्घं ।

सिद्ध करै निज अर्थको, तुम शासन हितकार ।
भविजन माने सरद है, करै कर्म रज छार ॥ ३७९ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय नमः अर्घं ।

तीन लोकमें सिद्ध है, तुम प्रसिद्ध सिद्धान्त ।
अनेकान्त परकाश कर, नाशै मिथ्या ध्वांत ॥ ३८० ॥

ॐ ह्रीं जगतप्रसिद्धसिद्धान्ताय नमः अर्घं ।

ॐकार यह मंत्र है, तीन लोक परसिद्ध ।
तुम साधक कहलात हो, जपत मिलै नवनिद्ध ॥ ३८१ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंत्राय नमः अर्घं ।

सिद्ध यज्ञको कहत है, संशय विभ्रम नाश ।
मोक्षमार्गमें ले धरै, निजानन्द परकास ॥ ३८२ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धवाचिने नमः अर्घं ।

मोहरूप मलसौ दुरी, वाणी कही पवित्र ।
भव्य स्वच्छता धारिके, लहै मोक्षपद तत्र ॥ ३८३ ॥

ॐ ह्रीं शुचिवाचिने नमः अर्घं ।

कर्ण विषयमें होत ही, करै आत्म कल्याण ।
तुम वाणी शुचिता धरै, नमैं सन्त धरि ध्यान ॥ ३८४ ॥

ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे नमः अर्घं ॥

वचन अगोचर पद धरो, कहते पंडित लोग ।
तुम महिमा तुमहीं विषैं, सदा वन्दने योग्य ॥ ३८५ ॥

ॐ ह्रीं निष्कलंकाय नमः अर्घं।

सुरनर मानें आन सब, तुम आज्ञा शिर धार।
मानों नेत्र निधान करि, बांधें एक लगार॥ ३८६॥

ॐ ह्रीं नेत्रकृते नमः अर्घं।

ज्ञाकरि निश्चय कीजिए, वस्तु प्रमेय अपार।
सो तुमसे परगट भयो, न्यायशास्त्र करि धार॥ ३८७॥

ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृते नमः अर्घं।

गुण अनन्त पर्याय युत, द्रव्य अनन्तानन्त।
युगपति जानो प्रभु तुम, धरो सदा सुखवन्त॥ ३८८॥

ॐ ह्रीं महाज्येष्ठाय नमः अर्घं।

तुम पद पावे सो सदा, तुम गुण पार लहाय।
शिवलक्ष्मीके नाथ हो, पूजूं तिनके पाय॥ ३८९॥

ॐ ह्रीं महानंदाय नमः अर्घं।

तुम सम कविवर जगतमें, और न दूजो कोय।
गणधरसे श्रुतकार भी, अरु लहैं है सोय॥ ३९०॥

ॐ ह्रीं कवींद्राय नमः अर्घं।

हित करता पद कायके, महा इष्ट तुम ऐन।
तुमको वन्दें भावसों, मोक्ष महासुख देन॥ ३९१॥

ॐ ह्रीं महेष्टाय नमः अर्घं॥

मोक्ष दान दातार हो, तुम सम कौन महान।
तीन लोक तुमको जजें, मनमें आनन्द ठान॥ ३९२॥

ॐ ह्रीं महानंददातराय नमः अर्घं।

द्वादशांग श्रुतकों रचै, गणधरसे कविराज ।
तुम आज्ञा शिर धारके, नमूं निजातम काज ॥ ३९३ ॥

ॐ ह्रीं कवीश्वराय नमः अर्घं ।

देव महा ध्वनि करत हैं, तुम सन्मुख धर भाव ।
केवल अतिशय कहत हैं, मै पूजूं युत चाव ॥ ३९४ ॥

ॐ ह्रीं दुंदुभीश्वराय नमः अर्घं ।

इन्द्रादिक नित पूजते, भक्ति पूरि शिर नाय ।
त्रिभुवन नाथ कहात हो, हम पूजत नित पांय ॥ ३९५ ॥

ॐ ह्रीं त्रिभुवननाथाय नमः अर्घं ।

गणी मुनीश फणिशपति, कल्पेन्द्रके नाथ ।
अहमिन्द्रनके नाथ हो, तुमहि नमूं धरि माथ ॥

ॐ ह्रीं महानाथाय नमः अर्घं ।

भिन्न भिन्न देख्यो सकल, लोकालोक अनन्त ।
तुम सम दृष्टि न औरकी, तुमैं नमें नित सन्त ॥ ३९६ ॥

ॐ ह्रीं परद्रष्टाय नमः अर्घं ।

पति जगके भरतार हो, मुनिगणमें परधान ।
तुमको पूजैं भावसों, होत सदा कल्याण ॥ ३९७ ॥

ॐ ह्रीं जगतपतये नमः अर्घं ।

श्रावक या मुनिराज हो, तुम आज्ञा शिर धार ।
वरते धर्म पुरुषार्थमें, पूजत हूं सुखकार ॥ ३९८ ॥

ॐ ह्रीं स्वामिने नमः अर्घं ।

धर्म कार्य करता सही, हो ब्रह्मा परमार्थ ।

मालिक हो तिहुं लोकके, पूजनीक मन्यार्थ ॥ ३९९ ॥

ॐ ह्रीं कर्त्रे नमः अर्घं ।

तीन लोकके नाथ हो, शरणागत प्रतिपाल ।
चार संघके अधिपती, पूजूं हूं नम भाल ॥ ४०० ॥

ॐ ह्रीं भर्त्रे नमः अर्घं ।

तुम सम और विभव नहीं, धरो चतुष्ट अनन्त ।
क्यों न करो उद्धार अब, दास कहावें सन्त ॥ ४०१ ॥

ॐ ह्रीं विभवे नमः अर्घं ।

जामें विघन न हो कभी, ऐसी श्रेष्ठ विभूत ।
पाई निज पुरुषार्थ करि, पूजत शुभ करतूत ॥ ४०२ ॥

ॐ ह्रीं प्रभवे नमः अर्घं ।

तुम सम शक्ति न औरकी, शिवलक्ष्मीको पाय ।
भोगो सुख स्वाधीन कर, वन्दूं तिनके पाय ॥ ४०३ ॥

ॐ ह्रीं ईश्वराय नमः अर्घं ।

तुममें अधिक न और में, पुरुषारथ कहुं पाइ ।
हो अधीश सब जगतके, वन्दूं तिनके पांइ ॥ ४०४ ॥

ॐ ह्रीं अधीश्वराय नम अर्घं ।

अग्रेश्वर चउ संघके, शिवनायक शिव मोर ।
पूजत हूं नित भावसों, शीश दोऊ कर जोर ॥ ४०५ ॥

ॐ ह्रीं अधीशाय नमः अर्घं ।

सहज सुभाव प्रयत्न विन, तीन लोक आधीश ।
शुद्ध सुभाव विराजते, वन्दूं पद धर शीश ॥ ४०६ ॥

ॐ ह्रीं अधीश्वराय नमः अर्घं ।

छायक सुमति सुहावनी, बीजभूत तिस जान ।
तुमसै शिवमारग चले, मैं वन्दूं धरि ध्यान ॥ ४०७ ॥

ॐ ह्रीं अधिष्ठाय नमः अर्घं ।

स्वयं बुद्ध शिवनाथ हो, धर्म तीर्थ करतार ।
तुम सम सुमति न को धरै, मैं वन्दूं निरधार ॥ ४०८ ॥

ॐ ह्रीं ईशत्रयाय नमः अर्घं ।

पूरण शक्ति सुभाव धर, पूरण ब्रह्म प्रकाश ।
पूरण पद पायो प्रभू, पूजत पाप विनाश ॥ ४०९ ॥

ॐ ह्रीं ईशानाय नमः अर्घं ।

तुमसे अधिक न और है, त्रिभुवन ईश कहाय ।
तीन लोक अतियन्त सुख, पायो वन्दूं ताय ॥ ४१० ॥

ॐ ह्रीं अधिपतये नमः अर्घं ।

तीन लोक पूजत चरण, ईश्वर तुमको जान ।
मैं पूजो हों भावसों, सबसे बड़े महान ॥ ४११ ॥

ॐ ह्रीं ईशाय नमः अर्घं ।

सूरज सम परकाश कर, मिथ्या तम परहार ।
भविजन कमल प्रबोधको, पायो निज हितकार ॥ ४१२ ॥

ॐ ह्रीं ईशानाय नमः अर्घं ।

क्रीडा करि शिवमार्गमें, पाय परम पद आप ।
आज्ञा भंग न हो कभी, वंदत नाशे पाप ॥ ४१३ ॥

ॐ ह्रीं इन्द्राय नमः अर्घं ।

उत्तम हो तिहु लोकमें, सबके हो शिरताज ।
शरणागत प्रतिपाल हो, पूजूं आतम काज ॥ ४१४ ॥
ॐ ह्रीं त्रिलोकनाथाय नमः अर्घं ।

अधिक भक्तिके हो धनी, सर्व सुखी निरधार ।
सुरनर तुम पदको लहैं, पूजत हूं सुखकार ॥ ४१५ ॥
ॐ ह्रीं अधिभवे नमः अर्घं ।

तीन लोक कल्याण कर, धर्म मार्ग चित लाय ।
सब देवनके देव हो, महादेव सुखदाय ॥ ४१६ ॥
ॐ ह्रीं महादेवाय नमः अर्घं ।

महा ईश महाराज हो, महा प्रताप अपार ।
महा जीव पूजें चरण, सब जन शरण सहार ॥ ४१७ ॥
ॐ ह्रीं महेशाय नमः अर्घं ।

परम करो उतकृष्टको, धर्म तीर्थ वरताय ।
परमेश्वर याते भये, वन्दूं तिनके पांय ॥ ४१८ ॥
ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः अर्घं ।

तुम समान कोई नहीं, जग ईश्वर जगनाथ ।
महा विभव ऐश्वर्यको, धरो नमूं निज माथ ॥ ४१९ ॥
ॐ ह्रीं त्रिभुवनमहेशाय नमः अर्घं ।

चार प्रकारनमें सदा, देव तुम्हें शिर नाय ।
सब देवनमें श्रेष्ठ हो, नमूं युगल तुम पांय ॥ ४२० ॥
ॐ ह्रीं अधिदेवाय नमः अर्घं ।

तुम समान नहिं देव अरु, तुम देवनके देव।
यो महान पदवी धरौ, तुम पूजत हूं एव॥ ४२१॥

ॐ ह्रीं महादेवाय नमः अर्घ।

शिवमारग तुममें मही, देव पूजने योग।
तुम गुण है सहचारणी, और कुदेव अयोग॥ ४२२॥

ॐ ह्रीं देवाय नमः अर्घ।

तीन लोक पूजत चरण, तुम आज्ञा शिर धार।
त्रिभुवन ईश्वर हो मही मैं पूजूं निरधार॥ ४२३॥

ॐ ह्रीं भुवनेश्वराय नमः अर्घ।

विश्वपती तुमको नमें, निज कल्याण विचार।
सर्व विश्वके तुम पती, मैं पूजूं उर धार॥ ४२४॥

ॐ ह्रीं विश्वेशाय नमः अर्घ।

जगत जीव कल्याण कर, लोकालोक अनन्द।
षट्कायक आह्लादकर, जिम कुमोदनी चन्द॥ ४२५॥

ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः अर्घ

इन्द्रादिक जे विश्वपति, तुमको पूजत आन।
यातें तुम विश्वेश हो, सांच नमूं धर ध्यान॥ ४२६॥

ॐ ह्रीं विश्वेशाय नमः अर्घ।

विश्व बन्ध दृढ तोड़के, विश्व शिखर ठहराय।
चरण कमल तल जगतके, यूं सब पूजत पाय॥ ४२७॥

ॐ ह्रीं विश्वेश्वराय नमः अर्घ।

शिव मारगकी रीति तुम, वरतायो शुभ योग।
तिहूं काल तिहूं लोकमें, और कुनीति अयोग॥ ४२८॥

सब विभूति जग जीतिकै, पायो सुख सरवंग ॥ ४३६ ॥

ॐ ह्रीं जगतप्रभवे नमः अर्घं ।

मुनि मन करण पवित्र हो, सब विभावको नाश ।

तुमको अंजुलि जोरकर, नमूं होत अघ नाश ॥ ४३७ ॥

ॐ ह्रीं पवित्राय नमः अर्घं ।

मोक्ष रूप परधान हो, ब्रह्मज्ञान परवीन ।

बंध रहित शिव-सुख महित, नमें संत आधीन ॥ ४३८ ॥

ॐ ह्रीं पराक्रमाय नमः अर्घं ।

जामें जन्म मरण नहीं, लोकोत्तर कियो वास ।

अचल सुथिर राजै सदा, निजानन्द परकाश ॥ ४३९ ॥

ॐ ह्रीं परत्राय नमः अर्घं ।

मोहादिक रिपु जीतिके, विजयवन्त कहलाय ।

जैत्र नाम परसिद्ध है, वन्दूं तिनके पाय ॥ ४४० ॥

ॐ ह्रीं जैत्राय नम अर्घं ।

रक्षक हो षट् कायके, कर्म शत्रु क्षयकार ।

विजय लक्ष्मी नाथ हो, मै पूजूं सुखकार ॥ ४४१ ॥

ॐ ह्रीं जिष्णवे नमः अर्घं ।

करता हो विधि कर्मके, हरता पाप विशेष ।

पुन्य पाप सु विभाग कर, भ्रम नहीं राखो लेश ॥४४२॥

ॐ ह्रीं कर्त्रे नमः अर्घं ।

स्वानन्द ज्ञान विनाश विन, अचल सुथिर रहै राज ।

अविनाशी अविकार हो, वन्दूं निज हित काज ॥४४३॥

ॐ ह्रीं अनीश्वराय नमः अर्घं ।

पूजत हैं हम भक्तिसों, जयवन्तो जगदीश ॥ ४५१ ॥

ॐ ह्रीं विश्वजिते नमः अर्घं ।

इन्द्रादिक जिनको नसें, ते तुम शीश नवाय ।
विश्वजीत तुम नाम हैं, शरणागत सुखदाय ॥ ४५२ ॥

ॐ ह्रीं विश्वजित्वराय नमः अर्घं ।

तीन लोककी लक्ष्मी, तुम चरणांबुज ठौर ।
यातैं सब जग जीतिके, राजत हो शिर मौर ॥ ४५३ ॥

ॐ ह्रीं जगजैत्रे नम अर्घं ।

तीन लोक कल्याण कर, कर्मशत्रुको जीत ।
भव्यन प्रति आनंद कर, मेटत तिनकी भीति ॥४५४॥

ॐ ह्रीं जगजिष्णवे नमः अर्घं ।

जग जीवनको अन्ध कर, फैलो मिथ्या घोर ।
धर्ममार्ग प्रगटाय कर, पहुंचायो शिव ठौर ॥ ४५५ ॥

ॐ ह्रीं जगन्नेत्राय नमः अर्घं ।

मोहादिक जिन जीतियो, सोई जगमें नाम ।
सो तुम पद पायो महा, तुम पद करूं प्रणाम ॥४५६॥

ॐ ह्रीं जगज्जयाय नमः अर्घं ।

जो तुम धर्म न प्रगट करि, जिय आनंद न होय ।
अग्र भये कल्याण कर, तुम पद प्रणमूं मोय ॥ ४५७ ॥

ॐ ह्रीं अग्रणये नमः अर्घं ।

रक्षा करि षट कायकी, विषय कषाय न लेश ।
त्रास हरो जमराजको, जयवन्तो गुण शेष ॥ ४५८ ॥

ॐ ह्रीं दयामूर्तये नमः अर्घं।

सत्य असत्य लखन करै, सोई नेत्र कहाय।
पुद्गल नेत्र न नेत्र हो, साचै नेत्र सुखाय॥ ४५९॥

ॐ ह्रीं दिव्यनेत्राय नमः अर्घं।

सुरनर मुनि अज्ञानतें, जामें निज कल्याण।
ईश्वर हो सब जगतके, आनंद संपति खान॥ ४६०॥

ॐ ह्रीं अधीश्वराय नमः अर्घं।

धर्म्माभास मनोक्तके, मूल नाश कर दीन।
सत्य मार्ग बतलाइयो, कियो भव्य सुख लीन॥४६१॥

ॐ ह्रीं धर्म्मनायकाय नमः अर्घं।

ऋद्धिनमें परसिद्ध हैं, केवल ऋद्धि महान।
सो तुम पायो सहज ही, योगीश्वर मुनि मान॥४६२॥

ॐ ह्रीं ऋद्धीसाय नमः अर्घं।

जो प्राणी ससारमें, तिन सबके हितकार।
आनंदसों सब नमत हैं, पावे भवदधि पार॥ ४६३॥

ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः अर्घं।

प्राणिनके भरतार हो, दुख टारन सुखकार।
तुम आश्रय करि जीव सब, आनंद लहै अपार॥४६४॥

ॐ ह्रीं भूतभर्त्रे नमः अर्घं।

सत्य धर्मके मार्ग हो, ज्ञान मात्र निरशंस।
तुम ही आश्रय पायके, रहै न अघको अंश॥ ४६५॥

ॐ ह्रीं जगतपतये नमः अर्घं।

अतुल वीर्य स्वशक्ति हो, जीते कर्म जगार ।
तुम सम बल नहीं और है, हो असहाय अवार ॥४६६॥

ॐ ह्रीं याजसे नमः अर्घ ।

धर्म मूर्ति धरमातमा, धर्म तीर्थ वरताय ।
स्वै सुभाव सो धर्म है, पायो सहज उपाय ॥ ४६७ ॥

ॐ ह्रीं वृषाय नमः अर्घ ।

हिंसाको वर्जित करैं, जे अपराध महान ।
परिग्रह अर आरंभके, त्यागी श्री भगवान ॥ ४६८ ॥

ॐ ह्रीं परिग्रहत्यागीजिनाय नमः अर्घ ।

सर्व सिद्ध तुम सुलभ कर, पायो स्वयं उपाय ।
सांचें हो वश करणको, जगमें मंत्र कराय ॥ ४६९ ॥

ॐ ह्रीं मंत्रकृते नमः अर्घ ।

जितने कछु शुभ चिह्न हैं, दीस अतोष स्वरूप ।
शुभ लक्षण सोहत अति, सहजे तुम शिवभूप ॥ ४७० ॥

ॐ ह्रीं शुभलक्षणाय नमः अर्घ ।

लोक विषैं तुम मार्गको, मानत है बुधवन्त ।
तर्क हेतु करुणा लिये, यातें माने सन्त ॥ ४७१ ॥

ॐ ह्रीं लोकाध्यक्षाय नमः अर्घ ।

काहूके वशमें नहीं, काहू नमत न शीश ।
कठिन रीति धारै प्रभू, नमूं सदा जगदीश ॥ ४७२ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुराधर्षाय नमः अर्घ ।

दासनिके प्रतिपाल कर, शरणगति हितकार ।

भवि दुखियनको पोषकर, दियो अखै पद सार ॥४७३॥
ॐ ह्रीं भृत्यबन्धवे नमः अर्घ ।
निराकरण करि कर्मको, सरल सिद्ध गति धार ।
शिव थल जाय सुवास लहि, धर्म द्रव्य महकार ॥४७४॥
ॐ ह्रीं निस्तमस्काय नमः अर्घं ।
मुनि ध्यावैं पावैं सुपद, निकट भव्य धरि ध्यान ।
पावें निज कल्याण नित, ध्यान योग तुम मान ॥४७५॥
ॐ ह्रीं परमध्येयजिनाय नमः अर्घं ।
रक्षक हो जगके सदा, धर्म दान दातार ।
पोषित हो सब जीवके, वन्दूं भाव लगार ॥ ४७६ ॥
ॐ ह्रीं जगतापहराय नमः अर्घं ।
मोह प्रचण्ड बली जयो, अतुल वीर्य भगवान ।
शीघ्र गमन करि शिव गये, नमूं हेत कल्याण ॥४७७॥
ॐ ह्रीं अनिजवाय नमः अर्घं ।
तीन लोक शिर मोर सब, पूजत हैं हरपाय ।
परमेश्वर हो जगतके, वंदत हूं नित पाय ॥ ४७८ ॥
ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः अर्घं ।
लोकशिखरपर अचल नित, राजत है तिहुं काल ।
सर्वोत्तम आसन लियो, लोक शिरोमणि भाल ॥४७९॥
ॐ ह्रीं विश्वासने नमः अर्घं ।
विश्वभूति प्राणीनके, ईश्वर हैं भगवान ।
सबके शिरपर पग धरें, सर्व आन तिन मान ॥४८०॥

ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः अर्घं ।

मोक्ष संपदा होत ही, नित अक्षय ऐश्वर्य ।
कौन मूढ़ कौड़ी लहै, सर्वोतम धन वर्य ॥ ४८१ ॥

ॐ ह्रीं विभवाय नमः अर्घं ।

त्रिभुवन ईश्वर हो तुम्हीं, और जीव हैं रंक ।
तुम तज चाहै औरको, ऐसो को बुध बंक ॥ ४८२ ॥

ॐ ह्रीं त्रिभुवनेश्वराय नमः अर्घं ।

उत्तरोत्तर तिहूं लोकमें, दुर्लभ लब्धि काय ।
तुम पद दुर्लभ कठिन है, महा भागसों पाय ॥ ४८३ ॥

ॐ ह्रीं त्रिजगदुर्लभाय नमः अर्घं ।

व्रतधारी परणामसे, अभ्युदय पूरण पाय ।
भई अनन्त विशुद्धता, भये विशुद्ध अथाय ॥ ४८४ ॥

ॐ ह्रीं अभ्युदयाय नमः अर्घं ।

तीन लोक मंगल करन, दुखहारण सुखकार ।
हमको मंगल द्यो महा, पूजो वारम्वार ॥ ४८५ ॥

ॐ ह्रीं त्रिजगन्मङ्गलोदयाय नमः अर्घं ।

आप धर्मके सामने, और धर्म लुप जाय ।
धर्म चक्र आयुध धरो, शत्रु नाश तब पाय ॥ ४८६ ॥

ॐ ह्रीं धर्मचक्रायुधाय नमः अर्घं ।

सत्य शक्त तुम ही सही, सत्य पराक्रम जोर ।
है प्रसिद्ध इस जगतमें, कर्म शत्रु शिरमोर ॥ ४८७ ॥

ॐ ह्रीं सद्यो जाताय नमः अर्घं ।

मंगलमय मंगल करण, तीन लोक विख्यात ।
सुमरण ध्यान सुकरत ही, सकल पाप नश जात ॥ ४८८ ॥
ॐ ह्रीं त्रिलोकमंगलाय नमः अर्घं ।

दिव्य भाव दऊ वेद विन, स्वातम रति सुख मान।
पर आलिंगन रतिकरण, निरइक्षक भगवान ॥ ४८९ ॥
ॐ ह्रीं अवेदाय नमः अर्घं ।

घाति रहित स्वपर दया, निजानन्द रसलीन ।
सुखसों अवगाहन करैं, सन्त चरण आधीन ॥ ४९० ॥
ॐ ह्रीं प्रतिघाताय नमः अर्घं ।

निजानन्द स्वैदेशमें, खंड खंड नहीं होय ।
पूरण अविनाशी सुखी, पूजत हूं भ्रम खोय ॥ ४९१ ॥
ॐ ह्रीं अछेद्याय नमः अर्घं ।

सिद्ध समान सु शुभ नहीं, और नाम विख्यात ।
कभू न जगमें जन्म फिर, सोई दृढ कहलात ॥ ४९२ ॥
ॐ ह्रीं द्रढीयशे नमः अर्घं ।

जन्म मरणके कष्टसे, सर्व लोक भयवन्त ।
ताको नाश अभय करण, तुम्हैं नमें जिय सन्त ॥ ४९३ ॥
ॐ ह्रीं अभयंकराय नमः अर्घं ।

ज्ञानानन्द स्व लक्ष्मी, भोगत हो निरखेद ।
महा भोग यातें भये, हैं स्वाधीन अखेद ॥ ४९४ ॥
ॐ ह्रीं महाभोगाय नमः अर्घं ।

असाधारण असमान हो, सर्वोत्तम उतकृष्ट ।

परसों भिन्न अखिन्न हो, पायो पद अविनष्ट ॥ ४९५ ॥
ॐ ह्रीं निरुपमसुखस्वरूपाय नमः अर्घं।
दश लक्षण शुभ धर्मके, राज सम्पदा भोग।
नायक हो जिन धर्मके, पूज नमैं तिहुं योग ॥ ४९६ ॥
ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः अर्घं।

अधिपति स्वामि स्वभाव निज, पर कृत भाव विडार।
तिहूं वेद रति मान बिन, संपूरण सुखकार ॥ ४९७ ॥
ॐ ह्रीं निर्वेदप्रवृत्ताय नमः अर्घं।
यथायोग्य पद पाइयो, यथायोग्य संपूर्ण।
नमूं त्रियोग संभारिकै, करूं पाप मल चूर्ण ॥ ४९८ ॥
ॐ ह्रीं संपूर्णयोगिने नमः अर्घं।
सम इंद्रिय मन रोककै, आरोहण तिस भाव।
श्रेणि उच्च चढावमें, तत्पर अन्त सु पाव ॥ ४९९ ॥
ॐ ह्रीं समारोहणतत्पराय नमः अर्घं।
एकाश्रय निज धर्ममें, परसो भिन्न सदीव।
सहज स्वभाव विराजते, सिद्धराज सब जीव ॥ ५०० ॥
ॐ ह्रीं सामायिकाय नमः अर्घं।
राग द्वेष विन सहज ही, राजत शुद्ध स्वभाव।
मन विकल्प नहीं भावमें, पूजत हों धरि चाव ॥ ५०१ ॥
ॐ ह्रीं सामायिकिने नमः अर्घं।
निजानन्द स्वै लक्ष्मी, भोगत ग्लानि न होय।
अतुल वीर्य परभावतें, परमादी नहीं होय ॥ ५०२ ॥

ॐ ह्रीं निष्प्रमादाय नमः अर्घं ।

है अनादि संतान करि, कभी भयो नही आदि ।
नित्य शिवालय पूर्णता, बसै जगत अघ वादि ॥ ५०३ ॥

ॐ ह्रीं अकृताय नमः अर्घं ।

पर पदार्थ नहीं इष्ट हैं, स्वैपदमें लवलीन ।
विघ्न हरण मंगल करण, तुम पद मस्तक दीन ॥ ५०४ ॥

ॐ ह्रीं परमभावाय नमः अर्घं ।

नित्य शौच संतोष मय, पर पदार्थमों रोक ।
निश्चय सम्यक् भाव मय, है प्रधान धूं धोक ॥ ५०५ ॥

ॐ ह्रीं प्रधानाय नमः अर्घं ।

ज्ञान ज्योति स्वै धरत हो, निश्चल परम सु ठाम ।
लोकालोक परकाश कर; मैं वन्दूं सुख धाम ॥ ५०६ ॥

ॐ ह्रीं स्वभासपरभासनाय नमः अर्घं ।

एक स्थान सु थिर सदा, निश्चय चारित भूप ।
शुद्ध उपयोग प्रभावतें, कर्म खिपावन रूप ॥ ५०७ ॥

ॐ ह्री प्राणायामचरणाय नमः अर्घं ।

विषय स्वादसों हट रहैं, इन्द्री मन थिर होय ।
निज आतम लवलीन हैं, शुद्ध कहावे सोय ॥ ५०८ ॥

ॐ ह्रीं शुद्धप्रतीहाराय नमः अर्घं ।

इन्द्री विषयन वश रहै, स्वै आतम लवलाय ।
ह्वां जितेन्द्र स्वाधीन हैं, वन्दूं तिनके पाय ॥ ५०९ ॥

ॐ ह्रीं जितेन्द्रियाय नमः अर्घं ।

ध्यान विषैं सो धारणा, निज आतम थिर धार ।
ताके अधिपति हो महा, भये भवार्णव पार ॥ ५१० ॥
ॐ ह्रीं धारणाधीश्वराय नमः अर्घं ।
रागादिक मल नाशिके, ध्यान सु धर्म लहाय ।
अचल रूप राजै सदा, वन्दूं मन वच काय ॥ ५११ ॥
ॐ ह्रीं धर्मध्याननिष्टाय नमः अर्घं ।
निजानन्दमें मगन हैं, पर पद राग निवार ।
समदृष्टि राजत सदा, हमें करो भव पार ॥ ५१२ ॥
ॐ ह्रीं समाधिराजाय नमः अर्घं ।
वीतराग निर्विकल्प हैं, ज्ञान उदय निरशंस ।
समरस भाव परम सुखी, नमत मिटै दुख अंश ।
ॐ ह्रीं स्फुरितसमरसीभवाय नमः अर्घं ।
एके रूप विराजते, नय विकल्प नहिं ठौर ।
वचन अगोचर शुद्धता, पाप विनाशो मोर ॥ ५१४ ॥
ॐ ह्रीं एकीभावनयरूपाय नमः अर्घं ।
परम दिगम्बर मुनि महा, समदृष्टी मुनिनाथ ।
ध्यावै पावै परम पद, नमूं जोर जुग हाथ ॥ ५१५ ॥
ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थनाथाय नमः अर्घं ।
योग साधि योगी भये, तिनके इन्द्र महान ।
ध्यावत पावत परम पद, पूजत निज कल्याण ॥५१६॥
ॐ ह्रीं योगींद्राय नमः अर्घं ।
शिव मारग सिद्धांतके, पार भये मुनि ईश ।

तारण तरण जिहाज हो, तुम्हैं नमूं नित शीश ॥५१७॥

ॐ ह्रीं ऋषये नमः अर्घं ।

निज स्वरूपको साधिकर, साधु भये जग माहिं ।
निजपर हितकर गुण धरैं, तीन लोक नमि ताहि ॥५१८॥

ॐ ह्रीं साधवे नमः अर्घं ।

रागादिक रिपु जीतिके, भये यती शुभ नाम ।
धर्म धुरंधर परम गुरु, जुगपद करूं प्रणाम ॥ ५१९ ॥

ॐ ह्रीं युगपते नमः अर्घं ।

पर संपतिसूं विमुख हो, स्वै पद रुचि करि नेम ।
मुनि मन रंजन पद महा, तुम धारत हो एम ॥ ५२० ॥

ॐ ह्रीं मुनये नमः अर्घं ।

महाश्रेष्ठ मुनिराज हो, स्वै पद पायो सार ।
महा परम निरग्रंथ हो, पूजत हूं मन धार ॥ ५२१ ॥

ॐ ह्रीं महर्षिणे नमः अर्घं ।

साधु भार दुर गमन है, ताहि उठावन हार ।
शिव-मंदिर पहुंचात हो, महाबली सुखकार ॥५२२॥

ॐ ह्रीं साधुधौरेयाय नमः अर्घं ।

इन्द्री मन जितजे जती, तिनके हो तुम नाथ ।
परम्परा मरजाद धर, देहु हमें निज साथ ॥ ५२३ ॥

ॐ ह्री यतीनाथाय नमः अर्घं ।

चार संघ मुनिराजके, ईश्वर हो परधान ।
पर हितकर सामर्थ्य हो, निज सम करि भगवान ॥५२४॥

ॐ ह्रीं मुनीश्वराय नमः अर्घं।

गणधरादि सेवक महा, तिन आज्ञा शिर धार।
समकित ज्ञान सु लक्ष्मी, पावत हैं निरधार ॥ ५२५ ॥

ॐ ह्रीं महामुनये नमः अर्घं।

महामुनी सर्वस्व हो, धर्म मूर्ति सर्वंग।
तिनको वन्दूं भाव युत, पाऊं मैं धर्मांग ॥ ५२६ ॥

ॐ ह्रीं महामौनये नमः अर्घं।

इष्टानिष्ट विभाव विन, समदृष्टी स्वध्यान।
मगन रहै निज पद विषैं, ध्यान रूप भगवान ॥ ५२७ ॥

ॐ ह्रीं महाध्यानपतये नमः अर्घं।

स्व सुभाव नही त्याग है, नहीं ग्रहण पर माहिं।
पाप कलाप न आपमें, परम शुद्ध नमूं ताहि ॥ ५२८ ॥

ॐ ह्रीं महाव्रतये नमः अर्घं।

क्रोध प्रकृति विनाशके, धरै क्षमा निज भाव।
समरस स्वादसु लहत है, वन्दूं शुद्ध स्वभाव ॥ ५२९ ॥

ॐ ह्रीं महाक्षमाय नमः अर्घं।

मोह रूप सन्ताप विन, शीतल महा स्वभाव।
पूरण सुख आकुल नहीं, वन्दूं मन धर चाव ॥ ५३० ॥

ॐ ह्रीं महाशीतलाय नमः अर्घं।

मन इन्द्रियके क्षोभ विन, महां शांति सुखरूप।
स्वैपद रमण स्वभाव नित, मैं वन्दूं शिवभूप ॥ ५३१ ॥

ॐ ह्रीं महाशांताय नमः अर्घं।

मन इन्द्रियको दमन कर, पायो ज्ञान अतीन्द्र ।
स्वाभाविक स्वशक्ति कर, वन्दूं भये जितेन्द्र ॥ ५३२ ॥
ॐ ह्रीं महोदयाय नमः अर्घं ।

पर पदार्थको क्लेश तजि, व्यापै निज पद माहिं ।
स्वच्छ स्वभाव विराजते, पूजत हूं नित ताहि ॥ ५३३ ॥
ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः अर्घं ।

संशयादि दृष्टी नही सम्यक ज्ञान मझार ।
सब पदार्थ प्रत्यक्ष लख, महा तुष्ट सुखकार ॥ ५३४ ॥
ॐ ह्रीं निर्भ्रांताय नमः अर्घं ।

शांतिरूप निज शांति गुण, सो तुमहीमें पाय ।
निज मन शांति सुभाव धर, पूजत हूं युग पाय ॥ ५३५ ॥
ॐ ह्रीं प्रशांताय नमः अर्घं ।

मुनि श्रावक द्वै धर्मके, तुम अधिपति शिवनाथ ।
भविजनको आनंद करि, तुम्हैं नवाऊं माथ ॥ ५३६ ॥
ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय नमः अर्घं ।

दया नीति वरताइयो, सुखी किये जगजीव ।
कल्पित राग ग्रसत नहीं, जानत मार्ग सदीव ॥ ५३७ ॥
ॐ ह्रीं दयाध्वजाय नमः अर्घं ।

केवल ब्रह्म स्वरूप हो, अन्तर बाह्य अदेह ।
ज्ञान जोति घन नमत हूं, मन वच तन धरि नेह ॥५३८॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये नमः अर्घं ।

स्वयं बुद्ध अविरुद्ध हो, स्वयं ज्ञान परकाश ।
स्वै परभाव दिखात हो, दीपक सम प्रतिभास ॥ ५३९ ॥
ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय नमः अर्घं ।

रागादिक मल नाशियो, महापवित्र सुखाय ।
शुद्ध स्वभाव धरै करै, सुरनर थुति न अघाय ॥ ५४० ॥
ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः अर्घं ।
वीतराग श्रद्धानता, संपूरण वैराग ।
द्वेष रहित शुभ गुण सहित, रहूं सदा पग लाग ॥५४१॥
ॐ ह्रीं स्नातकाय नमः अर्घं ।
माया मद आदिक हरे, भये शुद्ध सुख खान ।
निर्मल भाव थकी जजूं, होत पापकी हान ॥ ५४२ ॥
ॐ ह्रीं अमदभावाय नमः अर्घं ।
अतुल वीर्य जा ज्ञानमें, सूर्य समान परकाश ।
मोक्ष नाथ निज धर्म जुत, स्वयं ऐश्वर्य विलास ॥५४३॥
ॐ ह्रीं परमैश्वर्याय नमः अर्घं ।

मत्सर क्रोध न ईरषा, परमें द्वेष सु भाय ।
सो तुम नाशो सहज ही, निंदित दुखित विभाय ॥५४४॥
ॐ ह्रीं वीतमत्सराय नमः अर्घं ।
धरम भार सिर धारकर, समाधान परकाज ।
तुम सम श्रेष्ठ न धर्म अरू, तारण तरण जिहाज ॥५४५॥
ॐ ह्रीं धर्मवृषाय नमः अर्घं ।
क्रोध कर्म जडसै नसों, भयो क्षोभ सब दूर ।

महा शांति सुखरूप हो, पूजत अघ सब चूर ॥ ५४६ ॥

ॐ ह्रीं अक्षोभाय नमः अर्घं ।

इष्टमिष्ट बादर झरी, विद्युत विध कर खण्ड ।

जिष्णु महा कल्याण कर, शिवमग भाग प्रचण्ड ॥ ५४७ ॥

ॐ ह्रीं महाविधिखण्डाय नमः अर्घं ।

अमृतमय तुम जन्म है, लोक तुष्टताकार ।

जन्मकल्याणक इन्द्र कर, क्षीर नीर कर धार ॥ ५४८ ॥

ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय नमः अर्घं ।

इन्द्री विषय सुविषहरण, काम पिशाच विडार ।

मूर्तीक शुभ मंत्र हो, देव जजें हित धार ॥ ५४९ ॥

ॐ ह्रीं मंत्रमूर्तये नमः अर्घं ।

सौम्य दिशा परगट तनी, जाती विरोधी जीव ।

वैर छांड समभाव धर, सेवत चरण सदीव ॥ ५५० ॥

ॐ ह्रीं निर्वैरसौम्यभावाय नमः अर्घं ।

पराधीन इन्द्री विना, राग विरोध निवार ।

हो स्वाधीन न कर्णपर, स्वयं सिद्ध सुखकार ॥ ५५१ ॥

ॐ ह्रीं स्वतंत्रताय नमः अर्घं ।

ब्रह्मरूप नहीं बाह्य तन, संभव ज्ञान स्वरूप ।

स्वयं प्रकाश विलास धर, राजत अमल अनूप ॥ ५५२ ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मसम्भवाय नमः अर्घं ।

आनंदधार सु मगन है, सब विकल्प दुख टार ।

पर आश्रित नहीं भाव है, पूजूं आनंद धार ॥ ५५३ ॥

ॐ ह्रीं महाप्रसन्नाय नमः अर्घं ।

परिपूरण गुण सीम है, सर्व शक्ति भण्डार ।
तुमसे सुगुण न शेष हैं, जो न होय सुखकार ॥५५४॥

ॐ ह्रीं गुणांबुधये नमः अर्घं ।

ग्रहण त्यागको भाव तज, शुभ वा अशुभ अभेद ।
व्याधिकार है वस्तुमें, तुमें नमूं निरखेद ॥ ५५५ ॥

ॐ ह्रीं पुन्यपापनिरोधकाय नमः अर्घं ।

सूक्षम रूप अलक्ष है, गणधर आदि अगम्य ।
आप गुप्त परमातमा, इन्द्रिय द्वार अरम्य ॥ ५५६ ॥

ॐ ह्रीं अर्हंमहाअगम्यसूक्ष्मरूपाय नमः अर्घं ।

अन्तरगुण स्वै आत्मरस, ताको पान करात ।
पर प्रवेश नहीं रंच है, केवल मग्न सु जात ॥ ५५७ ॥

ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने नमः अर्घं ।

स्वैकारक स्वै कर्णकर, स्वैपद स्वै आधार ।
सिद्ध कियो स्वै रम लियो, पूजत हूं हितकार ॥५५८॥

ॐ ह्रीं सिद्धात्मने नमः अर्घं ।

नित्य उदै विन अस्त हो, पूरण दुति घन आप ।
ग्रहै न राहू जास शशि, सो हो हर सन्ताप ॥ ५५९ ॥

ॐ ह्रीं निरूपप्लुवाय नमः अर्घं ।

लियो अपूरव लाभको, अचल भये सुखधाम ।
पूज रचैं जे भावसों, पूरण होई सब काम ॥ ५६० ॥

ॐ ह्रीं महोदर्काय नमः अर्घं ।

है प्रशंस तिहुं लोकमें, तुम पुरुषार्थ उपाय ।
पायो पर्म सु धामको, पूजों तिनके पाय ॥ ५६१ ॥

ॐ ह्रीं महोपायाय नमः अर्घं ।

गणधरादि जे जगतपति, तथा सुरेन्द्र सुरीश ।
तुमको पूजत भक्तकरि, चरण धरैं निज शीश ॥५६२॥

ॐ ह्रीं जगतपितामहाय नमः अर्घं ।

तुमहींसों भवि सुख लहैं, तुम बिन दुख ही पाय ।
नेमरूप यहिहै तुम्हैं, महानाम इमगाय ॥ ५६३ ॥

ॐ ह्रीं महाकारुणाय नमः अर्घं ।

महा सुगुणकी रास हो, राजत हो गुण रूप ।
लौकिक गुण औगुण मही, सब ही द्वेष सरूप ॥५६४॥

ॐ ह्रीं शुद्धगुणाय नमः अर्घं ।

जन्म मरण आदिक महा, क्लेश ताहि निरवार ।
परम सुखी तुमको नमूं, पाऊं भवदधि पार ॥ ५६५ ॥

ॐ ह्रीं महाक्लेशनिवारणाय नमः अर्घं ।

रागादिक नहीं भाव है, द्रव्य देह नहीं धार ।
दोऊ मलिनता छांडके, स्वच्छ भये निरधार ॥ ५६६ ॥

ॐ ह्रीं महाशुचये नमः अर्घं ।

आधि व्याधि नही रोग है, नित प्रसन्न निज भाव
आकुलता बिन शांति सुख, धारत सहज सु भाव ॥५६७॥

ॐ ह्रीं अरूजाय नमः अर्घं ।

यथायोग्य पद थिर सदा, यथायोग्य निज लीन ।

अविनाशी अविकार है, नमैं मन्त नित दीन ॥ ५६८ ॥

ॐ ह्रीं सदायोगाय नमः अर्घं ।

स्वामृत रसको पान करि, भोगत हैं निज स्वाद ।
पर निमित्त चाहैं नही, करै न तिनको याद ॥ ५६९ ॥

ॐ ह्रीं सदाभोगाय नमः अर्घं ।

निर उपाधि निज धर्ममें, सदा रहैं सुखकार ।
रत्नत्रयकी मूरती, अनागार आगार ॥ ५७० ॥

ॐ ह्रीं सदाधृतये नमः अर्घं ।

रागद्वेष नहीं मूल है, है मध्यस्थ स्वभाव ।
ज्ञाता द्रष्टा जगतके, परसों नहीं लगाव ॥ ५७१ ॥

ॐ ह्रीं परमोदासीनाय नमः अर्घं ।

आदि अन्त विन वहत है, परम धाम निरधार ।
अन्तर परतन एक छिन, निज सुख परमाधार ॥५७२॥

ॐ ह्रीं शास्वते नमः अर्घं ।

मूल देह आकृति रहै, हो नहिं अन्य प्रकार ।
सत्याशन इम नाम हैं, पूजूं भक्ति लगार ॥ ५७३ ॥

ॐ ह्रीं सत्याशने नमः अर्घं ।

परम शांति सुखमय सदा, क्षोभ रहित तिस स्वामी ।
तीन काल प्रति शांति कर, तुम पद करूं प्रणाम ॥५७४॥

ॐ ह्रीं शांतिनायकाय नमः अर्घं ।

काल अनंतानंत करि, रुल्यो जीव जगमाहिं ।
आत्मज्ञान नहीं पाइयो, तुम पायो है ताहि ॥ ५७५ ॥

ॐ ह्रीं अपूर्वविध्याय नमः अर्घ ।

यथाख्यात चारित्रको, जानो मानो भेद ।
आत्मज्ञान केवल थकी, पायो पद निरभेद ॥ ५७६ ॥

ॐ ह्रीं योगज्ञायकाय नमः अर्घ ।

धर्मरूप सर्वस्व हो, राजत शुद्ध स्वभाव ।
धर्ममूर्ति तुमको नमूं, पाऊं मोक्ष उपाव ॥ ५७७ ॥

ॐ ह्रीं धर्ममूर्तये नमः अर्घ ।

स्वै आतम परदेशमें, अन्य मिलाप न होय ।
आकृति है निज धर्मकी, निज विभावको खोय ॥५७८॥

ॐ ह्रीं धर्मदेहाय नमः अर्घ ।

स्वामी हो निज आत्मके, अन्य सहाय न पाय ।
स्वयं सिद्ध परमातमा, हमपर होउ सहाय ॥ ५७९ ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मेशाय नमः अर्घ ।

निज पुरुषारथ करि लियो, मोक्ष परम सुखकार ।
करना था मो करि चुकै, तिष्ठो सुख आधार ॥५८०॥

ॐ ह्रीं कृतकृत्याय नमः अर्घ ।

असाधारण तुम गुण धरत, इन्द्रादिक नहीं पाय ।
लोकोत्तम बहु मान्य हो, वन्दूं हूं युग पाय ॥ ५८१ ॥

ॐ ह्रीं गुणात्मकाय नमः अर्घ ।

तुम गुण परम प्रकाश कर, तीन लोक विख्यात ।
सूर्य समान प्रताप धर, निरावरण उधरात ॥ ५८२ ॥

ॐ ह्रीं निरावरणगुणप्रकाशाय नमः अर्घ ।

समय मात्र नहीं आदि हैं, वहैं अनादि अनन्त।
तुम प्रवाह इस जगतमें, तुम्है नमें नित सन्त ॥५८३॥

ॐ ह्रीं निर्निमेषाय नमः अर्घं ।

योग द्वार त्रिन करम रज, चढै न निज परदेश ।
ज्यों विन छिद्र न जल ग्रहै, नवका शुद्ध हमेश ॥५८४॥

ॐ ह्रीं निराश्रवाय नमः अर्घं ।

परम ब्रह्म पद पाइयो, पूरण ज्ञान प्रकाश ।
तीन लोकके जीव सब, पूजें चरण निवास ॥ ५८५ ॥

ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये नमः अर्घं ।

द्रव्य पर्यार्थिक नय दोऊ, साधत वस्तु स्वरूप।
गुण अनन्त अवरोध कर, कहत सरूप अनूप ॥ ५८६ ॥

ॐ ह्रीं सुनयाय नमः अर्घं ।

सूर्य समान प्रकाश कर, कर्म दुष्ट हन सूर ।
शरण गही तुम चरणकी, करो ज्ञान दुति पूरि ॥ ५८७ ॥

ॐ ह्रीं सूरये नमः अर्घं ।

तुम सम और न जगतमें, सत्यारथ तत्वज्ञ ·
सम्यग्ज्ञान प्रभावतें, हो अदोष सर्वज्ञ ॥ ५८८ ॥

ॐ ह्रीं तत्वज्ञानाय नमः अर्घं ।

तीन लोक हितकार हो, शरणागति प्रतिपाल ।
भव्यनि मन आनन्द करि, वन्दूं दीनदयाल ॥ ५८९ ॥

ॐ ह्रीं महामित्राय नमः अर्घं ।

समता सुखमें मगन हैं, राग द्वेष संक्लेश ।

ताको नाश सुखी भए, युग युग जयो जिनेश॥ ५९० ॥

ॐ ह्रीं साम्यभावधारकजिनाय नमः अर्घं।

निरावरण निज ज्ञानमें, संशय विभ्रम नाहिं।

सम्यग्ज्ञान प्रकाशते, वस्तु प्रमाण दिखाय॥ ५९१ ॥

ॐ ह्रीं प्रक्षीणबन्धाय नमः अर्घं।

एक रूप परकाश कर, दुविधि भाव विनशाय।

पर निमित्त लवलेश नहीं, वन्दूं तिनके पाय॥ ५९२ ॥

ॐ ह्रीं निर्द्वन्द्वाय नमः अर्घं।

मुनि विशेष स्नातक कहै, परमातम परमेश।

तुम ध्यावत निर्वाण पद, पावै भविक हमेश॥ ५९३ ॥

ॐ ह्रीं परमर्षये नमः अर्घं।

पंच प्रकार शरीर बिन, दीप्त रूप निजरूप।

सुर मुनि मन रमणीय हैं, पूजत हूं शिवभूप॥ ५९४ ॥

ॐ ह्रीं अनंगाय नमः अर्घं।

द्वय प्रकार बन्धन रहित, वन्दूं मोक्ष सरूप।

भविजन बन्ध विनाशकर, देहो मोक्ष अनूप॥ ५९५ ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणाय नमः अर्घं।

सुगुण रत्नकी राशके, आप महा भण्डार।

अगम अथाह विराजते, वन्दूं भाव विचार॥ ५९६ ॥

ॐ ह्रीं सागराय नमः अर्घं।

मुनिजन ध्यावें भावयुत, महा मोक्षपद साध।

सिद्ध भये मैं नमत हूं, चहूं संघ आराध॥ ५९७ ॥

ॐ ह्रीं महासाधवे नमः अर्घं ।

ज्ञान जोति प्रतिभासमें, रागादिक मल नाहिं ।
विशद अनूपम लसत हो, दीप्त ज्योति शिव राह ॥ ५९८ ॥

ॐ ह्रीं विमलभावाय नमः अर्घं ।

द्रव्यभाव मल नाश कर, शुद्ध निरञ्जन देव ।
निज आतममें रमत हो, आश्रय विन स्वयमेव ॥ ५९९ ॥

ॐ ह्रीं शुद्धात्मने नमः अर्घं ।

शुद्ध अनन्त चतुष्ट गुण, धरत तथा शिवनाथ ।
श्रीधर नाम कहात हो, हरिहर नावत माथ ॥ ६०० ॥

ॐ ह्रीं श्रीधराय नमः अर्घं ।

मरणादिक भयसे सदा, रक्षित है भगवान ।
स्वयं प्रकाश विलासमें, राजत सुखकी खान ॥ ६०१ ॥

ॐ ह्रीं मरणभयनिवारणाय नमः अर्घं ।

राग द्वेष नहीं भावमें, शुद्ध निरञ्जन आप ।
ज्योंके त्यो तुम थिर रहो, तनक न व्यापे पाप ॥ ६०२ ॥

ॐ ह्रीं विमलाभाय नमः अर्घं ।

भवसागरसे पार हो, पहुंचे शिवपद तीर ।
भाव सहित तिन नमत हूं, लहूं न फुनी भव पीर ॥ ६०३ ॥

ॐ ह्रीं उद्धराय नमः अर्घं ।

अग्निदेव वा अग्नि दिश, ताके देव विशेष ।
ध्यावत हैं तुम चरणयुग, इन्द्रादिक सुर शेष ॥ ६०४ ॥

ॐ ह्रीं अग्निदेवाय नमः अर्घं ।

विषय कषाय न रंच है, निरावरण निरमोह ।
इन्द्री मनको दमन कर, वन्दूँ सुन्दर सोह ॥ ६०५ ॥
ॐ ह्रीं मोहविजयसंयमधारकजिनाय नमः अर्घं ।
मोहरूप कल्याण कर, सुख–सागरके पार ।
महादेव स्वशक्ति धर, विद्या तिय भरतार ॥ ६०६ ॥
ॐ ह्रीं शिवाय नमः अर्घं ।
पुष्प भेंट धर जजत सुर, निजकर अंजुलि जोड़ ।
कमलापति कर कमलमें, धरैं लक्ष्मी होड़ ॥ ६०७ ॥
ॐ ह्रीं पुष्पांजलये नमः अर्घं ।
पूरण ज्ञानानंद मय, अजर अमर अमलान ।
अविनाशी ध्रुव निखिल पद, अविकारी सब मान ॥६०८॥
ॐ ह्रीं शिवगुणाय नमः अर्घं ।
राग शोक भय आदि बिन, राजत नित आनंद ।
खेद रहित रति अरति विना, विकसत पूरणचन्द्र ॥६०९॥
ॐ ह्रीं परमोत्साहजिनाय नमः अर्घं ।
जे गुण शक्ति अनंत है, ते सब ज्ञान मझार ।
एक मिष्ट आकृति विविध, सोहत हैं अविकार ॥६१०॥
ॐ ह्रीं ज्ञानाय नमः अर्घं ।
परम पूज्य परधान है, परम शक्ति आधार ।
परम पुरुष परमातमा, परमेश्वर सुखकार ॥ ६११ ॥
ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः अर्घं ।
दोष अक्रोश अगोम हो, सम सन्तोष अलोप ।

पंच परम पद धारियत, भविजनको परपोष ॥ ६१२ ॥

ॐ ह्रीं विमलेशाय नमः अर्घ्यं ।

पंचकल्याणक युक्त हैं, समोशरण ले आदि ।

इन्द्रादिक नित करत है, तुम गुण गण अनुवाद ॥६१३॥

ॐ ह्रीं यशोधराय नमः अर्घं ।

कृष्ण नाम तीर्थेश हैं, भावी काल कहाय ।

सुमति गोपिथन संग रमत, निज लीला दर्शाय । ६१४॥

ॐ ह्रीं कृष्णाय नमः अर्घं ।

सम्यग्ज्ञान समाधि धर, मिथ्या मोह निवार ।

पर हितकर उपदेश है, निश्चय वा व्यवहार ॥ ६१५ ॥

ॐ ह्रीं मोहतिमिरविनाशकाय नमः अर्घं ।

वीतराग सर्वज्ञ हैं, उपदेशक हितकार ।

सत्यारथ परमाण कर, अन्य सुमति दातार ॥ ६१६ ॥

ॐ ह्रीं सुमतये नमः अर्घं ।

मायाचार न शल्य है, शुद्ध सरल परिणाम ।

ज्ञानानन्द स्वलक्ष्मी, भोगत हैं अभिराम ॥ ६१७ ॥

ॐ ह्रीं भद्राय नमः अर्घं ।

शील स्वभाव सु जन्म लें, अन्त समय निरवाण।

भविजन आनन्दकार हैं, सर्व कलुषता हान ॥ ६१८ ॥

ॐ ह्रीं शांतिजिनाय नमः अर्घं ।

धर्म रूप अवतार हो, लोक पापको भार ।

मृतक स्थल पहुंचाइयो, सुलभ कियो सुखकार ॥६१९॥

ॐ ह्रीं वृषभाय नमः अर्घ्यं ।

अन्तर बाहिर शत्रुको, निमिष करै नही जोर ।
विजय लक्ष्मी नाथ हो, पूजूं द्वै कर जोर ॥ ६२० ॥

ॐ ह्रीं अजिताय नमः अर्घ्यं ।

तीन लोक आनंद हो, श्रेष्ठ जन्म तुम होत ।
स्वर्ग मोक्ष दातार हो, पावत नहीं कुमोत ॥ ६२१ ॥

ॐ ह्रीं संभवाय नमः अर्घ्यं ।

परम सुखी तुम आप हो, पर आनंद कराय ।
तुमको पूजत भावसों, मोक्ष लक्ष्मी पाय ॥ ६२२ ॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दनाय नमः अर्घ्यं ।

सब कुवादि एकांतको, नाश कियो छिन माहिं ।
भविजन मन संशय हरण, और लोकमें नाहिं ॥६२३॥

ॐ ह्रीं सुमतये नमः अर्घ्यं ।

भविजन मधुकर कमल हो, धरत सुगन्ध अपार ।
तीन लोकमें विस्तरी, सुयश नामको धार ॥ ६२४ ॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभाय नमः अर्घ्यं ।

पारस लोहा हेम करि, तुम भव बंध निवार ।
मोक्ष हेतु तुम श्रेष्ठ गुण, धारत हो हितकार ॥ ६२५ ॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वाय नमः अर्घ्यं ।

तीन लोक आताप हर, मुनि मन मोदन चन्द ।
लोक प्रिय अवतार हो, पाऊं सुख तुम वन्द ॥ ६२६ ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभाय नमः अर्घ्यं ।

मन मोदन सोहन महा, धारैं रूप अनूप ।
दरशत मन आनंद हो, पायो स्वैरस रूप ॥ ६२७ ॥
ॐ ह्रीं पुष्पदंताय नमः अर्घं ।

भव भव दाह निवार कर, शीतल भए जिनेश ।
मानो अमृत सींचियो, पूजत सदा सुरेश ॥ ६२८ ॥
ॐ ह्रीं शीतलनाथाय नमः अर्घं ।

तीर्थंकर श्रेयांश हम, देहो श्री शुभ भाग ।
श्री सु अनंत चतुष्ट हो, और सकल दुरभाग ॥६२९॥
ॐ ह्रीं श्रेयांशनाथाय नमः अर्घं ।

त्रस नाड़ी या लोकमें, तुम ही पूज्य प्रधान ।
तुमको पूजत भावसो, पाऊं सुख निरवाण ॥ ६३० ॥
ॐ ह्रीं वासपूज्याय नमः अर्घं ।

द्रव्य भाव मल रहित हैं, महा मुनिनके नाथ ।
इन्द्रादिक पूजत सदा, नमूं पदांबुज माथ ॥ ६३१ ॥
ॐ ह्रीं विमलनाथाय नमः अर्घं ।

जाको पार न पाइयो, गणधर और सुरेश ।
थकित रहै असमर्थ करि, प्रणमें सन्त हमेश ॥ ६३२ ॥
ॐ ह्रीं अनंतनाथाय नमः अर्घं ।

अनागार आगारके, उद्धारक जिनराज ।
धर्मनाथ प्रणमूं सदा, पाऊं शिवसुख साज ॥ ६३३ ॥
ॐ ह्रीं धर्मनाथाय नमः अर्घं ।

शांति रूप पर शांति कर, कर्म दाह विनिवार ।

शांति हेत वन्दूं सदा, पाऊं भवदधि पार ॥ ६३४ ॥

ॐ ह्रीं शांतिनाथाय नमः अर्घं।

क्षुद्र वीर्य सब जीवके, रक्षक है तीर्थेश।
शरणागति प्रतिपाल कर, ध्यावै सदा सुरेश ॥ ६३५ ॥

ॐ ह्रीं कुन्थनाथाय नमः अर्घं।

पूजनीक सब जगतके, मंगलकारक देव।
पूजत हैं हम भावसो, विनशै अघ स्वयमेव ॥ ६३६ ॥

ॐ ह्रीं अरहनाथाय नमः अर्घं।

मोह काम भट जीतियो, जिन जीतो मब लोक।
लोकोत्तम जिनराजके, नमूं चरण दे धोक ॥ ६३७ ॥

ॐ ह्रीं मल्लिनाथाय नमः अर्घं।

पंच पापको त्यागकरि, भव्य जीव आनन्द।
भये जासु उपदेशतें, पूजत हूं पद वृन्द ॥ ६३८ ॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रताय नमः अर्घं।

सुरनर मुनि नित नमन करि, ज्ञान धरम अवतार।
तिनको पूजूं भाव युत, लहूं भवार्णव पार ॥ ६३९ ॥

ॐ ह्रीं नमिनाथाय नमः अर्घं।

नेम धर्ममें नित रमें, धर्मधुरा भगवान।
धर्मचक्र जगमें फिरे, पहुंचावै शिव थान ॥ ६४० ॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथाय नमः अर्घं।

शरणागति निज पास दो, पाय फांस दुख नाश।
तिसको छेदो मूलसों, देहु मुकत गति वास ॥ ६४१ ॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय नमः अर्घं।

वृद्ध भावतें उच्चपद, लोक शिखर आरूढ़।
केवल लक्ष्मी बद्धता, भई सु अन्तर गूढ़ ॥ ६४२ ॥

ॐ ह्रीं वर्द्धमानाय नमः अर्घं।

अतुल वीर्य तन धरत है, अतुल वीर्य मन बीच।
कामिन वश नहीं रंच भी, जैसे जल बिच मीच ॥६४३॥

ॐ ह्रीं महावीराय नमः अर्घं।

मोह सुभटकूं पटकियो, तीन लोक परशंस
श्रेष्ठ पुरुष तुम जगतमें, कियो कर्म विध्वंश ॥ ६४४ ॥

ॐ ह्रीं सुवीराय नमः अर्घं।

मिथ्या मोह निवार करि, महा सुमति भण्डार।
शुभ मारग दरशाइयो, शुभ अरु अशुभ विचार। ६४५॥

ॐ ह्रीं सन्मतये नमः अर्घं।

निज आश्रय निर्विघ्न नित, स्व लक्ष्मी भण्डार।
चरणाम्बुज नित नमत हम, पुष्पांजलि शुभ धार॥ ६४६ ॥

ॐ ह्रीं महापद्माय नमः अर्घं।

हो देवाधीदेव तुम, नमत देव चउ भेद।
धरो अनन्त चतुष्टपद, परमानन्द अभेद ॥ ६४७ ॥

ॐ ह्रीं सुरदेवाय नमः अर्घं।

निरावर्ण आभास है, ज्यों विन पटल दिनेश।
लोकालोक प्रकाश करि, सुंदर प्रभा जिनेश ॥ ६४८ ॥

ॐ ह्रीं सुप्रभाय नमः अर्घं।

आतमीक निज गुण लिये, दीप्ति सरूप अनूप ।
स्वयं जोति परकाशमय, वंदत हूं शिवभूप ॥ ६४९ ॥
ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय नमः अर्घ्य ।

स्वै शक्ती स्वै करण हैं, साधन बाह्य अनेक ।
मोह सुभट क्षय करनको, आयुध रास विवेक ॥ ६५० ॥
ॐ ह्रीं सर्वायुधाय नमः अर्घ्य ।

जय जय सुर धुनि करत है, तथा विजय निधि देव ।
तुम पद जे नर नमत हैं, पावे सुख स्वयमेव ॥ ६५१ ॥
ॐ ह्रीं जयदेवाय नमः अर्घ्य ।

तुम सम प्रभा न औरमें, धरो ज्ञान परकाश ।
नाथ प्रभा जगमें भ्रमत, नमत मोहतम नाश ॥ ६५२ ॥
ॐ ह्रीं प्रभादेवाय नमः अर्घ्य ।

रक्षक हो षट् कायके, दयासिंधु भगवान ।
शशि सम जिय आल्हाद करि, पूजनीक धरि ध्यान ॥६५३॥
ॐ ह्रीं उदक्देवाय नमः अर्घ्य ।

समाधान सबके करैं, द्वादश सभा मझार ।
सर्व अर्थ परकाश कर, दिव्य ध्वनि सुखकार ॥ ६५४ ॥
ॐ ह्रीं प्रश्नकीर्तये नमः अर्घ्य ।

काहू विधि बाधा नहीं, कबहूं नहीं व्यय होय ।
उन्नति रूप विराजते, जयवन्तो जग सोय ॥ ६५५ ॥
ॐ ह्रीं जयरूपजिनायजयाय नमः अर्घ्य ।

केवलज्ञान स्वभावमें, लोक त्रय इक भाग।
पूरणताको पाइयो, छांडि सकल अनुराग ॥ ६५६ ॥
ॐ ह्रीं पूर्णबुद्धाय नमः अर्घ्यं।

पर आलिंगन भाव तज, इच्छा क्लेश विडार।
निज सन्तोष सुखी सदा, पर सम्बन्ध निवार ॥ ६५७ ॥
ॐ ह्रीं निजानंदसंतुष्टजिनाय नमः अर्घ्यं।

मोहादिक मल नाशकर, अतिशय करि अमलान।
विमल जिनेश्वर मैं नमूं, तीन लोक परधान ॥ ६५८ ॥
ॐ ह्रीं विमलाय नमः अर्घ्यं।

स्वैपदमें नित रमत हैं, कभी न आरति होय।
अतुल वीर्य विधि जीतियो, नमूं जोर कर दोय ॥ ६५९ ॥
ॐ ह्रीं महाबलाय नमः अर्घ्यं।

द्रव्य भाव मल कर्म हैं, ताको नाश करान।
शुद्ध निरंजन हो रहै, ज्यों बादल विन भान ॥ ६६० ॥
ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः अर्घ्यं।

तुम चित्राम अरूप है, सुरनर साधु अगम्य।
निराकार निर्लेप है, धारत भाव असम्य ॥ ६६१ ॥
ॐ ह्रीं चित्रगुप्ताय नमः अर्घ्यं।

मग्न भये निज आत्ममें, पर पदमें नहीं वास।
अक्षय अलक्ष विराजते, पूरो मनकी आश ॥ ६६२ ॥
ॐ ह्रीं समाधिगुप्तये नमः अर्घ्यं।

निज गुण आतम ज्ञान है, पर सहाय नहीं चाह ।
स्वयं भाव परकाशियो, नमत मिटै भव दाह ॥ ६६३ ॥
ॐ ह्रीं स्वयंभूवे नमः अर्घ ।

मन मोहन सोहन महा, मुनि मन रमण अनन्द ।
महा तेज परताप हैं, पूरण ज्योति अमन्द ॥ ६६४ ॥
ॐ ह्रीं कंदर्पाय नमः अर्घं ।

विजय लक्ष्मी नाथ हैं, जीते कर्म प्रधान ।
तिनको पूजै सर्व जग, मैं पूजों धरि ध्यान ॥ ६६५ ॥
ॐ ह्रीं विजयनाथाय नमः अर्घ ।

गणधरादि योगीश जै, विमलाचारी सार ।
तिनके स्वामी हो प्रभू, राग द्वेष मल जार ॥ ६६६ ।
ॐ ह्रीं विमलेशाय नमः अर्घ ।

दिव्य अनक्षर ध्वनि खिरै, सर्व अर्थ गुणधार ।
भविजन मन संशय हरन, शुद्ध बोध आधार ॥ ६६७ ॥
ॐ ह्रीं दिव्यवादाय नमः अर्घं ।

नहीं पार जा वीर्यको, स्वाभाविक निरधार ।
सो सहजै गुण धरत हो, नमूं लहूं भवपार ॥ ६६८ ॥
ॐ ह्रीं अनन्तवीर्याय नमः अर्घ ।

पुरुषोत्तम परधान हो, परम निजानन्द धाम ।
चक्रपती हरिबल नमें, मैं पूजूं निष्काम ॥ ६६९ ॥
ॐ ह्रीं महापुरुषदेवाय नमः अर्घं ।

शुभ विधि सब आचरण हैं, सर्व जीव हितकार।
श्रेष्ठ बुद्ध अति शुद्ध हैं, नमूं तजो भवपार ॥ ६७० ॥
ॐ ह्रीं सविधये नमः अर्घं ।

है प्रमाण करि सिद्ध जै, ते हैं बुद्धि प्रमाण ।
सो विशुद्धमय रूप हैं, संशय तमको भान ॥ ६७१ ॥
ॐ ह्रीं प्रज्ञाप्रमिताय नमः अर्घं ।

समय प्रमाण नमित तनी, कभी अन्त नहीं होय ।
अविनाशी थिर पद धरैं, मैं प्रणमूं हूं सोय ॥ ६७२ ॥
ॐ ह्रीं अव्ययाय नमः अर्घं ।

प्रतिपालक जगदीश हैं, सर्व मान परमान ।
अधिक शिरोमणि लोकगुरु, पूजत नित कल्याण ॥६७३॥
ॐ ह्रीं पुराणपुरुषाय नमः अर्घं ।

धर्मसहायक हो प्रभू, धर्म मार्गकी लीक ।
शुभ मर्यादा बन्ध प्रति, करण चलावन ठीक ॥ ६७४ ॥
ॐ ह्रीं धर्मसारथये नमः अर्घं ।

शिव मारग दिखलाय कर, भविजन कियो उद्धार ।
धर्म सुयश विस्तार कर, बतलायो शुभ सार ॥ ६७५ ॥
ॐ ह्रीं शिवकीर्तिजिनाय नमः अर्घं ।

मोह अन्ध हन सूर्य हो, जगदीश्वर शिवनाथ ।
मोक्षमार्ग परकाश कर, नमूं जोर जुग हाथ ॥ ६७६ ॥
ॐ ह्रीं मोहांधकारविनाशकजिनाय नमः अर्घं ।



मन इन्द्री व्यापार विन, भाव रूप विध्वंश ।
ज्ञान अतींद्रिय धरत हो, नमत नशे अघवंश ॥ ६७७ ॥

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियज्ञानरूपजिनाय नमः अर्घ्यं ।

पर उपदेश परोक्ष विन, साक्षात परतक्ष ।
जानत लोकालोक सब, धारैं ज्ञान अलक्ष ॥ ६७८ ॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञकेवलज्ञानजिनाय नमः अर्घ्यं ।

व्यापक हो तिहुं लोकमें, ज्ञान ज्योति सब ठौर ।
तुमको पूजत भावसों, पाऊं भवदधि और ॥ ६७९ ॥

ॐ ह्रीं विश्वभूतये नमः अर्घ्यं ।

इन्द्रादिक कर पूज्य हो, मुनिजन ध्यान धराय ।
तीन लोक नायक प्रभू, हमपर होउ सहाय ॥ ६८० ॥

ॐ ह्रीं विश्वनायकाय नमः अर्घ्यं ।

तुम देवनके देव हो, महादेव हैं नाम ।
विन ममत्व शुद्धात्मा, तुम पद करूं प्रणाम ॥ ६८१ ॥

ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः अर्घ्यं ।

सर्व व्यापिय कुमती कहैं, करो भिन्न विश्राम ।
जगसों तजो समीपता, राजत हो शिवधाम ॥ ६८२ ॥

ॐ ह्रीं निरंतरजिनाय नमः अर्घ्यं ।

हितकारी अति मिष्ट हैं, अर्थ सहित गम्भीर ।
प्रिय वाणी कर पोखते, द्वादश सभा सु तीर ॥६८३॥

ॐ ह्रीं मिष्टदिव्यध्वनिजिनाय नमः अर्घ्यं ।

भवसागरके पार हो, सुखसागर गलतान ।
भव्यजीव पूजत चरन, पावै पद निरवाण ।। ६८४ ।।
ॐ ह्री भवांताय नमः अर्घ ।

नहीं चलाचल भाव हैं, पाप कलाप न लेश ।
दृढ़ परणित स्वै आत्मरस, पूजूं श्री मुक्तेश ।। ६८५ ।।
ॐ ह्रीं द्रढ़व्रताय नमः अर्घ ।

असंख्यात नय भेद हैं, यथायोग्य वच द्वार ।
तिन सबको जानो सुविघ, महा निपुण मति धार ।।६८६।।
ॐ ह्रीं नियुक्तिज्ञानधारकजिनाय नमः अर्घ ।

क्रोधादिक सु उपाधि हैं, आत्म विभाव कराय ।
तिनको त्याग विशुद्ध पद, पायो पूजूं पाय ।। ६८७ ।।
ॐ ह्रीं निष्कषायाय नमः अर्घ ।

ज्यों शशि किरण उद्योत है, पूरण प्रभा प्रकाश ।
कलाधार सोहैं सु इम, पूजत अघ तम नाश ।। ६८८ ।।
ॐ ह्रीं पूर्णकलाधराय नमः अर्घ ।

जन्म मरणको आदि ले, जगमें क्लेश महान ।
तिसके हंता हो प्रभू, भोगत सुख निर्वाण ।। ६८९ ।।
ॐ ह्रीं विश्वक्लेशहननाय नमः अर्घ ।

ध्रुव स्वरूप स्थिर हैं सदा, कभी अन्त नहीं होय ।
अव्याबाध बिराजते, पर सहायको खोय ।। ६९० ।।
ॐ ह्रीं ध्रौव्यरूपजिनाय नमः अर्घ ।

व्यय उत्पाद सुभाव है, ताको गौण कराय।
अचल अनन्त स्वभावमें, तीन लोक सुखदाय ॥६९१॥
ॐ ह्रीं अक्षयअनंतस्वभावात्मकजिनाय नमः अर्घं।

स्व ज्ञानादि चतुष्ट पद, हृदे माहिं विकसाय।
सोहत हैं शुभ चिह्न करि, भवि आनंद कराय ॥६९२॥
ॐ ह्रीं वत्सलांछनाय नमः अर्घं।

धर्म रीति परगट कियो, युगकी आदि मझार।
भविजन पोषै सुख सहित, आदि धर्म अवतार ॥६९३॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः अर्घं।

चतुरानन परसिद्ध हैं, दर्श होय चहुं ओर।
चउ अनुयोग बखानते, सब दुख नासौ मोर ॥ ६९४ ॥
ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय नमः अर्घं।

जगत जीव कल्याण कर, धर्म मर्याद वखान।
ब्रह्म ब्रह्म भगवान हो, महामुनी सब मान ॥ ६९५ ॥
ॐ ह्रीं जगतजीवकल्याणकारणजिनाय नमः अर्घं।

प्रजापति प्रतिपाल कर, ब्रह्मा विधि करतार।
मन्मथ इन्द्री वश करन, वन्दूं सुख आधार ॥ ६९६ ॥
ॐ ह्रीं विधात्रे नमः अर्घं।

तीन लोककी लक्ष्मी, तुम चरणाम्बुज वास।
श्रीपति श्रीधर नाम शुभ, दिव्यासन सुखरास ॥६९७॥
ॐ ह्रीं कमलासनाय नमः अर्घं।

बहुरि न जगमें भ्रमण है, पंचम गतिमें वास।
नित्य अमरता पाइयो, जरा मृत्युको नाश ॥ ६९८ ॥
ॐ ह्रीं अजन्मिने नमः अर्घ।

पांच काय पुद्गलमई, तामें एक न होय।
केवल आत्म प्रदेश ही, तिष्ठत हैं दुख खोय ॥ ६९९ ॥
ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः अर्घ।

लोक शिखर सुखसो रहैं, ये ही प्रभुता जान।
धारत हैं तिहुं लोकमें, अधिक प्रभा परधान ॥ ७०० ॥
ॐ ह्रीं लोकशिखरनिवासिने नमः अर्घ।

अधिक प्रताप प्रकाश है, मोह तिमिरको नाश।
शिवमग दिखलावन सही, सूरज शशि प्रतिभास ॥ ७०१ ॥
ॐ ह्रीं सुरजेष्टाय नमः अर्घ।

प्रजापाल हित धार उर, शुभ मारग बरताय।
सत्यारथ ब्रह्मा कहै, तुमरे बन्दूं पाय ॥ ७०२ ॥
ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः अर्घ।

गर्भ समय षट्मास ही, प्रथम इन्द्र हर्षाय।
रत्नवृष्टि नित करत हैं, उत्तम गर्भ कहाय ॥ ७०३ ॥
ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः अर्घ।

तुम ही चार अनुयोगके, अंग कहै मुनिराज।
तुमसो पूरण श्रुत सही, नांतर मंगल काज ॥ ७०४ ॥
ॐ ह्रीं वेदांगाय नमः अर्घ।

तुम उपदेश थकी कहैं, द्वादशांग गणराज ।
पूरण ज्ञाता तुम्हीं हो, प्रणमूं मैं शिवकाज ॥ ७०५ ॥
ॐ ह्रीं पूर्णवेदज्ञाय नमः अर्घं ।

पार भये भवसिंधुके, तथा सुवर्ण समान ।
उत्तम निर्मल थुति धरैं, नमत कर्ममल हान ॥ ७०६ ॥
ॐ ह्रीं भवसिंधुपारगाय नमः अर्घं ।

सुखाभास पर निमिततैं, पर उपाधितें होत ।
स्वतः सुभाव धरो सही, सत्यानंद उद्योत ॥ ७०७ ॥
ॐ ह्रीं सत्यानंदाय नमः अर्घं ।

मोहादिक परबल महा, सोइ शको तुम जीत ।
औरनकी गिनती कहां, तिष्ठो सदा अभीत ॥ ७०८ ॥
ॐ ह्रीं अजयाय नमः अर्घं

दिव्य रत्नमय ज्योति हैं, अमित्त अकंप अडोल ।
मनवांछित फलदाय हो, राजत अक्षय अमोल ॥७०९॥
ॐ ह्रीं मनवांछितफलदाय नमः अर्घं ।

देह धार जीवन मुकत, परमातम भगवान ।
सूर्य समान सुदीप्त धर, महा ऋषीश्वर जान ॥ ७१० ॥
ॐ ह्रीं जीवनमुक्तजिनाय नमः अर्घं ।

स्वयं भय आदिकसे परै, पर भय आदि निवार ।
पर उपाधि बिन नित सुखी, वन्दूं भाव ममार ॥७११॥
ॐ ह्रीं त्रातानंदाय नमः अर्घं ।

ईश्वर हो तिहुँ लोकके, परम पुरुष परधान ।
ज्ञानानन्द स्वलक्ष्मी, भोगत नित अमलान ॥ ७१२ ॥

ॐ ह्रीं विष्णवे नमः अर्घं ।

रत्नत्रय पुरुषार्थ करि, हो प्रसिद्ध जयवंत ।
कर्मशत्रुको क्षय कियो, शीश नमें नित सन्त ॥ ७१३ ॥

ॐ ह्रीं त्रिविक्रमाय नमः अर्घं ।

सूरज हो शिवराहके, कर्म दलन बलि सूर ।
संशय केतुनि ग्रहण सम, महा सहज सुख पूर ॥ ७१४ ॥

ॐ ह्रीं मोक्षमार्गप्रकाशकआदित्यरूपजिनाय नमः अर्घं ।

सुभग अनंत चतुष्टपद, सोई लक्ष्मी भोग ।
स्वामी हो शिवनारिके, नमूं जोरि तिहुं योग ॥ ७१५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपतये नमः अर्घं ।

इन्द्रादिक पूजत जिन्हैं, पंचकल्याणक थाय ।
अद्भुत पराक्रमको धरैं, नमत नसैं भव पाप ॥ ७१६ ॥

ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमाय नमः अर्घं ।

निज प्रदेशमें बसत हैं, परमातमको वास ।
आप मोक्षके नाथ हो, आप हि मोक्ष निवास ॥ ७१७ ॥

ॐ ह्रीं वैकुण्ठाधिपतये नमः अर्घं ।

सर्व लोक कल्याण कर, विष्णु नाम भगवान ।
श्री अर्हंत स्व लक्ष्मी, ताके भरता जान ॥ ७१८ ॥

ॐ ह्रीं सर्वलोकश्रेयस्करजिनाय नमः अर्घं ।

मुनिमन कुमुदिन मोदकर, भव संताप विनाश।
पूरण चन्द्र त्रिलोकमें, पूरण प्रभा प्रकाश ॥ ७१९ ॥
ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः अर्घं।

दिनकर सम परकाश कर, हो देवनके देव।
ब्रह्मा विष्णु कहात हो, शशि सम दुति स्वयमेव ॥ ७२० ॥
ॐ ह्रीं हरये नमः अर्घं।

स्वयं विभवके हो धनी, स्वयं ज्योति परकाश।
स्वयं ज्ञान द्रिग वीर्य सुख, स्वयं सुभाव विलास ॥ ७२१ ॥
ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः अर्घं।

धर्म भार धर धारिणी, हो जिनेन्द्र भगवान।
तुमको पूजो भावसों, पाऊं पद निर्वाण ॥ ७२२ ॥
ॐ ह्रीं विश्वंभराय नमः अर्घं।

असुर काम अर हास्य इन, आदि कियो विध्वंश।
महा श्रेष्ठ तुमको नमूं, रहै न अघको अंश ॥ ७२३ ॥
ॐ ह्रीं कामादिअसुरध्वंसिने नमः अर्घं।

सुधाधार द्यो अमरपद, धर्म फूलकी वेल।
शुभ मति गोपिन संगमें, हमें राख निज गेल ॥ ७२४ ॥
ॐ ह्रीं माधवाय नम. अर्घं।

विपय कषाय स्व वश करी, बलि वश कियो जु राम।
महा बली परसिद्ध हो, तुम पद करूँ प्रणाम ॥ ७२५ ॥
ॐ ह्रीं बलिबन्धनाय नमः अर्घं।

तीन लोक भगवान हो, स्वै परके हितकार ।
सुरनर पशु पूजत सदा, भक्ति भाव उर धार ॥ ७२६ ॥
ॐ ह्रीं अधोक्षजाय नमः अर्घ ।

हितमित मिष्ट प्रिये वचन, अमृत सम सुखदाय ।
धर्म मोक्ष परगट करन, वन्दूं तिनके पाय ॥ ७२७ ॥
ॐ ह्रीं हितमितप्रियवचनजिनाय नमः अर्घ ।

निज लीलामें मगन हैं, साचा कृष्ण सु नाम ।
तीन खण्ड तिहुं लोकके, नाथ करूं परणाम ॥ ७२८ ॥
ॐ ह्रीं केशवाय नमः अर्घ ।

सूके तृण सम जगतकी, विभव जान करवास ।
धरै सरलता जोगमें, करै पापको नाश ॥ ७२९ ॥
ॐ ह्रीं विष्टरश्रवसे नमः अर्घ ।

श्री कहिये आतम विभव, ताकरि हो शुभ नीक ।
सोहत सुन्दर वदन करि, सज्जन चित रमणीक ॥ ७३० ॥
ॐ ह्रीं श्रीवत्सलांछनाय नमः अर्घ ।

सर्वोत्तम अति श्रेष्ठ हैं, जिन सन्मति शुति योग ।
धर्म मोक्ष मारग कहै, पूजत सज्जन लोग ॥ ७३१ ॥
ॐ ह्रीं श्रीमतये नमः अर्घ ।

अविनाशी अविकार हैं, नहीं चिगे निज भाव ।
स्वयं सुआश्रय रहत हैं, मैं पूजूं धर चाव ॥ ७३२ ॥
ॐ ह्रीं अच्युताय नमः अर्घ ।

नाशौ लौकिक कामना, निर इक्षक योगीश ।
नार शृंगार न मन वसै, वंदत हूं लोकीश ॥ ७३३ ॥
ॐ ह्रीं नरकान्तकाय नम· अर्घं ।

व्यापक लोकालोकमें, विष्णुरूप भगवान ।
धर्मरूप तरू लहि लहै, पूजत हूं धर ध्यान ॥ ७३४ ॥
ॐ ह्रीं विश्वक्सेनाय नमः अर्घं ।

धर्म चक्र सन्मुख चलै, मिथ्यामति रिपुघात ।
तीन लोक नायक प्रभू, पूजत हूं दिनरात ॥ ७३५ ॥
ॐ ह्रीं चक्रपाणये नमः अर्घं ।

सुभग सुरूपा श्रेष्ठ अति, जन्म धर्म अवतार ।
तीन लोककी लक्ष्मी, है एकत्र उदार ॥ ७३६ ॥
ॐ ह्रीं पद्मनाभाय नमः अर्घं ।

मुनिजन आदर जोग हो, लोक सराहन योग ।
सुरनर पशु आनंद कर, सुभग निजातम भोग ॥ ७३७ ॥
ॐ ह्रीं जनार्दनाय नमः अर्घं ।

सब देवनके देव हो, महादेव विख्यात ।
ज्ञानामृत सुखसौ खिरै, पीवत भवि सुख पात ॥ ७३८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीकण्ठाय नमः अर्घं ।

पाप पुंजका नाश करि, धर्म रीति प्रगटाय ।
तीन लोकके अधिपती, हमपर दया कराय ॥ ७३९ ॥
ॐ ह्रीं त्रिलोकाधिपशंकराय नमः अर्घं ।

स्वयं व्यापि निज ज्ञान करि, स्वयं प्रकाश अनूप।
स्वयं भाव परमातमा, वन्दूं स्वयं सरूप ॥ ७४० ॥

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभवे नमः अर्घं।

सब देवनके देव हो, महादेव हैं नाम।
स्वपर सुगंधित रूप हो, तुम पद करूं प्रणाम ॥ ७४१ ॥

ॐ ह्रीं लोकपालाय नम अर्घं।

धर्मध्वजा जग फरहरै, सब जग माने आन।
सब जग शीश नमें चरण, सब जगको सुखदान ॥७४२॥

ॐ ह्रीं वृषभकेतवे नमः अर्घं।

जन्म जरा मृत जीतिकै, निश्चल अव्यय रूप।
सुखसों राजत नित्य हो, वन्दूं हूं शिवभूप ॥ ७४३ ॥

ॐ ह्रीं शिवरूपमहामृत्युंजयाय नमः अर्घं।

सब इन्द्री मन जीतिके, करि दीनो तुम व्यर्थ।
स्वयं ज्ञान इन्द्री जग्यौ, नमूं सदा शिव अर्थ ॥७४४॥

ॐ ह्रीं विरूपाक्षाय नमः अर्घं।

सुन्दर रूप मनोज्ञ है, मुनिजन मन वशकार।
असाधारण शुभ अन लगै, केवलज्ञान मझार ॥ ७४५ ॥

ॐ ह्रीं कामदेवाय नमः अर्घं।

सम्यग्दर्शन ज्ञान अरू, चारित एक सरूप।
धर्म मार्ग दरशात है, लोकित रूप अनूप ॥ ७४६ ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय नमः अर्घं।

निजानन्द स्व लक्ष्मी, ताके हो भरतार।
शिव कामिन नित भोगते, परम् रूप सुखकार ॥ ७४७ ॥
ॐ ह्रीं उमापतये नमः अर्घं ।

जे अज्ञानी जीव हैं, नित प्रति बोध करान।
रक्षक हो षट् कायके, तुम सम कौन महान ॥ ७४८ ॥
ॐ ह्रीं पशुपतये नमः अर्घं ।

रमण भाव निज शक्तिसो, धरै तथा दुति काम।
कामदेव तुम नाम हैं, महाशक्ति बल धाम ॥ ७४९ ॥
ॐ ह्रीं शम्बरारये नमः अर्घं ।

कामदाहको दम कियो, ज्यों अगनी जलधार।
स्वै आतम आचरण नित, महाशील श्रिय सार ॥ ७५० ॥
ॐ ह्रीं त्रिपुरांतकाय नमः अर्घं ।

स्वै सन्मति शुभ नारसो, मिले रलै अरधांग।
ईश्वर हो परमातमा, तुम्हैं नमूं सर्वांग ॥ ७५१ ॥
ॐ ह्रीं अर्द्धनारीश्वराय नमः अर्घं ।

नहीं चिगे उपयोगसे, महा कठिन परिणाम।
महावीर्य धारक नमूं, तुमको आठो जाम ॥ ७५२ ॥
ॐ ह्रीं रुद्राय नमः अर्घं ।

गुण पर्याय अनन्त युत, वस्तु स्वयं परदेश।
स्वयं काल स्व क्षेत्र हो, स्वयं सुभाव विशेष ॥ ७५३ ॥
ॐ ह्रीं भवाय नमः अर्घं ।

सूक्षम गुप्त स्वगुण धरै, महा शुद्धता धार ।
चार ज्ञान धर नहीं लखै, मैं पूजूं सुखकार ॥ ७५४ ॥
ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकजिनाय नमः अर्घं ।

शिव तिय संग सदा रमें, काल अनन्तन और ।
अविनाशी अविकार हो, महादेव शिरमौर ॥ ७५५ ॥
ॐ ह्रीं सदाशिवाय नमः अर्घं ।

जगत कार्य तुमसो सरैं, सब तुमरे आधीन ।
सबके तुम सरदार हो, आप धनी जगदीन ॥ ७५६ ॥
ॐ ह्रीं जगत्कर्त्रे नमः अर्घं ।

महा घोर अंधियार है, मिथ्या मोह कहाय ।
जगमें शिव मग लुप्त था, ताको तुम दरशाय ॥ ७५७ ॥
ॐ ह्रीं अन्धकारांतकाय नमः अर्घं ।

सन्तति पक्ष जुदी नहीं, नहीं आदि नहीं अन्त ।
सदा काल विन काल तुम, राजत हो जयवन्त ॥ ७५८ ॥
ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः अर्घं ।

तीन लोक आराध्य हो, महा यज्ञको ठाम ।
तुमको पूजत पाइये, महा मोक्षसुख धाम ॥ ७५९ ॥
ॐ ह्रीं हराय नमः अर्घं ।

महा सुभट गुणरास हो, सेवत हैं तिहुं लोक ।
शरणागति प्रतिपालकर, चरणाम्बुज दूं धोक ॥ ७६० ॥
ॐ ह्रीं महासेनाय नमः अर्घं ।

गणधरादि सेवें चरण, महा गणपती नाम ।
पार करो भवसिंधुतें, मंगलकर सुख धाम ॥ ७६१ ॥
ॐ ह्रीं तारकाय नमः अर्घं ।

चार संघके नाथ हो, तुम आज्ञा शिर धार ।
धर्म मार्ग प्रवर्त्त कर, वन्दूं पाप निवार ॥ ७६२ ॥
ॐ ह्रीं गणनाथाय नमः अर्घं ।

मोह सर्पके दमनको, गरूड समान कहाय ।
सबके आदरकार हो, तुम गणपति सुखदाय ॥ ७६३ ॥
ॐ ह्रीं विनायकाय नमः अर्घ ।

जे मोही अल्पज्ञ हैं, तिनसो हो प्रतिकूल ।
धर्माधर्म विरोध कर, धरूं शीश पग धूल ॥ ७६४ ॥
ॐ ह्रीं विरोधनाय नमः अर्घ ।

जितने दुख संसारमें, तिनको वार न पार ।
इक तुम ही जानो सही, ताहि तजो दुख भार॥ ७६५ ॥
ॐ ह्रीं विपदविनाशकजिनाय नमः अर्घं ।

सब विद्याके जीव हो, तुम वाणी परकाश ।
सकल अविद्या मूलतें, इक छिनमें हो नाश ॥ ७६६ ॥
ॐ ह्रीं द्वादशात्मने नमः अर्घं ।

पर निमित्तसे जीवको, रागादिक परिणाम ।
तिनको त्याग सुभावमें, राजत हैं सुखधाम ॥ ७६७ ॥
ॐ ह्रीं विभावरहिताय नमः अर्घं ।

अन्तर बाहिर प्रबल रिपु, जीत सके नहीं कोय ।
निर्भय अचल सुथिर रहै, कोटि शिवालय सोय ।। ७६८ ।।
ॐ ह्रीं दुर्ज्जयाय नमः अर्घं ।
घन सम गर्जत वचन हैं, भागे कुनई कुवाद ।
प्रबल प्रचण्ड सुवीर्य है, धरै सुगुण इत्यादि ।। ७६९ ।।
ॐ ह्रीं बृहद्भावाय नमः अर्घं ।

पाप सघन वन दाह दव, महादेव शिव नाम ।
अतुल प्रभा धारो महा, तुम पद करूं प्रणाम ।। ७७० ।।
ॐ ह्रीं चित्रभानवे नमः अर्घं ।
तुम अजन्म विन मृत्यु हो, सदा रहो अविकार ।
ज्योंके त्यों मणि दीप सम, पूजत हूं मन धार ।।७७१।।
ॐ ह्रीं अजरअमरजिनाय नमः अर्घं ।

संस्कारादि स्वगुण सहित, तिन करि हो आराध्य ।
तुमको वन्दो भावसो, मिटे सकल दुख व्याध्य ।।७७२।।
ॐ ह्रीं द्विजाराध्याय नमः अर्घं ।
निज आतम स्वै ज्ञान है, तामें रूचि परतीत ।
पर पद सोहै अरु चिता, पाई अक्षय जीत ।। ७७३ ।।
ॐ ह्रीं सुधारोचये नमः अर्घं ।
जन्म मरणको आदि लै, सकल रोगको नाश ।
दिव्य औषधी तुम धरो, अमर करन सुखरास ।।७७४।।
ॐ ह्रीं औषधीशाय नमः अर्घं ।
पूरण गुण परकाश कर, ज्यों शशि किरण उद्योत ।

मिथ्या तप निरवारतै, दर्शित आनन्द होय ॥ ७७५ ॥

ॐ ह्रीं कलानिधये नमः अर्घं ।

सूर्य प्रकाश धरै सही, धर्म मार्ग दिखलाय ।
चार संघ नायक प्रभू, वन्दूं तिनके पाय ॥ ७७६ ॥

ॐ ह्रीं नक्षत्रनाथाय नमः अर्घं ।

भव तप हर हो चन्द्रमा, शीतलकार कपूर ।
तुमको जो नर सेवते, पाप कर्म हो दूर ॥ ७७७ ॥

ॐ ह्रीं शुभ्रांशवे नमः अर्घं ।

स्वर्गादिककी लक्ष्मी, तासो भी जुग्लान ।
स्वैपदमें आनन्द है, तीन लोक भगवान ॥ ७७८ ॥

ॐ ह्रीं सौम्यभावरते नमः अर्घं ।

पर पदार्थको इष्ट लखि, होत नहीं अभिमान ।
हो अबन्ध इस कर्मतें, स्व आनन्द निधान ॥ ७७९ ॥

ॐ ह्रीं कुमुदबांधवाय नमः अर्घं ।

सब विभावको त्याग करि, हैं स्वधर्ममें लीन ।
तातें प्रभुता पाइयो, हैं नहीं बन्धाधीन ॥ ७८० ॥

ॐ ह्रीं धर्मरते नमः अर्घं ।

आकुलता नहीं लेश है, नहीं रहै चित भंग ।
सदा सुखी तिहुं लोकमें, चरन नमूं सब अंग ॥ ७८१ ॥

ॐ ह्रीं आकुलितारहितजिनाय नमः अर्घं ।

शुभ परिणति प्रगटायके, दियो स्वर्गको दान ।
धर्मध्यान तुमसे चले, सुमरत हो शुभ ध्यान ॥७८२॥

ॐ ह्रीं पुण्यजिनाय नमः अर्घं ।

भविजन करत पवित्र अति, पाप मैल प्रक्षाल ।
ईश्वर हो परमातमा, नमूं चरण निज भाल ॥ ७८३ ॥

ॐ ह्रीं पुण्यजिनेश्वराय नमः अर्घं ।

श्रावक या मुनिराज हो, धर्म आपसे होय ।
धर्मराज शुभ नीति करि, उन्मार्गनको खोय ॥ ७८४ ॥

ॐ ह्रीं धर्मराजाय नमः अर्घं ।

स्वयं स्व आतम रस लहो, ताही काहै भोग ।
अन्यकूं परिणति त्यागिये, नमूं पदांबुज योग ॥ ७८५ ॥

ॐ ह्रीं भोगराजाय नमः अर्घं ।

दर्शन ज्ञान सुभाव धरि, ताहीके हो स्वामी ।
तामें लीनता त्यागियो, भये शुद्ध परिणाम ॥ ७८६ ॥

ॐ ह्रीं दर्शनज्ञानचारित्रात्मजिनाय नमः अर्घं ।

सत्य उचित शुभ न्यायमें, है आनन्द विशेख ।
सब कुनीतिको नाशकर, सर्व जीव सुख देख । ७८७ ॥

ॐ ह्रीं भूतानन्दाय नमः अर्घं ।

पर पदार्थके संघसे, दुखित होत सब जीव ।
ताके भयसो भय रहित, भोगें मोक्ष सदीव ॥ ७८८ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धकान्तजिनवराय नमः अर्घं ।

जाको कमी न नाश हो, सो पायो आनन्द ।
अचल रूप निज आत्ममय, भाव अभावी द्वंद ॥ ७८९ ॥

ॐ ह्रीं अक्षयानंदाय नमः अर्घं ।

शिव मारग परगट कियो, दोष रहित वरताय ।
दिव्यध्वनि करि गर्ज सम, सर्व अर्थ दिखलाय ॥७९०॥
ॐ ह्रीं वृहतांपतये नमः अर्घ ।

चौपाई छन्द ।

हितकारक अपूर्व उपदेश, तुम सम और नहीं देवेश ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥७९१॥
ॐ ह्रीं अपूर्वदेवोपदेष्टे नमः अर्घ ।

कर्म विषैं संस्कार विधान, तीन लोकमें विस्तर जान ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥७९२॥
ॐ ह्रीं सिद्धसमूहेभ्यो नमः अर्घ ।

धर्म उपदेश देत सुखकार, महाबुद्ध तुम हो अवतार ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥७९३॥
ॐ ह्रीं शुद्धबुद्धाय नमः अर्घ ।

तीन लोकमें हो शशि सूर, निज कुर्णावलि करि तम चूर ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥७९४॥
ॐ ह्रीं दशबलाय नमः अर्घ ।

धर्ममार्ग उद्योत करान, सब कुवादकी करहो हान ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥७९५॥
ॐ ह्रीं धर्ममार्गदर्शकजिनाय नमः अर्घ ।

सर्व शास्त्र मिथ्या वा सांच, तुम निज दृष्टि लियो है जांच ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥७९६॥
ॐ ह्रीं षड्भिज्ञाय नमः अर्घ ।

पंचमगति विन श्रेष्ठ न और, सो तुम पाय त्रिजग शिर मौर ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥९९७॥
ॐ ह्रीं शुभगतये नमः अर्घं ।
श्रेष्ठ सुमति तुम्हीं है एक, शिवमारगकी जानो टेक ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥७९८॥
ॐ ह्रीं समंतभद्राय नमः अर्घं ।
धर्म मर्जाद भली विधि थाप, भविजन मेटो सब संताप ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥७९९॥
ॐ ह्रीं सुगतये नमः अर्घं ।
श्रेष्ठ करै कल्याण सु ज्ञान, संपूरण संकल्प निशान ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८००॥
ॐ ह्रीं घनाय नमः अर्घं ।
निज ऐश्वर्य धरो संपूर्ण, पर विभूति विन हो अघ चूर्ण ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८०१॥
ॐ ह्रीं भूतमतये नमः अर्घं ।
श्रेष्ठ शुद्ध परब्रह्म रमाय, मंगलमय पर मंगलदाय ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८०२॥
ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नमः अर्घं ।
श्री जिनराज कर्मरिपु जीति, पूजनीक हैं सबके मीत ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८०३॥
ॐ ह्रीं कर्मारिजिते नमः अर्घं ।
षट् पदार्थ नव तत्व कहाय, धर्म अधर्म भलीविधि गाय ।

सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय ॥८०४॥
ॐ ह्रीं सर्वशास्त्रज्ञजिनाय नमः अर्घं ।

है शुभ लक्षण मय परिणाम, पर उपाधिको नहिं कछु काम ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८०५॥
ॐ ह्रीं क्षणिकैकसुलक्षणाय नमः अर्घं ।

सत्य ज्ञानमय है तुम बोध, हेय अहेय बतायो सोध ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८०६॥
ॐ ह्रीं सर्वबोधसत्वाय नमः अर्घं ।

इष्टानिष्ट न राग न द्वेष, ज्ञाता दृष्टा हो अविशेष ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८०७॥
ॐ ह्रीं निर्विकल्पाय नमः अर्घं ।

दूजो तुम सम नहीं भगवान, धर्माधर्म रीति बतलान ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८०८॥
ॐ ह्रीं अद्वितीयबोधजिनाय नमः अर्घं ।

महादुखी संसारी जान, तिनके पालक हो भगवान ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८०९॥
ॐ ह्रीं लोकपालाय नमः अर्घं ।

जग विभूति निर इच्छक होय, मान रहित आतम रत सोय ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८१०॥
ॐ ह्रीं आत्मरसरतजिनाय नमः अर्घं ।

ज्यों शशि तपहर है अनिवार, अतिशय सहित शांति करतार ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय ॥८११॥

ॐ ह्रीं शांतातिशये नमः अर्घं।

हो निरभेद अछेद अशेष, सब इकसार स्वयं परदेश।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय॥८१२॥

ॐ ह्रीं सामान्यलक्षणाय नमः अर्घं।

मायाकृत सम पांचों काय, निजसों भिन्न लखो मत भाय।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय।८१३॥

ॐ ह्रीं पंचस्कंधामायात्मदृशे नमः अर्घं।

बीती बात देख संसार, भवतन भोग विरक्त उदार।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय॥८१४॥

ॐ ह्रीं भूतार्थभावनासिद्धाय नमः अर्घं।

धर्माधर्म जान सब ठीक, मोक्षपुरी दिखलायो लीक।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय॥८१५॥

ॐ ह्रीं चतुराननजिनाय नमः अर्घं।

वीतराग सर्वज्ञ सु देव, सत्यवाक वक्ता स्वयमेव।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय॥८१६॥

ॐ ह्रीं सत्यवक्ताय नमः अर्घं।

मन वच काय जोग परिहार, कर्मवर्गणा नाहि लगार।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय॥८१७॥

ॐ ह्रीं निराश्रवाय नमः अर्घं।

चार अनुयोग कियो उपदेश, भव्य जीव सुख लहत हमेश।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय॥८१८॥

ॐ ह्रीं चतुर्भूमिकशासनाय नमः अर्घं।

काहू पदसों मेल न होय, अन्वय रूप कहावै सोय।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय ॥८१९॥
ॐ ह्रीं अन्वयाय नमः अर्घं।

हो समाधिमें नित लवलीन, विन आश्रय नित ही स्वाधीन।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८२०॥
ॐ ह्रीं योगाय नमः अर्घं।

लोक भाल हो तिलक अनूप, हो लोकोत्तम शेष स्वरूप।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८२१॥
ॐ ह्रीं लोकभालतिलकजिनाय नमः अर्घं।

अक्षाधीन हीन हैं शक्त, तिसको नाश करी निज व्यक्त।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८२२॥
ॐ ह्रीं तुच्छभावभिदे नमः अर्घं।

जीवादिक पदार्थ षट् जान, तिनको भलिभांति है ज्ञान।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८२३॥
ॐ ह्रीं षट्पदार्थदर्शये नमः अर्घं।

विकलरूप नय सकल प्रमाण, वस्तु भेद जानो स्वज्ञान।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८२४॥
ॐ ह्रीं सकलवस्तुविज्ञात्रे नमः अर्घं।

सब पदार्थ दर्शत तुम वैन, संशय हरण करण सुख चैन।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८२५॥
ॐ ह्रीं षोडशपदार्थवादिने नमः अर्घं।

वर्णन करि पंचाशति काय, भव्य जीव संशय विनशाय।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८२६॥
ॐ ह्रीं पंचास्तिकायबोधकजिनाय नमः अर्घं।

प्रतिबिंबित हो आरसी माहि, ज्ञानाध्यक्ष ज्ञान हो ताहि।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८२७॥
ॐ ह्रीं ज्ञानांतराध्यक्षाय नमः अर्घं।

जामें ज्ञान जीवको एक, सो परकाशो शुद्ध विवेक।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ।८२८॥
ॐ ह्रीं समवायसार्थककृतये नमः अर्घं।

भक्तनिके हो साध्य सु कर्म, अंतिम पौरुष साधन धर्म।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८२९॥
ॐ ह्रीं भक्तैकसाधकधर्माय नमः अर्घं।

बाकी रहो न गुण शुभ एक, ताको स्वाद न हो प्रत्येक।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८३०॥
ॐ ह्रीं निरवशेषगुणामृताय नमः अर्घं।

नय सु पक्ष करि सांख्य सुवाद, तुम निरवाद पक्षकर वाद।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८३१॥
ॐ ह्रीं सांख्यादिपक्षविध्वंसकजिनाय नमः अर्घं।

सम्यग्दर्शन है तुम वैन, वस्तु परीक्षा भाखों ऐन।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८३२॥
ॐ ह्रीं समीक्षाय नमः अर्घं।

धर्मशास्त्रके हो कर्तार, आदि पुरुष धारो अवतार।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८३३॥

ॐ ह्रीं कपिलाय नमः अर्घं ।

नय साधत नैयायक नाम, सो तुम पक्ष धरो अभिराम।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८३४॥

ॐ ह्रीं पंचविंशतितत्त्ववेदकाय नमः अर्घं ।

स्वपर चतुष्क वस्तुको भेद, व्यक्ताव्यक्त करो निरखेद ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८३५॥

ॐ ह्रीं व्यक्ताव्यक्तज्ञानविदे नमः अर्घं ।

दर्शन ज्ञान भेद उपयोग, चेतनता मय है शुभ योग ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय ॥८३६॥

ॐ ह्रीं ज्ञानदर्शनचेतनभेदये नमः अर्घं ।

स्वसंवेदन शुद्ध धराय, अन्य जीव हैं मलिन कुभाय ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय ॥८३७॥

ॐ ह्रीं स्वसंवेदज्ञानवादिने नमः अर्घं ।

द्वादश सभा करै सतकार, आदर योग वैन सुखकार ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८३८॥

ॐ ह्रीं समोसरणद्वादशसभापतये नमः अर्घं ।

आगम अक्ष अनक्ष प्रमान, तीन भेदकर तुम पहिचान ।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८३९॥

ॐ ह्रीं त्रिमाणाय नमः अर्घं ।

विशद शुद्ध मति हो साकार, तुमको जानत है सु विचार।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय ॥८४०॥

ॐ ह्रीं अक्षप्रमाणाय नमः अर्घं।

नयसापेक्षक हैं शुभ वैन, हैं अशंस सत्यार्थ ऐन।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८४१॥

ॐ ह्रीं स्याद्वाददर्शये नमः अर्घं।

लोकालोक क्षेत्रके मांहि, आप ज्ञानमें सब दरशाय।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय।८४२॥

ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः अर्घं।

अन्तर बाह्य लेश नहीं और, केवल आतम मई अधीर।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥८४३॥

ॐ ह्रीं शुद्धात्मने नमः अर्घं।

अन्तिम पौरुष साध्यो सार, पुरुष नाम पायो सुखकार।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय ॥८४४॥

ॐ ह्रीं पुरुषाय नमः अर्घं।

चहुंगतिमें नरदेह मझार, मोक्ष होत तुम नर आकार।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय ॥८४५॥

ॐ ह्रीं नराधिपाय नमः अर्घं।

दर्श ज्ञान चेतनकी लार, निरावर्ण तुम हो अविकार।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय ॥८४६॥

ॐ ह्रीं निरावरणचेतनाय नमः अर्घं।

भावन वेद वेद नरदेह, मोक्ष रूप है नहीं सन्देह।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय ॥८४७॥
ॐ ह्रीं मोक्षरूपजिनाय नमः अर्घं।
सत्य यथारथ हो सब ठीक, स्वयं सिद्ध राजो शुभ नीक।
सिद्धसमूह जजूं मन लाय, भव भवमें सुखसम्पतिदाय ॥८४८॥
ॐ ह्रीं अकृत्रिमाय नमः अर्घं।

दोहा।

जाकरि तुमको जानिये, सो है अगम अलक्ष।
निर्गुण यातें कहत हैं, भव भयते हम रक्ष ॥ ८४९ ॥
ॐ ह्रीं निर्गुणाय नमः अर्घं।
चेतनमय हैं अष्टगुण, सो तुममें इक नाम।
शुद्ध अमूरत देव हो, स्व प्रदेश चिद्राम ॥ ४५० ॥
ॐ ह्रीं अमूर्ताय नमः अर्घं।
उमापती त्रिभुवन धनी, राजत भू भरतार।
निजानन्दको आदि ले, महा तुष्ट निरधार ॥ ८५१ ॥
ॐ ह्रीं भोक्ताय नमः अर्घं।
व्यापक लोकालोकमें, ज्ञान ज्योतिके द्वार।
लोकशिखर तिष्ठत अचल, करो भक्त उद्धार ॥ ८५२ ॥
ॐ ह्रीं सर्वगताय नमः अर्घं।
योग प्रबन्ध निवारियो, राग द्वेष निरवार।
देह रहित निष्कंप हो, भये अक्रिया सार ॥ ८५३ ॥
ॐ ह्रीं अक्रियाय नमः अर्घं।

सर्वोत्तम अति उच्च गति, जहां रहो स्वयमेव।
देव वास है मोक्ष थल, हो देवनके देव ॥ ८५४ ॥
ॐ ह्रीं देवेष्टजिनाय नमः अर्घं।

भवसागरके तीर हो, अचलरूप अस्थान।
फिर नहीं जगमें जन्म है, राजत हो सुखथान ॥८५५॥
ॐ ह्रीं तटस्थाय नमः अर्घं।

ज्योंके त्यों नित थिर रहो, अचलरूप अविनाश।
स्वपद्मय साजत सदा, स्वयं ज्योति परकाश ॥ ८५६ ॥
ॐ ह्रीं कूटस्थाय नमः अर्घं।

तत्व अतत्व प्रकाशियो, ज्ञाता हो सब भास।
ज्ञान मूर्ति हो ज्ञान घन, ज्ञान ज्योति अविनाश ॥८५७॥
ॐ ह्रीं ज्ञात्रे नमः अर्घं।

पर निमित्तके योगतें, व्यापै नहीं विकार।
स्वै स्वरूपमें थिर सदा, हो अबाध निरधार ॥ ८५८ ॥
ॐ ह्रीं निराबाधाय नमः अर्घं।

चारवाक वा सांख्यमत, झूठी पक्ष धरात।
अल्प मोक्ष नहीं होत है, राजत हो विख्यात ॥८५९॥
ॐ ह्रीं निराभावाय नमः अर्घं।

तारण तरण जिहाज हो, अतुल शक्तिके नाथ।
भव वारिधसे पारकर, राखो अपने साथ ॥ ८६० ॥
ॐ ह्रीं भववारिधिपारकराय नमः अर्घं।

बन्ध मोक्षकी कहन है, सो भी है व्यवहार ।
तुम विवहार अतीत हो, शुद्ध वस्तु निरधार ॥ ८६१ ॥
ॐ ह्रीं निर्मोक्षाय नमः अर्घं ।

चारों पुरुषारथ विषें, मोक्ष पदारथ सार ।
तुम साधो परधान हो, सबमें सुख आधार ॥ ८६२ ॥
ॐ ह्रीं प्रधानाय नमः अर्घं ।

कर्ममैल प्रक्षालकै, निज आतम लवलाय ।
हो प्रसन्न शिवथल विषें, अन्तर मल विनशाय ॥८६३॥
ॐ ह्रीं कर्मव्याधिविनाशकजिनाय नमः अर्घं ।

निज सुभाव निज वस्तुता, निज सुभावमें लीन ।
वन्दूं शुद्ध स्वभावमय, अन्य कुभाव मलीन ॥ ८६४ ॥
ॐ ह्रीं प्रकृताय नमः अर्घं ।

निज स्वरूप परकाश है, निरावर्ण ज्यों सूर ।
तुमको पूजत भावसों, मोह कर्मको चूर ॥ ८६५ ॥
ॐ ह्रीं निरावरणसूर्यजिनाय नमः अर्घं ।

निज भावनतें मोक्ष हो, ते ही भाव रहात ।
स्वगुण स्व परजायमें, थिरता भाव धरात ॥ ८६६ ॥
ॐ ह्रीं स्वरूपआरूढ़जिनाय नमः अर्घं ।

सब कुभावको जीतियो, शुद्ध भये निरमूल ।
शुद्धात्तम कहलात हो, नमत नशे अघ मूल ॥ ८६७ ॥
ॐ ह्रीं प्रकृतिप्रियाय नमः अर्घं ।

निज सन्मतिके सन्मती, निज बुधके बुधवान।
शुभ ज्ञाता शुभ ज्ञान हो, पूजत मिथ्या हान॥ ८६८॥

ॐ ह्रीं विशुद्धसन्मतिजिनाय नमः अर्घं।

कर्म प्रकृतिको अंश बिन, उत्तर हो या मूल।
शुद्ध रूप अति तेज धन, ज्यों रवि बिंब अधूल॥ ८६९॥

ॐ ह्रीं प्रकृतये नमः अर्घं।

आदि पुरुष आदीश जिन, आदि धर्म अवतार।
आदि मोक्ष दातार हो, आदि कर्म हरतार॥ ८७०॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः अर्घं।

नहीं विकार आवै कभी, रहो सदा सुखरूप।
रोग शोक व्यापै नहीं, निवसै सदा अनूप। ८७१॥

ॐ ह्रीं निर्विकृतये नमः अर्घं।

निज पौरुष करि सूर्य सम, हरो तिमिर मिथ्यात।
तुम पुरुषारथ सफल है, तीन लोक विख्यात॥ ८७२॥

ॐ ह्रीं मिथ्यातिमिरविनाशकाय नमः अर्घं।

वस्तु परीक्षा तुम विना, और झूठकर खेद।
अन्धकूपमें आप मर, डारत हैं निरभेद॥ ८७३॥

ॐ ह्रीं मीमांसकाय नमः अर्घं।

होनहार या हो लई, या पइये इस काल।
अस्तरूप सब वस्तु हैं, तुम जानो यह हाल॥ ८७४॥

ॐ ह्रीं अस्तिसर्वज्ञाय नमः अर्घं।

जिनवाणी जिन सरस्वती, तुम गुणसो परिपुर ।
पूज्य योग तुमको कहैं, करैं मोहमद चूर ॥ ८७५ ॥
ॐ ह्रीं श्रुतपूज्याय नमः अर्घं ।

स्वयं स्वरूप आनन्द हो, निज पद रमन सुभाव ।
सदा विकाशित हो रहै, वन्दूं सहज सुभाव ॥ ८७६ ॥
ॐ ह्रीं सदोत्सवाय नमः अर्घं ।

मन इन्द्री जानत नहीं, जाको शुद्ध स्वरूप ।
वचनातीत स्वगुण सहित, अमल अकाय अरूप ॥८७७॥
ॐ ह्रीं परोक्षज्ञानगम्याय नमः अर्घं ।

जो श्रुतज्ञान कला धरै, तिनको हो तुम इष्ट ।
तुमको नित प्रति ध्यावते, नाशै सकल अनिष्ट ॥८७८॥
ॐ ह्रीं इष्टपाठकाय नमः अर्घं ।

निज समरथ कर साधियो, निज पुरुषारथ सार ।
सिद्ध भये सब काम तुम, सिद्ध नाम सुखकार ॥८७९॥
ॐ ह्रीं सिद्धकर्मक्षयाय नमः अर्घं ।

पृथ्वी जल अरु अग पवन, जानत इनके भेद ।
गुण अनंत पर्याय सब, सो विभाग परिछेद ॥ ८८० ॥
ॐ ह्रीं चार्वाकाय नमः अर्घं ।

स्वैसंवेदन ज्ञानमें, देखत होय प्रत्यक्ष ।
रक्षक हो तिहूं लोकके, हम शरणागति पक्ष ॥ ८८१ ॥
ॐ ह्रीं प्रत्यक्षैकप्रमाणाय नमः अर्घं ।

विद्यमान शिवलोकमें, स्वगुण पर्य समेत।
कहैं अभाव कुमती मती, निजपर धोका देत ॥ ८८२ ॥
ॐ ह्रीं अस्तिपरलोकाय नमः अर्घ्यं।

तुम आगमके मूल हो, अपर गुरु हैं नाम।
तुम वानी अनुसार ही, भये शास्त्र अभिराम ॥८८३॥
ॐ ह्रीं गुरुश्रुतये नमः अर्घ्यं।

तीन लोकके नाथ हों, जो सुरगुणमें इन्द्र।
स्वैपद रमन स्वभाव धर, नमें तुम्हैं देवेन्द्र ॥ ८८४ ॥
ॐ ह्रीं त्रिलोकनाथाय नमः अर्घ्यं।

सव स्वभाव अविरुद्ध हैं, स्वैपर घातक नाहिं।
सहचारी परिणाम हैं, निवसत हैं तुम माहिं ॥ ८८५ ॥
ॐ ह्रीं स्वस्वभावअविरुद्धजिनाय नमः अर्घ्यं।

ब्रह्म ज्ञानको वेदकर, भये शुद्ध अविकार।
पूरण ज्ञानी हो नमूं, लहो वेदको सार ॥ ८८६ ॥
ॐ ह्रीं वेदांतये नमः अर्घ्यं।

शब्द ब्रह्मके ज्ञानतें, आतम—तत्व विचार।
शुक्लध्यानमें लय भए, हो अतर्क अविचार ॥ ८८७ ॥
ॐ ह्रीं शब्दाद्वैतब्रह्मणे नमः अर्घ्यं।

सूक्षम तत्व प्रकाश कर, सूक्ष्म कर्म उच्छेद।
मोक्षमार्ग परगट कियो, कहो सु अन्तर भेद ॥ ८८८ ॥
ॐ ह्रीं सूक्ष्मतत्वप्रकाशकजिनाय नमः अर्घ्यं।

तीन शतक त्रेसठ जु हैं, सब मानै पाखण्ड।
धर्म यथारथ तुम कहो, तिन सबके नई खण्ड ॥८८९॥

ॐ ह्रीं पाखण्डखण्डकाय नमः अर्घ।

कर्णरूप करतार हो, कोइक नयके द्वार।
सुर मुनि करि पूजत भए, माननीक सुखकार ॥८९०॥

ॐ ह्रीं अखण्डानन्दजिनाय नमः अर्घं।

केवलज्ञान उपाइकें, तदनन्तर हो मोक्ष।
साक्षातन बड़भागसैं, पूजूं इहां परोक्ष ॥ ८९१ ॥

ॐ ह्रीं अन्तकृते नमः अर्घं।

शरणागतको पार कर, देत मोक्ष अभिराम।
तारण तरण सु नाम हैं, तुम पद करूं प्रणाम ॥८९२॥

ॐ ह्रीं पारकृताय नमः अर्घं।

भव समुद्र गम्भीर है, कठिन जासको पार।
निज पुरुषार्थ करि तिरे, गहो किनारो सार ॥ ८९३ ॥

ॐ ह्रीं तीरप्राप्ताय नमः अर्घं।

एकबार जो शरण गहि, ताके हो हितकार।
यातैं सब जग जीवकैं, हो आनंद दातार ॥ ८९४ ॥

ॐ ह्रीं परहितस्थिताय नमः अर्घं।

रत्नत्रय निज नेत्रसों, मोक्षपुरी पहुंचात।
महादेव हो जगत पितु, तीन लोक विख्यात ॥८९५॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रयनेत्रजिनाय नमः अर्घं।

तीन लोकके नाथ हों, महा ज्ञान भण्डार ।
सरल भाव विन कपट हों, स्वच्छ शुद्ध अविकार ॥८९६॥

ॐ ह्रीं शुद्धबुद्धजिनाय नमः अर्घं ।

निश्चै वा व्यवहारके, हों तुम जाननहार ।
वस्तुरूप निज साधियो, पूजत हूं निरधार ॥ ८९७ ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकर्मसमुच्चयाय नमः अर्घं ।

सुरनर पशु न अघावते, सभी ध्यावते ध्यान ।
तुमको नित ही ध्यावते, पावें सुख निर्वाण ॥ ८९८ ॥

ॐ ह्रीं नित्यतृप्तजिनाय नमः अर्घं ।

कर्म मैल प्रक्षाल करि, तीनो योग समारि ।
पाप शैल छिन्न भिन्न कर, भये अयोग सुखार ॥८९९॥

ॐ ह्रीं पापमैलनिवारकाय नमः अर्घ्य ।

सूरज हो स्वै ज्ञान घन, ग्रहण उपद्रव नाहिं ।
वैखटके शिवपंथ सब, दीखत हैं जिस माहिं ॥ ९०० ॥

ॐ ह्रीं निवारणज्ञानजिनाय नमः अर्घ्य ।

जोग योग संकल्प कर, हरो देहको साथ ।
रहो अकंपित थिर सदा, मैं नाऊँ निज माथ ॥ ९०१ ॥

ॐ ह्रीं योगक्लेशापहाय नमः अर्घं ।

जोग सुथिरताका हरै, करै आगमन कर्म ।
तुम तासों निर्लेप हों, नशौ मोहमद शर्म ॥ ९०२ ॥

ॐ ह्रीं योगकृतनिर्लेपाय नमः अर्घं ।

निज आतममें स्वस्थ हैं, स्वपद योग रमाय ।
निर्भय तुम निर इक्ष हों, नमूं जोर कर पाय ।९०३॥
ॐ ह्रीं स्वस्थलयोगरतये नमः अर्घं ।

महादेव गिरिराज पर, जन्म समै जिम सूर ।
योग किरण विकसात हो, शोकतिमिर कर दूर ।९०४॥
ॐ ह्रीं गिरिसंयोगजिनाय नमः अर्घ ।

सूक्ष्म निज परदेश तन, सूक्ष्म क्रिया परिणाम ।
चितवत मन नहिं वश चलै, राजत हो शिवधाम ॥९०५॥
ॐ ह्रीं सूक्ष्मीकवपुक्रियाय नमः अर्घ ।

सूक्षम तत्त्व परकाश्य हैं, शुभ प्रिय वचनन द्वार ।
भविजनको आनंद करि, तीन जगत गुरु सार ॥९०६॥
ॐ ह्रीं सूक्षमवाञ्छितयोगाय नमः अर्घ ।

कर्म रहित शुद्धात्मा, निश्चल क्रिया रहात ।
स्वप्रदेश मय थिर सदा, कृत्याकृत्य सुख पात ॥९०७॥
ॐ ह्रीं निःकर्माय नमः अर्घं ।

विद्यमान प्रत्यक्ष है, चेतनराय प्रकाश ।
कर्म कालिमासो रहित, पूजत हो अघ नाश ॥ ९०८ ॥

ॐ ह्रीं भूताभिव्यक्तचेतनाय नमः अर्घ ।

गृहस्थाचरण सुभेद करि, धर्मरूप सत्यांश ।
एक तुम्हीं हो धर्म करि, पायो शिवपुर वास ॥ ९०९ ॥
ॐ ह्रीं दण्डिने नमः अर्घं ।

सूर्य प्रकाशन मोह तन, हरता हो शुभ पंथ।
पाप क्रिया विन राजते, महायती निरग्रंथ ॥ ९१० ॥

ॐ ह्रीं परमहंसाय नमः अर्घं।

बंध रहित सर्वस्व करि, निर्मल हो निर्लेप।
शुद्ध सुवर्ण दिपे सदा, नहीं मोह मल लेप ॥ ९११ ॥

ॐ ह्रीं परमसंवराय नमः अर्घं।

मेघ पटल विन सूर्य जिन, दीप्त अनन्त प्रताप।
निरावर्ण तुम शुद्ध हो, पूजत मिटहैं पाप ॥ ९१२ ॥

ॐ ह्रीं निरावर्णाय नमः अर्घं।

कर्म अंश सब झर गिरे, रहो न एक लगार।
परम शुद्धता धारकै, तिष्ठो हों अविकार ॥ ९१३ ॥

ॐ ह्रीं परमनिर्जराय नमः अर्घं।

तेज प्रचण्ड प्रभाव है, उदय रूप परताप।
अन्य कुदेव कुआगिया, जुग जुग धरत कलाप ॥९१४॥

ॐ ह्रीं प्रज्वलितप्रभावाय नमः अर्घं।

भये निरर्थक कर्म सब, शक्ति भई है हीन।
तिनकों जीते छनकमें, भये सुखी स्वाधीन ॥ ९१५ ॥

ॐ ह्रीं समस्तकर्मक्षयजिनाय नमः अर्घं।

कर्म प्रकृतिको रोग सम, जानो हों क्षयकार।
निज स्वरूप आनन्दमें, कहो विगार निहार ॥ ९१६ ॥

ॐ ह्रीं कर्मविस्फोटकाय नमः अर्घं।

हीन शक्ति परमादको, आप किया है अन्त।
निज पुरुषार्थ सुवीर्यसों, सुखी भए सु अनंत ॥११७॥
ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यजिनाय नमः अर्घं।

एक रूप रस स्वादमें, निर आकुलित रहाय।
विविध रूप रस पर निमित, ताकों त्याग कराय ॥११८॥
ॐ ह्रीं एकाकाररसास्वादाय नमः अर्घं।

इन्द्री मनके सब विषय, त्याग दियो इक लार।
निजानन्दमें मगन हैं, छांडो जग व्यापार ॥ ११९ ॥
ॐ ह्रीं विश्वाकाररसास्वादाकुलिताय नमः अर्घं।

पर सम्बन्धी प्राण बिन, निज प्राणानि आधार।
सदा रहै जीतव्यता, जरा मृत्युको टार ॥ १२० ॥
ॐ ह्रीं जीविते नमः अर्घं।

निज रसके सागर धनी, महा प्रिये स्वादिष्ट।
अमर रूप राजै सदा, सुर मुनिके हो इष्ट ॥ १२१ ॥
ॐ ह्रीं अमृताय नमः अर्घं।

पूरण निज आनन्दमें, सदा जागते आप।
नहिं प्रमादमें लिप्त हैं, पूजत विनशे पाप ॥ १२२ ॥
ॐ ह्रीं जाग्रताय नमः अर्घं।

क्षीण ज्ञान ज्ञानावरण, करै जीवको नित्य।
सो आवर्ण विनाशियो, रहो अस्वप्न सुवित्य ॥ १२३ ॥
ॐ ह्रीं अस्वप्नाय नमः अर्घं।

स्व प्रमाणमें थिर सदा, स्वयं चतुष्टय सत्य।
निराबाध निर्भय सुखी, त्यागत भाव असत्य॥ १२४॥
ॐ ह्रीं अशून्यताय नमः अर्घ्यं।

श्रम करि नहीं आकुलित हों, सदा रहो निरखेद।
स्वस्थरूप राजो सदा, वेदो ज्ञान अभेद॥ १२५॥
ॐ ह्रीं अप्रयासाय नमः अर्घ्यं।

मन वच तन व्यापार था, तावत रहो शरीर।
ताको नाश अकंप हो, वन्दूं मन धर धीर॥ १२६॥
ॐ ह्रीं अयोगिने नमः अर्घ्यं।

जितने शुभ लक्षण कहैं, तुममें हैं एकत्र।
तुमको वन्दूं भावसों, हरो पाप सर्वत्र॥ १२७॥
ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षणाय नमः अर्घ्यं।

तुम लक्षण सूक्षम महा, इन्द्रिय विषय अतीत।
वचन अगोचर गुण धरो, निर्गुण कहै सुनीत॥ १२८॥
ॐ ह्रीं अगुणाय नमः अर्घ्यं।

अगुरुलघू पर्यायके, भेद अनन्तानन्त।
गुण अनन्त परिणाम करि, नित्य नमें तुम संत॥ १२९॥
ॐ ह्रीं अनन्तानन्तपर्यायाय नमः अर्घ्यं।

रागद्वेषके नाशतें, नहीं पूर्व संस्कार।
निज सुभावमें थिर रहैं, अन्य वासना टार॥ १३०॥
ॐ ह्रीं पूर्वसंस्कारवर्ज्याय नमः अर्घ्यं।

गुण चतुष्टमें वृद्धता, भई अनन्तानन्त ।
तुम सम और न जगतमें, सदा रहो जयवंत ॥ ९३१ ॥
ॐ ह्रीं वृद्धाय नमः अर्घ ।

आर्ष कथित उत्तम वचन, धर्म मार्ग अरहन्त ।
सो सब नाम कहो तुम्हीं, शिवमारगके सन्त ॥९३२॥
ॐ ह्रीं प्रियवचनाय नमः अर्घ ।

महाबुद्धिके धाम हो, सूक्षम शुद्ध अवाच्य ।
चार ज्ञान नहीं गम्य हो, वस्तुरूप सो साच्य ॥९३३॥
ॐ ह्रीं अणुकाय नमः अर्घ ।

सूक्ष्मतें सूक्षम विषैं, तुमको हैं परवेश ।
आपै सूक्षम रूप हों, राजत निज परदेश ॥ ९३४ ॥
ॐ ह्रीं अनीशाय नमः अर्घ ।

कर्म प्रबन्ध सुघन पटल, ताकी छांय निवार ।
रविघन ज्योति प्रगट भई, पूरणता विधि धार ॥९३५॥
ॐ ह्रीं अनणुपर्यायाय नमः अर्घ ।

निज प्रदेशमें थिर सदा, योग निमित्त निवार ।
अचल शिवालयके विषैं, तिष्ठै सिद्ध अपार ॥ ९४६ ॥
ॐ ह्रीं स्थेयसे नमः अर्घ ।

सन्त नमन प्रिय हो अती, सज्जन वल्लभ जान ।
मुनि जन मन प्यारे सही, नमत होत कल्याण ॥९३७॥
ॐ ह्रीं प्रेष्ठाय नमः अर्घ ।

काल अनन्तानन्त करि, गहै शिवालय वास ।
अव्यय अविनाशी सुथिर, स्वयं जोति परकाश ॥९३८॥

ॐ ह्रीं स्थिराय नमः अर्घं ।

स्व आतममें वास है, रुलत नहीं संसार ।
ज्योंके त्यों निश्चल सदा, वंदत भवदधि पार ॥ ९३९ ॥

ॐ ह्रीं निष्ठाय नमः अर्घं ।

सुभग सरावन योग्य हैं, उत्तम भाव धराय ।
तीन लोकमें सार है, मुनिजन वंदित पाय ॥ ९४० ॥

ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय नमः अर्घं ।

सबके अग्रेसर भये, सबके हों सिरताज ।
तुमसे वड़ा न और हैं, सबके कर हों काज ॥ ९४१ ॥

ॐ ह्रीं जेष्ठाय नमः अर्घं ।

स्व प्रदेश निष्कम्प हैं, द्रव्य भाव विधि नाश ।
इष्टानिष्ट निमित्ति धरैं, निज आनन्द विलास ॥ ९४२ ॥

ॐ ह्रीं सुनिष्ठाय नमः अर्घं ।

उचित क्षमादिक अर्थ सब, सत्य सुनाय सुलब्ध ।
तिन सबके स्वामी नमूं, पूरण सुखी अनब्ध ॥ ९४३ ॥

ॐ ह्रीं भूतार्थेश्वराय नमः अर्घं ।

महा कठिनरु अशक्य है, यह संसार निकाश ।
तुम पायो पुरुषार्थ करि, लहो स्वलब्धि अवास ॥९४४॥

ॐ ह्रीं पूज्यपादजिनाय नमः अर्घं ।

परमारथ निज गुण कहै, मोक्ष प्राप्तमें होय ।
स्वारथ इन्द्रिय जन्य है, सो तुम इनको खोय ॥९४५॥
ॐ ह्रीं परमार्थगुणाय नमः अर्घं ।

पर निमित्त या भेद करि, या उपचरित कहाय ।
सो तुममें सब लय भए, मानों स्वप्न कराय ॥ ९४६ ॥
ॐ ह्रीं व्यवहारसुप्ताय नमः अर्घं ।

निज पदमें नित रमन है, अप्रमाद अधिकाय ।
निज गुण सदा प्रकाश है, अतुल बली नमूं पाय ॥९४७॥
ॐ ह्रीं अतिजागरुकाय नमः अर्घं ।

सकल उपद्रव मिटि गये, जे थे परकी साथ
निर्भय सदा सुखी भये, वन्दूं नमि जिन माथ ॥९४८॥
ॐ ह्रीं स्वस्थिताय नमः अर्घं ।

कहै हुवे हो नेमसै, परमाराध्य अनादि ।
तुम महातमा जगतके, और कुदेव कुवादि ॥ ९४९ ॥
ॐ ह्रीं उदितोदितमहात्माय नमः अर्घं ।

तत्त्वज्ञान अनुकूल सब, शब्द प्रयोग विचार ।
तिसके तुम अध्याय हो, धर्म प्रकाशनहार ॥ ९५० ॥
ॐ ह्रीं तत्वज्ञानानुकूलजिनाय नमः अर्घं ।

ना काहूंसो जन्म हो, ना काहूंसो नाश ।
स्वयं सिद्ध विन पर निमित, स्वस्वरूप परकाश ॥९५१॥
ॐ ह्रीं अकृत्रिमाय नमः अर्घं ।

अप्रमाण अत्यन्त है, तुम सन्मति परकाश।
तेजरूप उत्सवमई, पाप–तिमिरको नाश ॥ ९५२ ॥
ॐ ह्रीं अप्रमेयमहिम्ने नमः अर्घं।

रागादिक मलको धरैं, तनक नहीं अनवास।
महा विशुद्ध अत्यन्त हैं, हरो पाप अहि डांस ॥९५३॥
ॐ ह्रीं अत्यन्तशुद्धाय नमः अर्घं।

सिद्ध स्वयं भरतार हो, शिव कामिनके संग।
रमण भाव स्वै योगमें, मानों अरह अनंग ॥ ९५४ ॥
ॐ ह्रीं संवराय नमः अर्घं।

विविध प्रकार न धरत हैं, है अजन्म अव्यक्त।
सूक्षम सिद्ध समान हैं, स्वयं स्वभाव सुव्यक्त ॥ ९५५ ॥
ॐ ह्रीं सिद्धानुजाताय नमः अर्घं।

मोक्षरूप शुभ वासके, आप मार्ग निरखेद।
भविजन सुलभ गमन करैं, जगत वासको छेद ॥ ९५६ ॥
ॐ ह्रीं शिवपुरीपथाय नमः अर्घं।

गुणसमूह अत्यंत है, कोई न पावै पार।
थकित रहै श्रुतकेवली, निजबल कथन अगार ॥ ९५७ ॥
ॐ ह्रीं सिद्धगुणतीर्थाय नमः अर्घं।

इक अवगाह प्रदेशमें, हो अवगाह अनन्त।
पर उपाधि निग्रह कियो, मुख्य प्रधान अनन्त ॥ ९५८ ॥
ॐ ह्रीं संगोन्मुखाय नमः अर्घं।

स्वयं सिद्ध निज वस्तु हो, आगम इन्द्रिय ज्ञान।
कर्त्तादिक लक्षण नहीं, स्वयं स्वभाव प्रमान ॥ ९५९ ॥
ॐ ह्रीं सिद्धालिंगाय नमः अर्घं।

हो प्रछन्न इंद्रिय अगम, प्रगट न जाने कोय।
सकल अगुणको लय कियो, निज आतमसे खोय ॥ ९६० ॥
ॐ ह्रीं सिद्धोपगूहकाय नमः अर्घ।

निज गुण करि निज पोखियो, सकल क्षुद्रता त्याग।
पूरण निजपद पाय करि, तिष्ठत हो बडभाग ॥ ९६१ ॥
ॐ ह्रीं पुष्टाय नम· अर्घं।

ब्रह्मचर्य पूरण धरैं, निजपद रमता धार।
सहस अठारह भेद करि. शील सुभाव सु सार ॥ ९६२ ॥
ॐ ह्रीं अष्टादशसहस्रशीलेश्वराय नमः अर्घ।

महा पुन्य शिवपदकमल, ताके दल विकसान।
मुनि मन भ्रमर रमण सुथल, गन्धानन्द महान ॥ ९६३ ॥
ॐ ह्रीं पुन्यसंकुलाय नमः अर्घं।

मति श्रुत अवधि त्रिज्ञान युत, स्वयं बुद्ध भगवान।
ऋत युगमें मुनि व्रत धरो, शिव साधक परधान ॥ ९६४ ॥
ॐ ह्रीं व्रताग्रयाय नमः अर्घं।

परम·शुक्ल शुभ ध्यानमें, तुमसे बन हितकार।
संत उपासक आयके, कर्मबन्ध छुटकार ॥ ९६५ ॥
ॐ ह्रीं परमक्लेशोपचारकृतये नमः अर्घं।

खारवार इस जलधिको, शीघ्र कियो तुम अन्त।
खुरगोकार उलंघियो, धरो स्व भुज बलवन्त ॥ ९६६ ॥
ॐ ह्रीं क्षेपिष्टाय नमः अर्घं।

एक समयमें गमन कर, कियो शिवालय वास।
काल अनन्त अचल रहो, मैटो जग भ्रम त्रास ॥९६७॥
ॐ ह्रीं अन्तरक्षणसिद्धये नमः अर्घं।

पंच अक्षर लघु जापमें, जितना लागे काल।
अन्तम पाया शुक्लका, ध्याय वसै जग भाल ॥९६८॥
ॐ ह्रीं पंचलघुअक्षरस्थिते नमः अर्घं।

द्वादश प्रकृति अशेष हैं, जबतक मोक्ष न होय।
सब ही प्रकृती मेटकें, पहुंचें शिवपुर सोय ॥ ९६९ ॥
ॐ ह्रीं द्वादशप्रकृताशेषाय नमः अर्घं।

तेरह विधि चारित्रके, तुम हो पूरण शूर।
निज पुरुषार्थ थकी लियो, शिवपुर आनन्द पूर ॥९७०॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रपूर्णताय नमः अर्घं।

निज सुखमें अन्तर नहीं, परसों हानि न होय।
स्वस्थ रूप परदेश जिन, तिन पूजत हूं सोय ॥ ९७१ ॥
ॐ ह्रीं अच्छेद्याय नमः अर्घं।

निज पूजनमें देत हो, शिव संपति अधिकाय।
यातें पूजन योग्य हो, पूजूं मन वच काय ॥ ९७२ ॥
ॐ ह्रीं याजकाय नमः अर्घं।

मोह महा परचण्ड बलि, सकें न तुमको जीत।
नमूं तुम्हैं जयवंत हो, धार सु उरमें प्रीति ॥ ९७३ ॥
ॐ ह्रीं अजयाय नमः अर्घं।

जग विधानमें जजत ही, आप निलो निधि रूप।
तुम समान नहीं और धन, हरत दरिद्र दुख कूप ॥९७४॥
ॐ ह्रीं याज्याय नमः अर्घं।

लोकोत्तर संपद विभव, है सर्वस्व अघाय।
तुमसे अधिक न और हैं, सुख विभुति शिवराय ॥९७५॥
ॐ ह्रीं अनर्घप्रग्रहाय नमः अर्घं।

तुमरो आह्वानन यजन, प्राशुक विधिसे योग।
त्रिजग अमोलिक निधि सही, देत पर्म सुख भोग ॥९७६॥
ॐ ह्रीं अनर्घहेतवे नमः अर्घं।

एक देश जिनराज हैं, सर्व देश जिनराज।
भव तन भोग विरक्तता, निर्ममत्व सुख साज ॥९७७॥
ॐ ह्रीं परमनिष्प्रहाय नम अर्घं।

परदुखमें दुख हो जहां, मोह प्रकृतिके द्वार।
दया कहै तिसको सुमति, सो तुम मोह निवार। ९७८॥
ॐ ह्रीं अत्यन्तनिर्दयाय नमः अर्घं।

स्वयं बुद्ध भगवान हो, सुर मुनि पूजन योग।
विन शिक्षा शिवमार्गको, साधो हो धरि योग ॥९७९॥
ॐ ह्रीं अशिष्याय नमः अर्घं।

तुम एकत्व अनित्य हो, परसों नहीं सम्बन्ध।
स्वयं सिद्ध अविरुद्ध हो, नाशो जगत प्रबन्ध ॥ ९८० ॥

ॐ ह्रीं परसम्बन्धविनाशकाय नमः अर्घं।

काहूको नहि यजन करि, गुरुका नहिं उपदेश।
स्वयं बुद्ध स्वैशक्ति हो, राजो शुद्ध हमेश ॥ ९८१ ॥

ॐ ह्रीं अदीक्षाय नमः अर्घं।

तुम त्रिभुवनके पूज्य हो, यजो न काहू और।
निज हितमें रत हो सदा, पर निमित्तको छोर ॥ ९८२ ॥

ॐ ह्रीं अदीक्षिताय नमः अर्घं।

अरहन्तादि उपासना, मोह उदय सो होय।
स्वयं ज्ञानमें लय भए, मोह कर्मको खोय ॥ ९८३ ॥

ॐ ह्रीं अदीक्षकाय नमः अर्घं।

गौण रूप परिणाम हैं, मुख्य ध्रुवता गुण धार।
अक्षय अवनिश्वर स्वपद, स्वस्थ स्वथिर अविकार ॥९८४॥

ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः अर्घं।

सूक्षम शुद्ध स्वभाव है, लहै न गणधर पार।
इन्द्र तथा अहमिन्द्र सब, अभिलाषित उर धार ॥९८५॥

ॐ ह्रीं अगम्याय नमः अर्घं।

अचल शिवालयके विषैं, टंकोत्कीर्ण समान।
सदा विराजो सुख महित, जगत भ्रमणको हान ॥९८६॥

ॐ ह्रीं अगमकाय नमः अर्घं।

रमण योग छद्मस्थके, नाहि अलिंग सरूप ।
पर प्रवेश विन शुद्धता, धारत सहज अनूप ॥ ९८७ ॥

ॐ ह्रीं अरम्याय नमः अर्घं ।

पर पदार्थ इच्छक नहीं, इष्टानिष्ट निवार ।
सुथिर रहो निज आत्ममें, वन्दत हूं हित धार ॥ ९८८ ॥

ॐ ह्रीं अरमकाय नमः अर्घं ।

जाको पार न पाइयो, अवधि रहित अत्यन्त ।
सो तुम ज्ञान महान है, आशा राखे सन्त ॥ ९८९ ॥

ॐ ह्रीं ज्ञाननिर्भराय नमः अर्घं ।

मुनिजन जिन सेवन करैं, पावैं निज पद सार ।
महा शुद्ध उपयोग मय, वरतत हैं सुखकार ॥ ९९० ॥

ॐ ह्रीं महायोगीश्वराय नमः अर्घं ।

भाव शुद्ध सो देहमें, द्रव्य शुद्ध विन देह ।
कर्म वर्गणा नहिं लिये, पूजत हूं धरि नेह ॥ ९९१ ॥

ॐ ह्रीं द्रव्यसुद्धाय नमः अर्घं ।

पंच प्रकार शरीरको, मूल कियो विध्वंश ।
स्व प्रदेशमय राजते, परि मिलाप नहीं अंश ॥ ९९२ ॥

ॐ ह्रीं अदेहाय नमः अर्घं ।

जाको फेर न जन्म है, फिर नाहीं संसार ।
सो पंचमगति शिवमई, पायो तुम निरधार ॥ ९९३ ॥

ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय नमः अर्घं ।

सकल इन्द्रियां व्यर्थ करि, केवलज्ञान सहाय ।
सब द्रव्यनिको ज्ञान है, गुण अनन्त पर्याय । ९९४ ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानैकविदे नमः अर्घं ।

जीव मात्र निज धन सहित, गुण समूह मणि खान ।
अन्य विभाव विभव नहीं, महा शुद्ध अविकार ॥ ९९५ ॥

ॐ ह्रीं जीवधनाय नमः अर्घं ।

सिद्ध भये पर सिद्ध तुम, निज पुरुषारथ साध ।
महा शुद्ध निज आत्म मय, सदा रहे निरबाध ॥९९६॥

ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः अर्घं ।

लोकशिखरपर थिर भए, ज्यों मंदिर मणि कुंभ ।
निज शरीर अवगाहमें, अचल सु थान अलुंभ । ९९७॥

ॐ ह्रीं लोकाग्रस्थिताय नमः अर्घं ।

सहज निरामय भेद बिन, निराबाध निस्संग ।
एक रूप सामान्य हो, निज विशेष मई अंग ॥९९८॥

ॐ ह्रीं निर्द्वंदाय नमः अर्घं ।

जे अविभाग प्रछेद हैं, इक गुणके सु अनन्त ।
तुममें पूरण गुण सही, धरो अनन्तानन्त ॥ ९९९ ॥

ॐ ह्रीं अनन्तानन्तगुणाय नमः अर्घं ।

पर मिलाप नहीं लेश है, स्वप्रदेशमय रूप ।
क्षयोपशम ज्ञानी तुम्है जानत नाहिं स्वरूप ॥१०००॥

ॐ ह्रीं आत्मरूपाय नमः अर्घं ।

क्षमा आत्मको भाव है, क्रोध कर्मसों घात ।
सो तुम कर्म खिपाइयो, क्षमा सु भाव धरात ॥१००१॥
ॐ ह्रीं महाक्षमाय नमः अर्घं ।

शील सुभाव सु आत्मको, क्षोभ रहित सुखदाय ।
निर आकुलता धार है, वंदूं तिनके पाय ॥१००२॥
ॐ ह्रीं महाशीलाय नमः अर्घं ।

शशि स्वभाव ज्यों शांति धर, औरन शांति धराय ।
आप शांति पर शांतिकर, भवदुख दाह मिटाय ॥१००३॥
ॐ ह्रीं महाशांताय नमः अर्घं ।

तुम सम को बलवान हैं, जीत्यो मोह प्रचण्ड ।
धरो अनन्त स्व वीर्यको, निजपद सुथिर अमण्ड ॥१००४॥
ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यात्मकाय नमः अर्घं ।

लोकालोक विलोकियो, संशय विन इकवार ।
खेद रहित निश्चल सुखी स्वच्छ आरसी सार ॥१००५॥
ॐ ह्रीं लोकालोकज्ञाय नमः अर्घं ।

निरावर्ण स्वै गुण सहित, निजानन्द रस भोग ।
अव्यय अविनाशी सदा, अजर अमर शुभ योग ॥१००६॥
ॐ ह्रीं निर्वाणाय नमः अर्घं ।

परम मुनीश्वर ध्यान धर, पावै निजपद सार ।
ज्यों रविबिंब प्रकाश कर, घटपट सहज निहार ॥१००७॥
ॐ ह्रीं ध्येयगुणाय नमः अर्घं ।

कवलाहारी कहत हैं, महा मूढ मतिमंद।
असत असाता पीरबिन, आप भये सुखकंद ॥१००८॥
ॐ ह्रीं अशनदग्धाय नमः अर्घ।

लोक शीश छवि देत हो, धरो प्रकाश अनूप।
बुधजन आदर जोग हो, सहज अकम्प सरूप ।।१००९॥
ॐ ह्रीं त्रिलोकमणये नमः अर्घ।

महागुणनकी रास हो, लोकालोक प्रजन्त।
सुर मुनि पार न पावते, तुम्है नमें नित सन्त ॥१०१०॥
ॐ ह्रीं अनन्तगुणप्राप्ताय नमः अर्घ।

परम सु गुण परिपूर्ण हो, मलिन भाव नहीं लेश।
जगजीवन आराध्य हो, हम तुम यही विशेष ॥१०११॥
ॐ ह्रीं परमात्मने नमः अर्घ।

केवल ऋद्धि महान है, अतिशय युत तप सार।
सो तुम पायो सहज ही, मुनिगण वंदनहार ॥१०१२॥
ॐ ह्रीं महाऋषये नमः अर्घ।

भूत भविष्यत् कालको, कभी न होवे अंत।
नित प्रति शिवपद पायकर, होत अनन्तानन्त ॥१०१३॥
ॐ ह्रीं अनन्तसिद्धेभ्यो नमः अर्घ।

निर्भय निर आकुलित हो, स्वयं स्वस्थ निरखेद।
काहू विधि घबराट नहीं, निज आनंद अभेद ॥१०१४॥
ॐ ह्रीं अक्षोभाय नमः अर्घ।

जो गुण गुणी सुभेद करि, सो जड मती अजान।
निज गुण गुणी सु एकता, स्वयं बुद्ध भगवान ॥१०१५॥
ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय नमः अर्घं।

निरावरण निज ज्ञानमें, सर्व स्पष्ट दिखाय।
संशय विन नहिं भरम है, सुथिर रहो सुख पाय ॥१०१६॥
ॐ ह्रीं निरावरणज्ञानाय नमः अर्घं।

राग द्वेषके अंशमें, मत्सर भाव कहात।
सो तुम नासो मूल ही, रहै कहांसो पात ॥१०१७॥
ॐ ह्रीं वीतमत्सराय नमः अर्घं।

अणुव्रत लोकालोक है, जाके ज्ञान मझार।
सो तुम ज्ञान अथाह है, वन्दूं मैं चित धार ॥१०१८॥
ॐ ह्रीं अनन्तानन्तज्ञानाय नमः अर्घं।

हस्त रेख सम देख हो, लोकालोक सरूप।
सो अनन्त दर्शन धरो, नमत मिटै भ्रम कूप ॥१०१९॥
ॐ ह्रीं अनन्तानन्तदर्शनाय नमः अर्घं।

तीन लोकका पूज्यपन, प्रगट कहै दिखलाय।
तीन लोक शिरवास है, लोकोत्तम सुखदाय ॥
ॐ ह्रीं लोकाग्रवासिने नमः अर्घं।

निज पदमें लवलीन हैं, निज रस स्वाद अघाय।
परसो इह रस गुप्त है, कोटि यत्न नहीं पाय ॥१०२१॥
ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने नमः अर्घं।

कर्म प्रकृतिको मूल नहीं, द्रव्य रूप यह भाव ।
महा स्वच्छ निर्मल दियो, ज्यों रविमेघ अभाव ॥१०२२॥

ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः अर्घं ।

हीन अभाव न शक्ति है, कर्मबन्धको नाश ।
उदय भये तुम गुण सकल, महा विभवकी राश ॥१०२३॥

ॐ ह्रीं महोदयाय नमः अर्घं ।

पाप रूप दुख नाशियो, मोक्ष रूप सुख रास ।
दासन प्रति मंगल करण, स्वयं संत है दास ॥१०२४॥

ॐ ह्रीं महामंगलात्मकजिनाय नमः अर्घं । सम्पूर्ण ।

दोहा ।

कहैं कहांलों तुम सुगुण, अंशमात्र नहीं अन्त ।
मंगलीक तुम नाम हो, जानि भजैं नित सन्त ॥ १ ॥

इत्याशीर्वाद ।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्णस्वगुणजिनाय नमः इति अर्घं पूर्णार्घं ।

× × ×

अथ जयमाला ।

दोहा ।

होनहार तुम गुण कथन, जीव द्वार नहीं होय ।
काष्ट पांवसैं अनिल थल, नाक सके नहीं कोय ॥ १ ॥
सूक्षम शुद्ध स्वरूपका, कहना है व्यवहार ।
सो व्यवहारातीत है, यातें हम लाचार ॥ २ ॥

यह जो हम कछु कहत हैं, शांति हेत भगवंत।
वार वार थुति करनमें, नहीं पुनरुक्त भनन्त ॥ ३ ॥

पद्धडी छन्द मात्रा–१६।

जय स्वयं शक्ति आधार योग,
जय स्वयं स्वस्थ आनंद भोग।
जय स्वयं विकाश आभास भास,
जय स्वयं सिद्ध निज पद निवास ॥ ४ ॥
जय स्वयं बुद्ध संकल्प टार,
जय स्वयं शुद्ध रागादि जार।
जय स्वयं स्वगुण आचार धार,
जय स्वयं सुखी अक्षय अपार ॥ ५ ॥
जय स्वयं चतुष्टय राजमान,
जय स्वयं अनन्त सुगुण निधान।
जय स्वयं स्वस्थ सुस्थिर अयोग,
जय स्वयं स्वरूप मनोग योग ॥ ६ ॥
जय स्वयं स्वच्छ निज ज्ञान पूर,
जय स्वयं वीर्य रिपु वज्र चूर।
जय महामुनिन आराध्य जान,
जय निपुणमति तत्वज्ञ मान ॥ ७ ॥
जय सन्तनि मन आनन्दकार,
जय सज्जन चित वल्लभ अपार।

जय सुरगण गावत हर्ष पाय,
जय कवि यश कथनन करि अघाय ॥ ८ ॥
तुम महा तीर्थ भवि तरण हेत,
तुम महाधर्म उद्धार देत।
तुम महामन्त्र विष विघ्न जार,
अघ रोग रसायन कहो सार ॥ ९ ॥
तुम महाशास्त्रकी मूल जेय,
तुम महा तत्त्व है उपादेय।
तिहुं लोक महामंगल सु रूप,
लोकत्रय सर्वोत्तम अनूप ॥ १० ॥
तिहुं लोक शरण अघ हर महान,
भवि देत परम पद सुख निधान।
संसार महासागर अथाह,
नित जन्म मरण धारा प्रवाह ॥ ११ ॥
मो काल अनन्त दियो विताय,
तामें झकोर दुख रूप खाय।
मम दुखी देख उर दया आन,
इम पार करो कर ग्रहण पान ॥ १२ ॥
तुम ही हो इस पुरुषार्थ जोग,
अरू है अशक्त करि विषय रोग।

सुर नर पशु दास कहैं अनन्त,
इनमेंसे भी इक जान सन्त ॥ १३ ॥

घत्ता—कवित्त ।

जय विघन जलधि जल हनन,
पवन बल सकल पाप मल जारन हो।
जय मोह उपल हन वज्र असल,
दुख अनिल ताप जल कारन हो ॥
ज्यूं पंगु चढ़ै गिर गुंग भरे,
सुर अभुज सिन्धु तर कष्ट भरै।
त्यों तुम थुति काम महा लज ठाम,
सु अन्त सन्त परिणाम करै ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणयुक्तसिद्धेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा। इति पूर्णार्घम्।

तीन लोक चूडामणि, सदा रहो जयवन्त।
विघ्नहरण मंगल-करन, तुम्हैं नमें नित सन्त ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः।

अथ पूर्ण, आशीर्वादः।

अडिल्ल छन्द ।

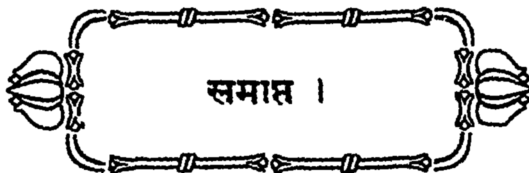
पूरण मंगल रूप महा यह पाठ है,
सरस सु रुचि सुखकार भक्तिको ठाठ है।

शब्द अर्थमें चूक होय तो हो कहीं,
　　श्रुति वाचक सब शब्द अर्थ यामें सही ॥ १ ॥
जिन गुण करण आरम्भ हास्यको धाम है,
　　वायसका नहिं सिंधु उतीरण काम है ।
यै भक्तनिकी रीति सनातन है यही,
　　क्षमा करो भगवन्त, शांति पूरण मही ॥ २ ॥

इत्याशीर्वाद—परिपुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

इति श्री सिद्धचक्रपाठ भाषा—कवि सन्तलालजी कृत समाप्तं ।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः १०८ ।



समुच्चय चौवीसी जिनपूजा-

(कविश्री वृन्दावनजी कृत)

छन्द कवित्त।

वृषभ, अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्स जिनराय।
चंद्र, पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज पूजित सुरराय॥
विमल अनन्त धरम जस उज्जल, शांति कुंथ अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्स प्रभु, वर्द्धमानपद पुष्प चढ़ाय॥ १॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह, अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

मुनिमनसम उज्जल नीर, प्रासुक गन्ध भरा।
भरि कनक कटोरी धीर, दीनी धार धरा॥
चौवीसौ श्री जिनचन्द, आनन्दकन्द सही।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी।
जिनचरनन देत चढ़ाय, भव आताप हरी॥

चौवीसौ श्री जिनचन्द, आनन्दकन्द सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तंदुल सित सोम समान, सुन्दर अनियारे ।
मुक्ताफलकी उपमान, पुंज धरौ प्यारे ॥
चौबीसौ श्री जिनचन्द, आनन्दकंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

वरकंज कदम्ब कुरण्ड, सुमन सुगन्ध भरे ।
जिन अग्र धरों गुनमण्ड, काम कलंक हरे ॥
चौवीसौ श्री जिनचन्द, आनन्दकंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

मनमोदनमोदक आदि, सुन्दर सद्य बने
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ॥
चौवीसौ श्री जिनचन्द, आनन्दकंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तमखण्डन दीप जगाय, धारों तुम आगै।
सब तिमिर मोह क्षय जाय. ज्ञानकला जागै ॥
चौवीसौ श्री जिनचन्द, आनन्दकंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशगंध हुताशन माहिं, हे प्रभु खेवत हों ।
मिस धूप करम जरि जाहिं, तुम पद सेवत हों ॥
चौवीसौ श्री जिनचन्द, आनन्दकंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुचि पक्व सुरस फल सार, सब ऋतुके ल्यायो ।
देखत दृग मनको प्यार, पूजत सुख पायो ॥
चौवीसौ श्री जिनचन्द, आनंदकंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल फल आठों शुचि सार, ताको अर्घ करों ।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ॥
चौवीसौ श्री जिनचन्द, आनन्दकन्द सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला।

दोहा।

श्रीमत तीरथ नाथपद, माथ नाय हितहेत।
गाऊँ गुणमाला अबैं, अजर अमर पद देत॥ १॥

जय भवतम ंजन जनमनकंजन, ंजन दिनमनि स्वच्छकरा।
शिवमग परकाशक अरिगननाशक, चौवीसौ जिनराज वरा॥२॥
जय रिषभदेव रिषिगन नमंत, जय अजित जीत वसु अरि तुरंत।
जय संभव भवभय करत चूर, जय अभिनन्दन आनंदपूर॥३॥
जय सुमति सुमतिदायक दयाल, जय पद्म पद्मदुति तनरसाल।
जय जय सुपास भवपासनाश, जय चन्द चन्दतन दुतिप्रकाश॥४॥
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत, जय शीतल शीतल गुननिकेत।
जय श्रेयनाथ नुत सहसभुज्ज, जय वासवपूजित वासुपुज्ज॥५॥
जय विमल विमलपद देनहार, जय जय अनन्त गुनगन अपार।
जय धर्म धर्म शिवशर्म देत, जय शांति शांति पुष्टी करेत॥६॥
जय कुंथु कुंथुवादिक रखेय, जय अर जिन वसु अरि छय करेय।
जय मल्लि मल्ल हत मोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रत शल्लदल्ल॥७॥
जय नमि नित वासव नुत सपेम, जय नेमिनाथ वृषचक्र नेम।
जय पारसनाथ अनाथ नाथ, जय वर्द्धमान शिवनगर साथ॥८॥

चौवीस जिनन्दा आनन्दकन्दा, पापनिकन्दा सुखकारी ।
तिनपद जुगचन्दा उदय अमंदा, वासवबन्दा हितधारी ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा ।

भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसौं जिनराजवर ।
तिनपद मनवच धार, जो पूजै सो शिव लहै ॥ १० ॥

इत्याशीर्वाद. ।

अथ शांतिपाठ विसर्जन भाषा ।

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुणव्रतसंयमधारी ।
लखन एकसौआठ बिराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं ॥१॥

पंचम चक्रवर्तिपद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी ।
इन्द्रनरेन्द्रपूज्य जिननायक, नमों शांतिहित शांतिविधायक ॥२॥

दिव्य विपट पहुपनकी वरषा, दुंदुभि आसन वाणी सरसा ।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ॥३॥

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगतपूज्य पूजौं शिरनाई ।
परम शांति दीजे हम सबको, पढैं तिन्हें पुनि चार संघको ॥४॥

पूजैं तिन्हे मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके ।
सो शांतिनाथ वरवंशजगत्प्रदीप ।
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ॥ ५ ॥

संपूजकोंको प्रतिपालकोंको, यतीनको औ यतिनायकोंको।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेशको ले, कीजे सुखी हे जिन शांतिको दे ॥६॥

स्रग्धरा

होवे सारी प्रजाको सुख बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा।
होवै वर्षा समैपे, तिलभर न रहै, व्याधियोंका अंदेशा॥
होवै चौरी न जारी, सुखमय वरतै, हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको, जो सदा सौख्यकारी ॥ ७ ॥

दोहा।

घातिकर्म जिन नाशकरि, पायो केवल राज।
शांति करो सब जगतमें, वृषभादिक जिनराज ॥

मन्दाक्रान्ता।

शास्त्रोंका हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगतीका।
सद्वृत्तोंका सुजस कहते, दोष ढांकूं सभीका॥
बोलूं प्यारे वचन हितके, आपको रूप ध्याऊँ।
तोलौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौलौं न पाऊँ॥

आर्या।

तुवपद मेरे हियमें, ममहिय तेरे पुनीत चरणोंमें।
तबलौं लीन रहो प्रभु, जबलों पाया न मुक्तिपद मैंने॥
अक्षरपद मात्रासे, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणाकरि पुनि छुडाउं भवदुखसे॥
हे जगबंधु जिनेश्वर! पाऊं तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मोंका क्षय सुबोध सुखकारी॥

अथ विसर्जन पाठ।

दोहा।

विनजाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुव प्रसादतें परमगुरु, सो सब पूरन होय॥ १॥
पूजनविधि जान्यो नहीं, नहिं जान्यो आह्वान।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करो भगवान॥ २॥
मन्त्रहीन धनहीन हूं, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरणकी सेव॥ ३॥
आये जो जो देवगन, पूजे भक्ति प्रमान।
सो अब जावहु कृपाकर, अपने अपने थान॥ ४॥

